

**THE BOOK WAS  
DRENCHED**



काण्व

संहिता ।

UNIVERSAL  
LIBRARY

**OU\_184411**

UNIVERSAL  
LIBRARY





OUP— 390 29-1-72 10,000

**OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY**

Call No **S294.1** Accession No **76 S159**  
**V41S**

Author

Title

**सुक्तरूपवेदीशकाव्यसंहिता**

This book should be returned on or before the date last marked **1862**.





शुक्लयजुर्वेदीय  
काण्व-संहिता ।

अनकवेदिकपण्डितानां सहाय्येन विविधप्राचीनलिखितपुस्तकपाठानुसारेण  
भट्टाचार्येण श्रीपादशर्मणा दामोदरभट्टसूनुना सान्तबलेकरकुलजेन  
संशोधिता ।

सा च

ओन्ध राजधान्यां

भारतमुद्रणालये मुद्रयित्वा स्वाध्यायमण्डलद्वारा प्रकाशिता ।

विक्रमीय संवत् १९९७; शालीवाहनशकः १८६२

मूल्यं रूप्यकत्रयम् ।

---

मुद्रकः प्रकाशकश्च

वसन्त—श्रीपाद—सातवळेकरः ( B. A. इत्युपपदधारी )

भारत-मुद्रणालयम्, औन्ध नगरे ( सातारा-प्रदेशे ) मुम्बई-प्रान्ते ।

---



## शुक्लयजुर्वेदीय-काण्वसंहितायाः प्रस्तावः ।

शुक्लयजुर्वेदीयैषा संहिता काण्वसंहितेति प्रसिद्धा । सैषा मुद्रायेदानीं प्रकाश्यते । तत्र 'कोऽयं काण्वः १' 'कोऽयं वा कण्वः २' इति प्रश्नः । प्रथमं विचारभूमिकाया समुद्भवति । अस्मिन् विषये केचिद्वदन्ति, यः कश्चिदृग्वेदीय-मन्त्राणां द्रष्टा कण्वः स एवैतैष धनुषो प्रवर्तकः कण्व ऋषिरिति, तेनैवैतस्य शुक्लयजुर्वेदस्य 'काण्व-यजुर्वेद' इति संज्ञा समजनीति । नैतन्मतं सत्यमिव प्रतिभाति । कुत इति चेद् भूमः—

### ऋग्वेदे कण्वदृष्टा मन्त्राः ।

शाकलकेऽस्मिन्ऋग्वेदे कण्वेन काण्वैश्च दृष्टा मन्त्राः प्रथमाष्टमनवमेषु मण्डलेषु बहवः सन्ति । तेषां सूक्तानां तत्रत्यानां मन्त्राणां गणना भवतीदृग्विधा—

| प्रथम--मण्डले        |              |                   | सू० क०  | सू० मं० सं० | देवता         |
|----------------------|--------------|-------------------|---|-------------|---------------|
| १ मेधातिथेः काण्वस्य |              |                   | ३८  | १५          | मरुतः         |
| सूक्तक्रमाद्         | मन्त्रसंख्या | देवता             | ३९  | १०          | „             |
| १२                   | १२           | अग्निः            | ४०  | ८           | ब्रह्मणस्पतिः |
| १३                   | १२           | „ (आग्नेयः)       | ४१  | ९           | वरुणादयः      |
| १४                   | १२           | विश्वे देवाः      | ४२  | १०          | पूषा          |
| १५                   | १२           | इन्द्रमरुदादयः    | ४३  | ९           | रुद्रादयः     |
| १६                   | ९            | इन्द्रः           |   | (९६)        |               |
| १७                   | ९            | इन्द्रावरुणौ      | ३ प्रकण्वस्य काण्वस्य                         |             |               |
| १८                   | ९            | ब्रह्मणस्पत्यादयः | ४४  | १४          | अग्निः        |
| १९                   | ९            | अमामरुतः          | ४५  | १०          | „             |
| २०                   | ८            | ऋभव               | ४६  | १५          | अश्विनी       |
| २१                   | ६            | इन्द्राग्नी       | ४७  | १०          | „             |
| २२                   | २१           | अश्विसवित्रादयः   | ४८  | १६          | उषाः          |
| २३                   | २४           | वाय्वादयः         | ४९  | ४           | „             |
|                      | (१४३)        |                   | ५०  | १३          | सूर्यः        |
| २ कण्वस्य घौरस्य     |              |                   |   | (८२)        |               |
| ३६                   | २०           | अग्निः            | [ एवं प्रथमे मण्डले ३२१ काण्वमन्त्राः सन्ति ] |             |               |
| ३७                   | १५           | मरुतः             |   |             |               |

## अष्टम-मण्डले

|                          |       |       |               |
|--------------------------|-------|-------|---------------|
| ४ प्रगाथस्य काण्वस्य     | १     | २     | इन्द्रः       |
| मेधातिथिमेध्यातिथ्योः    | १     | २७    | "             |
| मेधातिथेः काण्वस्य       | २     | ४२    | "             |
| ५ मेध्यातिथेः            | "     | ३     | २४            |
| ६ देवातिथेः              | "     | ४     | २१            |
| ७ ब्रह्मातिथेः           | "     | ५     | ३९ अश्विनौ    |
| ८ वत्सस्य                | "     | ६     | ४८ इन्द्रः    |
| ९ पुनर्वत्सस्य           | "     | ७     | ३६ मरुतः      |
| १० सध्वंसस्य             | "     | ८     | २३ अश्विनौ    |
| ११ शशकर्णस्य             | "     | ९     | २१            |
| प्रगाथस्य                | "     | १०    | ६             |
| १२ वत्सस्य               | "     | ११    | १० अग्नि      |
| १३ पर्वतस्य              | "     | १२    | ३३ इन्द्र     |
| १४ नारदस्य               | "     | १३    | ३३            |
| १५ गोषूक्त्यश्वसूक्तिनोः |       |       |               |
| काण्वयोः                 | १४-१५ | २८    | "             |
| १६ हरिश्चितेः काण्वस्य   | १६-१७ | २७    | "             |
| "                        | "     | १८    | २२ आदित्यादयः |
| १७ सोमरेः                | "     | १९-२२ | ९९ अन्यादय    |
| मेधातिथेः                | "     | ३२    | ३० इन्द्रः    |
| मेध्यातिथे               | "     | ३३    | १९            |
| १८ नीपातिथेः             | "     | ३४    | १५            |
| १९ नाभाकस्य              | "     | ३९-४२ | ३८ अन्यादय    |
| २० विशोकस्य              | "     | ४५    | ४२ इन्द्रः    |
| प्रगाथस्य                | "     | ४८    | १५ सोमः       |
| प्रस्कण्वस्य             | "     | ४९    | १० इन्द्रः    |
| २१ पुष्टिगोः             | "     | ५०    | १०            |
| २२ श्रुष्टिगोः           | "     | ५१    | १०            |
| २३ आयोः                  | "     | ५२    | १०            |
| २४ मेध्यस्य              | "     | ५३    | ८             |
| २५ मातरिश्वनः            | "     | ५४    | ८ इन्द्रः     |
| २६ कृशस्य                | "     | ५५    | ५             |
| २७ पृषध्रस्य             | "     | ५६    | ५             |

|                        |       |                         |
|------------------------|-------|-------------------------|
| मेध्यस्य काण्वस्य      | ५७-५८ | ७ अश्विनौ, विश्वे देवाः |
| २८ सुपर्णस्य           | "     | ५९ ७ इन्द्रावरुणौ       |
| २९ भर्गस्य प्रागाथस्य  | "     | ६०-६१ ३८ अमीन्द्रादयः   |
| प्रगाथस्य              | "     | ६२-६५ ४८                |
| ३० कलेः प्रागाथस्य     | "     | ६६ १५                   |
| ३१ हर्यतस्य प्रागाथस्य | "     | ७२ १८ अग्निः हवीषि वा   |
| ३२ कुरुसुतेः           | "     | ७६-७८ ३३                |
| ३३ कुसीदिनः            | "     | ८१-८३ २७                |
| सोमरेः                 | "     | १०३ १४ अग्निः           |

[ एवमष्टमे मण्डले ९७३ काण्वमन्त्राः सन्ति । ]

## नवम-मण्डले

|                       |    |       |      |
|-----------------------|----|-------|------|
| मेधातिथेः काण्वस्य    | २  | १०    | सोमः |
| मेध्यातिथेः           | "  | ४१-४३ | १८   |
| काण्वस्य घोरस्य       | ९४ | ५     | "    |
| प्रस्कण्वस्य काण्वस्य | ९५ | ५     | "    |
| पर्वतनारदयोः          |    |       |      |

काण्वयोः १०४-१०५ १२

[ एवं नवमे मण्डले ५० मन्त्रा काण्वदृष्टाः सन्ति ]

एवं शाकलकेऽस्मिन्नुपवेदे कण्वेन काण्वश्च दृष्टा मन्त्रा सर्वे मिलित्वा १३४४ सन्ति । तत्र मन्त्रसंख्यानुपूर्व्यां शतचिना महासूक्तानां क्षुद्रसूक्तानां च काण्वानां भवत्येवमनुक्रमः—

## शतचिनाः महासूक्ताः काण्वाः ।

|                         |               |              |
|-------------------------|---------------|--------------|
| १ मेधातिथेः काण्वस्य    | प्रथमे मण्डले | १४३ मन्त्राः |
|                         | अष्टमे        | " ९९ "       |
|                         | नवमे          | " १० " २५२   |
| २ सोमरेः काण्वस्य       | अष्टमे मण्डले | ११३          |
| ३ काण्वस्य घोरस्य       | प्रथमे मण्डले | ९६           |
|                         | नवमे          | " ५ १०१      |
| ४ प्रस्कण्वस्य काण्वस्य | प्रथमे        | " ८२         |
|                         | अष्टमे        | " १०         |
|                         | नवमे          | " ५ ९७       |

अयं प्रगाथो घोरपुत्रः सन् कण्वस्य भ्रातुः पुत्रता गतः । तथा च सर्वानुक्रमसूत्रम्—' स घोरः सन्भ्रातुः कण्वस्य पुत्रतामगात् ' इति ।

महासूक्ताः काण्वाः ।

|                          |               |    |
|--------------------------|---------------|----|
| ५ प्रगाथस्य काण्वस्य     | अष्टमे मण्डले | ७१ |
| ६ मेध्यातिथेः            | " " "         | ४३ |
| " "                      | नवमे " "      | १८ |
| ७ वत्सस्य                | " अष्टमे "    | ५८ |
| ८ हरिर्मिवेः             | " " "         | ४९ |
| ९ त्रिशोकस्य             | " " "         | ४२ |
| १० ब्रह्मातिथेः          | " " "         | ३९ |
| ११ नाभाकस्य              | " " "         | ३८ |
| १२ भर्गस्य प्रागाथस्य    | " " "         | ३८ |
| १३ पुनर्वत्सस्य          | " " "         | ३६ |
| १४ पर्वतस्य              | " " "         | ३३ |
| १५ नारदस्य               | " " "         | ३३ |
| १६ कुरुसुतेः             | " " "         | ३३ |
| १७ गोषूक्त्यश्वसूक्तिनोः | " " "         | २८ |
| १८ कुसीदिनः काण्वस्य     | " " "         | २७ |
| १९ सध्वंसस्य काण्वस्य    | अष्टमे मण्डले | २३ |
| २० देवातिथेः             | " " "         | २१ |
| २१ शशकर्णस्य             | " " "         | २१ |

क्षुद्रसूक्ताः काण्वाः

|                             |               |    |
|-----------------------------|---------------|----|
| २२ हर्यतस्य प्रगाथस्य       | " " "         | १८ |
| २३ नीपातिथेः                | " " "         | १५ |
| २४ कलेः प्रागाथस्य          | " " "         | १५ |
| २५ मेध्यस्य                 | " " "         | १५ |
| २६ पर्वतस्यनारदयोः काण्वयोः | नवमे मण्डले   | १२ |
| २७ पुष्टिगोः काण्वस्य       | अष्टमे मण्डले | १० |
| २८ श्रुष्टिगोः              | " " "         | १० |
| २९ आयोः                     | " " "         | १० |
| ३० मातरिश्वनः               | " " "         | ८  |
| ३१ सुपर्णस्य                | " " "         | ७  |
| ३२ कशस्य                    | " " "         | ५  |
| ३३ पृषधस्य                  | " " "         | ५  |

काण्वमन्त्राणां सर्वयोगः १३४४

काण्वमन्त्राणां दैवतविभागाः ।

एतेषां काण्वमन्त्राणां दैवतानुसारेण विभागो भवत्येवंविधः ।

१ इन्द्रस्य ६४१ मन्त्राः ।

|                       |     |
|-----------------------|-----|
| २ अग्नेः              | २३७ |
| ३ अश्विनोः            | १४२ |
| ४ मरुता               | ७६  |
| ५ विद्येषां देवानां   | ६९  |
| ६ सोमस्य              | ६५  |
| ७ उषसः                | २०  |
| ८ ब्रह्मणस्पत्यादीनां | १७  |
| ९ इन्द्रावरुणयोः      | १६  |
| १० सूर्यस्य           | १३  |
| ११ इन्द्रमरुतादीनां   | १२  |
| १२ प्राणः             | १०  |
| १३ ऋभूणां             | ९   |
| १४ अग्नमरुतो          | ९   |
| १५ इन्द्राग्नयोः      | ८   |

एतेषां सर्वयोगः १३४४

एतस्मादग्नेर्दीयमन्त्रसमाग्रायात्काण्वदृष्टान्छुद्रैऽस्मिन् यजुर्वेदे संग्रहीता मन्त्रा अल्पश एव सन्तीति द्रष्टव्यमिदानीम् । यथा—

मन्त्रः ऋग्वेदस्थानं वा० यजु० काण्वयजु०

१ मेधातिथेः काण्वस्य मन्त्राः ( २६ )

|                      |           |        |        |
|----------------------|-----------|--------|--------|
| स नः पावक दीदिवो     | १, १२, १० | १७, ९  | १८, १० |
| इन्द्रवायू वृहस्पति  | १, १४, ३  | ३३, ४५ | ३२, ४५ |
| विश्वेभि सोम्यं मधु  | १०        | १०     | १०     |
| अभि यज्ञं गृणीहि नो  | १, १५, ३  | २६, २१ | —      |
| द्रविणोदाः पिपीषति   | ९         | २२     | —      |
| सोमानं स्वरणं वृणुहि | १, १८, १  | ३, २८  | ३, ३६  |
| यो रेवान्यो अमीवहा   | २         | २९     | ३७     |
| मा नः शंसो अरहषो     | ३         | ३०     | ३८     |
| सदसस्पति             | ६         | ३२, १३ | ३५, ३२ |
| या वा कशा मधुमती     | १, २२, ३  | ७, ११  | ७, १०  |
| हिरण्यपाणिमृतये      | ५         | २२, १० | २४, १४ |
| विभक्तारं हवामहे     | ७         | ३०, ४  | ३४, ४  |
| अग्ने पत्नोरिहा वह   | ९         | २६, २० | —      |
| मही द्यौः पृथिवी चन  | १३        | ८, ३२  | ९, ३१  |
|                      |           | १३, ३२ | १४, ३४ |
| रथोना पृथिवि         | १५        | ३५, २१ | ३५, ५४ |
|                      |           | ३६, १३ | ३६, १३ |
| इदं विष्णुर्विचक्रमे | १७        | ५, १५  | ५, २०  |
| त्राणि पदा विचक्रमे  | १८        | ३४, ४३ | ३३, ३१ |

|   |           |        |        |
|---|-----------|--------|--------|
| विष्णोः कर्माणि पश्यत                         | १९        | ६, ४,  | ६, ५,  |
|   |           | १३, ३३ | १४, ३५ |
| तद्विष्णोः परमं                               | २०        | ६, ५   | ६, ६   |
| तद्विप्रासो विपन्यव-                          | २१        | ३४, ४४ | ३३, ३२ |
| वरुणः प्राविता भुवन                           | १, २३, ६  | ३३, ४६ | ३२, ४६ |
| अमूर्या उप सूर्ये                             | १७        | ६, २४  | ६, ३५  |
| अस्वन्तर                                      | १९        | ९, ६   | १०, ९  |
| इदमापः  | २२        | ६, १७  | ६, ३२  |
| आपो अया                                       | २३        | २०, २२ | २२, ७  |
| अचिक्रदद्दृषा                                 | ९, २, ६   | ३८, २२ | ३८, २२ |
| <b>२ कण्वस्य घौरस्य मन्त्राः ( ४ )</b>        |           |        |        |
| सं सीदस्व महो असि                             | १, ३६, ९  | ११, ३७ | १२, ३७ |
| ऊर्व ऊ ण ऊतये                                 | १३        | ४२     | ४२     |
| उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते                         | १, ४०, १  | ३४, ५६ | ३३, ४४ |
| प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः                          | ३         | ३३, ८९ | ३७, ७  |
| <b>३ प्रस्कण्वस्य काण्वस्य मन्त्राः ( ८ )</b> |           |        |        |
| धुधि धुत्कर्ण                                 | १, ४४, १३ | ३३, १५ | ३२, १५ |
| त्वा चित्रध्रुवस्तमं                          | १, ४५, ६  | १५, ३१ | १६, ५३ |
| उभा पिबत                                      | १, ४६, १५ | ३४, २८ | ३३, २२ |
| उदु त्वं जातवेदसं                             | १, ५०, १  | ७, ४१  | ८, २३  |
|   |           | ८, ४१  | ९, ६   |
|   |           | ३३, ३१ | ३२, ३१ |
| अहध्रमस्य                                     | ३         | ८, ४०  | ८, २२  |
| तरणिर्विश्वदर्शतो                             | ४         | ३३, ३६ | ३२, ३६ |
| येना पावक चक्षसा                              | ६         | ३२     | ३२     |
| उद्वथं तमसम्परि                               | १०        | २०, २१ | २२, ६  |
|   |           | २७, १० | २९, १० |
|   |           | ३५, १४ | ३५, ४७ |
|   |           | ३८, २४ | ३८, २४ |
| <b>४ मेध्यातिथेः काण्वस्य मन्त्राः ( ३ )</b>  |           |        |        |
| दमा उ त्वा पुरुवसो                            | ८, ३, ३   | ३३, ८१ | ३२, ८१ |
| अयं सहस्र                                     | ४         | ३३, ८३ | ३२, ८३ |
| अस्येदिन्द्रो वावृधे                          | ८         | ९७     | —      |
| <b>५ वत्सस्य काण्वस्य मन्त्राः ( ४ )</b>      |           |        |        |

|   |           |         |         |
|---|-----------|---------|---------|
| महो इन्द्रो य ओजसा                                    | ६, ६, १   | ७, ४०   | ७, ४०   |
| उपहरे गिरीणा  | २८        | २६, १५  | —       |
| त्वमग्ने व्रतपा असि                                   | ८, ११, १  | ४, १६   | ४, २१   |
| आ ते वसो मनो यमत                                      | ७         | १२, ११५ | १३, ११४ |
| <b>६ गोषूक्त्यश्वसूक्तिनोः काण्वयोः मन्त्रः ( १ )</b> |           |         |         |
| अपा केनेन नमुचेः                                      | ८, १४, १३ | १९, ७१  | २१, ७१  |
| <b>७ सोमरेः काण्वस्य मन्त्राः ( ३ )</b>               |           |         |         |
| मद्रो नो अभिराहुत                                     | ८, १९, १९ | १५, ३८  | १६, ६०  |
| मद्रं मनः कृणुष्व                                     | २०        | ३९      | ६१      |
| येना समत्यु   | २०        | ४०      | ६२      |
| ( अत्र मन्त्राणा व्युत्क्रमो दृश्यते यजुर्वेदे )      |           |         |         |
| <b>८ नाभाकस्य काण्वस्य मन्त्राः ( १ )</b>             |           |         |         |
| अस्तन्नाह्वामसुरो                                     | ८, ४२, १  | ४, ३०   | ४, ४२   |
| <b>९ त्रिशोकस्य काण्वस्य मन्त्रः ( २ )</b>            |           |         |         |
| आ घा ये अग्नि   | ८, ४५, १  | ७, ३२   | ७, ३२   |
| वृहन्निदिम  | २         | ३३, २४  | ३२, २४  |
| <b>१० प्रगाथस्य घौरस्य काण्वस्य मन्त्राः ( २ )</b>    |           |         |         |
| त्वं सोम पितृभि                                       | ८, ४८, १३ | १९, ५४  | २१, ५४  |
| अस्मे रुद्रा  | ६३, १२    | ३३, ५०  | ३२, ५०  |
| <b>११ ध्रुष्टिगोः काण्वस्य मन्त्राः ( २ )</b>         |           |         |         |
| कदा चन रतरीरसि  | ८, ५१, ७  | ३, ३४   | ३, ४२   |
|   |           | ८, २    | ८, १    |
| यययायं विश्व आर्यो                                    | ९         | ३३, ८२  | ३२, ८२  |
| <b>१२ आयोः काण्वस्य मन्त्रः ( १ )</b>                 |           |         |         |
| कदा चन प्रयुच्छसि                                     | ८, ५२, ७  | ८, ३    | ८, २    |
| <b>१३ भर्गस्य प्रागाथस्य मन्त्रः ( १ )</b>            |           |         |         |
| पाहि नो अग्न एकया                                     | ८, ६०, ९  | २७, ४३  | —       |
| <b>१४ हर्यतस्य प्रागाथस्य मन्त्राः ( २ )</b>          |           |         |         |
| गाव उपावत   | ८, ७२, १२ | ३३, १९  | ३२, १९  |
|   |           | ७१      | ७१      |
| आ मुते  | १३        | २१      | २१      |
| <b>१५ कुरुसुतेः काण्वस्य मन्त्रः ( १ )</b>            |           |         |         |
| उत्तिष्ठो जसा सह                                      | ८, ७६, १० | ८, ३९   | ८, २१   |
| <b>१६ कुसीदिनः काण्वस्य मन्त्रः ( १ )</b>             |           |         |         |
| अग्नि न इन्द्रेष्वा                                   | ८, ८३, ७  | ३३, ४७  | ३२, ४७  |

एवं द्विषष्टिर्मन्त्राः काण्वैष्टिः शुक्लेऽस्मिन् वाजसनेयके यजुर्वेदे संगृहीता दृश्यन्ते । काण्वे यजुर्वेदे तु षट्पञ्चाशद्वै मन्त्रा दृश्यन्ते । मेधातिथेः २६, कण्वस्य ४, प्रस्कण्वस्य ८, मेध्यातिथेः ३, वत्सस्य ४, सोमरेः ३, ध्रुष्टिगोः २, अन्येषां द्वादश । एवं सर्वे मिलित्वा द्विषष्टिर्भवन्ति । ऋग्वेदे शाकलके काण्वैष्टिः मन्त्रा १३४४ सन्ति । तेषां मन्थान् केवलं ६२ मन्त्रा एवास्मिन्



शुक्ले यजुषां वेदे संगृहीता दृश्यन्ते । काण्वयजुर्वेदे तु ततोऽपि न्यूना एवेति । अतो वेदस्यैतस्य काण्वयजुर्वेदेति नाम करणं काण्वदृष्टमन्त्रहेतुमूलकमिति मतं नैव परिपुष्यति, तत्र काण्वदृष्टमन्त्राणामल्पीयस्त्वात् । पुनश्च शुक्लयजुर्वेदस्य वाजसनेयी-माथ्यंदि न-संहितायामप्येषामेव मन्त्राणां संग्रहो दृश्यते । तथैव तैत्तिरीयादिष्वपि संहितास्वेवमेवैतेषां मन्त्राणां किञ्चिन्न्यूनतर संग्रहोऽस्ति । अतो नैतत्काण्वसंहितायाः विशेषत्वं, येनैतस्याः संहिताया एतदभिधानं संभवेत् । अतो मिथ्यैवैषा कल्पना यत्काण्वानां मन्त्राणां संग्रहादेतदभिधानमस्य वेदस्येति ।

पुनश्च ऋग्वेदादिस्मिन् शुक्लयजुर्वेदे ७०३ मन्त्राः संगृहीतास्तत्र काण्वानां मन्त्राः केवलं द्वाषष्टिरेव । अन्ये च ६४१ मन्त्रा अन्येषामृषीणा रन्ति । अतोऽन्वीयस्त्वात्काण्वमन्त्राणां नैषा संज्ञा तन्मूलिकेति रपष्टं भवति ।

## ऋग्वेदीयानां काण्वमन्त्राणां मननम् ।

मा भूवाम काण्वसंहितेत्यभिधानमस्याः संहितायास्तत्र काण्वदृष्टमन्त्राणामल्पीयस्त्वान् । तथापि काण्वसंहिताविषये प्रचलिते सति, काण्वानामृग्वेदीया मन्त्राः सूक्ष्मया वृद्धयावश्यं मननीया, इत्यत्र न किञ्चिदपि मतद्वैधं भवितुं शक्यमिति प्रतीयते । यतस्तेषु मन्त्रेषु काण्वकुलागताचारा ये के चापि समुपलभ्येरंस्तेषां समालोचनया कवविषयकं ज्ञानं बहु वात्पं वा भवितुं शक्यमिति कृत्वा, ऋग्वेदीय-काण्वदृष्टमन्त्राणां मननं यावच्छक्यमत्रोपकामः ।

### १ काण्वानां सभा ।

ऋग्वेदे प्रस्कण्वस्य काण्वस्याश्विर्देवत्ये मन्त्रे काण्वानां काचित् प्रिया सभा दृश्यते प्रशंसिता, यथा—

**शश्वत्कण्वानां सदसि प्रिये हि कं सोमं पपथुरश्विना ।** (ऋ० १।४७।१०)

‘ हे अश्विनौ ! कण्वानां प्रिये सदसि सोमयागमण्डपे शश्वत्सर्वदा सोमं पपथुहि कं, युवा पीतवन्तो खलु । ’ एतदेवान्यस्मिन्मन्त्रे दृश्यते, यथा—

**पिवाथो अश्विना मधु कण्वानां सवने सुतम् ।** (ऋ० ८।८।३)

अश्विस्तवे सध्वंसस्य काण्वस्य दर्शनमेतत् । कण्वानां सोमयागेऽश्विनौ मधु मधुरं सोमं पिवाथः पिबन्तम् । तथा च शशकणः काण्वोऽश्विप्रशंसायामाह—

**इमे सोमासो अधि तुर्वशे यदौ इमे कण्वेषु वामथ ।** (ऋ० ८।९।१४, अथर्व २०।१४।१४)

‘ यथा तुर्वशे यदौ वा युवयोरर्थं संस्कृताः सोमास आसन्, तथैव कण्वेषु वा युवाभ्यां दत्ता इमे सोमाः मन्तीति । ’ एवं कण्वानां यज्ञसभायां सोमाभिषवो मन्त्रेषु स्तूयते, तथाहि—

### २ कण्वानां सोमसवनम् ।

कण्वानां सोमाभिषवं प्रस्कण्वः काण्वोऽभिस्तुतौ वर्णयति यथा—

**कण्वासस्त्वा सुतसोमास इन्धते हव्यवाहं स्वध्वर ।** ( ऋ० १।४८।६ )

‘ हे रवध्वराभे ! सुतसोमासः कण्वासो हव्यवाहमग्निं त्वा त्वामिन्धते दीपयन्ति । ’ तथैव स एवर्षिरश्विस्तवे प्रस्तौति ।

**कण्वासो वां सुतसोमा अभियवो युवां हवन्ते अश्विना ।** ( ऋ० १।४७।४ )

‘ हे अश्विनौ ! वां गुप्सदर्थं सुतसोमा अभिषुतसोमयुक्ता अभियवोऽभिगतदीप्तयः कण्वासो युवामुभौ हवन्ते आह्वयन्ति । ’ एवं कण्वानां सोमाभिषवो मन्त्रेषु वर्णितो दृश्यते ।

### ३ कण्वानां यज्ञसाधनम् ।

वत्सः काण्व इन्द्रस्तवे कण्वानां यज्ञसाधनं दर्शयति, तद्यथा—

**कण्वा इन्द्रं यदक्रत स्तोमैर्यज्ञस्य साधनम् ।** जामि ब्रुधत आयुधम् । (ऋ० ८।९।३) : (अथर्व० २०।१३।८।२)

‘ कण्वाः स्तोमैर्यज्ञस्य साधनमकरोति । ’ कण्वा यज्ञं कृत्वा समाराधयन्तीन्द्रमिति द्रष्टव्यमत्र ।

## ४ कण्वा आ हवन्ते ।

नीपातिथिः काण्वो दर्शयतीन्द्रस्तवे कण्वे कृतं देवतानामाहवनम्—

‘ आ त्वा कण्वा इहावसे हवन्ते वाजसातये । ( ऋ० ८।३।४ )

‘ कण्वा त्वामिहावसे वाजसातये चाहवन्ते आह्वयन्ति यज्ञार्थं च तुभ्यं ब्रह्म कृण्वन्ति ।

## ५ कण्वा ब्रह्म कृण्वन्ति ।

यज्ञयाधने दक्षा कण्वा ब्रह्म सूक्तं कृण्वन्तीति मेधावी प्रस्कण्वः काण्वोऽश्विनोः प्रस्तावे कथयति यथा—

कण्वासो वां ब्रह्म कृण्वन्त्यध्वरे तेषां सु शृणुतं हवम् । ( ऋ० १।४।१२ )

‘ कण्वा वामाश्विनोर्युवयोर्यागि ब्रह्म स्तोत्ररूपं मन्त्रसमूहं कृण्वन्ति कुर्वन्ति । तत्तु यागेऽध्वरे गीयते । तेषां कण्वानां हवमिममाह्वानं शृणुतमिति । ’ इन्द्रस्तवे वत्सः काण्वोऽध्वरेवेवाह—

इमां सु पूर्व्यां धियं मधोर्धृतस्य पिप्पुर्धाम् । कण्वा उक्थेन वावृधुः ॥ ( ऋ० ८।६।४३ )

‘ कण्वा उक्थेन सूक्तेन प्रशंसयेन्द्रं वावृधुः । इन्द्रस्य माहात्म्यं विस्तारितवन्तः । ’ तथैव मेधातिथिः काण्व इन्द्रस्तवे तदेव कथयति—

प्र कृतान्यृजीषिणः कण्वा इन्द्रस्य गाथया । मदे सोमस्य वोचत ॥ ( ऋ० ८।३२।१ )

कण्वा इन्द्रस्य प्रशंसा गायन्तीति ।

## ६ कण्वा ईडते ।

कण्वा देवता ईडते । कण्वानामेतदीडनं मेधातिथिः काण्वो वैश्वदेवसूक्तेऽग्निस्तवे वर्णयति, तथाहि—

ईडते त्वामवश्यवः कण्वासो वृक्तवर्हिषः । हविष्मन्तो अरंकृतः ॥ ५ ॥

तान्यजत्रां क्रतावृधोऽग्ने पत्नीवतस्कृधि ॥ ७ ॥ ( ऋ० १।१।४।५, ७ )

‘ अवश्यवः कण्वा अग्निं देवमाळते, तान्कण्वानग्निः पत्नवितः पत्नीयुक्तान्करोत्विति । कण्वो घोरस्तथैवाग्निस्तवेऽग्निं प्रज्वालयति मेधातिथिरिति कथयति—

यं कण्वो मेध्यातिथिर्धनस्पृतम् ॥ १० ॥ यमग्निं मेध्यातिथिः कण्व ईध क्रतावृधे ॥ ११ ॥ ( ऋ० १।३।६।१०, ११ )

‘ यमग्निं धनस्पृतं मेध्यातिथिः कण्व ईधे । ’ पुनर्वत्सः काण्वो मरुतां स्तवे तदेव दर्शयति—

सहो पु णो वज्रहस्तैः कण्वासो अग्निं मरुद्भिः । स्तुपे हिरण्यवाशीभिः । ( ऋ० ८।१।३२ )

‘ कण्वा अग्निं स्तुवन्ति वर्णयन्ति, स्तोत्रं गायन्ति । ’ तथा—

## ७ कण्वा गीर्भिरहृषत ।

तां त्वामुषर्वसूयवो गीर्भिः कण्वा अहृषत । ( ऋ० १।४।९।४ )

उषःस्तवे प्रस्कण्वः काण्वो वर्णयति यत्तां ‘ त्वा वसूयवो धनकामाः कण्वा गीर्भिरहृषत स्तुतवन्तः ’ मेधातिथिः काण्वोऽपि तथैव वैश्वदेवस्तवेऽग्नेः प्रशंसायामाह—

आ त्वा कण्वा अहृषत । ( ऋ० १।१।४।२ )

तथैव ब्रह्मातिथिः काण्वोऽपि संस्तवेऽश्विनोः कथयति—

स्तुपे कण्वासो अश्विना । ( ऋ० ८।५।४ )

वत्सः काण्वोऽपीन्द्रप्रस्तावे तथैव शंसति—

अभि कण्वा अनूषतापो न प्रवता यतीः । इन्द्रं वनन्वती मतिः ॥ ( ऋ० ८।६।३४ )

‘ इन्द्रं कण्वा अनूषत, तेषां मतिरिन्द्रमेव गच्छति स्तुतिरूपेण, यथाऽऽपोऽधस्तात्समुद्रं गच्छन्ति तथेति भावः । ’

## ८ कण्वस्य सुष्टुतिः ।

कण्वकृता देवस्येन्द्रस्य शोभना स्तुति सुष्टुतिरिति कथ्यते । नीपातिथिः काण्व इन्द्रस्य संस्तवे कण्वकृता सुष्टुतिमिन्द्रः शृणोत्विति प्रार्थयते, यथा—

**एन्द्र याहि हरिभिरुप कण्वस्य सुष्टुतिम् ।** ( ऋ० ८।३।१ )

तदेव कण्वो घौरो मरुतां प्रस्तावेऽप्रार्थयत्—

**क्रीळं वः शर्धो मारुतमनर्वाणं रथेशुभम् । कण्वा अभि प्र गायत ॥** ( ऋ० १।३।१ )

‘कण्वा मरुतां शर्धो बलं प्रशंसन्तीति भावः ।’ मेधातिथिः काण्वोऽपि तथैवेन्द्रस्तवे कथयति—

**कण्वासो गात वाजिनं (इन्द्रं) ।** ( ऋ० ८।२।३८ )

मेधातिथिः काण्वोऽपि तदेव द्रढयति, यथा—

**घयमु त्वा तदिदृथा इन्द्र त्वायन्तः सखायः । कण्वा उक्थेभिर्जरन्ते ॥** ( ऋ० ८।२।१६ ), ( अथर्व० २०।१।८१ )

**कण्वासस्त्वा ब्रह्मभिः स्तोमवाहस इन्द्रा यच्छन्त्या गहि ॥** ( ऋ० ८।४।२ ), ( अथर्व० २०।१२।१२ )

देवातिथिः काण्व इन्द्रस्तवे कथयति, ‘यत्कण्वा, हे इन्द्र ! त्वां स्तोमवाहसः स्तोमानां वोढारो ब्रह्मभिः सूक्तैः सहायच्छन्ति, आगच्छन्ति, त्वां प्रानुवन्ति ।’

## ९ कण्वा मतिं वर्धयन्ति ।

कण्वा इन्द्रसंबन्धिना मतिं प्रशंसामर्या वर्धयन्तीति वत्सः काण्व इन्द्रस्तवेऽपश्यत्—

**त्वामिच्छवसस्पते कण्वा उक्थेन वावृधुः । त्वां सुतास इन्दवः ॥ ११ ॥**

**कण्वास इन्द्र ते मतिं विश्वे वर्धन्ति पौंस्यम् । उतो शविष्ठ वृण्यम् ॥ ३१ ॥** ( ऋ० ८।६।२१, ३१ )

## १० भयभीतः कण्वः ।

कण्वो घौरो मरुता प्रस्तावे भयभीतं कण्वमपश्यत्, तथा हि—

**गन्ता नूनं नोऽवसा यथा पुरेत्या कण्वाय बिभ्युषे ।** ( ऋ० १।३।१७ )

‘पुरा नोऽवसा रक्षणेन निमित्तेन यूयं यथा प्राप्तवन्तः । इत्थानेन प्रकारेण बिभ्युषे भीतियुक्ताय कण्वाय तदनुग्रहार्थं नूनं क्षिप्रं गन्तं प्रानुत ।’ भयभीतः कण्वो मरुतां प्रसादेन भयरहितो भवत्विति प्रार्थनाहेतुरत्रावगम्यते ।

## ११ कण्वस्यावनम् ।

कुत्स आङ्गिरस आश्विस्तवेऽश्विभ्यां कण्वस्यावनं कृतमित्यपश्यत् । यथा—

**याभिः कण्वं प्र सिषासन्तमावतम् ।** ( ऋ० १।११।१५ )

प्रकण्वः काण्वोऽपि तदेवापश्यत्—

**याभिः कण्वमभिष्टिभिः प्रावतं युषमश्विना ।**

**ताभिः ष्व१स्माँ अवतं शुभस्पती पातं सोममृतावृधा ॥** ( ऋ० १।४।१५ )

ब्रह्मातिथिः काण्वोऽपि तथैवाह—

**यथा चित्कण्वमावतं प्रियमेधमुपस्तुतम् ।** ( ऋ० ८।५।२५ )

पुनर्वत्सः काण्वोऽपि मरुतां स्तवे तथैवाह—

**येन कण्वं धनस्पृतम् ( अव ) ।** ( ऋ० ८।७।१८ )

सध्वंसः काण्वोऽपि तथैवाहश्विस्तवे—

**याभिः कण्वं मेधातिथि ( अवतं )** ( ऋ० ८।८।२० )

‘ कण्वपुत्रं मेधातिथिमृषि यामिर्नृतिभिरवनसाधनैरवतम् । ’ एतत्प्रस्कण्वः काण्वोऽपि कथयतीन्द्रस्तुतौ-

**यथा प्रावो मघवन् मेध्यातिथिं यथा नीपातिथिं धने ॥ ९ ॥**

**यथा कण्वे मघवन् व्रसदस्यवि यथा पक्थे दशव्रजे ॥ १० ॥** ( ऋ० ८।४९।९-१० )

‘ हे मघवन् ! त्वं मेध्यातिथि नीपातिथि च धने हिते युद्धे प्रचलिते प्रावः, तथैव कण्वं व्रसदस्यं पक्थं दशव्रजमपि प्रावस्तथै-  
॥ गमाकमपि रक्षणं कुर्विति प्रार्थना । ’ एतदेव वसिष्ठपुत्रो मूळीकोऽभिप्रस्तावे कथयति —

**अग्निः ... प्रावन्न कण्वं व्रसदस्युमाहवे ।** ( ऋ० १०।१५।०।५ )

‘ अग्निराहवे कण्वं व्रसदस्यं च प्रावन् रक्षितवान् । ’ तथा चाथर्ववेदेऽपि मित्रावरुणसंस्तवे ऋषिर्भृगुर कथयति—

**यौ कक्षीवन्तमवथः प्रोत कण्वम् ॥५॥ यौ मेधातिथिमवथो ॥६॥** ( अथर्व० ४।२९।५—६ )

‘ मित्रावरुणौ कक्षीवन्तं कण्वं मेध्यातिथिं चावथ ’ इति भावः । एवं कण्वानामवनं कृतमिन्द्रादिभिरिति सिद्ध्यति ।

## १२ कण्वाय दानम् ।

कण्वो घोरोऽभिस्तवे पश्यति यत्—

**अग्निः कण्वाय सौभगम् ।** ( ऋ० १।३६।१७ )

‘ अग्निः कण्वाय सौभगं शोभनं धनं प्रायच्छदिति ’ शेषः । मरुता स्तवे स एवर्षिर्न्तर्धवावोचत्—

**कण्वं दद प्रचेतसः ।** ( ऋ० १।३९।९ )

‘ हे प्रचेतसो मरुत । युगं कण्वं दद वनं दत्तवन्त । ’ तथा च व्रज्यातिथिं काण्वोऽश्विस्तवे दृष्टवान् यथा—

**युवं कण्वाय नासत्यापिरिप्ताय हर्म्ये । शश्वद्वृतीर्दशस्यथः ॥** ( ऋ० ८।५।२३ )

‘ हे नासत्या ! युवं कण्वायापिरिप्ताय परितप्तायोनीर्दशस्यथ, विविधानि रक्षणानि दत्तवन्तौ । ’ तथा मेधातिथिः काण्व इन्द्रस्तवे  
पश्यति—

**कण्वेभिर्धृष्णवा धृषद्वाजं दर्पि सहस्रिणम् ।** ( ऋ० ८।३३।३, अथर्व० २०।२।३, २०।५७।१६ )

‘ कण्वेभ्यः सहस्रिणं वाजं धनमर्जं वा दर्पि देहीति । ’ इन्द्रस्तवे कण्वपुत्रः प्रस्कण्व आह—

**यं ते स्वधावन्तस्वदयन्ति धेनव इन्द्र कण्वेषु रातयः ।** ( ऋ० ८।४९।५ )

‘ इन्द्र कण्वेषु रातयो दानान्यनेकविधानि ददाति वितरति । ’ एवं कण्वा इन्द्रस्य प्रियाः सन्तीति भावः ।

**युवं कण्वायापिरिप्ताय चक्षुः प्रत्यधत्तं सुष्टुतिं जुजुषाणा ।** ( ऋ० १।११।८।७ )

‘ युवा सुष्टुतिं शोभना स्तुतिं जुजुषाणां सेवमानौ कण्वाय महर्षयेऽपिरिप्तायापिहितवष्टये चक्षुरधत्तम् । ’ एवमश्विनौ कण्वस्यावनं  
वक्तुरित्याह कक्षावानौश्रिजः ।

## १३ ऋषिषु कण्वस्य स्थानम् ।

**कण्वः कक्षीवाप्पुरुमीढो अगस्त्यः श्यावाश्वः सोभर्यर्चनानाः ।**

**विश्वामित्रोऽयं जमदग्निरत्रिरवन्तु नः कश्यपो वामदेवः ॥** ( अथर्व० १।८।३।१५ )

अथर्वो यमस्तवे नामान्येतानि ऋषीणां कथयित्वा त एते ऋषयो नोऽवन्तिविति प्रार्थयति । एतेनैतेषु ऋषिषु कण्वस्य प्रथमं  
स्थानमासीदिति गम्यते । तथा चैतैरेव प्रमाणेन कण्वोऽथर्वणोऽपि प्राक्कालेन एवेति सिद्ध्यति ।

## १४ कण्व-होता ।

स च कण्वो होताऽऽज्ञाता हवनकर्ता वा याजको वाऽऽसीदिति दृश्यते, यथा भौमोऽत्रिवैश्वदेवसूक्ते कथयति—

**प्र सक्ष्णो दिव्यः कण्वहोता त्रितो दिवः सजोषा वातो अग्निः ।** ( ऋ० ५।४।१।४ )

कण्वो होता यस्य, कण्वा वा होतारो यस्य, सोऽग्निरत्र स्तूयते । अग्रेराज्ञातारः कण्वा इति भावः ।

## १५ कण्वतमः कण्वः ।

अतिशयेन श्रेष्ठः कण्वः कण्वतमः । कण्वेषु सर्वेषु श्रेष्ठ इत्यर्थः । स किं करोतीत्याह प्रस्कण्वः काण्व उषाःस्तवे—

अत्राह तत् कण्व एषां कण्वतमो नाम गृणाति नृणाम् । ( ऋ० १।४८।४ )

‘ नृणां सतां तन्नाम कण्वतमो महर्षिर्गृणाति जपति ’ । सत्पुरुषाणां नाम प्रत्युषसि जपतीत्यर्थः ।

## १६ पूर्वे कणाः ।

इन्द्राभिस्तवे परच्छेपो दैवोदासिः कथयति—

दध्यङ् ह मे जनुषं पूर्वां अङ्गिराः प्रियमेधः कण्वो अत्रिर्मनुर्विदुस्ते मे पूर्वे मनुर्विदुः ( ऋ० १।१३९।९ )

‘ दध्यङ्ङङ्गिरा प्रियमेधः कण्वोऽत्रिर्मनुरेते सर्वेऽपि महर्षयो मे दिवोदासपुत्रस्य परच्छेपस्य जनुषं जन्मवृत्तं विदुः । ते सर्वेऽपि मे पूर्वे ऋषयः पूर्वकालीना महर्षयोऽतस्ते मे जन्म यथावज्जानन्ति । परच्छेपात्पूर्वः कण्व इत्यत्र रूपं भवति । कणात् पूर्वा नृषद इति चाग्रे प्रदर्शयिष्याम ।

## १७ कण्वस्य सूनवः ।

कण्वस्य पुत्रा अपि वर्णिता प्रशंसिताश्च दृश्यन्ते मन्त्रवर्णेषु, यथा प्रस्कण्वः काण्वोऽग्निर्मन्त्रेऽपश्यत्—

याभिः कण्वस्य सूनवो हवन्तेऽवसे त्वा । ( ऋ० १।४५।१ )

‘ कण्वस्य सूनवः कण्वस्य पुत्राः प्रस्कण्वादयोऽग्निमवसे रक्षणाय हवन्तेऽग्निमाह्वयन्ति । ’ सवन्मः काण्वोऽप्यश्विनो मन्त्रे तथैव दृष्टवान्— पुत्रः कण्वस्य वामिह सुषाव सोम्यं मधु ॥ ४ ॥

पुत्रः कण्वस्य वामृषिर्गोभिर्वत्सो अवीवृधत् ॥ ८ ॥ ( ऋ० ८।८।४, ८ )

‘ कण्वस्य पुत्रः सवन्मोऽदिवम्या मयुरं सोमरसं सुषाव स चर्षिर्गोभिर्दिवनाववीवृधत्, स्तुत्या तौ समवर्धयत् । ’

## १८ नार्षदः कण्वः ।

शुकोऽपामार्गप्रस्तावेऽपश्यत् यथा—

ब्राह्मणेन पर्युक्तासि कण्वेन नार्षदेन ।

सेनेवैषि त्विषीमती न तत्र भयमस्ति यत्र प्राप्नोष्योषधे । ( अथर्व० ४।१९।२ )

‘ नार्षदेन नृषदः पुत्रेण कण्वेन ब्राह्मणेन, हे ओषधे सहदेविनामके । पर्युक्तासि सर्वतः प्रशंसितासि । त्वं त्विषीमती दीप्तिमती रक्षणस्य रक्षणार्थं सेनेवैषि गच्छसि । यत्र त्वं प्राप्नोषि तत्र रोगादिभयं न भवति । ’ अत्र कण्वो भिषगिति दर्शितम् । स च नृषदः पुत्रः । ऋग्वेदेऽपि कण्वस्य नृषदः पुत्रत्वमुक्तं, यथाह कर्षावानां शिजो दैर्घतमसोऽदिवस्तवे—

महः क्षोणस्याश्विना कण्वाय ।

प्रवाच्यं तद् वृषणा कृतं वां यन्नार्षदाय श्रवो अध्यधत्तम् ॥ ( ऋ० १।११।८ )

‘ कण्वाय नार्षदाय नृषदः पुत्राय महः श्रवो महच्छ्रवणेन्द्रियमदत्तं, तद्वां प्रवाच्यं प्रशंसनीयं कृतं कमास्तीति ’ कर्षावानां श्वनौ स्तीति । कवष ऐल्योऽपि वैश्वदेवस्तवे कण्वं नृषदः पुत्रमेवाह यथा—

उत कण्वं नृषदः पुत्रमाहुस्त इयावो धनमादत्त वाजी ॥ ( ऋ० १०।३१।११ )

‘ नृषदः पुत्रः कण्व इत्याहुस्तस्य गोत्रज्ञा महर्षय इति । ’ अत एव युक्तमेवोक्तं नार्षदः कण्व इति । सूक्तानामृषिषु तु सर्वानुक्रमणी-कारेण ‘ कण्वो घौर ’ इत्युक्तम् । नार्षदः कण्वो, घौरश्च कण्वः, सौश्रवसश्च कण्वो, (काठक सं १३।१२), वौधायनश्च कण्वः (आदित्य-पुराणे ) एते सर्वेऽपि कणा, एका एवेति वा विभिन्ना इति वेति न ज्ञायते । अन्वेष्टव्योऽयं विषय इति ।

## १९ पिब गाय ।

पाहि गायान्धसो मद इन्द्राय मेध्यातिथे । ( ऋ० ८।३३।४ )

मेध्यातिथिः कण्व इन्द्रसंस्तवे मेध्यातिथिमुषिमात्मानमेव संबोध्य ‘ पाहि गाय ’ इति कथयति । तथा च देवातिथिः कण्व इन्द्रस्तुती दर्शयति—

आपित्वे नः प्रपित्वे त्वयमा गहि कण्वेषु सु सचा पिब ॥ ( ऋ० ८।१।३ )  
 ' हे इन्द्र ! कण्वानां यज्ञेषु सोमपानायागच्छ तत्र सोमं च पिबेति भावः । '

## २० कण्वा इव ।

मे-यातिथिः काण्व इन्द्रस्तवे कण्वाणः सुपमा प्रयुनाक्ति यथा—

कण्वा इव भृगवः सूर्या इव विश्वमिद्धीतमानशुः ।

इन्द्रं स्तोमेभिर्महयन्त आयवः प्रियमेधासो अस्वरन् । ( ऋ० ८।३।१६, अथर्व० २०।१०।२, २०।५९।२ )

कण्वा इव भृगव एतन्नामका ऋषयो विश्वं धीतमाध्यातमिन्द्रमानशुः प्रापु । प्रियमेधाम आयवो मानवा ऋषय इन्द्रं महयन्तः स्तोमैरस्वरजस्तुवन् । तथा वत्सः काण्व इन्द्रस्तवे कण्वस्योपमा प्रयुक्तवान्—

अहं प्रत्नेन मन्मना गिरः शुम्भामि कण्ववत् । येनेन्द्रः शुम्भमिद्धे । ( ऋ० ८।६।११, अथर्व० २०।११।१२ )

' अहं वत्स कण्वस्य वंशजः कण्ववत् कण्वर्षिणा सममेव प्रत्नेन पुरातनेन मन्मना मननार्हेण गिरः वाचः शुम्भामि शोभयाम्यलं करोमि । येन इन्द्रः शुम्भं बलं दधाति । ' तथा चाथर्ववेदेऽपि कण्व-बादरायण-भागलय आहुः—

कण्वः—

अत्रिबद्धः किमयो हन्मि कण्ववज्जमदग्निवत् । अगस्त्यस्य ब्रह्मणा सं पिनष्म्यदं किमीन् ।

बादरायणिः—

( अथर्व० २।३२।३, ५।२३।१० )

त्वया पूर्वमथर्वाणो जघ्नू रक्षांस्योपधे । त्वया जघान कश्यपस्त्वया कण्वो अगस्त्यः ॥ ( अथर्व० ४।३७।१ )

भागलिः—

आयुर्ददं विपश्चितं श्रुतां कण्वस्य वीरुधम् । आभारिषं विश्वभेषजीमस्यादृष्टान्नि शमयत् । ( अथ० ६।५२।३ )

आयुर्वेदविषयका मन्त्रा एते कण्वेन बादरायणेन भागलिना च कमेण दृष्टाः । कण्ववत् ब्रह्मणा मन्त्रशक्त्या रोगकृमीनाशयामाति कण्वपुत्र आह । बादरायणिरपि कथयति यद्यथा पूर्वकाले कण्वोऽगस्त्यश्च कया चिदौषया रोगकिमीननाशयत्तथैवाहमपि रोगान् दूरीकरोमीति । भागलिरपि कथयति यद्यथा कण्वस्य वीरुधं कण्वेन रोगनिवारणाय प्रयुक्तां वीरुधं श्रुता विश्रुतां प्रसिद्धा विश्वभेषजी सर्वरोगनिवारणसमर्थमाभारिषम् । तथा च रोगबीजमशमयम् । एतेन कण्वो भैषज्यकर्मणि कुशल आसीदिति गम्यते । अग्रेऽपि कण्वानां भैषज्यं कर्म प्रदर्शयित्वा ।

## २१ कण्वोऽदुहत् ।

यामस्य कण्वो अदुहत् प्रपीनां सहस्रधारां पयसा मर्हा गाम् ॥ ( अथर्व० ७।१०।१, वा. य. १।७।४ )

( काण्व य. १८।७।४, काठक १८।४।९, मैत्रा. २।१०।६; कापिष्ट० २८।४ )

कण्वो ह वा पतस्य श्रायसो दोहं विदांचकार, यथा गां प्रत्तां दुह, पशुमेवैतयाग्निमग्निचिद् दुहे ॥

( काठक. सं २।१।२ )

तामेतां कण्वा सौध्रवसा चिदुः । ( काठक १३।१२ )

सहस्रधारां मर्हा गां कण्वोऽदुहत्, स एवास्या दोहनविधिं प्रथमं विदांचकार । कण्वेभ्यः पूर्वमादृग्विधं दोहनविधिं न कोऽयजानादिति वदयतेऽत्र ।

## २२ कण्वा रोगोत्पादकाः क्रिमयः ।

यथा ऋग्वेदादिषु ऋषिवाचकः 'कण्व' इति शब्दोऽस्ति, तथैवाथर्ववेदेऽयस्येव । तथापि तत्र यत्रकुत्रचिद् रोगबीजवाचकः कण्वशब्दोऽपि दृश्यते । अस्य रोगबीजस्य संशोधनमाधिकारो वा कण्वेनर्षिणा कृतो भवेदित्येतदर्थं तस्यैषः पूजार्थं कण्वेति नाम तस्मै रोगबीजाय रोगकृमिभ्यो वा दत्तमिति तर्कयितुमत्र शक्यते । यथाद्यापि तत्त्वाधिकारकस्यैव नाम तत्तद्विज्ञानसंभूताय तत्त्वाय दीयते, तथैवात्रापि बोद्धव्यम् । तथा हि—

गिरिमेनौ आ वेशय कण्वान् जीवितयोपनान् ॥ ४ ॥

पराच एनान् प्र पुद कण्वान् जीवितयोपनान् ॥ ५ ॥ ( अथर्व० २।२.५।४-५ )

उग्रा हि कण्वजम्भनी तामभक्षि सहस्वतीम् ॥ १ ॥

गर्भादं कण्वं नाशय पृश्निपर्णि सहस्व च ॥ ३ ॥ ( अथर्व० २।२.५।१-३ )

‘जीवननाशकान् कण्वान् रोगबीजान् मुहूरं प्रापय, ग्रामाद्बहिर्निःसारय । कण्वसंज्ञकः कृमिर्गर्भादो गर्भनाशको वर्तते । यो गर्भाशयं प्राप्य तत्रत्यं गर्भं नाशयति मारयति । तं पृश्निपर्णी वीरुन्नाशयति गर्भं च पुनर्यतीति ।’ कण्वस्यर्षेरायुर्वेदविषयक आविष्कारोऽत्र गम्यते ।

अत्रोदभूतेषु मन्त्रेषु कण्वानां प्रिया यज्ञराभा, तत्र तेषां सोमाभिपव, तेषां श्रेष्ठं यज्ञसाधनं, तैः कृतं देवतानामाह्वानम्, कण्वैः स्तोत्राणां ब्रह्मणा च करणं, तेषां गानं, देवतानामीडनं च, देवतासंबन्धिन्या मते संवर्धनं, कण्वस्य भयं, तस्मात्तस्य देवताभिः कृतं परित्राणं, कण्वायानेकविधं देवैर्देवं दानं, महर्षिषु कण्वस्य प्रथमं स्थानं, कण्वस्य होतृत्वं, कण्वस्य श्रेष्ठत्वं, कण्वस्य पूर्वजत्वं, तस्य पुत्राः, तस्य नार्पदत्वं च दर्शितम् । कण्वं कृतं गोदोहनं चात्र प्रदर्शितम् । कण्वस्य भैषज्यनैपुण्यं, तस्य च रोगबीजभूतानां कृमीणामाविष्कारश्चात्र प्रदर्शित । एतत्सर्वं कण्वस्यर्षे वैदग्ध्यविज्ञानायालमिति कृत्वात्रैतं विषयं समापयामः ।

अत्र चत्वारः कण्वा दृश्यन्ते, तत्र कोऽयं कण्वो यस्य नाम शुक्रयजुर्वेदेन सह संबन्धयतेऽथवा शुक्रयजुर्वेदस्य प्रवर्तकः कश्चिदन्यः कण्वोऽस्तीत्येतद्विचार्यत इदानीम् ।

### कण्वस्य निवासस्थानम् ।

शुक्रयजुर्वेदस्यास्य वाजसनेयी-मार्क्यंदिन-संहिताया “एष वो अमी राजा” ( वा० सं० ९।६० ) इति राजविषयमभिव्यक्त्याविशेषणोक्तं, न तत्र स्थानविशेषनिर्देशो वा राज्यविशेषनिर्देशो वा दृश्यते । परं शुक्रयजुर्वेदस्य काण्वसंहिताया तु “एष वः कुरुवो राजा, एष वः पाञ्चालो राजा” ( काण्व सं० ११।११ ) इति कुरुपाञ्चालानां नामनिर्देशपूर्वकं मन्त्रेऽस्मिन्नुल्लेखो दृश्यते, तदसंशयं सूचयति, यदेषा काण्वानां संहिता कुरुणा पाञ्चालानां च साम्राज्येन सह संबद्धेति ।

तैत्तिरीय-संहिताया चास्यैव मन्त्रस्य स्वरूपान्तरं ‘एष वो भरता राजा’ इति दृश्यते, तच्च तस्याः संहितायाः सम्राजां भरतानां संबन्धं प्रकटयति । काठक-मैत्रायणीययोः संहितयोः पाठस्तु ‘एष ते जनते राजा’ ( काठ० १।५।७, मैत्रा० २।६।९ ) इति, स च जानपद-शासनं तत्रत्यानां मानवानां मुख्यप्रमेव सूचयति, यत्रैते द्वे संहिते प्रचलिते स्त इति ।

इत्येवमेकस्यैव मन्त्रस्य विभिन्नासु संहितासु विभिन्नो मन्त्रपाठस्तस्यास्तस्याः संहितायाम्तत्स्थानीयत्वं प्रदर्शयति, देश-विशेषसंबन्धत्वं साम्राज्यविशेषसंबन्धत्वं वा सूचयति । तत्राप्ययं विशेषो यद्वाजसनेय-संहितायां देशवाचकं पदं न विद्यतेऽन्यासु च संहितासु दैशिकं पदं विद्यते । एष एव वाजसनेय-संहिताया विशेषोऽन्याभ्यः संहिताभ्यः । यत्र तु दैशिकं पदं स्यात्, तस्याः संहितायास्तेन प्रदेशेन, तेन च राज्यशासनेन संबन्धः मूतरा स्पष्टो भवति ।

### यजुर्वेद-वृक्षः ।

यजुर्वेदस्य वृक्षे विविधानां यजुःशाखानां स्थानानि देशविशेषप्रचारे वा प्रदर्शित । एष च यजुःशाखावृक्षो पंचवटी-नासिक-क्षेत्रनिवासिनो यज्ञेश्वर-दाजीति नाम्नो वेदविदुषो मैत्रायणी-शाखावलम्बिन सकाशात् प्राप्तो पण्डितवरेण रघुवीरेण विदुषा ( डाकतरेत्युपपदधारिणा ) लवपुरे मुद्रितस्तत्रैव यजुर्वेदवृक्ष एतासां संहितानां देशविशेषा एवं प्रदर्शिता —

कण्वा — कृष्णवेणाप्रदेशे,

काठाः काठकाः — गोदादक्षिणदेशे,

कण्वाः कर्णवटाः — गोमतीपश्चिमदेशे,

मध्यजनाः — सरयूतीरनिवासिनः,

तैत्तिरीयाः — निरंगुल-गोदादक्षिणदेशे,

**मैत्रायणीयाः—** गोदादक्षिणदेशे,

**मैत्रायणीय-शाखाभेदाः—** काश्मीरे, मरुदेशे इ० ।

तैत्तिरीय-मैत्रायणी-काठक-काण्व-वाजसनेयी-मायंदिनीनामितानि स्थानानि देशविशेषा वा यजुर्वेदवृक्षे दृश्यन्ते । परन्तु देशविशेषा एते नैवानुमोदन्ते मन्त्रोक्ताराज्यशासनस्य स्थानानि । यथा काण्व-संहितायां कुरुपाञ्चालानां निर्देशोऽस्ति, प्रदेशावेतौ हस्तिनापुरसमीपतो वर्तन्ते, परं कण्वानां देशविशेषा यजुर्वेदवृक्षे कृणावेणाप्रदेशस्तथा च गोमती-प्रदेशश्चोक्तौ । एतौ देशौ कुरुपाञ्चालानां नैवाधिराज्य आसन् । एतयोर्देशयोरपरि कुरुपाञ्चालानां राज्यं न कदाचिदग्रासीत् । यत एतद्विषये न किमपि प्रमाणं दृश्यते । तथैव तैत्तिरीयाणां संहितायां भरतो राजेत्युक्तम्, भरतना साम्राज्यं हस्तिनापुर एवासीत्, परन्तु तैत्तिरीयाणां गोदादक्षिणदेश इति वेदवृक्ष उक्तम् । एवं वेदवृक्षेण यत्कथितं तत्संहितावचनेन नैव संगच्छते । वेदवृक्षकथनात्मन्त्रोक्तं कथनं बलवत्तरमस्तीति निश्चयः । अतो भरतानां कुरुणा पाञ्चालानां च प्रदेशा उत्तरीया एव ग्राह्या इत्यरमाकं मतिः । तत्र चोत्तरीयाणां कुरुपाञ्चालानां भरतानां च साम्राज्येन सह काण्वसंहितायास्तैत्तिरीय-संहितायाश्च क्रमेण सम्बन्धं संहितोक्तप्रमाणवलेन दृश्यते, न स वेदवृक्षोक्तेन तिरस्कृतुं शक्यः । वेदवृक्षस्य च प्रामाण्यं चिन्त्यमेव, तनु संहितावचनप्रामाण्याद्धीनतरमेवारतीति प्रतिभाति ।

वेदवृक्षोक्तशाखास्थानानि तु उत्तरकालिकानि भवेयुः संहितोक्तस्थानानि पर्यकालीनानि इत्येवं द्वयोरपि म्यानयोश्चरितार्थं स्यादेव ।

## कोऽयं कण्वः ?

अत्रेदानीं कोऽयं कण्व इति विचारणीयम् । किं ऋग्वेदमन्त्रोक्तोऽयं कण्वो घोरौ येनैषा 'काण्वसंहिता' प्रवर्तिता ? नेति ब्रूम । कुत इति चेत्कथ्यते ।

**बौधायनपितृत्वाच्च प्रशिष्यत्वाद् बृहस्पतेः ।**

**शिष्यत्वाद्याज्ञवल्क्यस्य कण्वोऽभून्महतो महान् । ( आदित्यपुराणे )**

अयं कण्वो याज्ञवल्क्यस्य शिष्यः, शुक्लयजुर्वेदाचार्यग्यादित्यस्य प्रशिष्यो, बौधायनस्य पुत्रः । याज्ञवल्क्योऽस्य गुरुः, स तु विदग्धस्य शक्त्यस्य समीपे शिष्यरूपेण स्थित्वा तस्याश्रमे वेदाध्ययनार्थमुपि-त्वा, ऋग्वेदमर्थीतवान् व्यक्तवांश्च । अत एतत्सिद्धयति यदस्य कण्वस्य गुरोर्भाजवल्क्यात् पूर्वमेव ऋग्वेदस्याश्रमैषा संहिता आसीदिति, या तु शाकलप्रवर्तितत्त्वान्छाकलमंहितेतीदानीं प्रसिद्धा । अतः ऋग्वेदमन्त्रोक्त कण्वो घोर एतस्याः काण्वसंहिताया प्रवर्तको भवितुमशक्यः ।

कण्वो नार्षदस्तु यदि घोरान्त्यो भवेत्तर्हि स तस्मात्कण्वोऽपि प्राचीनतरो दृश्यते । अतः स एतस्याः काण्वसंहितायाः प्रवर्तको नैव भवितुं शक्यते ।

अतः कोऽपि तृतीय एव कण्वोऽभवेद्यः स्वत्वेन शुक्लयजुर्वेदं प्रावर्तयत् । स च बौधायनस्य पुत्रो याज्ञवल्क्यशिष्य कण्वो योऽस्याः संहिताया प्रवर्तको दृश्यते । अतः कण्वो बौधायन इत्यस्य प्रसिद्धिः ।

शुक्लयजुषामाचार्य आदित्यः । तस्माद्याज्ञवल्क्येनायातयामानि यजुंयधीतानि । एव कण्वस्तु तस्माद्याज्ञवल्क्यादेव यजुर्वेदं शुक्लमर्थीतवान् । ततो याज्ञवल्क्यसमकालीन एवैष कण्वो दृश्यते । याज्ञवल्क्यस्य काले निश्चितं सत्यस्य कालोऽपि ज्ञातुं शक्यते । अतो याज्ञवल्क्यस्य कालविषयमत्रेदानीं विचारयामः ।

## याज्ञवल्क्यस्य कालः ।

सैषा शुक्लयजुर्वेदस्य संहिता वाजसनेयी, मायंदिनीया वा संहितेति कथ्यते । वाजसनेयोऽयमेव याज्ञवल्क्यः । वाजसनिस्तस्य पिता, तस्य पुत्रोऽयं वाजसनेयः, तेन प्राप्ता संहिता वाजसनेयी ।

तस्यास्य वाजसनेयस्य याज्ञवल्क्यस्याश्रमो वृद्धनगरे ( भाषायामाबूपाहाड इति ग्ध्यातस्य ) ऐशान्या दिशि ( श्रीमता गायकवाटमहाराजानां राज्ये महमाणापान्ते अहमदाबादनगरम्योत्तरम्यो दिशि ) प्रख्यातोऽभूदिति प्रसिद्धिः पुराणेषु दृश्यते । यथा—



तथाभ्योऽपि च तत्रास्ति याज्ञवल्क्यसमुद्भवः ।

आश्रमो लोकविख्यातो मूर्खानामपि सिद्धिदः ॥ ( स्कन्दपुराणे नागरखण्डे अ० १०९ )

अस्यैव वृद्धनगरस्य नामान्तराणि चमत्कारपुरं, आनन्दपुरं, आनर्तपुरं, वर्धमानपुरमित्यादीनि बहूनि पुराणान्तरेषु सन्ति । अस्मिन्नेव नगरे याज्ञवल्क्यः सहशिष्य उवास । महात्मनोऽस्य याज्ञवल्क्यस्य ज्ञानविज्ञानाभ्या समाकृष्टेन जनकेन समाहूतोऽयं मिथिलां गत्वा, तस्मै राजे ब्रह्मज्ञानमुपादिश्य, तत्रैव न्यवसत् । तथा हि—

ब्राह्मणैर्याज्ञवल्क्यस्तु विज्ञातो येन केन तु । विदेहेन ततः प्राप्तः श्रवणार्थं नराधिपः ।

वेदान्तानां च सर्वेषां रत्नाख्येन महीभुजा ॥ ( स्क० पु० नागरखण्डे )

स्कन्दपुराणस्य नागरखण्डस्यैकोनत्रिंशत्तितमेऽध्याये याज्ञवल्क्यस्य महात्मने संक्षिप्तं चरितं विद्यते । तत्र याज्ञवल्क्यस्यैवं-  
दाध्यापको विदग्धः शाकल्य आसीदिति कथितम् । सोऽपि विदग्धः शाकल्योऽत्रैव वर्धमानपुरं (वडनगरे)ऽवगम्यति पुराणेषु  
दृश्यते । एष एव विदग्धः शाक-यो जनकगमाया परास्ते याज्ञवल्क्येनेति बृहदारण्यकस्य तृतीयेऽध्याये (बृ० उ० ३।१।२६, शतपथे  
ब्राह्मणे वा अनुदशे काण्डे १।४।१८ ) कथितम् ।

शतपथस्य ब्राह्मणस्य रचनाकालः ।

शतपथायं ब्राह्मणं भगवता याज्ञवल्क्येन रचितमिति महाभारते लिखितं यथा—

प्रतिष्ठास्यति ते वेदः सखिलः सोत्तरो द्विज । कृत्स्नं शतपथं चैव प्रणेभ्यसि द्विजर्षभ ॥११॥

ततः शतपथं कृत्स्नं सरहस्यं ससंग्रहम् । चक्रे सपरिशेषं च हपेण परमेण ह ॥ १६ ॥

कृत्वा चाध्ययनं तेषां शिष्याणां शतमुत्तमम् ॥१७॥

सूर्यस्य चानुभावेन प्रवृत्तोऽहं नराधिप । कर्तुं शतपथं चेदमपूर्वं च कृतं मया ।

यथाभिलषितं मार्गं तथा तच्चोपपादितम् ॥२३॥ ( म० भा० मोक्ष० अ० १४४ )

स्वयं याज्ञवल्क्य एवैतत्कथयति, यदहं भगवन् आदित्यस्यादेशात्सरहस्यं कृत्स्नं शतपथं कृतवानिति । अतो यस्तु शतपथस्य  
ब्राह्मणस्य कालः स एव याज्ञवल्क्यस्य कालो भवति । तथा च स एव कण्वस्यापि कालरतस्य याज्ञवल्क्यशिष्यत्वात् । तथा च—

एतेन ह्यन्द्रोतो देवापः शौनको जनमेजयं पारिक्षितं याजयामास ॥ ... तदेतद्वाधयाभिगीतं

आसन्दीवति धान्यादं रुक्मिणं हरितस्त्रजम् । अवध्रादध्वं सारंगं देवेभ्यो जनमेजयः । (श० ब्रा० १।३।६।१-२)

एतेन ह वा ऐन्द्रेण महाभिषेकेण तुरः कावषेयो जनमेजयं पारिक्षितमभिषेच ।

तदेषा यज्ञगाथाभिगीयते . आसन्दीति० ( ऐ० ब्रा० ८।२१ )

भीष्म उवाच— अत्र ते वर्तयिष्यामि पुराणमृषिसंस्तुतम् । इन्द्रोतः शौनको विप्रो यदाह जनमेजयम् ।

आसीद्वाजा महावीर्यः पारिक्षिज्जनमेजयः । एवमुक्त्वा तु राजानमिन्द्रोतो जनमेजयम् ।

याजयामास विधिवद्वाजिमेधेन शौनकः । ( महाभारत, अ० १४९ )

एष पारिक्षिज्जनमेजयः पितामहाद्वाप्सादपि प्राचीनतमोऽत एव शौनकम्तं याजयामासेति परोक्षभूतप्रयोगोऽत्र भीष्मेण प्रयुक्तः ।  
यस्तु युधिष्ठिरस्य प्रपौत्रो जनमेजयः पारिक्षित्स्त्वन्य एवैतस्मात् ।

द्वौ जनमेजयावास्ताम् । एको युधिष्ठिरस्य महाराजस्य प्रपौत्रो, द्वितीयस्तु युधिष्ठिरात्प्राचीनो द्विचत्वारिंशत्तम पूर्वज इति ।  
अस्यैवेतिहासं भीम आह, तं शौनको याजयामासेति । स एवेतिहासः शतपथे ऐतरेये च ब्राह्मणे दृश्यते । शतपथं ब्राह्मणं तु  
याज्ञवल्क्येनादित्यस्याचार्यस्याजया रचितम् । अतो यः शतपथस्य कालः स एव याज्ञवल्क्यस्य कालो भवितुं शक्यः ।

कृत्तिकास्वादधीति । एता ह वै कृत्तिकाः प्राच्यै दिशो न च्यवन्ते सर्वाणि ह वान्यानि

नक्षत्राणि प्राच्यै दिशश्च्यवन्ते ॥ ( श० ब्रा० २।२।१-२ )

अत्र कृत्तिकानां पूर्वस्यां दिशि च्यवनरहितमवस्थानं केनापि ऋषिणा दृष्टं, तदेव शतपथे तेन वर्णितम् । अत एव ' न च्यवन्ते '

इति वर्तमानकालीनः प्रयोगोऽत्र संगच्छते । इदानीं तु प्राची दिशं त्यक्त्वान्यत्रोर्ध्वं गताः कृतिकाः । तेषां तदुपर्ययनं पञ्चसहस्रवर्षैरेव भवितुं शक्यते । अतः कृतिकानां प्राचीदिगवस्थानं शकपूर्वं ( संवत्पूर्वं वा ) त्रिसहस्रवर्षेभ्यः प्राक्कालीनमासीदिति निश्चीयते खगोल-विद्विः । एतच्छ्रीमद्विः शंकर-बालकृष्ण-दीक्षितैः स्वीये भारतीय-ज्योतिषशास्त्रे प्रमाणैरनेकविधैः परिष्कृतम् ।

यस्तु शतपथस्य कालः स एव भगवतो याज्ञवल्क्यस्य कालः, स एव विदग्धस्य शाकल्यस्य कण्वस्य बौधायनस्य चेति दर्शितं पूर्वमेव । अत एवोच्यते याज्ञवल्क्यस्य जनकस्य च समीय इत पूर्व पञ्चसहस्रवर्षीयं, तस्य च ऋग्वेदाभ्यापको विदग्धः शाकल्यो यो माण्डूकेयस्य पुत्रो, येन च ऋग्वेदस्य पदपाठः कृतः । तमेतं शाकल्यं याज्ञवल्क्यः परास्तवान् जनकसभायाम् ( बृ० उ० ३।१।२६ ) । याज्ञवल्क्यस्य च शिष्यः कण्वः । अतः सोऽपि एतत्कालीन एवेति सिद्धम् ।

श्रीमद्भागवतस्य नवमस्कन्धे विश्वामित्रस्य पूर्वं पुरुषा दर्शिता । त एते— १ नारायणः, २ ब्रह्मा, ३ अत्रिः, ४ सोमः, ५ बुधः, ६ पुरुरवा, ७ विजयः, ८ भीमः, ९ काश्र्वन, १० होत्रकः, ११ जहनुः, १२ पुरु, १३ बलाकः, १४ अजाक, १५ कुश ( इषीरथः ), १६ कुशम्बुः ( कुशिकः ), १७ गाधी, १८ विश्वामित्रः ।

एष विश्वामित्रो मण्डलं तृतीयमृग्वेदस्यापश्यत् । एतदाह सर्वानुक्रमणीकारः कात्यायनो यथा—

‘ गाधिजो विश्वामित्रः स तृतीयं मण्डलमपश्यत् इति ’ । अस्यैव विश्वामित्रस्य कृत्रिमः पुत्रः शुनःशेषो देवरातः, स तु हरिश्चन्द्रस्य नरमेधगाथाया प्रसिद्धः ( ऐ० ब्रा० ५।१३ ) । स एष शुनःशेषः ऋग्वेदस्य प्रथममण्डलस्थानि कतिपयानि सूक्तान्यपश्यत् । अस्यैव शुनःशेषस्य पुत्रः कति, तस्य पुत्रः शुनःपुत्र इति, तस्य च पुत्रश्चारायणो यो देवरात इति वा प्रसिद्धः । एष चारायणो यजुर्वेदस्य चरकान्तर्गतयाश्चारायणीय-शाखायाः प्रवर्तकः । एष चारायणिर्देवरातो, ब्रह्मरातो, यज्ञवल्क्यो, वाजसनिरित्याद्यनेकैर्नामभिः प्रसिद्धः । अस्यैव पुत्रो याज्ञवल्क्यो वाजसनेयो देवरातिरिति । अत एवाहुश्चतुर्वेदभाष्यकाराः सायणाचार्या कण्वसंहिताभाष्योपक्रमे—

वाज इत्यन्नस्य नामधेयं, अन्नं वै वाज इति श्रुतेः । वाजस्य सनिर्दानं यस्य महर्षेरस्ति सोऽयं वाजस-निस्तस्य पुत्रो वाजसनेय इति तस्य याज्ञवल्क्यस्य नामधेयम् ।

बृहदारण्यकोपनिषद्भाष्ये शंकराचार्यप्रज्यपादाः कथयन्ति— ‘ एवमाह स्मोक्त्वा किल याज्ञवल्क्यो यज्ञस्य वल्को वक्ता यज्ञवल्कः, तस्यापत्यं पुमान्याज्ञवल्क्यो देवरातिरित्यर्थः । ’ तथा च—

यज्ञानां यज्ञकाण्डानां वेदानां वल्को वक्ता वचनशीलो यज्ञवल्कः । ब्रह्मरातो महाकर्मठः । तस्य गोत्रा-पत्यं पुमान्याज्ञवल्क्यः । ( कृष्णसृष्टिकृते वेदनिर्माणे )

एवं विश्वामित्रस्य कृत्रिमः पुत्रः शुनःशेषः, तस्य प्रपौत्रो यज्ञवल्कश्चारायणीयशाखाप्रवर्तकः । तस्य पुत्रो याज्ञवल्क्यः स चायात-यामानि शुक्लानि यजुषि सूर्यादाचार्यःप्राप्य, वाजसनेर्या-मार्थेदिनीय-शाखायाः प्रवर्तकोऽभूत् । तस्य याज्ञवल्क्यस्य पुत्रः कात्या-यनी-संजातः कात्यायनः परासा शाखानां ग्रन्थनिर्माणकरणत्वापरस्कर इति नाम्ना प्रसिद्धः । स एव वररुचेः पिता ।

एष याज्ञवल्क्यो वर्धमाननगरे चमत्कारपुरे पूर्वोक्ते सहस्रशिष्यं विदग्धं शाकल्यमृग्वेदाचार्यमृग्वेदाभ्यायनार्थमुपेयिवान् । एष एवाचार्य ऋग्वेदस्य शाकलशाखाया प्रवर्तकः । अनेन शाकल्येनाजतो याज्ञवल्क्यो राजानं चमत्कारपुरस्य याजयामास । तेन राज्ञा केनापि निमित्तेनापमानित उपहसितश्च याज्ञवल्क्यो राजानं तं, पुन पुनश्चोद्यमानोऽप्याचार्येण नैव पुनर्जगाम, न च तं पुनर्याजयामास । तेन क्रुद्धः शाकल्यो याज्ञवल्क्यं स्वकीयाजाम्ब्रकारिणमिति मत्वाधिचिक्षेप । तेन याज्ञवल्क्यः शाकल्यं त्यक्त्वा, प्रभासक्षेत्रं संप्राप्य, स्वकीयमेव मातामहं यजुर्वेदाचार्यं वैशंपायनं यजुषामभ्यायनार्थं जगाम । तत्र वसता याज्ञवल्क्येन सह वैशंपायनम्यापि तथैव केनापि निमित्तेन कलहोऽभूत्, येन तमप्याचार्यं याज्ञवल्क्यस्तयाज ( श्री० भागवते १।२।६, ब्रह्माण्डपुराणे पृ० अ० ५, विष्णुपुराणे ३।५, आत्मपुराणे १० )

एवं त्यक्त्वाचार्यद्वयस्त्यक्तवेदद्वयश्च याज्ञवल्क्य आचार्यमादित्यं गत्वा तमुपास्य तस्मादयातयामानि यजुषि प्राप्तवान् ।

आदित्यानीमानि शुक्लानि यजुषि वाजसनेयेन याज्ञवल्क्येनाख्यायन्ते । ( श० ब्रा० १।४।१।५।३३ )

उद्दालकस्य शिष्यो याज्ञवल्क्यः । ( श० ब्रा० १।४।१।४।३३ )

अयातयामानि तु भानुगुप्तान्यन्यानि जातानि तु नीरसानि ।

यजुषि तेषामथ याज्ञवल्क्यो हयातयामानि रवेरवाप ॥ ( देवी भा० ९।५ )

इत्युक्तो भगवान् सूर्यो याज्ञवल्क्यं महामुनिम् ।

वेदान् पङ्क्तसहितान् रदस्यादिसमन्वितान् ।

चतुरोऽध्यापयामास स्थापयित्वा रथे निजे ॥

प्राप्य वेदान् मुनिः सर्वान् गृहस्थाश्रमधर्मवान् ।

चतुर्वेदार्थिनः शिष्यानुपनिन्ये महामनाः ।

चतुर्धा दृश्यते तस्य मुनेः शिष्यौघमण्डली ।

अध्यापनरतस्यैषा याज्ञवल्क्यस्य धीमतः ॥ ( आत्मपुराणे अ३८-४५ )

भगवत्पूज्यपादाः शंकराचार्या अपि याज्ञवल्क्यं चतुर्वेदमेवाहुः ( वृ० उ० शंकरभाष्ये ३।१।२ ) ।

स तथेति प्रतिज्ञाय प्रविश्यादित्यवाजिनः ।

कर्णेऽपठत्ततो वेदांश्चतुरोऽपि च तन्मुखात् ।

( स्कं० पु० ना० खं० २७८ )

एवमेव याज्ञवल्क्यो ब्रह्मसंप्रदायं त्यक्त्वादित्यसंप्रदायं स्वीकृतवान् । वेदानां द्वौ संप्रदायौ, ब्रह्मसंप्रदाय आदित्यसंप्रदायश्च । तथा हि-

ब्रह्मणः संप्रदायोऽयं व्याससंदर्शितोऽभवत् ।

विभक्तस्यैव वेदस्य संप्रदायो द्विधा मतः ।

ब्रह्मणः संप्रदायस्तु आदित्यस्य तथा मतः ।

अयातयामसंज्ञोऽयं कृत्स्नकर्मप्रकाशकः ॥ (जाबालसंहितायां अ० १)

ब्रह्म-संप्रदायः

[ ऋग्वेदस्य ]

आश्वलायनायाः २० शाखाः

[ यजुर्वेदस्य ]

कृष्ण-यजुर्वेदस्य ८६ शाखाः

[ सामवेदस्य ]

जैमिनी-राणायणीयायाः शाखाः

[ अथर्ववेदस्य ]

पिपलादी शाखा

आदित्य-संप्रदायः

[ ऋग्वेदस्य ]

शांख्यायनी ( बाष्कला कौषीतकी वा )

[ यजुर्वेदस्य ]

काण्व-माध्यन्दिनायाः १५ शाखाः

[ सामवेदस्य ]

कौथुमी शाखा

[ अथर्ववेदस्य ]

शौनकीया शाखा

ब्रह्म-संप्रदाये एवमृषिपरंपरा दृश्यते- ब्रह्मा- वसिष्ठः- शक्तिः- पराशरः- व्यास । एतस्माद् व्यासात्पैल ऋग्वेदस्य, वैशंपायनो यजुर्वेदस्य, जैमिनिः सामवेदस्य, सुमन्तुरथर्ववेदस्य प्रवर्तकोऽभूदिति ।

आदित्यसंप्रदाये तु आदित्याद्याज्ञवल्क्यस्तस्मात् शांख्यायन ऋग्वेदस्य, काण्वमाध्यन्दिनौ यजुर्वेदस्य, सामश्रवा कौथुमश्च सामवेदस्य, शौनकोऽथर्ववेदस्य प्रवर्तकोऽभूदिति ।

एवं सनातनावेतौ द्वौ संप्रदायौ वेदस्यैकस्यैवैतौ द्वौ प्रवाहाविव दृश्येते ।

### काण्वो याज्ञवल्क्यशिष्यः ।

कृष्णयजुर्वेदान्तर्गत-बौधायनशाखा-प्रवर्तको बौधायन, तस्य पुत्रोऽयं काण्वो याज्ञवल्क्यः आदित्यादागतानि शुक्रानि यजुष्यधीतवान् । तेनायं काण्वो बौधायनो याज्ञवल्क्यस्य शिष्यो भगवत् आदित्यस्य प्रशिष्योऽस्याः संहितायाः प्रवर्तकः । यद्यप्येषो याज्ञवल्क्य-शिष्यस्तथापि स यजुर्वेद-पठने गुरुं नानुगतवान् । तेन माध्यन्दिन-संहितायाः काण्व-संहितायाश्च पठने महान्भेदो दृश्यते । काण्वा मन्त्रानृग्वेदवत्पठन्ति, माध्यन्दिनाश्च स्वकीयां परिपाटीमनुसरन्ति । पुरुषेति काण्वाः, पुरुषेति माध्यन्दिनाः पठन्ति । एवमेवान्योऽपि महान्भेदो पठन-परिपाठ्या दृश्यते ।

आदित्यसंप्रदायान्तर्गतान्येतानि शुक्रानि यजुषि सन्तीति सर्वैः श्रूयते । तान्येतानि काण्वपरिपाटीवदुक्तानि वा वाजसनेयीपरिपाटी-  
वदुक्तान्यादित्येनेति नेदानीं ज्ञातुं शक्यते । यदि कण्वो याज्ञवल्क्यादभ्येतवांस्तर्हि केन कारणेन मन्त्रोच्चारणे तं नानुसृतवानित्यपि  
नैव ज्ञायते । याज्ञवल्क्य-संहितायाः काण्वसंहितायाश्च पाठभेदो वर्णोच्चारणभेदश्च निमित्तेन केन संभूत इत्येष चिकित्सनीयोऽयं विषयः ।

संवतः पूर्वं त्रिसहस्रवर्षमिते समये कण्वो याज्ञवल्क्यादेतानि यजुषि प्राप्तवान् । नैतेन शुक्रयजुषामेष एव कालो भवितुं शक्यः ।  
तेषां याज्ञवल्क्यादपि पूर्वमाचार्यस्यादित्यस्य संनिधौ सुगुप्तत्वात् । अत एव शुक्रयजुषां समयोऽज्ञात एव, न ज्ञायते केनापि तानि  
कदा गुप्तानि तत्रादित्यस्य सकाशे इति । परं वाजसनेयी-संहितायाः प्रातिकालः काण्व-संहितायाश्च संग्रह-काल उक्तपूर्वं इत्येवान्न  
साधितमस्माभिः ।

### कर्मकाण्ड-ज्ञानकाण्ड-विषयः ।

अस्यां संहितायामध्यायाश्चत्वारिंशत् । एकोनचत्वारिंशदध्यायावधि कर्मकाण्डमनेकविधं, तदूर्ध्वं चत्वारिंशत्तमेऽध्याये ब्रह्मविद्या  
चेति सांप्रदायिकाः कथयन्ति । चत्वारिंशदध्यायान्तर्गतानां मन्त्राणां मननेन नैतन्मतं सांप्रदायिकानां परिपुष्यति । तथा- **सहस्र-**  
**शीर्षेति** पुरुषमेधसंज्ञकः ( वा० सं० अ० ३१; का० सं० अ० ३५ ), **तदेवाग्निस्तदादित्येति** सर्वमेधसंज्ञक ( वा० सं०  
अ० ३२, काण्व० ३५ ), **ऋचं वाचमिति** शान्तिकरणं ( वा० सं० ३६, काण्व. ३६ ) एवमनेका अध्याया अध्यात्मविद्याप्रकाशका  
दृश्यन्ते । तेषां मन्त्राणां कर्मणि प्रयुक्तत्वात्तेषां ब्रह्मविद्याप्रकाशकत्वं नैव विलोप्युं शक्यते । **सर्वे वेदा यत्पदमामनन्तीति** श्रुतेः  
( कठ उ. १।२।१५ ) सर्वेषां वेदानां तत्पदप्रकाशकत्वेन केवलं कर्मण्यप्रयुक्ता मन्त्रा एवाध्यात्मविद्याप्रकाशका इति मन्तुं नैव शक्यते ।  
अस्मन्मते तु कर्मणि प्रयुक्ता अपि बहवः सन्ति मन्त्राः, येषु ब्रह्मविद्या स्फुटतरं प्रकटीभूताऽनुभूयते । अत एव **‘यस्तन्न वेद किमुचा**  
**करिष्यति, य इत्तद्विदुस्त इमे समासते** । ( ऋ. १।१६४।३९ ) इति युक्तमेवोक्तमात्मनायेन । अतो ब्रह्मण प्रतिपादनं वेदमन्त्रे-  
ष्ववश्यमेव तिलेषु तैलवत् साधकैर्द्रष्टव्यं, ये तु तत्र तन्नानुभवितुं शक्नुवन्ति, तेषां वेदमन्त्रैः किमपि प्रयोजनं नैव सेत्स्यतीति स्वयं  
वेद एव कथयति ।

### ईशावास्योपनिषद् ।

१ सर्वासूपनिषत्सु मन्त्रोपनिषदीशावास्येति प्रसिद्धा । सा काण्वमहितान्तर्गता शंकराचार्यप्रभृतिभिः सर्वैराचार्यैः स्वीकृता । तथैव-  
शापनिषद्वाच्यभूता बृहदारण्यकोपनिषदि या प्रसिद्धा सापि काण्वानामेवानुमोदिता एतैराचार्यैः ।

तथापि नैवैतेन वाजसनेयिसंहितेत्तेशोपनिषत्परित्यक्ता तैरिति मन्तुं शक्यते । तिरस्कृतव्यविषये प्रमाणाभावात् ।

भर्तृप्रपञ्चाख्यवृत्तिकारैरुत शंकराचार्यैः प्राचीनैर्मध्यदिनीयशोपनिषत् तेषामेव बृहदारण्यकोपनिषच्च व्याख्याता, अतस्ते द्वेऽपि  
प्रामाणिक एव ।

### आदर्शग्रन्थाः ।

तत्र मुद्रितग्रन्थाः-

- ( १ ) निरर्थमागराख्ये यंत्रालये मुंबय्यां मुद्रिता उवटमहीधरभाष्यद्वयसमेता वाजसनेयि-संहिता,
- ( २ ) वाजसनेयि शुक्रयजुर्वेद-संहिता माध्यंदिनीयशाखापाठभेदसमेता मिश्रभाष्ययुता मुंबय्या श्रीविकटेश्वरमुद्रणालये मुद्रिता,
- ( ३ ) शुक्रयजुर्वेदसंहिता पत्रात्मका मुंबय्या मुद्रिता,
- ( ४ ) शुक्रयजुर्वेदसंहिता अजमेर-वैदिकयंत्रालये मुद्रिता,
- ( ५ ) शुक्रयजुर्वेदीय-काण्वसंहिता मद्रासनगरे मुद्रिता,
- ( ६ ) शुक्रयजुर्वेदसंहिता उवटमहीधरभाष्यद्वयसमेता स्थूलाक्षरा काश्यां मुद्रिता,
- ( ७ ) काण्वसंहिता सायणभाष्यसहिता काश्या चांखाम्बा-यंत्रालये मुद्रिता,
- ( ८ ) शुक्रयजुर्वेद-संहिता पण्डित-दुर्गादास-लाहिरी-शर्मणा-संपादितानेकभाषानुवादसहिता ( प्रथमो भागः ) कलिकातामुद्रिता,
- ( ९ ) सैव वर्गायभाषानुवादसहिता कलिकातामुद्रिता,

( १० ) सैव भाष्यद्वयसमेता शार्मण्य-देशमुद्रिता काण्वपाठसंहिता ।

( ११ ) काण्वयजुःसंहिता धारवाडनगरे मुद्रिता पत्रात्मका ।

### लिखितग्रन्थाः ।

१ नासिक-पञ्चवटी-क्षेत्रात्प्राप्ता काण्वयजुःसंहिता वैदिकानां अन्ययनपरंपरया शोधिताऽतीवशुद्धा पत्रात्मका । एषा संहिता पण्डितवर्य-श्रीधर-अण्णाशास्त्री-वारे इत्येतेषां महत्या कृपया श्रीमद्भूषो वेदमूर्तिभ्यो घनपाठिभ्य काण्वशास्त्रीभ्यो नीलकण्ठवामन-डिंगरे-जोशीनामकेभ्यो नासिकक्षेत्रवास्तव्येभ्यः प्राप्ता, संपूर्णा ।

२ सैव तथैव पदपाठयुता ।

३ धारवाडनगरात्प्राप्ता काण्वयजुःसंहिता ।

४ महिश्नूरनगरात्प्राप्ता काण्वयजुःसंहिता ।

सर्वाण्येतानि लिखितपुस्तकानि शुद्धान्यासन्नतस्तेषां वैदिक-पाठनिश्चयकरणे महत्साहाय्यं प्राप्समिति ।

### पाठविशेषाः ।

उत्तरीयेषु महाराष्ट्रीय-काण्वसंहिता-लिखित-ग्रन्थेषु तथा च दाक्षिणात्येषु ग्रन्थेषु यत्र कुत्रापि लेखनभेदो पाठभेदश्च दृश्यते यथा-

( उत्तरीयेषु )

जागतेन छन्दसा

अच्छिद्रेण

त्वा छन्दसा

( दाक्षिणात्येषु )

जागतेन च्छन्दसा

अच्छिद्रेण

त्वा च्छन्दसा

एवं दाक्षिणात्येषु सर्वत्र चकाराधिक्यमुत्तरीयेषु च ग्रन्थेषु चकाराहित्यं दृश्यते । अत्रास्माभिस्तत्तरीयः पाठः स्वीकृतः । दाक्षिणात्योऽपि नैव दुष्ट इत्यस्माकं मतिः । सोऽपि व्याकरणशुद्ध एव । ईदृग्विधान्पाठांस्त्यक्त्वा न केऽपि पाठभेदा दाक्षिणात्येषूत्तरीयेषु च ग्रन्थेषु दृश्यन्ते ।

### संशोधकाः ।

अस्याः काण्वसंहितायाः पाठनिश्चये परिशोधने च येषां महत्साहाय्यमभूत् इदानीं पूजनीयाः—

१ श्रुतिपारंगताः काव्यतीर्था मीमांसका विद्याभरणभूषिताः श्रौतस्मार्तकोविदाः श्रीधर-अण्णाशास्त्री-वारे — शतपथब्राह्मणस्य संपादकाः नासिकनिवासिनः । एतैरेकैविधं साहाय्यं लिखितग्रन्थप्राप्तिमारभ्य मुद्रणस्यान्तपर्यन्तं कृतमतस्ते प्रथममत्र सुपूजनीया ।

२ श्रीमन्तो वेदमूर्तयो घनपाठिनश्चिदंबरशर्माणो याज्ञवल्क्याश्रमनिवासिनो बंगलोरकृतवास्तव्याः काण्वयजुर्वेदाचार्याः महिश्नूरस्था आस्थानविद्वांसः ।

एतैर्यजुर्वेदाचार्यैर्यजुर्वेदस्यास्य शुक्लस्य काण्वशाखायाः संहितायाः संशोधनकर्मणि पाठनिर्णयकर्मणि चातीव साहाय्यं कृतमतस्ते सर्वेऽपि प्रशंसामर्हन्ति ।

शुक्लयजुषा माध्यादिनीया संहिता तु पूर्वमेवास्माभिः प्रकाशिता । इदानीं काण्वानामेषा संहितेश्चरकृपया सुद्राग्य वेदाभ्यायिनां वैदिकधर्मिणां पुरस्तात् प्रकाश्यते, गैषा वैदिकधर्मश्रद्धालूनां प्राप्स्यत्यादरस्य स्थानमित्याशास्ते ।

औधराजधान्यां विजयादशम्याम्  
शकीय १८६२ आश्विन शु० १०

॥ भट्टाचार्यः श्रीपादशर्मा दामोदरसूनुः सातवळेकरकुलजः

# शुक्ल-यजुर्वेदीय- काण्व-संहिताध्यायानां सूची ।

| अध्यायः                | पृष्ठानि | अध्यायः                  | पृष्ठानि |
|------------------------|----------|--------------------------|----------|
| <b>प्रथमो दशकः ।</b>   |          | <b>तृतीयो दशकः ।</b>     |          |
| १ प्रथमोऽध्यायः        | १-४      | २१ एकाविंशोऽध्यायः       | ८७-९४    |
| २ द्वितीयोऽध्यायः      | ४-८      | २२ द्वाविंशोऽध्यायः      | ९५-९९    |
| ३ तृतीयोऽध्यायः        | ८-१२     | २३ त्रयोविंशोऽध्यायः     | ९९-१०५   |
| ४ चतुर्थोऽध्यायः       | १२-१५    | २४ चतुर्विंशोऽध्यायः     | १०५-१०९  |
| ५ पञ्चमोऽध्यायः        | १५-१९    | २५ पञ्चविंशोऽध्यायः      | १०९-११४  |
| ६ षष्ठोऽध्यायः         | १९-२३    | २६ षड्विंशोऽध्यायः       | ११५-११८  |
| ७ सप्तमोऽध्यायः        | २३-२६    | २७ सप्तविंशोऽध्यायः      | ११८-१२२  |
| ८ अष्टमोऽध्यायः        | २७-३०    | २८ अष्टाविंशोऽध्यायः     | १२२-१२३  |
| ९ नवमोऽध्यायः          | ३०-३३    | २९ एकोनविंशोऽध्यायः      | १२४-१२७  |
| १० दशमोऽध्यायः         | ३३-३६    | ३० त्रिंशोऽध्यायः        | १२७-१३०  |
| <b>द्वितीयो दशकः ।</b> |          | <b>चतुर्थो दशकः ।</b>    |          |
| ११ एकादशोऽध्यायः       | ३७-४१    | ३१ एकत्रिंशोऽध्यायः      | १३१-१३४  |
| १२ द्वादशोऽध्यायः      | ४१-४७    | ३२ द्वात्रिंशोऽध्यायः    | १३५-१४०  |
| १३ त्रयोदशोऽध्यायः     | ४७-५३    | ३३ त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः  | १४०-१४३  |
| १४ चतुर्दशोऽध्यायः     | ५४-५८    | ३४ चतुस्त्रिंशोऽध्यायः   | १४३-१४५  |
| १५ पञ्चदशोऽध्यायः      | ५८-६२    | ३५ पञ्चत्रिंशोऽध्यायः    | १४६-१४९  |
| १६ षोडशोऽध्यायः        | ६३-६८    | ३६ षड्त्रिंशोऽध्यायः     | १५०-१५१  |
| १७ सप्तदशोऽध्यायः      | ६८-७३    | ३७ सप्तत्रिंशोऽध्यायः    | १५१-१५३  |
| १८ अष्टादशोऽध्यायः     | ७३-७९    | ३८ अष्टत्रिंशोऽध्यायः    | १५३-१५५  |
| १९ एकोनविंशोऽध्यायः    | ७९-८३    | ३९ एकोनचत्वारिंशोऽध्यायः | १५५-१५६  |
| २० विंशोऽध्यायः        | ८३-८६    | ४० चत्वारिंशोऽध्यायः     | १५७-१५८  |



अथ शुक्लयजुर्वेदीय-

# काण्व-संहिता ।

अथ प्रथमो दशकः ।

अथ प्रथमोऽध्यायः ।

॥ ओ३म् ॥ इषे त्वोजे त्वा वायव स्थ । देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणे ॥१॥ १  
आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्माः । मा व स्तेन ईशत माघशस्सः ॥२॥ २  
ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीः । यजमानस्य पशून् पाहि वसोः पवित्रमसि ॥३॥ (१) ३

घौरसि पृथिव्यसि मातरिश्चनो घर्मोऽसि । विश्वधाः परमेण धाम्ना ॥१॥ ४

द॰ह॰स्व मा ह्वार्मा ते यज्ञपतिर्हर्षीत् ।

वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् ॥२॥ ५

देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण । सुप्वा कामधुक्षः ॥३॥ ६

सा विश्वायुः सा विश्वकर्मा सा विश्वधायाः ।

इन्द्रस्य त्वा भाग॰ सोमेनातनक्ति विष्णो हव्य॰ रक्षस्व ॥४॥ (२) ७

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छ्रेयं तन्मे राध्यताम् । इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि ॥१॥ ८

कस्त्वा युनक्ति स त्वा युनक्ति कस्मै त्वा युनक्ति तस्मै त्वा युनक्ति । कर्मणे वां वेषाय वाम् ॥२॥ ९

प्रत्युष्ट॰ रक्षः प्रत्युष्टा अरातयो निष्टम॰ रक्षो निष्टप्ता अरातयः । उर्वन्तरिक्षमन्वेमि ॥३॥ १०

धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योस्मान् धूर्वति । धूर्व तं यं वयं धूर्वीमः ॥४॥ ११

देवानामसि सलितमं वह्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम् ।

अहुंतमसि हविर्धानं द॰ह॰स्व मा ह्वार्मा ते यज्ञपतिर्हर्षीत् ॥५॥ १२

विष्णुस्त्वा क्रमतामुरु वातायापहत॰ रक्षो यच्छन्तां पञ्च ।

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेभिर्नोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥६॥ १३

अग्नये जुष्टं गृह्णाम्यग्नीषोमाभ्यां जुष्टं गृह्णामि । भूताय त्वा नारातये स्वरभिरिविख्येषम् ॥७॥ १४ [१४]

दृ॒हन्तां॑ दु॒र्याः पृथि॒व्यामु॒र्वन्तरि॑क्षमन्वेमि ।

पृथि॒व्यास्त्वा॒ नामौ॑ सादया॒म्यदि॑त्या उप॒स्थे । अ॒ग्रे ह॒व्यः रक्ष॑स्व ॥८॥ (३) १५

प॒वित्रे॑ स्थो वैष्ण॒व्यौ स॒वितु॑र्वः प्रस॒व उत्प॑नामि । अ॒लि॒द्रेण॑ प॒वित्रेण॑ सूर्य॑स्य र॒श्मिभिः॑ ॥१॥ १६

दे॒वीरा॑पो अ॒ग्रेगु॑वो अ॒ग्रेपु॑वः । अ॒ग्र इ॒मम॑द्य य॒ज्ञं न॑यत सु॒धातुं॑ य॒ज्ञप॑तिं दे॒वायु॑वम् ॥२॥ १७

युष्मा इन्द्रो॑ऽवृणीत वृ॒त्रतू॑र्ये यु॒यमिन्द्र॑मवृणीध्वं वृ॒त्रतू॑र्ये प्रोक्षि॑ता स्थ ।

अ॒ग्रेयै॑ त्वा जुष्टं प्रोक्षाम्य॒ग्रीषो॑मा॒भ्यां त्वा जुष्टं॑ प्रोक्षा॑मि ॥३॥ १८

दै॒व्याय॑ कर्मणे शु॒न्धध्वं॑ दे॒वय॑ज्यायै । यद्वोऽशु॑द्धः प॒राज॑धानै॒तद्व॒स्तच्छु॑न्धामि ॥४॥ (४) १९

श॒र्मास्य॑वधूतः रक्षोऽवधू॒ता अ॑रा॒तयः॑ । अ॒दि॒त्यास्त्व॒गसि॑ प्रति॒ त्वादि॑तिर्वे॒त्तु ॥१॥ २०

आ॒र्द्रेरा॑सि वा॒नस्प॑त्यो ग्रा॒वांसि॑ पृथु॒बुध्नः॑ । प्रति॒ त्वादि॑त्यास्त्व॒ग्वेत्तु॑ ॥२॥ २१

अ॒ग्नेस्त॑नूर॒सि वा॒चो वि॑सर्जनम् । दे॒ववी॑तये त्वा गृह्णामि ॥३॥ २२

बृ॒हन् ग्रा॒वांसि॑ वा॒नस्प॑त्यः स इ॒दं दे॒वेभ्यः॑ । ह॒व्यः श॑मीष्व सु॒शमी॑ श॒मीष्व॑ ह॒विष्कृ॑देहि ॥४॥ २३

कु॒कुटो॑ऽमि मधु॒जिह्व॑ इष॒मूर्ज॑माव॒द । व॒यः सै॒घ्राते॑ सै॒घ्राते॑ जेष्म ॥५॥ २४

व॒र्षवृ॑द्धम॒सि प्रति॑ त्वा व॒र्षवृ॑द्धं वे॒त्तु । प॒रापू॑तः रक्षः प्रति॒पू॒ता अ॑रा॒तयः॑ ॥६॥ २५

अ॒प॒ह॒तः रक्षो॑ वा॒युर्वो॑ वि॒र्विन॑क्तु ।

दे॒वो वः॑ स॒विता॑ प्रति॒गृह्णा॑तु हि॒र॒ण्य॒पाणि॑र॒लि॒द्रेण॑ पा॒णिना॑ ॥७॥ (५) २६

धृ॒ष्टि॒रस्य॑पा॒ग्ने अ॒ग्निमा॑मादं जहि । निष्क॒व्यादः॑ से॒धा दे॒वय॑जं वह ॥१॥ २७

ध्रु॒वम॑सि पृथि॒वीं दृ॒ह ॥

ब्र॒ह्मवा॑नि त्वा क्षत्र॒वनि॑ स॒जात॑व॒न्युप॑दधामि द्वि॒प॒तो व॒धाय॑ ॥२॥ २८

अ॒ग्रे ब्र॒ह्म गृ॑ष्णीष्व ध॒रुण॑मस्य॒न्तरि॑क्षं दृ॒ह ।

ब्र॒ह्मवा॑नि त्वा क्षत्र॒वनि॑ स॒जात॑व॒न्युप॑दधामि द्वि॒प॒तो व॒धाय॑ ।

ध॒र्त्रम॑सि दि॒वै दृ॒ह । ब्र॒ह्मवा॑नि त्वा क्षत्र॒वनि॑ स॒जात॑व॒न्युप॑दधामि द्वि॒प॒तो व॒धाय॑ ॥३॥ २९

वि॒श्वो॒भ्यस्त्वा॒शाभ्य॑ उप॑दधामि द्वि॒प॒तो व॒धाय॑ ।

चि॒तं स्थो॑र्ध्व॒चितो॑ भृ॒गूणा॑म॒ङ्गिर॑सां त॒र्पमा॑ तप्यध्वम् ॥४॥ (६) ३०

श॒र्मास्य॑वधूतः रक्षोऽवधू॒ता अ॑रा॒तयः॑ । अ॒दि॒त्यास्त्व॒गसि॑ प्रति॒ त्वादि॑तिर्वे॒त्तु ॥१॥ ३१

धि॒प॒णांसि॑ प॒र्वती॑ प्रति॒ त्वादि॑त्यास्त्व॒ग्वेत्तु॑ ।

दि॒व॒स्क॑म्भ॒न्यासि॑ धि॒प॒णांसि॑ पा॒र्वते॑यी प्रति॒ त्वा प॑र्वती वे॒त्तु ॥२॥ ३२ [३२]



धान्यमसि धिनुहि देवां धिनुहि यज्ञं धिनुहि यज्ञपतिम् । धिनुहि माँ यज्ञन्यम् ॥३॥ ३३

प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा । दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां ।

देवो वः सविता प्रतिगृह्णातु हिरण्यपाणिराळिद्रेण पाणिना । चक्षुषे त्वा महीनां पयोसि ॥४॥ ३४

वेदोसि वेदु येन त्वं देव वेद देवेभ्यो वेदोऽभवः । तेन महीं वेदो भव ॥५॥(७) ३५

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।

सं वपासि समाप ओषधीभिः समोषधयो रसेन ।

स० रेवतीर्जगतीभिः सं मधुमतीर्मधुमतीभिः पृच्यन्ताम् ।

जनयत्यै त्वा सं यौमि ॥१॥ ३६

इदमग्नेरिदमग्नीषोमयोरिषे त्वा । घर्मोसि विश्वायुरुप्रथा उरु प्रथस्वरुतै यज्ञपतिः प्रथताम् ॥२॥ ३७

अग्निष्टे त्वचं मा हिंसीदन्तरित० रक्षोन्तरिता अरातयः ।

देवस्त्वा सविता श्रपयतु वर्षिष्टेऽधि नाके ॥३॥ ३८

मा भेर्मा सं विक्था अतमेर्यज्ञोऽतमेर्यजमानस्य प्रजा भूयात् ॥

त्रिताय त्वा द्विताय त्वैकताय त्वा ॥४॥(८) ३९

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् । आदेदेऽध्वरुकृतं देवेभ्यः ।

इन्द्रस्य बाहुरसि दक्षिणः सहस्रभृष्टिः शततैजाः । वायुरसि तिग्मतैजा द्विषतो वृधः ॥१॥ ४०

पृथिव्यै वर्मासि पृथिवि देवयजनि । ओषध्यास्ते मूलं मा हिंसीषम् ॥२॥ ४१

व्रजं गच्छ गोष्ठानं वर्षतु ते द्यौर्विधान देव सवितः परमस्यां पृथिव्या० शतेन पाशैः ।

योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मस्तमतो मा मौक् ॥३॥ ४२

अपारहं वध्यासं पृथिव्यै देवयजनात् ।

व्रजं गच्छ गोष्ठानं वर्षतु ते द्यौर्विधान देव सवितः परमस्यां पृथिव्या० शतेन पाशैः ।

योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मस्तमतो मा मौक् । अर्रो दिवं मा पप्सो द्रुष्मस्ते द्यां मा स्कन् ।

व्रजं गच्छ गोष्ठानं वर्षतु ते द्यौर्विधान देव सवितः परमस्यां पृथिव्या० शतेन पाशैः ।

योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मस्तमतो मा मौक् ॥४॥ ४३

गायत्रेण त्वा छन्दसा परिगृह्णामि त्रैष्टुभेन त्वा छन्दसा परिगृह्णामि जागतेन त्वा छन्दसा परिगृह्णामि ।

सुक्ष्मा चासि शिवा चासि स्योना चासि सुषदा चासि । ऊर्जैस्वती चासि पर्यस्वती च ॥५॥ ४४

पुरा क्रूरस्य विसृपो विरणिन्नुदादार्य पृथिवीं जीवदानुम् ।

यामैर्य०श्चन्द्रमसि स्वधाभिस्तां धीरांसो अनुदिश्य यजन्ते । द्विषतो वृधोऽसि ॥६॥(९)४५ [४५]

प्रत्युष्टं रक्षः प्रत्युष्टा अरातयो निष्टम् रक्षो निष्टमा अरातयः ।

अनिशितासि सपत्नक्षिद्वाजिनं त्वा वाजेध्यायै सम्मार्जिम ।

प्रत्युष्टं रक्षः प्रत्युष्टा अरातयो निष्टम् रक्षो निष्टमा अरातयः ।

अनिशितासि सपत्नक्षिद्वाजिनं त्वा वाजेध्यायै सम्मार्जिम ॥१॥

४६

अदित्यै रास्नासीन्द्राण्यै संनहनम् । विष्णोर्वेष्योऽस्यूर्जे त्वादब्धेन त्वा चक्षुषावपश्यामि ॥२॥ ४७

अग्नेर्जिह्वासि सुभूद्वेभ्यः । धाम्नै धाम्ने भव यजुषे यजुषे । सवितुस्त्वा प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण

पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः । सवितुर्वै प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ॥३॥ ४८

तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धाम नामासि । प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनम् ॥४॥ ४९

यस्ते प्राणः पशुषु प्रविष्टो देवानां विष्टामनु यो वितस्थे ।

आत्मन्वान्तसीमघृतवान्हि भूत्वाग्निं गच्छ स्वयंजमानाय विन्द ॥ ५ ॥ (१०)

५०

॥ इमे त्वा तिस्रः ॥ ३ ॥ द्यौरसि चतस्रः ॥ ४ ॥ अग्ने व्रतपतेऽष्ट ॥ ८ ॥ पवित्रे स्थ चतस्रः ॥ ४ ॥ शर्मासि

सप्त ॥ ७ ॥ धृष्टिरसि चतस्रः ॥ ४ ॥ शर्मासि पुनः पञ्च ॥ ५ ॥ देवस्य त्वा चतस्रः ॥ ४ ॥ द्वितीयो देवस्य

त्वा पद ॥ ६ ॥ प्रत्युष्टं पञ्च ॥ ५ ॥ दशानुवाकेषु पञ्चाशत् ॥ ५० ॥ इमे देवस्य समाः पञ्चाशत् ॥ ५० ॥

॥ इति शुक्लयजुःकाण्वसंहितायां प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः ॥

कृष्णोऽस्याखरेष्टोऽग्रये त्वा जुष्टं प्रोक्षामि वेदिरसि बर्हिषे त्वा जुष्टं प्रोक्षामि ।

बर्हिरसि सुगभ्यस्त्वा जुष्टं प्रोक्षामि ॥१॥

१

अदित्यै व्युन्दनमसि विष्णोः स्तुपोऽसि । ऊर्णं प्रदसं त्वा स्तृणामि स्वासस्थं देवेभ्यः ॥२॥ २

भूपतये स्वाहा भुवनपतये स्वाहा भूतानां पतये स्वाहा ।

गन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै ॥३॥

३

यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिळ ईळितः । इन्द्रस्य बाहुरसि दक्षिणो विश्वस्यारिष्ट्यै ।

यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिळ ईळितः । मित्रावरुणौ त्वात्तरतः परिधत्तां ध्रुवेण धर्मेणा विश्वस्यारिष्ट्यै ।

यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिळ ईळितः ॥४॥

४

वीतिहोत्रं त्वा कवे धुमन्तं समिधीमहि । अग्ने बृहन्तमध्वरे ॥५॥

५

समिदासि सूर्यस्त्वा पुरस्तात् पातु कस्याश्चिदुभिशस्त्यै । सवितुर्बाहू स्थः ॥६॥

६

ऊर्णं प्रदसं त्वा स्तृणामि स्वासस्थं देवेभ्यः । आ त्वा वसवो रुद्रा आदित्याः संदन्तु ॥७॥

७

घृताच्यंसि जुह्वानाम् सेदं प्रियेण धाम्ना प्रिये सदसि सीद । घृताच्यस्युपभृन्नाम् सेदं प्रियेण

धाम्ना प्रिये सदसि सीद । घृताच्यंसि ध्रुवा नाम सेदं प्रियेण धाम्ना प्रिये सदसि सीद ।

प्रियेण धाम्ना प्रिये सदसि सीद ॥८॥

८ [५८]

ध्रुवा असदक्षतस्य योनौ ता विष्णो पाहि ।

पाहि यज्ञं पाहि यज्ञपतिं पाहि मां यज्ञन्यम् ॥९॥ (१)

९

अग्रे वाजजिद्वाजं त्वा सरिष्यन्तं वाजजित् ५ सम्मार्जिम् ।

नमो देवेभ्यः स्वधा पितृभ्यः सुयमे मे भूयास्तम् ॥ १ ॥

१०

अस्कन्नमद्याज्यं देवेभ्यः संभ्रियासम् । अङ्घ्रिणा विष्णो मा त्वावक्रमिषम् ॥२॥

११

वसुमतीमग्रे ते छायापुषस्थेपुं विष्णोः स्थानमसि । इत इन्द्रो वीर्यमकृणोदूर्ध्वोऽध्वर आस्थात् ॥३॥ १२

अग्रे वेहोत्रं वेदूत्यम् । अवतां त्वा द्यावापृथिवी अव त्वं द्यावापृथिवी ॥४॥

१३

स्विष्टकृदेवेभ्य इन्द्र आज्येन हविषा भूत् स्वाहा । सं ज्योतिषा ज्योतिः ॥५॥

१४

अग्रे पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम् । अमी मदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत ॥६॥ १५

उपहूता पृथिवी मातोप मां पृथिवी माता ह्वयताम् । अग्निराग्नीध्रात् स्वाहा ॥७॥

१६

उपहूतो द्यौष्पितोप मां द्यौष्पिता ह्वयताम् । अग्निराग्नीध्रात् स्वाहा ॥८॥

१७

मयीदमिन्द्र इन्द्रियं दधात्वस्मान् रायो मघवानः सचन्ताम् ।

अस्माकं सन्त्वाशिषः सत्या नः सन्त्वाशिषः ।

अग्रे वाजजिद्वाजं त्वा ससृवाः सै वाजजित् ५ सम्मार्जिम् ॥९॥ (२)

१८

देव सवितरेतं त्वा वृणते बृहस्पतिं ब्रह्माणम् । तदहं मनसे प्रब्रवीमि ॥१॥

१९

मनो गायत्र्यै गायत्री त्रिष्टुभे त्रिष्टुब्जगत्यै जगत्यनुष्टुभे ।

अनुष्टुप्प्रजापतये प्रजापतिर्विश्वेभ्यो देवेभ्यः ॥२॥

२०

बृहस्पतिर्देवानां ब्रह्माहं मनुष्याणाम् । भूर्भुवः स्वर्निरस्तः पाप्मेदमहं बृहस्पतेः सदसि सीदामि ॥३॥ २१

मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रतीक्षे । देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।

प्रतिगृह्णामि पृथिव्यास्त्वा नाभौ सादयाम्यदित्या उपस्थे ।

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥४॥

२२

आर्ददेऽग्नेष्ट्वास्येन प्राश्रामि बृहस्पतेर्मखेन । या अप्स्वन्तर्देवतास्ता इदं शमयन्तु ॥५॥

२३

स्वाहाकृतं जुठरमिन्द्रस्य गच्छ । घृसिना मे मा संपृक्था ऊर्ध्व मे नाभैः सीद ॥६॥

२४

इन्द्रस्य त्वा जुठरं सादयामि । प्रजापतेर्भागोस्यूर्जस्वान् पर्यस्वान् ॥७॥

२५

प्राणापानौ मे पाहि समानव्यानौ मे पाह्युदानव्यानौ मे पाहि ।

ऊर्गस्यूर्जे मयि धेद्यक्षितिरसि मा मे क्षेष्टा अमुत्रासुर्मिलोक इह च ॥८॥

२६

एषा ते अग्रे समित्तया वर्धस्व चा च प्यायस्व । वर्धिषीमहि च वयमा च प्यासिषीमहि ॥९॥ २७

[७७]

एतत् ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे । तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव ॥१०॥ २८  
मनोज्योतिर्जुषतामार्ज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोतु ।

अरिष्टं यज्ञं समिमं दधातु विश्वे देवास इह मादयन्तामो प्रतिष्ठ ॥११॥ (३) २९

अग्नीषोमयोरुज्जितिमनूज्जेषं वाजस्य मा प्रसवेन प्रोहामि ।

अग्नीषोमौ तमपनुदतां योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मो वाजस्यैनं प्रसवेनापोहामि ।

इन्द्राग्नयोरुज्जितिमनूज्जेषं वाजस्य मा प्रसवेन प्रोहामि ।

इन्द्राग्नी तमपनुदतां योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मो वाजस्यैनं प्रसवेनापोहामि ॥१॥ ३०

वसुभ्यस्त्वा रुद्रेभ्यस्त्वादित्येभ्यस्त्वा । संजानाथां द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ त्वा वृष्ट्यावताम् ॥२॥ ३१

व्यन्तु वयोरिप्सो रिहाणा मरुतां पृषतीं गच्छ । वशा पृश्निभूत्वा दिवं गच्छ ततो नो वृष्टिमावह ॥३॥ ३२

चक्षुष्पा असि चक्षुर्मे पाहि । यं परिधिं पर्यधत्था अग्ने देव पणिभिर्गुह्यमानः ॥४॥ ३३

तं त एतमनु जोषं भराम्येष नेत्रदपचेतयातै । अग्नेः प्रियं पाशोऽपीतम् ॥५॥ ३४

संस्त्रवभागा स्थेषा बृहन्तः प्रस्तरेष्ठाः परिधयश्च देवाः ।

इमां वाचमभि विश्वे गृणन्त आसद्यास्मिन् बहिषि मादयध्वं स्वाहा वाद् ।

घृताचींस्थो धुर्यो पातं सुम्ने स्थः सुम्ने मां धत्तम् ॥६॥ (४) ३५

अग्नेऽदब्धायोऽशीतम पाहि मां दिद्योः पाहि प्रसित्यै पाहि दुरिष्ट्यै पाहि दुरश्चन्यै ।

अविषं नः पितुं कृणु सुपदा योनौ स्वाहा वाद् ॥१॥ ३६

अग्नये संवेशपतये स्वाहा सरस्वत्यै यशोभगिन्यै स्वाहा ।

उल्लखले मुमले यच्च शूर्प आशिश्लेष दृषदि यत् कपाले ॥२॥ ३७

उत्प्रुषो विप्रुषः सं जुहोमि सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः स्वाहा ।

आप्यायतां ध्रुवा हविषा घृतेन यज्ञं यज्ञं प्रति देवयज्ञ्यः ॥

सूर्याया ऊर्ध्वा अदित्या उपस्थं उरुधारा पृथिवी यज्ञे अस्मिन् ॥३॥ ३८

देवां गातुविदो गातुमित्वा गातुमित । मनसस्पत इमं देव यज्ञं स्वाहा वातं धाः ॥४॥ ३९

संवर्हिर्दङ्का हविषा घृतेन समादित्यैर्वसुभिः सं मरुद्भिः ।

समिन्द्रो विश्वदेवेभिरङ्कां दिव्यं नभो गच्छतु यत् स्वाहा ॥५॥ ४०

कस्त्वा विमुञ्चति स त्वा विमुञ्चति कस्मै त्वा विमुञ्चति तस्मै त्वा विमुञ्चति ।

पोषाय रक्षसां भागोऽसि ॥६॥ ४१

वेपोऽस्पुपवेपो द्विपतो ग्रीवा उपवेविद्धि । वेशां अग्ने सुभग धारयेह ॥७॥ ४२ [९९]

ऋद्धाः कर्मण्या अनपायिनो यथासन् ॥

जुहोमि त्वा सुभग सौभगाय पुरुतमं पुरुहूत श्रवस्यन् ॥८॥(५)

४३

सं वर्चसा पर्यसा सं तनूभिरगन्महि मनसा सः शिवेन ।

त्वष्टा सुदत्रो विदधातु रायोनुमाष्टु तन्वो यद्विलिष्टम् ॥१॥

४४

यज्ञं शं च त उर्षं च । शिवे मे संतिष्ठस्वारिष्टे मे संतिष्ठस्व स्विष्टे मे संतिष्ठस्व ॥२॥

४५

दिवि विष्णुर्व्यक्रःस्तु जागतेन छन्दसा ततो निर्भक्तः । योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः ।  
अन्तरिक्षे विष्णुर्व्यक्रःस्तु त्रैष्टुभेन छन्दसा ततो निर्भक्तः । योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः ।

पृथिव्यां विष्णुर्व्यक्रःस्तु गायत्रेण छन्दसा ततो निर्भक्तः ।

योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः ॥३॥

४६

अस्मादन्नादस्यै प्रतिष्ठाया अगन्म स्वः । सं ज्योतिषाभूम ॥४॥

४७

स्वयंभूरसि श्रेष्ठो रश्मिर्वचोदा असि वर्चो मे देहि । सूर्यस्यावृतमन्वावर्ते ॥५॥

४८

अग्ने गृहपते सुगृहपतिरहं त्वया गृहपत्या भूयासम् ।

सुगृहपतिस्त्वं मया गृहपत्या भूयाः ॥६॥

४९

अस्थरि णो गार्हपत्यानि सन्तु शतं हिमाः ।

तिग्मेन नस्तेजसा सः शिंशाधि सूर्यस्यावृतमन्वावर्ते ॥७॥

५०

उरुविष्णो विक्रमस्वोरुक्षयाय नस्कृधि । घृतं घृतयोने पिब प्र-प्र यज्ञपतिं तिर ॥८॥

५१

ततोऽसि तंतुरस्यनु मा तनुहि । अस्मिन्यज्ञेस्याः साधु कृत्यायामस्मिन्नज्ञेऽस्मिँल्लोके ॥९॥५२

॥९॥५२

इदं मे कर्मेदं वीर्यं पुत्रोऽनु संतनोतु । अग्ने व्रतपते व्रतमचारिषं तदशकं तन्मेऽराधि ।

इदमहं य एवास्मि स एवास्मि ॥१०॥(६)

५३

अग्र्ये कव्यवाहनाय स्वाहा सोमाय पितृमते स्वाहा । अपहता असुरा रक्षांसि वेदिषदः ॥१॥ ५४

ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति ।

परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाल्लोकात् प्रणुदात्यस्मात् ॥२॥

५५

अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम् । अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत ॥३॥ ५६

नमो वः पितरः शुष्माय नमो वः पितरस्तपसे ।

नमो वः पितरो यज्जीवं तस्मै नमो वः पितरो रसाय ।

नमो वः पितरो घोराय मन्यवे स्वधायै वः पितरो नमः ।

एतद्भः पितरो वासो गृहान्नः पितरो दत्त ॥ ४ ॥

५७[१०७]

उदायुषा स्वायुषोत्पर्जन्यस्य धामाभिः । उदस्थाममृतौ अनु ॥५॥ ५८  
 आर्धत्त पितरो गर्भं कुमारं पुष्करस्रजम् । यथेह पुरुषोऽसत् ॥६॥ ५९  
 ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पर्यः क्रीलालं परिस्रुतम् ।  
 स्वधा स्थं तर्पयत मे पितृन् ॥७॥ (७) ६०

कृष्णोऽस्ति नव ॥ ९ ॥ अग्ने वाजजिह्व ॥ ९ ॥ देव सवितरेकादश ॥ ११ ॥ अग्नीषोमयोः षट् ॥ ६ ॥  
 अग्नेऽद्विधायोऽष्ट ॥ ८ ॥ सं वर्चसा दश ॥ १० ॥ अग्नये कव्यवाहनाय सप्त ॥ ७ ॥  
 सप्तानुवाकेषु षष्टि ॥ ६० ॥ कृष्ण इमं मे षष्टि ॥ ६ ॥  
 इति शुक्लयजुःकाण्वसंहितायां द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

### अथ तृतीयोऽध्यायः ॥

समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम् । आस्मिन् हव्या जुहोतन ॥१॥ १  
 सुसमिद्वाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन । अग्रये जातवेदसे ॥२॥ २  
 तं त्वा समिद्धिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि । बृहछौचा यविष्ठय ॥३॥ ३  
 उप त्वाग्ने हविष्मतीर्घृताचीर्यन्तु हर्यत । जुपस्व समिधो मम ॥४॥ ४  
 भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना भूमिरिव वरिम्णा ।  
 तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेभिर्मन्त्रादमन्त्राद्यायादधे ॥५॥ ५  
 आयं गौः पृश्निरकमीदसदन् मातरं पुरः । पितरं च प्रयन्तस्वः ॥६॥ ६  
 अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती । व्यख्यन् महिषा दिवंम् ॥७॥ ७  
 त्रिंशद्दाम विराजति वाक् पतङ्गार्य धीयते । प्रति वस्तोरह द्युभिः ॥८॥ (१) ८

अग्निज्योतिषं त्वा वायुमतीं प्राणवतीम् । स्वर्ग्यां स्वर्गायोपदधामि भास्वतीम् ।  
 अग्निज्योतिज्योतिरग्निः स्वाहा ॥१॥ ९  
 सूर्यं ज्योतिषं त्वा वायुमतीं प्राणवतीम् । स्वर्ग्यां स्वर्गायोपदधामि भास्वतीम् ।  
 सूर्यो ज्योतिज्योतिः सूर्यः स्वाहा ॥२॥ १०  
 सजृद्धेवेन सवित्रा सजू राज्येन्द्रवत्या । जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा ॥३॥ ११  
 सजृद्धेवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या । जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ॥ ४ ॥ १२  
 इह पुष्टिं पुष्टिपतिर्दधात्विह प्रजा रमयतु प्रजापतिः । अग्रये गृहपतये रयिमते पुष्टिपतये स्वाहा ।  
 अग्रयेऽन्नादायान्नपतये स्वाहा ॥५॥ १३  
 अनमित्रं मे अधरागनमित्रमुदक्कृधि । इन्द्रानमित्रं पश्चान्मेनमित्रं पुरस्कृधि ॥६॥ १४ [१४४]

इन्द्रः पश्चादिन्द्रः पुरस्तादिन्द्रो अस्माँ३ अभिपातु विश्वतः ।

इन्द्रो जिघांसतां मनांसि विषूचीना व्यस्यतात् ॥७॥

१५

समिदसि समिद्रो मे अग्ने दीदिहि । समेद्रा तै अग्ने दीद्यासम् ॥८॥(२)

१६

उपप्रयन्तो अध्वरं मन्त्रं वोचेमाग्रये । आरे अस्मे च शृण्वते ॥१॥

१७

अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् । अपांसि रेतांसि जिन्वति ॥२॥

१८

उभा वामिन्द्राग्नी आहुवध्या उभा राधसः सह मादुयध्यै ।

उभा दातारा इवांसं रयीणामुभा वाजस्य सातये हुवे वाम् ॥३॥

१९

अयं ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातो अरोचथाः ।

तं जानन्नग्र आगेहार्था नो वर्धया रयिम् ॥४॥

२०

अयमिह प्रथमो धायि धातुभिर्होता यजिष्ठो अध्वरेष्वीज्यः ।

यमप्रवानो भृगवो विरुरुचुर्वनेषु चित्रं विश्वं विशेर्विशे ॥५॥

२१

अस्य प्रत्नामनु द्युतंसं शुक्रं दुदुहे अहंयः । पयः सहस्रसामृषिम् ॥६॥

२२

तनुपा अग्नेऽसि तन्वां मे पाह्यायुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि । वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि ॥७॥

२३

अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण । इन्धानास्त्वा शतंस हिमा द्युमन्तंसं समिधीमहि ॥८॥

२४

वयस्वन्तो वयस्कृतंसं सहस्वन्तः सहस्कृतम् । अग्ने सपत्नदम्भन्मदब्धासो अदाभ्यम् ॥९॥

२५

चित्रावसो स्वस्ति ते पारमंशय । सं त्वमग्ने सूर्यस्य वर्चसागथाः समृषीणांसं स्तुतेन ॥१०॥

२६

सं प्रियेण धाम्ना समहमायुषा सं वर्चसा सं प्रजया संसं रायस्पोषेण ग्मिषीय ।

अन्ध स्थान्धो वो भक्षीय महं स्थ महो वो भक्षीय ॥११॥

२७

ऊर्जं स्थोर्जं वो भक्षीय रायस्पोषं स्थ रायस्पोषं वो भक्षीय ।

रेवती रमध्वमस्मिन् योना अस्मिन् गोष्ठेऽस्मिन् क्षयेऽस्मिन्लोके ॥१२॥

२८

इहैव स्तेतो मार्पगात । संहितासि विश्वरूप्यूर्जा माविंश गौपत्येन ॥१३॥

२९

उषं त्वाग्ने दिवेर्दिवे दोषावस्तर्धिया वयम् । नमो भरन्त एमसि ॥१४॥

३०

राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीर्दिविम् । वर्धमानंसं स्वे दमे ॥१५॥

३१

स नः पितेर्व सुनवेऽग्ने सुपायनो भव । सचस्वा नः स्वस्तये ॥१६॥

३२

अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता शिवो भवा वरुध्यः ।

वसुरभिर्वसुश्रवा अच्छा नक्षि द्युमत्तमंसं रयिं दाः ॥१७॥

३३ [१४३]

तं त्वां शोचिष्ठ दीदिवः सुभ्राय नूनमीमहे सखिभ्यः ।

स नो बोधि शुधी हवमुरुष्या णो अघायतः संस्मात् ॥१८॥

३४

इळ एहदित एहि काम्य एहि । मयि वः कामधरणं भूयात् ॥१९॥

३५

सोमान् स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते । कक्षीवन्तं य औशिजः ॥२०॥

३६

यो रेवान्यो अमीवहा वसुवित् पुष्टिवर्धनः । स नः मिषक्तु यस्तुरः ॥२१॥

३७

मा नः शंसो अररुषो धूर्तिः प्रणञ्जत्यस्य । रक्षा णो ब्रह्मणस्पते ॥२२॥

३८

महि त्रीणामवोऽस्तु द्युक्षं मित्रस्यार्यम्णः । दुराघर्षं वरुणस्य ॥२३॥

३९

नहि तेषाममा चन नाध्वसु वारुणेषु । ईशं रिपुरघशंसः ॥२४॥

४०

ते हि पुत्रासो अदितेः प्र जीवसे मर्त्याय । ज्योतिर्यच्छन्त्यजं स्रम् ॥२५॥

४१

कदा चन स्तरीरसि नेन्द्र सश्वसि दाशुषं ।

उपोपेन्नु मघवन् भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यते ॥२६॥

४२

तत् सवितुर्वरेण्यं भगो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥२७॥

४३

परि ते दूळभो रथोऽस्माँ३ अश्रोतु विश्वतः । येन रक्षसि दाशुषः ॥

समिद्धो मासमर्धय प्रजया च धनेन च ॥२८॥ (३)

४४

भूर्भुवः स्वः सुप्रजाः प्रजया भूयासम् । सुवरीं वीरैः सुपोषः पोषैः ॥१॥

४५

नर्यं प्रजां मे पाहि शंस्यं पशून् मे पाहि । आगन्म विश्ववेदसमस्मभ्यं वसुवित्तमम् ॥२॥

४६

अग्नें सम्राज्मि द्युम्रमभि सह आयच्छस्व । अयमग्निगृहपतिर्गाहपत्यः प्रजावान्वसुवित्तमः ॥३॥

४७

अग्नें गृहपतेऽभि द्युम्रमभि सह आयच्छस्व । गृहा मा बिभीत मा वैपध्वमूर्जं बिभ्रत एमसि ॥४॥४८

उर्जं बिभ्रद्वः सुमनाः सुमेधा गृहानेमि मनमा मोदमानः ।

येषामध्येति प्रवसन्त्येषु सौमनसो बहुः ॥५॥

४९

गृहानुपह्वयामहे ते नो जानन्तु जानतः । उपहूता इह गाव उपहूता अजावर्यः ॥६॥

५०

अथो अन्नस्य कीलाल उपहूतो गृहेषु नः । क्षेमाय वः शान्त्यै प्रपद्ये ।

शिवः शग्मः शंयोः शंयोः ॥७॥ (४)

५१

प्रघासिनो हवामहे मरुतश्च रिशार्दमः । क्रम्भेण सजोषसः ॥१॥

५२

यद् ग्रामे यदरण्ये यत्सभायां यदिन्द्रिये । यदेनश्चक्रमा वयमिदं तदवयजामहे स्वाहा ॥२॥

५३

मो पृ ण इन्द्रात्र पृतसु देवैरस्ति हि प्मा ते शुष्मिन्नवयाः ।

महश्चिद्यस्य मीळहुषो यव्या हविष्मनो मरुतो वन्दते गीः ॥३॥

५४[१६४]



अक्रन् कर्म कर्मकृतः सह वाचा मयोभुवा । देवेभ्यः कर्म कृत्वास्तं प्रेतं सचाभुवः ॥४॥ ५५

अवभृथ निचुम्पुण निचेरुरसि निचुम्पुणः ।

अव देवैर्देवकृतमेनोऽयासिषमव मर्त्यैर्मर्त्यैकृतं पुरुराव्णो देव रिषस्पाहि ॥५॥ (५) ५६

पूर्णा देवि परा पत सुपर्णा पुनरापत । वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जं शतक्रतो ॥१॥ ५७

देहि मे ददामि ते नि मे धेहि नि ते दधौ ।

निहारं निहरामि ते निहारं निहरासि मे स्वाहा ॥२॥ (६) ५८

अक्षन्नमीमदन्त स्वव प्रिया अधूषत ।

अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी ॥१॥ ५९

सुसंद्दशं त्वा वयं मधवन् वन्दिषीमहि ।

प्र नूनं पूर्णवन्धुर स्तुतो यामि वशाँ३ अनु योजा न्विन्द्र ते हरी ॥२॥ ६०

मनो न्वाहुवामहे नारांशस्मेन स्तोमेन । पितृणां च पन्मभिः ॥३॥ ६१

आ न एतु मनः पुनः कृत्वे दक्षाय जीवसे । ज्योक् च सूर्य दृशे ॥४॥ ६२

पुनर्नः पितरो मनो ददातु दैव्यो जनः । जीवं व्रातं सचेमहि ॥५॥ ६३

वयं सोम ब्रूते तव मनस्तनूषु विभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ॥६॥ (७) ६४

एष ते रुद्र भागः सह स्वस्त्राम्बिकया तं जुषस्व स्वाहा । एष ते रुद्र भाग आस्तुस्ते पशुः ॥१॥ ६५

अव रुद्रमदीमह्यव देवं त्र्यम्बकम् ।

यथा नो वस्यसस्करद्यथा नः श्रेयसस्करद्यथा नो व्यवसाययात् ॥२॥ ६६

भेषजमसि भेषजं गवेऽश्वाय पुरुषाय भेषजम् । सुगं मेषाय मेष्यै ॥३॥ ६७

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥४॥ ६८

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पतिवेदनम् । उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामृतात् ॥५॥ ६९

एतेन रुद्रावसेन परो मूजवतोऽतीहि ।

अवततधन्वा पिनाकावसः कृत्तिवासा अहिंसन्नः शिवः शान्तोऽतीहि ॥६॥ (८) ७०

वाजिनां वाजोऽवतु भक्षो अस्मान् रेतः सिक्तममृतं बलाय ।

विश्वे देवा अभि यत् संबभूवुस्तन्मा धिनोतु प्रजया धनेन ॥१॥ ७१

वाज्यहं वाजिनस्योपहूत उपहूतस्य भक्षयामि । वाजे वाजी भूयासम् ॥२॥ ७२

सवित्रा प्रमृता दैव्य आप उदन्तु ते तनूम् । दीर्घायुत्वाय वर्चसे ॥३॥ ७३ (१८३)

कश्यपस्य त्र्यायुषं जमदग्नेस्त्र्यायुषम् । यद्देवानां त्र्यायुषं तन्मे अस्तु त्र्यायुषम् ॥४॥ ७४  
येन धाता बृहस्पतेरिन्द्रस्य चायुषेऽवपत् । तेन ते वपामि ब्रह्मणा जीवातवे जीवनाय ॥५॥ ७५  
दीर्घायुत्वाय बलाय वर्चसे । सुप्रजास्त्वाय चासा अथो जीव शरदः शतम् ॥६॥ (९) ७६ [१८६]

समिधाग्निमष्ट ॥ ८ ॥ अग्निर्ज्योतिषं त्वाष्ट ॥ ८ ॥ उपप्रयन्तोऽष्टाविंशतिः ॥ २८ ॥ भूर्भुवः स्वः

सप्त ॥ ७ ॥ प्रघासिनः पञ्च ॥ ५ ॥ पूर्णां दर्वि द्वे ॥ २ ॥ अक्षन्ममीमदन्त षट् ॥ ६ ॥

एष ते च षट् ॥ ६ ॥ वाजिनां वाजश्च षट् ॥ ६ ॥ नवानुवाकेषु षट्सप्ततिः ॥ ७६ ॥

॥ इति शुक्लयजुःकाण्वसंहितायां तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

### अथ चतुर्थोऽध्यायः ॥

एदमगन्म देवयजनं पृथिव्या यत्र देवासो अजुषन्त विश्वे ।

ऋक्सामाभ्यां सन्तरन्तो यजुर्भा रायस्पोषेण समिषा मदेम ॥१॥ १

इमा आपः शम्भु मे सन्तु देवीरोषधे त्रायस्व स्वधिते मैत्रं हिंसीः ।

आपो अस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतर्ष्वः पुनन्तु ॥२॥ २

विश्वं हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरा पूत एमि ।

दीक्षातपमोस्तनूंसि तां त्वां शिवां शग्मां परिदधे भद्रं वर्णं पुष्यन् ॥३॥ (१) ३

महीनां पयोऽसि वचोदा अमि वचो मे देहि । वृत्रस्य कनीनकासि चक्षुर्दा असि चक्षुर्मे देहि ॥१॥४

चित्पतिर्मा पुनातु वाक्पतिर्मा पुनातु देवो मा सविता पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।

तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छक्रेयम् ॥२॥ ५

आ वो देवास ईमहे वामं प्रयत्यध्वरे । आ वो देवास आशिषो यज्ञियासो हवामहे ॥३॥ ६

स्वाहा यज्ञं मनसः स्वाहोरोरन्तरिक्षान् । स्वाहा द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा वातादारभे ॥४॥(२) ७

आकृत्यै प्रयुजेऽग्नये स्वाहा मेधायै मनसेऽग्नये स्वाहा

दीक्षायै तर्पसेऽग्नये स्वाहा सरस्वत्यै पूष्णेऽग्नये स्वाहा ।

आपो देवीर्बृहतीर्विश्वशम्भुवो द्यावापृथिवी उर्वन्तरिक्ष । बृहस्पतये हविषा विधेम स्वाहा ॥१॥ ८

विश्वो देवस्य नेतुर्मती वुरीत मुख्यम् । विश्वो राय इषुध्यति द्युम्नं वृणीत पुष्यसे स्वाहा ॥२॥(३) ९

ऋक्सामयोः शिल्पे स्थस्ते वामारभे ते मा पातम् । आस्य यज्ञस्योद्वचः ॥१॥ १०

शमीमि शर्म मे यच्छ नमस्ते अस्तु मा मा हिंसीः ।

उर्गस्याङ्गिरस्यूर्णम्रदा उर्ग मे यच्छ ॥२॥

- सोमस्य नीविरसि विष्णोः शर्मांसि शर्म यजमानस्य ।  
 इन्द्रस्य योनिरसि सुसस्याः कृषीस्कृधि ॥३॥ १२
- उच्छ्रयस्व वनस्पत ऊर्ध्वो मां पाह्यः हंसः । आस्य यज्ञस्योद्वचः ॥४॥ (४) १३
- व्रतं कृणुत व्रतं कृणुत व्रतं कृणुत । अग्निर्ब्रह्माग्निर्यज्ञो वनस्पतिर्यज्ञियः ॥१॥ १४
- दैवीं धियं मनामहे सुमृळीकामभिष्टये । वचोर्दो विश्वधायसः सुतीर्था नो असद्वशे ॥२॥ १५
- ये देवा मनोजाता मनोयुजो दक्षकृतवः । ते नोऽवन्तु ते नः पान्तु तेभ्यः स्वाहा ॥३॥ १६
- श्वात्राः पीता भवत यूयमापो अस्माकमन्तरुदरे सुशेवाः ।  
 ता अस्मभ्यमयक्ष्मा अनमीवा अनागसः स्वदन्तु देवीरमृता क्रतावृधः ॥४॥ १७
- इयं ते यज्ञियां तनूरपो मुञ्चामि न प्रजाम् ।  
 अहोमुचः स्वाहाकृताः पृथिवीमाविशत पृथिव्या संभव ॥५॥ १८
- अग्ने त्वं सु जागृहि वयं सु मन्दिपीमहि । रक्षा णो अप्रयुच्छन् प्रबुधे नः पुनस्कृधि ॥६॥ १९
- पुनर्मनः पुनरार्यम् आगात् पुनश्चक्षुः पुनः श्रोत्रं म आगान् ।  
 पुनः प्राणः पुनरात्मा म आगात् । वैश्वानरो अदब्धस्तनूपा अग्निमी पातु दुरितादवघात् ॥७॥ २०
- त्वमग्ने व्रतपा असि देव आ मर्त्येष्व । त्वं यज्ञेष्वीडयः ॥८॥ २१
- रास्वेयत्सोमा भूयो भर । देवो नः सविता वसोर्दाता वस्वदात् ॥९॥ (५) २२
- एषा ते शुक्र तनूरेतद्वर्चस्तया सम्भव भ्राजं गच्छ । जूरांसि धृता मनसा जुष्टा विष्णवे ॥१॥ २३
- तस्यास्ते सत्यसंवसः प्रसुवे तनूयन्त्रमशीय स्वाहा ।  
 चन्द्रमसि शुक्रमस्यमृतमसि वैश्वदेवमसि ॥२॥ २४
- चिदसि मनासि धीरसि दक्षिणासि क्षत्रियांसि यज्ञियास्यदितिरस्युभयतः शीर्ष्णी ।  
 सा नः सुप्राची सुप्रतीची भव ॥३॥ २५
- मित्रस्त्वा यदि बध्नीतां पूषाध्वनस्पत्विन्द्रायाध्यक्षाय ।  
 अनु त्वा माता मन्यतामनु पितानु भ्राता सगर्भ्योऽनु सखा सयूध्यः ॥४॥ २६
- सा देवि देवमच्छेहीन्द्राय सोमम् । रुद्रस्त्वा वर्तयतु स्वस्ति सोमसखा पुनरेहि ॥५॥ (६) २७
- वस्यस्यदितिरस्यादित्यासि रुद्रासि चन्द्रासि । बृहस्पतिश्चा सुम्ने रम्णात रुद्रो वसुभिराचके ॥१॥ २८
- अदित्यास्त्वा मूर्धन्नाजिघर्षि देवयजने पृथिव्याः । इळायास्पदमसि घृतवत् स्वाहा ॥२॥ २९
- अस्मे रमस्त्रास्मे ते बन्धुः । त्वे रायो अस्मे रायः ॥३॥ ३० [२१६]

मा वयं रायस्पोषेण वियौष्म तोतो रायः । समख्ये देव्या धिया सं दक्षिणयोरुचक्षसा ।

मा म आयुः प्रमोषीमो अहं तव वीरान्विदेय तव देवि संदृशि ॥४॥ (७) ३१

एष ते गायत्रो भाग इति मे सोमाय ब्रूतादेष ते त्रैष्टुभो भाग इति मे सोमाय ब्रूतात् ।

एष ते जागतो भाग इति मे सोमाय ब्रूताच्छन्दोमानानां

साम्राज्यं गच्छतादिति मे सोमाय ब्रूतात् ॥१॥

३२

आस्माकौऽसि शुक्रस्ते ग्रहः । विचितस्त्वा विचिन्वन्तु ॥२॥

३३

अभि त्वं देव संवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्यसंवत्स रत्नधामभि प्रियं मति कविम् ।

ऊर्ध्वा यस्यामतिर्भा आर्दिधुतत्सर्वीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपा स्वः ॥३॥

३४

प्रजाभ्यस्त्वा प्रजास्त्वानुप्राणन्तु । प्रजास्त्वमेनुप्राणिहि ॥४॥ (८)

३५

चन्द्रं त्वा चन्द्रेण क्रीणामि शुक्रं शुक्रेणामृतममृतेन । सग्मे ते गोरस्मे तं चन्द्राणि ॥१॥

३६

तपसस्तनूरसि प्रजापतेर्वर्णः । परमेण पशुना क्रीयसे सहस्रपोषं पुषेयम् ॥२॥

३७

मित्रो न एहि सुमित्रध इन्द्रस्योरुमाविश दक्षिणम् । उशन्नशन्तं स्योनः स्योनम् ॥३॥

३८

स्वान भ्राजाङ्घ्रि वम्भारे हस्त सुहस्त कशानो ।

एते वः मोमकयणास्तान्रक्षध्वं मा वो दभन् ॥४॥

३९

परि माग्ने दुश्चरिताद्वाधस्वा मा सुचरिते भज । उदार्युषा स्वायुषोदस्थाममृतौ अनु ॥५॥

४०

प्रति पन्थामपन्नहि स्वस्तिगार्मनेहसम् । येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु ॥६॥ (९) ४१

अदित्यास्त्वगस्यदित्यै सदु आसीद । अस्तं भ्राद्यामृषभो अन्तरिक्षममिमीत वरिमाणं पृथिव्याः ।

आसीदुद्विश्वा भुवनानि सम्राड्विश्वेत्तानि वरुणस्य व्रतानि ॥१॥

४२

वनेषु व्यन्तरिक्षं ततान वाजमर्वत्सु पय उस्त्रियासु ।

हत्सु क्रतुं वरुणो विक्ष्वमि दिवि सूर्यमदधात् सोममद्रौ ॥२॥

४३

सूर्यस्य चक्षुरारोहान्नेरक्षणः कनीनकाम् । यत्रैतंशेभिरीयसे भ्राजमानो विपश्चिता ॥३॥ ४४

उस्त्रा एतं धूर्वाहौ युज्येथामनश्च अवीरहणौ ब्रह्मचोदनौ ।

स्वस्ति यजमानस्य गृहान् गच्छतम् ॥ ४ ॥

४५

भद्रो मेऽसि प्रच्यवस्व भुवस्पते विश्वान्याभि धामानि ।

मा त्वा परिपरिणो विदन् मा त्वा परिपन्थिनो विदन् मा त्वा वृका अघायवो विदन् ।

इयेनो भूत्वा परापत यजमानस्य गृहान् गच्छ तन्नौ सस्कृतम् ॥ ५ ॥

४६ [२३२]

नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृतं संपर्यत ।

दूरेदृशे देवजाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्याय शंसत ॥६॥

४७

वरुणस्योत्तमभनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थः ।

वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनीमासीद ॥७॥

४८

या ते धामानि हविषा यजन्ति ता ते विश्वा परिभूरस्तु यज्ञम् ।

गयस्फानः प्रतरणः सुवीरोऽवीरिहा प्रचरा सोम दुर्यान् ॥८॥ (१०)

४९ [२३५]

एदमगन्म तिस्रः ॥ ३ ॥ महीनां चतस्रः ॥ ४ ॥ आकृत्य द्वे ॥ २ ॥ ऋक्सामयोश्चतस्रः ॥ ४ ॥

व्रतं कृणुत नव ॥ ९ ॥ एषा ते पञ्च ॥ ५ ॥ वस्यसि चतस्रः ॥ ४ ॥ एष ते चतस्रः

॥ ४ ॥ चंद्रं त्वा षट् ॥ ६ ॥ अदित्यस्त्वगष्ट ॥ ८ ॥ दशानुवाकेष्वेकोनपञ्चाशत् ॥ ४९ ॥

॥ इति शुक्लयजुःकाण्वसंहितायां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

### अथ पञ्चमोऽध्यायः ।

अग्नेस्तनूरसि विष्णवे त्वा सोमस्य तनूरसि विष्णवे त्वा ।

अतिथेरातिथ्यमसि विष्णवे त्वा श्येनाय त्वा सोमभृते

विष्णवे त्वाग्रये त्वा रायस्पोषदे विष्णवे त्वा ॥१॥

१

अग्नेर्जनित्रमसि वृषणौ स्थः । उर्वश्यस्यायुरसि पुरुरवा असि ।

गायत्रेण त्वा छन्दसा मन्थामि त्रैष्टुभेन त्वा छन्दसा मन्थामि

जागतेन त्वा छन्दसा मन्थामि ॥२॥

२

भवतं नः समनसौ सचेतसाअरेपसौ ।

मा यज्ञं हिंसिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः ॥३॥

३

अग्ना अग्निश्चरति प्रविष्ट ऋषीणां पुत्रो अभिशस्तिपावा ।

स नः स्योनः सुयजा यजेह देवेभ्यो हव्यं सदमप्रयुच्छन्त्स्वाहा ॥४॥ (१)

४

आपतये त्वा गृह्णामि परिपतये त्वा गृह्णामि । तनूनज्रे शाकुराय शकम्भोजिष्ठाय ॥१॥

५

अनाधृष्टमस्यनाधृष्यं देवानामोर्जः । अनभिश्चस्त्यभिश्चस्तिपा अनभिश्चस्तेन्यम् ॥२॥

६

अञ्जसा सत्यमुपगेषं सुविते मा धाः । अग्ने व्रतपास्त्वे व्रतपाः ॥३॥

७

या तव तनूरियं सा मयि या मम तनूरेषा सा त्वयि ।

सह नौ व्रतपते व्रतान्यनु मे दीक्षां दीक्षार्पतिर्मन्यतामनु तपस्तपस्पतिः ॥४॥

८ [२४३]

अ॒शु॒रं॑ शु॒ष्टे दे॒व सो॒माप्या॑यता॒मिन्द्रा॑यैकध॒नवि॑दे ।

आ तुभ्य॑मिन्द्रः प्याय॑ता॒मा त्वमिन्द्रा॑य प्यायस्व ॥५॥

९

आप्या॑यया॒सान् सखी॑न्त॒स॒न्या मे॒धया॑ । स्व॒स्ति ते॑ दे॒व सोम॑ सु॒त्यामु॒दृच॑म॒शाय॑ ॥६॥ १०

ए॒ष्टा रा॒यः प्रे॒षे भ॒गाय॑ । ऋ॒तमृ॑तवा॒दिभ्यो॑ नमो॒ दिवे॑ नमः पृथि॒व्यै ॥७॥ ११

या ते॑ अ॒ग्ने यः श॒या त॒नूर्व॑र्षि॒ष्ठा ग॒ह्वरे॑ष्टा । उ॒ग्रं व॒चो॑ अ॒पाव॑धी॒च्चेषं॑ व॒चो॑ अ॒पाव॑धी॒त् स्वाहा॑ ।

या ते॑ अ॒ग्ने रजः॑श॒या त॒नूर्व॑र्षि॒ष्ठा ग॒ह्वरे॑ष्टा । उ॒ग्रं व॒चो॑ अ॒पाव॑धी॒च्चेषं॑ व॒चो॑ अ॒पाव॑धी॒त् स्वाहा॑ ।

या ते॑ अ॒ग्ने ह॒रीश॑या त॒नूर्व॑र्षि॒ष्ठा ग॒ह्वरे॑ष्टा ।

उ॒ग्रं व॒चो॑ अ॒पाव॑धी॒च्चेषं॑ व॒चो॑ अ॒पाव॑धी॒त् स्वाहा॑ ॥८॥ (२)

१२

त॒प्ताय॑नी मेऽसि वि॒त्ताय॑नी मेऽसि । अ॒व॒ता॒न्मा व्य॑थि॒तम॑व॒ता॒न्मा ना॑थि॒तम् ॥१॥ १३

विदे॒र॒ग्नेर्न॑भो॒ नामा॑ग्ने॒ अङ्गि॒र आ॑यु॒ना ना॒ग्नेहि॑ ।

योऽस्यां॑ पृथि॒व्याम॑सि॒ यत्तेना॑धृष्टं॒ नाम॑ य॒ज्ञियं॑ तेन॒ त्वा द॑धे ।

विदे॒र॒ग्नेर्न॑भो॒ नामा॑ग्ने॒ अङ्गि॒र आ॑यु॒ना ना॒ग्नेहि॑ ।

यो द्वितीय॑स्यां पृथि॒व्याम॑सि॒ यत्तेना॑धृष्टं॒ नाम॑ य॒ज्ञियं॑ तेन॒ त्वा द॑धे ।

विदे॒र॒ग्नेर्न॑भो॒ नामा॑ग्ने॒ अङ्गि॒र आ॑यु॒ना ना॒ग्नेहि॑ ।

यस्तृतीय॑स्यां पृथि॒व्याम॑सि॒ यत्तेना॑धृष्टं॒ नाम॑ य॒ज्ञियं॑ तेन॒ त्वा द॑धे ।

अनु॑ त्वा दे॒ववी॑तये सि॒ःह्यसि॑ स॒पत्न॑सा॒ही दे॒वेभ्यः॑ क॒ल्पस्व॑ सि॒ःह्यसि॑

स॒पत्न॑सा॒ही दे॒वेभ्यः॑ शु॒न्धस्व॑ मि॒ःह्यसि॑ स॒पत्न॑सा॒ही दे॒वेभ्यः॑ शु॒म्भस्व॑ ॥२॥ (३)

१४

इन्द्र॑घोष॒स्त्वा वसु॑भिः पुर॒स्ता॒त्पातु॑ प्र॒चे॒ता॒स्त्वा रु॒द्रैः प॒श्चात्पा॑तु ।

मनो॑जवा॒स्त्वा पि॒तृभि॑र्दक्षि॒णतः॑ पा॒तु वि॒श्वक॑र्मा॒ त्वादित्यै॑रु॒त्तर॑तः पा॒तु ॥१॥

१५

इ॒दम॒हं त॒प्तं वा॒र्षेहि॑र्धा॒ यज्ञा॑न्निः सृ॒जामि॑ ।

सि॒ःह्यसि॑ स्वाहा॒ सि॒ःह्यस्या॑दित्य॒वनिः॑ स्वाहा॒ ॥२॥

१६

सि॒ःह्यसि॑ ब्रह्म॒वनिः॑ क्षत्र॒वनिः॑ स्वाहा॒ सि॒ःह्यसि॑ सु॒प्रजा॑वनी॒ राय॑स्पोष॒वनिः॑ स्वाहा॑ ।

सि॒ःह्यस्या॑व॒ह दे॒वान्य॑ज॒मानाय॑ स्वाहा॒ भूते॑भ्य॒स्त्वा ॥३॥

१७

ध्रु॒वोऽसि॑ पृथि॒वीं द॑ह॒ ध्रु॒वक्षि॑दस्यन्त॒रिक्षं॑ द॑ह ।

अ॒च्यु॒तक्षि॑द॒सि दि॒व द॑ह॒ आग्ने॑र्भस्मा॒स्यग्नेः॑ पु॒रीष॑मसि ॥४॥ (४)

१८

यु॒ज्जते॑ मन॒ उ॒त यु॒ज्जते॑ धि॒यो वि॒प्रा वि॒प्रस्य॑ बृ॒हतो॑ वि॒पश्चितः॑ ।

वि हो॒त्रा द॑धे व॒युना॑विदे॒क इ॒न्मही॑ दे॒वस्य॑ स॒वितुः॑ परि॒ष्टुतिः॑ ॥१॥

१९ [१५४]

- इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् । समूळहमस्य पाशुरे स्वाहा ॥२॥ २०
- इरावती धेनुमती हि भूतः स्यवसिनी मनवे दशस्या ।  
व्यस्कभ्ना रोदसी विष्ण एते दाधर्थं पृथिवीमभितो मयूखैः स्वाहा ॥३॥ २१
- देवश्रुतौ देवेष्वधोषतम् । प्राची प्रेतमध्वरं कल्पयन्ती ऊर्ध्वं यज्ञं नयतं मा जिह्वरतम् ॥४॥ २२
- स्वं गोष्ठमावदतं देवी दुर्ये आयुर्मा निर्वीदिष्टं प्रजां मा निर्वीदिष्टम् ।  
अत्र रमेथां वर्ष्मन् पृथिव्याः ॥५॥ २३
- विष्णोर्नुकं वीर्यीणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजःसि ।  
यो अस्कभायुदुत्तरः सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायो विष्णवे त्वा ॥६॥ २४
- दिवो वा विष्ण उत वा पृथिव्या महो वा विष्ण उरोरन्तरिक्षात् ।  
उभा हि हस्ता वसुना पृणस्वा प्रयच्छ दक्षिणादोत सव्याद्विष्णवे त्वा ॥७॥ २५
- प्र तद्विष्णुं स्तवते वीर्येण मुगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः ।  
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा ॥८॥ २६
- विष्णो रराटमसि विष्णोः श्रष्ट्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि ।  
वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥९॥ (५) २७
- देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।  
आददे नार्यसीदमहः रक्षसो ग्रीवा अपि कृन्तामि ।  
बृहन्नसि बृहद्रवा बृहतीमिन्द्राय वाचं वद । रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवीम् ॥१॥ २८
- इदमहं तं वलगमुद्रपामि यन्नो निष्ठयो यममात्यो निचखानं ।  
इदमहं तं वलगमुद्रपामि यं नः समानो यमसमानो निचखानं ।  
इदमहं तं वलगमुद्रपामि यं नः सबन्धुर्यमसबन्धुर्निचखानं ।  
इदमहं तं वलगमुद्रपामि यं नः सजातो यमसजातो निचखानोत्कृत्यां किरामि ॥२॥ २९
- स्वराळसि सपत्नहा सत्रराळस्यभिमातिहा । जनराळसि रक्षोहा सर्वराळस्यमित्रहा ॥३॥ ३०
- रक्षोहणो वलगहनः प्रोक्षामि वैष्णवान्रक्षोहणो वलगहनोऽवनयामि वैष्णवान् ।  
रक्षोहणो वलगहनोऽवस्तृणामि वैष्णवान् ॥४॥ ३१
- रक्षोहणो वलगहना उपदधामि वैष्णवी रक्षोहणो वलगहनो पर्यूहामि वैष्णवी ।  
वैष्णवमसि वैष्णवा स्थ ॥५॥ (६) ३२ [२६७]

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।

आददे नार्यसीदमहः रक्षसो ग्रीवा अपिकृन्तामि । यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः ।

दिवे त्वान्तरिक्षाय त्वा पृथिव्यै त्वा ॥१॥

३३

शुन्धन्ताँल्लोकाः पितृषदनाः पितृषदनमसि ।

उदिवंस्तभानान्तरिक्षं पृण दहस्व पृथिव्याम् ॥२॥

३४

द्युतानस्त्वा मारुतो मिनोतु मित्रावरुणौ ध्रुवेण धर्मणा ।

ब्रह्मवर्नि त्वा क्षत्रवर्नि रायस्पोषवनि पर्युहामि ॥३॥

३५

ब्रह्म दह क्षत्रं दह्यार्युदह प्रजां दह । ध्रुवासि ध्रुवोऽस्मिन्यजमान आपतने भूयात् ।

घृतेन द्यावापृथिवी पूर्येथामिन्द्रस्य लदिरसि विश्वजनस्य छाया ॥४॥

३६

परि त्वा गिर्वणो गिर इमा भवन्तु विश्वतः । वृद्धायुमनु वृद्धयो जुष्टा भवन्तु जुष्टयः ॥५॥

३७

इन्द्रस्य स्यूरसीन्द्रस्य ध्रुवोऽसि । ऐन्द्रमसि वैश्वदेवमसि ॥६॥ (७)

३८

विभरसि प्रवाहणो वह्निरसि हव्यवाहनः । श्वात्रोऽमि प्रचेतास्तुथोऽसि विश्ववेदाः ॥१॥

३९

उशिगसि क्विरङ्गारिरसि वम्भारिः । अवस्यूरसि दुर्वस्वाञ्छुन्ध्यूरसि मार्जालीर्यः ॥२॥

४०

कृतधामासि स्वज्योतिः समुद्रोऽसि विश्वव्यचाः । अजोऽस्येकपादहिरसि बुध्न्यः ॥३॥

४१

सम्राळसि कृशानुः परिषद्योऽसि पवमानः । नभोऽसि प्रतर्का मृष्टोऽसि हव्यसदनः ॥४॥

४२

समृह्योऽसि विश्ववेदा ऊनातिरिक्तस्य प्रतिष्ठा ।

अग्रयः सगरा सगरा स्थ सगरेण नाम्ना रौद्रेणानीकेन ।

पातमाग्रयः पिपृतमाग्रयो नमो वोऽस्तु मा मा हिंसिष्ट ॥५॥ (८)

४३

ज्योतिरसि विश्वरूपं विश्वेषां देवानां समित् । त्वं सोम तनूकृद्भ्यो द्वेषोभ्योऽन्यकृतेभ्यः ।

उरु यन्तासि वरूथं स्वाहा । जुषाणो अमुराज्यस्य वेतु स्वाहा ॥१॥

४४

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।

युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूर्यिष्ठां ते नमउक्ति विधेम ॥२॥

४५

अयं नो अग्निर्वरिवस्कृणोत्वयं मृधः पुर एतु प्रभिन्दन् ।

अयं वाजाञ्जयतु वाजसाता अयं शत्रूञ्जयतु जर्हपाणः स्वाहा ॥३॥

४६

उरु विष्णां विक्रमस्त्रोरु क्षयाय नस्कृधि । घृतं घृतयोने पिब प्रपं यज्ञपतिं तिर स्वाहा ॥४॥

४७

देवं सवितरेष ते सोमस्तं रक्षस्व मा त्वा दभन् ।

एतत्त्वं देव सोम देवो देवाँ उपागाः ॥५॥

४८ [१८३]



इदमहं मनुष्यान्तस्सह रायस्पोषेण स्वाहा निर्वरुणस्य पाशान्मुच्ये । अग्ने व्रतपास्त्वे व्रतपाः ॥६॥ ४९  
या तवं तनूर्मय्यभूदेवा सा त्वयि या मम तनूस्त्वय्यभूदियं सा मयि ।

यथायथं नौ व्रतपते व्रतान्यनु मे दीक्षां दीक्षार्पतिरमस्तानु तपस्तपस्पतिः ॥७॥ (९) ५०

उरु विष्णो विक्रमस्त्रोरु क्षयाय नस्कृधि । घृतं घृतयोने पिब प्रप्र यज्ञपतिं तिर स्वाहा ॥१॥ ५१  
अत्यन्याँ३ अगां नान्याँ३ उपागाम् । अर्वाक्त्वा परेभ्यः परोऽवरेभ्यः ॥२॥ ५२

तं त्वा जुषामहे देव वनस्पते देवयज्यायै । देवास्त्वा देवयज्यायै जुषन्तां विष्णवे त्वा ॥३॥ ५३  
ओषधे त्रायस्व स्वर्धिते मेनं हिंसीः ।

दिवं मा लेखीरन्तरिक्षं मा हिंसीः पृथिव्या मभवे ॥४॥ ५४

अयं हि त्वा स्वर्धितिस्तेतिजानः प्रणिनाय महते सौभगाय ।

अतस्त्वं देव वनस्पते शतवल्शो विरोह सहस्रवल्श वि वयं रुहेम ॥५॥ (१०) ५५ [२९०]

अग्नेस्तनूरसि चतस्रः ॥ ४ ॥ आ पतयेऽष्ट ॥ ८ ॥ तप्तयनी द्वे ॥ २ ॥ इन्द्रघोषश्चतस्रः ॥ ४ ॥

युञ्जते नव ॥ ९ ॥ देवस्य त्वा पञ्च ॥ ५ ॥ द्वितीयदेवस्य त्वा षट् ॥ ६ ॥ विभूरसि

पञ्च ॥ ५ ॥ ज्योतिरसि सप्त ॥ ७ ॥ उरु विष्णो पञ्च ॥ ५ ॥ दशानुवाकेषु

पञ्चपञ्चाशत् ॥ ५५ ॥ अग्नेस्तनूरसि पञ्चपञ्चाशत् ॥

॥ इति शुक्लयजुःकाण्वसंहिताया पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

### अथ षष्ठाऽध्यायः ॥

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोवाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।

आददे नार्यसीदमहं रक्षमो ग्रीवा अपिक्वन्ताभि ।

यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारांतीः ।

दिवे त्वान्तरिक्षाय त्वा पृथिव्यै त्वा ।

शुन्धन्ताँलोकाः पितृषदनाः पितृषदनमसि ॥१॥ १

अग्नेणीरसि स्वावेश उन्नेतृणामेतस्य वित्तादधि त्वा स्थास्यति ।

देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु सुपिप्ताभ्यस्तवौषधीभ्यः ।

दिवमग्नेणास्पृक्ष आन्तरिक्षं मध्येनाप्राः पृथिवीमुषेणाहंहीः ॥२॥ २

या ते धामान्युदमसि गमधै यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः ।

अत्राहैतदुरुगायस्य विष्णोः परमं पदमवभारि भूरि ॥३॥ ३ [२९३]

ब्रह्मवर्नि त्वा क्षत्रवर्नि रायस्पोषवनि पर्यूहामि ।

ब्रह्म दृह क्षत्रं दृह हायुर्दृह प्रजां दृह ॥४॥

विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे । इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥५॥

तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुराततम् ॥६॥

परि वीरसि परि त्वा दैवीविंशो व्ययन्ताम् । परीमं यजमानं रायो मनुष्याणाम् ।

दिवः सूनुरस्येष्टे तं पृथिव्याल्लोक आरण्यस्ते पशुः ॥७॥ (१)

उपावीरस्युप देवान् दैवीविंशः प्रागुरुशिजो वह्निमान् ।

देवं त्वष्टृषु रम हव्या तं स्वदन्ताम् ॥१॥

रेवती रमध्वं बृहस्पते धारया वसूनि ।

ऋतस्य त्वा देवहविः पाशेन प्रतिमुञ्चामि धर्षान् मानुषः ॥२॥

देवस्य त्वा मवितुः प्रसवेऽश्विनोर्वाहुभ्यां पृष्णो हस्ताभ्याम् ।

अग्नीषोमाभ्यां जुष्टं नियुनज्मि ।

अञ्जस्त्वौषधभ्यः प्रोक्षाम्यनु त्वा माता मन्यतामनु पितानु आता मगभ्योऽनु सखा सयूभ्यः ।

अग्नीषोमाभ्यां त्वा जुष्टं प्रोक्षामि ॥३॥

अपां पेरुरस्यापो देवीः सन्दन्तु । स्वात्तं चिन्मद्वहविः ॥४॥

मं तं प्राणो वातेन गच्छतां समङ्गानि यजत्रैः । सं यजमान आशिषा ॥५॥

घृतेनाक्तौ पशूस्त्रायेथां रेवति यजमाने । प्रियं धा आविश ॥६॥

उरोरन्तरिक्षात्सज्जुर्देवेन वातेन । अस्य हविपस्मना यज समस्य तन्वा भव ॥७॥

वषो वर्षीयमि यजे यजपति धाः । स्वाहा देवेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ।

महिर्भूर्मा पृदाकुः ॥८॥ (२)

नमस्त आतानानर्वा प्रेहि । घृतस्य कुल्या उप ऋतस्य पथ्या उप ॥१॥

देवीरापः शुद्धा वोद्वं सुपरिविष्टा देवेषु । सुपरिविष्टा वयं परिवेष्टारो भूयास्म ॥२॥

वाचं ते शुन्धामि प्राणं ते शुन्धामि चक्षुस्ते शुन्धामि श्रोत्रं ते शुन्धामि ।

नाभिं ते शुन्धामि मेढ्रं ते शुन्धामि पायुं ते शुन्धामि चरित्रांस्ते शुन्धामि ॥३॥

मनस्त आप्यायतां वाक्त आप्यायतां प्राणस्त आप्यायतां

चक्षुस्त आप्यायतां श्रोत्रं त आप्यायताम् ।

यत्ते क्रूरं यदास्थितं तत् आप्यायतां तत्ते निष्ठायां तत्ते शुध्यतु शमहोभ्यः ॥४॥ १९ [३०९]

- ओषधे त्रायस्व स्वर्धिते मैनः हिंसीः । रक्षसां भागोऽसि निरस्तः रक्षः ॥५॥ २०
- इदमहः रक्षोऽभितिष्ठामीदमहः रक्षोऽववाधे । इदमहः रक्षोऽधमं तमो नयामि ॥६॥ २१
- घृतेन द्यावापृथिवी प्रोष्वीथां वायो वे स्तोकानाम् ।  
जुषाणो अग्निराज्यस्य वेतु स्वाहा । स्वाहाकृते ऊर्ध्वनभसं मारुतं गच्छतम् ॥७॥ (३) २२
- सं ते मनो मनसा सं प्राणः प्राणेन गच्छताम् । रेळस्यग्निष्टा श्रीणात्वापस्त्वा समरिणन् ॥१॥ २३
- वार्तस्य त्वा ध्राज्यै पूष्णो रक्षा ऊष्मणो व्यथिषत् । प्रयुतं द्वेषः ॥२॥ २४
- घृतं घृतपावानः पिबतु वसां वमापावानः पिबत । अन्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा ॥३॥ २५
- दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उदिशो दिग्भ्यः स्वाहा ।  
ऐन्द्रः प्राणो अङ्गेअङ्गे निर्धीत ऐन्द्र उदानो अङ्गेअङ्गे निदीधे ॥४॥ २६
- देव त्वष्टर्भूरिं ते सः संमेतु स लक्ष्मा यद्विषुरुपं भवाति ।  
देवत्रा यन्तमवसे सखायोऽनु त्वा माता पितरौ मदन्तु ॥५॥ (४) २७
- समुद्रं गच्छ स्वाहा देवः सवितारं गच्छ स्वाहा ।  
अन्तरिक्षं गच्छ स्वाहा मित्रावरुणौ गच्छ स्वाहा ।  
अहोरात्रे गच्छ स्वाहा छन्दांसि गच्छ स्वाहा ।  
द्यावापृथिवी गच्छ स्वाहा सोमं गच्छ स्वाहा ।  
यज्ञं गच्छ स्वाहा नभो दिव्यं गच्छ स्वाहा ।  
अग्निं वैश्वानरं गच्छ स्वाहा मनो मे हार्द्यच्छ ॥१॥ २८
- दिवं ते धूमो गच्छत्वन्तरिक्षं ज्योतिः । पृथिवीं भस्मनापृण स्वाहा ॥२॥ २९
- मापो मौषधीहिंस्रीर्धाम्नो धाम्नो राजस्ततो वरुण नो मुञ्च ।  
यदाहुरध्या इति वरुणेति शपोमहे ततो वरुण नो मुञ्च ॥३॥ ३०
- सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्यै सन्तु ।  
योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः ॥४॥ ३१
- इदमापः प्रवहत यत्किं च दुरितं मयि ।  
यद्वाहमभिदुद्रोह यद्वा शेष उतानृतम् ॥५॥ (५) ३२

हविर्मतीरिमा आपो हविर्माँ३ आर्विवासति ।

हविर्मान् देवो अश्वरो हविर्माँ३ अस्तु सूर्यः ॥१॥

अग्नेर्वोऽपन्नगृहस्य सदसि सादयामि । इन्द्राग्नयोर्भागधेयीं स्थ मित्रावरुणयोर्भागधेयीं स्थ ।

विश्वेषां देवानां भागधेयीं स्थ ॥२॥

३४

अमूर्या उप सूर्ये याभिर्वा सूर्यः सह । ता नो हिन्वन्त्वध्वरम् ॥३॥ (६)

३५

हृदे त्वा मनसे त्वा दिवे त्वा सूर्याय त्वा । ऊर्ध्वो अध्वरं दिवि देवेषु होत्रा यच्छ ॥१॥ ३६

सोमं राजन्विश्वास्त्वं प्रजा उपावरोह । विश्वास्त्वां प्रजा उपावरोहन्तु ॥२॥

३७

शृणोत्वग्निः समिधा हवै मे शृण्वन्त्वापो धिषणांश्च देवीः ।

श्रोतां ग्रावाणो विदुषो न यज्ञं शृणोतु देवः सविता हवै मे स्वाहा ॥३॥

३८

देवीरापो अपां नपाद्यो व ऊर्मिर्हविष्यः । इन्द्रियावान् मदिन्तमः ॥४॥

३९

तं देवेभ्यो देवत्रा दात शुक्रपेभ्यः । येषां भाग स्थ स्वाहा ॥५॥

४०

कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि । समापो अद्भिरग्मतु समोर्षधीभिरोर्षधीः ॥६॥

४१

पर्मणे पृत्सु मर्त्यमवा वाजेषु यं जुनाः । स यन्ता शश्वतीरिषः स्वाहा ॥७॥ (७)

४२

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।

आददे रावांसि गभीरमिममध्वरं कृधीन्द्राय सुषृतमम् ।

उत्तमेन पविनोर्जस्वन्तं मधुमन्तं पर्यस्वन्तम् ।

निग्राभ्यां स्थ देवश्रुतस्तर्पयत मा ॥१॥

४३

मनो मे तर्पयत वाचं मे तर्पयत प्राणं मे तर्पयत चक्षुर्मे तर्पयत श्रोत्रं मे तर्पयत ।

आत्मानं मे तर्पयत प्रजां मे तर्पयत पशुन् मे तर्पयत गणान्मे तर्पयत गणा मे मा विवृषन् ॥२॥ ४४

इन्द्राय त्वा वसुमते रुद्रवत इन्द्राय त्वादित्यवते ।

इन्द्राय त्वाभिमातिद्वये इयेनाय त्वा सोमभृतेऽग्नये त्वा रायस्पोषदे ॥३॥

४५

यत्तं सोम दिवि ज्योतिर्यत्पृथिव्यां यदुरा अन्तरिक्षे ।

तेनास्मै यजमानायोरु राये कृध्यधि दावे वीचः ॥४॥

४६

श्वात्रा स्थ वृत्रतुरो राधोगूर्त्ता अमृतस्य पत्नीः ।

ता देवीर्देवत्रेभं यज्ञं नयतोपहृताः सोमस्य पिबत ॥५॥

४७

मा मेर्मा संविकथा ऊर्जे धत्स्व धिषणे वीक्षी सती वीळ्येथामूर्जे दधाथाम् ।

पाप्मा हतो न सोमः ॥६॥

४८

प्रागपागुर्दगधराकसर्वतस्त्वा दिश आधावन्तु । अम्ब निष्पर समरीर्विदाम् ॥७॥ ४९ [३३९]

त्वमङ्ग प्रशंसिषो देवः शविष्ठु मर्त्यम् ।

न त्वदन्यो मघवन्नस्ति मडितेन्द्र ब्रवीमि ते वचः ॥८॥ (८)

५० [३४०]

देवस्य त्वा सप्त ॥ ७ ॥ उपाधीरस्यष्ट ॥ ८ ॥ नमस्ते सप्त ॥ ७ ॥ सन्ते पञ्च ॥ ५ ॥ समुद्रं

पञ्च ॥ ५ ॥ हविष्मतास्तिस्रः ॥ ३ ॥ हृदे त्वा सप्त ॥ ७ ॥ देवस्य त्वाष्ट ॥ ८ ॥

अष्टानुवाकेषु पञ्चाशत् ॥ ५० ॥ इष देवस्य समाः पञ्चाशत् ॥

॥ इति शुक्लयजुःकाण्वसंहितायां षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

### अथ सप्तमोऽध्यायः ॥

वाचस्पतये पवस्व वृष्णो अशुभ्यां गर्भस्तिपूतः ।

देवो देवेभ्यः पवस्व येषां भागोऽसि मधुमतीर्न इषस्कृधि ॥१॥

१

यत्ते सोमादाभ्यं नाम जागृवि तस्मै ते सोम सोमाय स्वाहा ।

स्वाहोर्वन्तरिक्षमन्वेमि स्वाङ्कृतोऽसि विश्वेभ्य इन्द्रियेभ्यो दिव्येभ्यः पार्थिवेभ्यः ॥२॥

२

मनस्त्वाष्टु स्वाहा त्वा स्वभवः सूर्याय । देवेभ्यस्त्वा मरीचिपेभ्यो देवांसो यस्मै त्वेळ ॥

तत्सत्यमुपरिपुता भङ्गेन हतोसौ फट् । प्राणाय त्वा व्यानार्य त्वा ॥३॥ ( १ )

३

उपयामगृहीतोऽस्यन्तर्यच्छ मघवन् पाहि सोमम् । उरुण्य रायोवेषो यजस्व ॥१॥

४

अन्तस्ते द्यावापृथिवी दधाम्यन्तर्दधाम्युर्वन्तरिक्षम् ।

सज्जदेवेभिरवरैः परैश्चान्तर्यामे मघवन् मादयस्व ।

स्वाहोर्वन्तरिक्षमन्वेमि स्वाङ्कृतोऽसि विश्वेभ्य इन्द्रियेभ्यो दिव्येभ्यः पार्थिवेभ्यः ।

मनस्त्वाष्टु स्वाहा त्वा स्वभवः सूर्याय । देवेभ्यस्त्वा मरीचिपेभ्य उदानार्य त्वा ॥२॥ (२) ५

आ वायो भूष शुचिपा उप नः सहस्रं ते नियुतो विश्ववार ।

उपो ते अन्धो मघमयामि यस्य देव दधिषे पूर्वपेयं वायवे त्वा ॥१॥

६

इन्द्रवायू इमे सुता उप प्रयोभिरागतम् । इन्द्रो वो वामुशन्ति हि ।

उपयामगृहीतोऽसि वायवे इन्द्रवायुभ्यां त्वेष ते योनिः सजोषोभ्यां त्वा ॥२॥ (३)

७

अयं वा मित्रावरुणा सुतः सोमं क्रतावृधा । ममेदिह श्रुतं हवम् ।

उपयामगृहीतोऽसि मित्रावरुणाभ्यां त्वा ॥१॥

८

राया वयं संसवांसो मदेम हव्येन देवा यवसेन गार्वः ।

तां धेनुं मित्रावरुणा युवं नो विश्वाहा घत्तमनपस्फुरन्तीम् । एष ते योनिर्ऋतायुभ्यां त्वा ॥२॥ (४) ९

[३४९]

या वां कशा मधुमत्याश्विना सुनृतावती । तया यज्ञं मिमिक्षतम् ।  
उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यां त्वैष ते योनिर्माध्वीभ्यां त्वा ॥१॥ (५)

१०

तं प्रलथा पूर्वथा विश्वथेमथा ज्येष्ठताति बर्हिषदः स्वविदम् ।  
प्रतीचीनं वृजनं दोहसे धुनिमाशुं जयन्तमनु यासु वर्धसे । उपयामगृहीतोऽसि शण्डाय त्वा ॥१॥११  
एष ते योनिर्वीरतां पाह्यपमृष्टः शण्डो देवास्त्वा शुक्रपाः प्रणयन्त्वनाधृष्टासि ।

सुवीरो वीरान् प्रजनयन् परीह्यभि रायस्पोषेण यजमानम् ।

संजग्मानो दिवा पृथिव्या शुक्रः शुक्रशोचिषा निरस्तः शण्डः शुक्रस्याधिष्ठानमसि ॥२॥

१२

अच्छिन्नस्य ते देव सोम सुवीर्यस्य रायस्पोषस्य ददितारः स्याम ।

सा प्रथमा सःस्कृतिर्विश्ववारा स प्रथमो वरुणो मित्रो अग्निः ॥३॥

१३

स प्रथमो बृहस्पतिश्चिकित्वाःस्तस्मा इन्द्राय सुतमा जुहोत स्वाहा ।

तृप्पन्तु होत्रा मधोर्यत्स्विष्टं यत्सुभृतं यत्स्वाहा ॥४॥ (६)

१४

अयं वेनश्चोदयत्पृश्निगर्भा ज्योतिर्जरायू रजसो विमाने ।

इममपाः संगमे सूर्यस्य शिशुं न विप्रा मतिभी रिहन्ति ।

उपयामगृहीतोऽसि मर्काय त्वा ॥१॥

१५

मनो न येषु हवनेषु तिग्मं विपः शच्या वनुथो द्रवन्ता ।

आ यः शर्याभिस्तुविनुम्णो अस्या श्रीणीतादिशं गभस्तौ ॥२॥

१६

एष ते योनिः प्रजाः पाह्यपमृष्टो मर्को देवास्त्वा मन्थिपाः प्रणयन्त्वनाधृष्टासि ।

सुप्रजाः प्रजाः प्रजनयन् परीह्यभि रायस्पोषेण यजमानम् ।

संजग्मानो दिवा पृथिव्या मन्थी मन्थिशोचिषा निरस्तो मर्को मन्थिनोऽधिष्ठानमसि ॥३॥

१७

अच्छिन्नस्य ते देव सोम सुवीर्यस्य रायस्पोषस्य ददितारः स्याम ।

सा प्रथमा सःस्कृतिर्विश्ववारा स प्रथमो वरुणो मित्रो अग्निः ॥४॥

१८

स प्रथमो बृहस्पतिश्चिकित्वाःस्तस्मा इन्द्राय सुतमा जुहोत स्वाहा ।

तृप्पन्तु होत्रा मधोर्यत्स्विष्टं यत्सुभृतं यत्स्वाहा ॥५॥ ( ७ )

१९

ये देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्यामध्येकादश स्थ ।

अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम् ॥१॥

२०

उपयामगृहीतोऽस्याग्रयणोऽसि स्वाग्रयणः । पाहि यज्ञं पाहि यज्ञपतिम् ॥२॥

२१[३६१]

विष्णुस्त्वामिन्द्रियेण पातु विष्णुं त्वं पाह्यभि सर्वनानि पाहि ।

सोमः पवते सोमः पवते सोमः पवते ॥३॥

२२

अस्मै ब्रह्मणे पवतेऽस्मै क्षत्राय पवतेऽस्मै सुन्वते यजमानाय पवते ।

इष ऊर्जे पवतेऽस्य ओषधीभ्यः पवते द्यावापृथिवीभ्यां पवते सुभूताय पवते ब्रह्मवर्चसाय पवते ।

विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्य एष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः ॥४॥ (८)

२३

उपयामगृहीतोऽसिन्द्राय त्वा बृहद्वते वयस्वत उक्थायुर्वं गृह्णामि ।

यत्त इन्द्र बृहद्वयस्तस्मै त्वा विष्णवे त्वैषते योनिरुक्थेभ्यस्त्वा ॥१॥

२४

देवेभ्यस्त्वा देवायुर्वं गृह्णामि यज्ञस्यायुषे मित्रावरुणाभ्यां त्वा देवायुर्वं गृह्णामि यज्ञस्यायुषे ।

इन्द्राय त्वा देवायुर्वं गृह्णामि यज्ञस्यायुष इन्द्राग्निभ्यां त्वा देवायुर्वं गृह्णामि यज्ञस्यायुषे ।

इन्द्राय त्वा देवायुर्वं गृह्णामि यज्ञस्यायुष इन्द्रावरुणाभ्यां त्वा देवायुर्वं गृह्णामि यज्ञस्यायुषे ।

इन्द्राबृहस्पतिभ्यां त्वा देवायुर्वं गृह्णामि यज्ञस्यायुष इन्द्राविष्णुभ्यां

त्वा देवायुर्वं गृह्णामि यज्ञस्यायुषे ॥२॥ (९)

२५

मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम् ।

क्विविः सप्रजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ॥१॥

२६

उपयामगृहीतोऽसि ध्रुवोऽसि ध्रुवक्षितिर्ध्रुवाणां ध्रुवतमोऽच्युतानामच्युतक्षित्तमः ।

एष ते योनिर्वैश्वानराय त्वा ॥२॥

२७

ध्रुवं ध्रुवेण मनसा वाचा सोममवनयामि । अथा न इन्द्र इद्विशो सपत्नाः समनसस्करन्त ॥३॥

(१०) २८

यस्ते द्रप्स स्कन्दति यस्ते अः शुर्गवच्युतो धिषणयोरुपस्थात् ।

अध्वर्योर्वा परि वा यः पवित्रात्तं तं जुहोमि मनसा

वषट्कृतः स्वाहा देवानामुत्क्रमणमसि ॥१॥ (११)

२९

उपयामगृहीतोऽसि मध्वे त्वोपयामगृहीतोऽसि माधवाय त्वा ।

उपयामगृहीतोऽसि शुक्राय त्वोपयामगृहीतोऽसि शुचये त्वा ।

उपयामगृहीतोऽसि नभसे त्वोपयामगृहीतोऽसि नभस्याय त्वा ।

उपयामगृहीतोऽसीषे त्वोपयामगृहीतोऽस्यूर्जे त्वा ।

उपयामगृहीतोऽसि सहसे त्वोपयामगृहीतोऽसि सहस्याय त्वा ।

उपयामगृहीतोऽसि तपसे त्वोपयामगृहीतोऽसि तपस्याय त्वा ।

उपयामगृहीतोऽस्यः हसस्पतये त्वा ॥१॥ (१२)

३० [३७०]

इन्द्राग्नी आगतं सुतं गीर्भिर्नमो वरेण्यम् । अस्य पातं धियेषिता ।

उपयामगृहीतोऽसीन्द्राग्निभ्यां त्वैष ते योनिरिन्द्राग्निभ्यां त्वा ॥१॥ (१३) ३१

आ घा ये अग्निमिन्धते स्तृणन्ति बर्हिर्नानुषक् । येषामिन्द्रो युवा सखा ।

उपयामगृहीतोऽस्यग्नीन्द्राभ्यां त्वैष ते योनिरग्नीन्द्राभ्यां त्वा ॥१॥ (१४) ३२

ओमांसश्चर्षणीधृतो विश्वे देवास आ गत । दाश्वाः सौ दाशुषः सुतम् ।

उपयामगृहीतोऽसि विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्य एष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः ॥१॥ (१५) ३३

विश्वे देवास आगतं शृणुता म इमं हवम् । एदं बर्हिर्निर्णीदत ।

उपयामगृहीतोऽसि विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्य एष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः ॥१॥ (१६) ३४

इन्द्रं मरुत्व इह पाहि सोमं यथा शार्याते अपिबं सुतस्य ।

तव प्रणीती तव शूर शर्मन्नाविवासन्ति कवयः सुयज्ञाः ।

उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा मरुत्वत एष ते योनिरिन्द्राय त्वा मरुत्वते ॥१॥ (१७) ३५

मरुत्वन्तं वृषभं वावृधानमर्कवारि दिव्यं शासमिन्द्रम् ।

विश्वासाहमवसे नूतनायोग्रं संहोदाभिह तं हुवेम ।

उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा मरुत्वत एष ते योनिरिन्द्राय त्वा मरुत्वते ॥१॥ (१८) ३६

उपयामगृहीतोऽसि मरुतामोजसे त्वा ॥१॥ (१९)

३७

सजोषा इन्द्रं सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान् ।

जहि शत्रूँ रप मृधो नुदस्वाथामयं कृणुहि विश्वतो नः ।

उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा मरुत्वत एष ते योनिरिन्द्राय त्वा मरुत्वते ॥१॥ (२०) ३८

महाँ इन्द्रो नृवदा चर्षणिप्रा उत द्विवर्ही अग्निनः सहोभिः ।

अस्मद्रथं वावृधे वीर्यायोरुः पृथुः सुकृतः कर्तृभिर्भूत् ।

उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा ॥१॥ (२१) ३९

महाँ इन्द्रो य ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव स्तोमैर्वृत्सस्य वावृधे ।

उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा ॥१॥ (२२) ४० [३८०]

वाचम्पतये तिस्रः ॥३॥ उपयामगृहीतोऽसि द्वे ॥२॥ आ वायो द्वे ॥२॥ अयं चां द्वे ॥२॥ या वामेका ॥१॥

तं प्रत्नथा चतस्रः ॥४॥ अयं वेनः पञ्च ॥५॥ ये देवासश्चतस्रः ॥४॥ इन्द्राय त्वा द्वे ॥२॥ मूर्धानं

तिस्रः ॥३॥ यस्त एका ॥१॥ मधव एका ॥१॥ इन्द्राग्नी आगतमेका ॥१॥ आ घा य एका ॥१॥

ओमांसश्चर्षणीधृत एका ॥१॥ विश्वे देवास एका ॥१॥ इन्द्रं मरुत्व एका ॥१॥ मरुत्वन्तं

वृषभमेका ॥१॥ मरुतामोजस एका ॥१॥ सजोषा इन्द्र एका ॥१॥ महाँ इन्द्र एका ॥१॥

महाँ इन्द्रेत्येका ॥१॥ द्वाविंशत्यनुवाकेषु चत्वारिंशत् ॥४०॥

॥ इति शुक्लयजुःकाण्वसंहितायां सप्तमोऽध्यायः ॥७॥



## अथाष्टमोऽध्यायः ॥

- कदा चन स्तरीरसि नेन्द्रं सश्वसि द्वाशुषे ।  
उपोषेक्षु मधवन्भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यत आदित्येभ्यस्त्वा ॥१॥ १
- कदा चन प्रयुच्छस्युभे निषामि जन्मनी ।  
तुरीयादित्य सर्वनं त इन्द्रियमातस्था अमृतं दिव्यादित्येभ्यस्त्वा ॥२॥ २
- यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मल्लयन्तः ।  
आ वोऽर्वाचीं सुमतिर्ववृत्यादुःहोश्चिद्या वरिवोवित्तरासदादित्येभ्यस्त्वा ।  
विवस्वाँ३ आदित्यैष ते सोमपीथस्तस्मिन् मत्स्व ॥३॥ (१) ३
- श्रदस्मै नरो वचसे दधातन यदाशीर्दा दंपती वाममश्रुतः ।  
पुमान् पुत्रो जायते विन्दते वस्वधा विश्वाहारप एधते गृहे ॥१॥ (२) ४
- वाममद्य सवितर्वाममु श्वो दिवेदिवे वाममस्मभ्यं सावीः ।  
वामस्य हि क्षयस्य देव भूरैर्या धिया वामभाजः स्याम ॥१॥ (३) ५
- उपयामगृहीतोऽसि सावित्रोऽसि चनोधाश्चनो मयि धेहि ।  
जिन्व यज्ञं जिन्व यज्ञपतिं भगाय सवित्रे त्वा ॥१॥ (४) ६
- उपयामगृहीतोऽसि सुशर्मासि सुप्रतिष्ठानो बृहदुक्षाय नमः ।  
विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्य एष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः ॥१॥ (५) ७
- उपयामगृहीतोऽसि बृहस्पतिसुतस्य ते देव सोम ।  
इन्द्रं इन्द्रियावतः पत्नीवतो ग्रहोँ३ ऋध्यासम् ॥१॥ ८
- अहं परस्तादुहमवस्ताद्यदन्तरिक्षं तदु मे पितासं ।  
अहं सूर्यमुभयतो ददर्शाहं देवानां परमं गुहा यत् ॥२॥ ९
- अग्ने वाक्पत्निं सज्जुदेवेन त्वष्टा । सोमं पिव स्वाहा ॥३॥ १०
- प्रजापतिर्वृषासि रेतोधा रेतो मयि धेहि । प्रजापतेस्ते वृष्णो रेतोधसो रेतोधामशीय ॥४॥ (६) ११
- उपयामगृहीतोऽसि हरिरसि हारियोजनो हरिभ्यां त्वा ।  
हयोर्धाना स्थ सहसो मा इन्द्राय ॥१॥ १२
- यस्ते देव सोमाश्चसर्निर्भक्षो यो गोसर्निः ।  
तस्य त इष्टयजुष स्तुतस्तोमस्य शस्तोकथस्योपहृत उपहृतस्य भक्षयामि ॥२॥ (७) १३

युक्ष्वा हि केशिना हरी वृषणा कक्ष्यग्रा । अथा न इन्द्र सोमपा गिराम्पश्रुतिं चर ।  
 उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा पोळशिनं एष ते योनिरिन्द्राय त्वा पोळशिनं ॥१॥ (८) १४  
 आतिष्ठ वृत्रहन् रथं युक्ता ते ब्रह्मणा हरी । अर्वाचीनं सु ते मनोप्रावां कृणोतु वग्नुना ।  
 उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा पोळशिनं एष ते योनिरिन्द्राय त्वा पोळशिनं ॥१॥ (९) १५  
 इन्द्रमिद्वरीं वहतोऽप्रतिघृष्टशवसम् । ऋषीणां च स्तुतीरुपं यज्ञं च मानुषाणाम् ।  
 उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा पोळशिनं एष ते योनिरिन्द्राय त्वा पोळशिनं ॥१॥ (१०) १६  
 यस्मान्न जातः परो अन्यो अस्ति य आविवेश भुवनानि विश्वा ।  
 प्रजापतिः प्रजयां सः पराणस्त्रीणि ज्योतींश्चि सचते स पोळशी ॥१॥ १७  
 इन्द्रश्च सम्राड् वरुणश्च राजा तौ ते भक्षं चक्रतुग्र एतम् ।  
 तयोर्हमनुं भक्षं भक्षयामि वाग्देवी जुषाणा सोमस्य तृप्यतु सह प्राणेन स्वाहा ॥२॥ (११) १८  
 अग्न आयुंश्चि पवस आसुवोर्जमिषं च नः । आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ।  
 उपयामगृहीतोऽस्यग्रये त्वा वर्चस एष ते योनिरग्रये त्वा वर्चसे ।  
 अग्ने वर्चस्वन्वर्चस्वाःस्त्वं देवेष्वसि । वर्चस्वानहं मनुष्येषु भूयासम् ॥१॥ (१२) १९  
 अग्ने पवस्व स्वपां असे वर्चः सुवीर्यम् । दधद्रयि मयि पोषम् ।  
 उपयामगृहीतोऽस्यग्रये त्वा वर्चस एष ते योनिरग्रये त्वा वर्चसे ।  
 अग्ने वर्चस्वन्वर्चस्वाःस्त्वं देवेष्वसि । वर्चस्वानहं मनुष्येषु भूयासम् ॥१॥ (१३) २०  
 उत्तिष्ठन्नोर्जसा सह पीत्वी शिप्रै अवेपयः । सोममिन्द्र चमू मुतम् ।  
 उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वौर्जस एष ते योनिरिन्द्राय त्वौर्जसे ।  
 इन्द्रौर्जस्वन्नोर्जस्वाःस्त्वं देवेष्वसि । ओर्जस्वानहं मनुष्येषु भूयासम् ॥१॥ (१४) २१  
 अदृश्रमस्य केतवो वि रश्मयो जनाँश्च अनु । भ्राजन्तो अग्रयो यथा ।  
 उपयामगृहीतोऽसि सूर्याय त्वा भ्राज एष ते योनिः सूर्याय त्वा भ्राजे ।  
 सूर्ये भ्राजस्वन्भ्राजस्वाःस्त्वं देवेष्वसि । भ्राजस्वानहं मनुष्येषु भूयासम् ॥१॥ (१५) २२  
 उदु त्यं जातवैदमं देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम् ।  
 उपयामगृहीतोऽसि सूर्याय त्वा भ्राज एष ते योनिः सूर्याय त्वा भ्राजे ।  
 सूर्ये भ्राजस्वन्भ्राजस्वाःस्त्वं देवेष्वसि । भ्राजस्वानहं मनुष्येषु भूयासम् ॥१॥ (१६) २३

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः ।

आ प्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगत्स्तस्थुषश्च ।

उपयामगृहीतोऽसि सूर्याय त्वा भ्राज एष ते योनिः सूर्याय त्वा भ्राजे ।

सूर्यं भ्राजस्वन्भ्राजस्वाःस्त्वं देवेष्वसि ।

भ्राजस्वानहं मनुष्येषु भूयासम् ॥१॥ (१७)

२४

वि न इन्द्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः ।

यो अस्माँ३ अभिदासत्यधरं गमया तमः ।

उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा विमृध एष ते योनिरिन्द्राय त्वा विमृधे ॥१॥ (१८) २५

वाचस्पतिं विश्वकर्माणमूतये मनोजुवं वाजं अद्या हुवेम ।

स नो विश्वानि हवनानि जोषद्विश्वशम्भूरवसे साधुकर्मा ।

उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा विश्वकर्मण एष ते योनिरिन्द्राय त्वा विश्वकर्मणे ॥१॥ (१९) २६

विश्वकर्मन्हविषा वावृधानः स्वयं यजस्व पृथिवीमुत द्याम् ।

मुहन्त्वन्ये अभितः सपत्ना इहास्माकं मघवा सूरिरस्तु ।

उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा विश्वकर्मण एष ते योनिरिन्द्राय त्वा विश्वकर्मणे ॥१॥ (२०) २७

विश्वकर्मन्हविषा वर्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरयुध्यम् ।

तस्मै विश्वः समनमन्त पूर्वोरयमुग्रो विहव्यो यथासत् ।

उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा विश्वकर्मण एष ते योनिरिन्द्राय त्वा विश्वकर्मणे ॥१॥ (२१) २८

उपयामगृहीतोऽस्यग्रये त्वा गायत्रच्छन्दसं गृह्णामीन्द्राय त्वा त्रिष्टुप्छन्दसं गृह्णामि ।

विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जगच्छन्दसं गृह्णाम्यनुष्टुप्तेऽभिगरः ॥१॥

२९

व्रेशीनां त्वा पत्मन्नाधूनोमि कुकूननानां त्वा पत्मन्नाधूनोमि

भन्दनानां त्वा पत्मन्नाधूनोमि मध्वन्तमानां त्वा पत्मन्नाधूनोमि ।

शुक्रं त्वा शुक्र आधूनोम्यहो रूपे सूर्यस्य रश्मिषु ॥२॥

३०

कुकुह रूपं वृषभस्य रोचते बृहत्सोमः सोमस्य पुरोगाः शुक्रः शुक्रस्य पुरोगाः ।

यत्ते सोमादाभ्यं नाम जागृवि तस्मै त्वा गृह्णामि तस्मै ते सोम सोमाय स्वाहा ॥३॥ ३१ [४११]

उ॒शिक् त्वं दे॒व सोमा॒ग्नेः प्रि॒यं पाथोऽपी॑हि व॒शी त्वं दे॒व सोमेन्द्र॑स्य प्रि॒यं पाथोऽपी॑हि ।  
अ॒स्मत्स॒खा त्वं दे॒व सोम॒ विश्वे॑षां दे॒वानां॑ प्रि॒यं पाथोऽपी॑हि ॥४॥ (२२) ३२ [४१२]

कदाचन तिस्रः ॥ ३ ॥ अदस्मयैका ॥ १ ॥ वाममयैका ॥ १ ॥ सावित्र एका ॥ १ ॥ सुशर्मैत्येका ॥ १ ॥  
बृहस्पतिश्चतस्रः ॥ ४ ॥ हरिरसि द्वे ॥ २ ॥ युक्ष्वा ह्येका ॥ १ ॥ आतिष्ठैका ॥ १ ॥ इन्द्रमित्येकैका ॥ १ ॥  
यस्मान्न जात इति द्वे ॥ २ ॥ अग्न आयूष्येका ॥ १ ॥ अग्ने पवस्वैका ॥ १ ॥ उत्तिष्ठन्नैका ॥ १ ॥  
अदश्रमेका ॥ १ ॥ उदुत्यमेका ॥ १ ॥ चित्रमेका ॥ १ ॥ त्वन एका ॥ १ ॥ वाचस्पतिमेका ॥ १ ॥  
विश्वकर्मन्नेका ॥ १ ॥ विश्वकर्मन्त्रित्येका ॥ १ ॥ अग्नये त्वा चतस्रः ॥ ४ ॥  
द्वाविंशत्यनुवाकेषु द्वाविंशत् ॥ ३२ ॥

॥ इति शुक्लयजुःकाण्वसंहितायां अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

### अथ नवमोऽध्यायः ।

प्रा॒णाय॑ मे व॒र्चो॒दा व॒र्चसे॑ प॒वस्व॒ व्या॒नाय॑ मे व॒र्चो॒दा व॒र्चमे॑ प॒वस्व॒ ।  
उ॒दानाय॑ मे व॒र्चो॒दा व॒र्चसे॑ प॒वस्व॒ वा॒चे मे॑ व॒र्चो॒दा व॒र्चसे॑ प॒वस्व॒ ॥१॥ १  
क॒तुद॒क्षाभ्यां॑ मे व॒र्चो॒दा व॒र्चसे॑ प॒वस्व॒ श्रो॒त्राय॑ मे व॒र्चो॒दा व॒र्चसे॑ प॒वस्व॒ ।  
च॒क्षु॒र्भ्यां॑ मे व॒र्चो॒दसौ॑ व॒र्चसे॑ प॒वेथाम्॒ ॥२॥ २  
आ॒त्मने॑ मे व॒र्चो॒दा व॒र्चसे॑ प॒वस्वो॒जसे॑ मे व॒र्चो॒दा व॒र्चसे॑ प॒वस्वायु॑षे मे व॒र्चो॒दा व॒र्चसे॑ प॒वस्व॒ ।  
वि॒श्वाभ्यो॑ मे प्र॒जाभ्यो॑ व॒र्चो॒दसौ॑ व॒र्चमे॑ प॒वेथाम्॒ ॥३॥ ३  
को॒ऽसि क॒तमो॑ऽमि क॒स्यासि॑ को॒ नामा॑सि ।  
यस्य॑ ते॒ नामा॑मन्म॒हि यं त्वा॒ सोमे॒नाती॑त्पाम ॥४॥ ४  
भूर्भुवः॑ स्वः सु॒प्रजाः॑ प्र॒जया॑ भूयासम् । सु॒वीरो॑ वी॒रैः सु॒पोषः॑ पोषैः ॥५॥ (१) ५  
उ॒दु त्वं जा॒तवै॑दसं दे॒वं वह॑न्ति के॒तवः॑ । दृ॒शे वि॒श्वाय॑ सूर्यम् ॥१॥ ६  
चि॒त्रं दे॒वाना॑मु॒दगा॑दनी॒कं च॒क्षुर्मि॑त्रस्य वरु॒णस्या॒ग्नेः ।  
आ प्रा॒द्यावा॑पृथि॒वी अ॒न्तरि॑क्षं सूर्यं आ॒त्मा ज॑ग॒तस्त॑स्थुषश्च ॥२॥ ७  
अ॒ग्ने न॑र्य सु॒पथा॑ रा॒ये अ॒स्मान् वि॒श्वानि॑ दे॒व व॒युना॑नि वि॒द्वान् ।  
यु॒यो॒ध्यस्म॑ज्जु॒हुरा॑णमे॒नो भू॒यिष्ठां॑ ते॒ नम॑ उ॒क्तिं वि॒धेम॒ ॥३॥ ८  
अ॒यं नो॑ अ॒भिर्वि॑रि॒वस्कृ॑णो॒त्वयं॑ मृ॒धः पुर॑ ए॒तु प्र॑भिन्दन् ।  
अ॒यं वा॒जो ज॑यतु वा॒जसा॑ता अ॒यं श॒त्रूँ ज॑यतु ज॒हृषा॑णः स्वाहा ॥४॥ ९ [४१३]

- रूपेण वो रूपमभ्यागां तुथो वो विश्ववेदा विभजतु ।  
 ऋतस्य पथा प्रेत चन्द्रदक्षिणाः ॥४॥ १०
- वि स्वः पश्यव्यन्तरिक्षं यतस्व सदस्यैः ।  
 ब्राह्मणमद्य विदेय पितृमन्तं पैतृमत्यमृषिमाप्येयं सुधातुदक्षिणम् ॥५॥ ११
- अस्मद्राता देवत्रा गच्छ प्रदातारमाविश ।  
 अग्रये त्वा मह्यं वरुणो ददातु सौऽमृतत्वमश्यात् ॥७॥ १२
- आयुर्दात्र एधि मयो मह्यं प्रतिग्रहीत्रे ।  
 रुद्राय त्वा मह्यं वरुणो ददातु सौऽमृतत्वमश्यात् । प्राणो दात्र एधि मयो मह्यं प्रतिग्रहीत्रे ।  
 बृहस्पतये त्वा मह्यं वरुणो ददातु सौऽमृतत्वमश्यात् । त्वग्दात्र एधि मयो मह्यं प्रतिग्रहीत्रे ।  
 यमाय त्वा मह्यं वरुणो ददातु सौऽमृतत्वमश्यात् ।  
 वयो दात्र एधि मयो मह्यं प्रतिग्रहीत्रे ॥८॥ १३
- कौऽदात्कस्मा अदात्कामोऽदात्कामायादात् ।  
 कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता कामैतत्ते तत्र काम सता भुनजामहे ॥९॥ (२) १४
- समिन्द्र णो मनसा नेषि गोभिः सः सरिर्भिर्मघवन्तसं स्वस्त्या ।  
 सं ब्रह्मणा देवकृतं यदस्ति सं देवानां सुमतौ यज्ञियानाम् ॥१॥ १५
- सं वर्चसा पर्यसा सं तनूभिरगन्महि मनसा सः शिवेन ।  
 त्वष्टा सुदत्रो विदधातु रायोऽनुमार्ष्टु तन्वो यद्विलिष्टम् ॥२॥ १६
- धाता रातिः सवितेदं जुषन्तां प्रजापतिर्निधिषा देवो अग्निः ।  
 त्वष्टा विष्णुः प्रजयां सः रराणो यजमानाय द्रविणं दधातु ॥३॥ १७
- सुगा वो देवाः सदनं अकर्म य आजग्मेदः सर्वनं जुषाणाः ।  
 भरमाणा वहमाना हवीः ष्यस्मे धत्त वसवो वसूनि ॥४॥ १८
- यौ३ आवह उशतो देव देवाः स्तान्प्रेरय स्वे अग्ने सधस्थे ।  
 जक्षिवाः सः पपिवाः सः विश्वेऽसुं घर्मः स्वरातिष्ठतानुं ॥५॥ १९
- वयः हि त्वा प्रयति यज्ञे अस्मिन्नग्ने होतारमवृणीमहीह ।  
 ऋधगया ऋधगुताशमिष्ठाः प्रजानन्यज्ञमुपयाहि विद्वान् ॥६॥ २०
- देवा गातुविदो गातुमित्रा गातुमित । मनसस्पत इमं देव यज्ञः स्वाहा वार्ते धाः ॥७॥ २१
- यज्ञं यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहा ।  
 एष ते यज्ञो यज्ञपते सहस्रक्तवाकः सर्ववीरस्तं जुषस्व स्वाहा ॥८॥ (३) २२ [४३४]

- माहिर्भूर्मा पृदाकुः । उरु५ हि राजा वरुणश्चकार सूर्याय पन्थामन्वेतवा उ ।  
 अपदे पादा प्रतिधातवेऽकरुतापवक्ता हृदयाविधश्चित् ।  
 नमो वरुणायभिष्ठितो वरुणस्य पाशः ॥१॥ २३
- अग्नेरनीकमप आविवेशापां नपात् प्रतिरक्षन्नसुधम् ।  
 दमेदमे समिधं यक्ष्यग्ने प्रति ते जिह्वा घृतमुच्चरण्यत् स्वाहा ॥२॥ २४
- समुद्रे ते हृदयमप्स्वन्तः सं त्वा विशन्त्वोषधीरुतापः ।  
 यज्ञस्य त्वा यज्ञपते सुक्तोक्तौ नमोवाके विधेम यत् स्वाहा ॥३॥ २५
- देवीराप एष वो गर्भस्त५ सुप्रीत५ सुभृतं विभृत ।  
 देवं सोमैष ते लोकः परि च वक्षि शं च वक्षि । अवभृत निचुम्पुण निचेरुरसि निचुम्पुण ।  
 अव देवैर्देवकृतमेनोऽयासिषमव मर्त्यैर्मर्त्यकृतं पुराव्णां देव रिषस्पाहि ।  
 देवानां५ समिदसि ॥४॥ (४) २६
- एजंतु दशमास्यो गर्भो जरायुणा सह ।  
 यथायं वायुरेजति यथा समुद्र एजत्येवायं दशमास्यो असंजरायुणा सह ॥१॥ २७
- यस्यास्ते यज्ञियो गर्भो यस्या योनिर्हिरण्ययी ।  
 अङ्गान्यहुता यस्य तं मात्रा समजीगम५ स्वाहा ॥२॥ २८
- पुरुदुस्मो विषुरूप इन्दुरन्तर्महिमानमानञ्ज धीरः ।  
 एकपदीं द्विपदीं त्रिपदीं चतुष्पदीमष्टापदीं भुवनानु प्रथन्ता५ स्वाहा ॥३॥ २९
- मरुतो यस्य हि क्ष्ये पाथा दिवो विमहसः । स सुंगोपातमो जनः ॥४॥ ३०
- मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम् । पिपृतां नो भरीमभिः ॥५॥ (५) ३१
- आजिघ्र कलशं मद्या त्वा विशन्तिवन्देवः ।  
 पुनरूर्जा निर्वर्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पर्यस्वती पुनर्माविशताद्रायिः ॥१॥ ३२
- हव्ये काम्य इले रन्ते चन्द्रे ज्योतेऽदिते सरस्वति महि विश्रुति ।  
 एता ते अघ्न्ये नामानि देवेषु मा सुकृतं व्रतात् ॥२॥ ३३
- इह रतिरिह रमध्वमिह धृतिरिह स्वधृतिः स्वाहा ।  
 उपसृजं धरुणं मात्रे धरुणो मातरं धयन्नायस्पोषमस्मासु दीधरत् स्वाहा ॥३॥ ३४
- अगन्म ज्योतिरमृता अभूम दिवं पृथिव्या अध्यारुहाम ।  
 अविदाम देवाँस्त्वज्योतिः ॥४॥ ३५ [४४७]

युवं तामिन्द्रापर्वता पुरोयुधा यो नः पृतन्यादप तंतमिद्धंतं वज्रेण तंतमिद्धंतम् ।

दूरे चत्ताय छन्त्सद्गहनं यदि नक्षदस्माकं शत्रून् परि शूर विश्वतो दुर्मा दर्षीष्ट विश्वतः ॥५॥ ३६

भूर्भुवः स्वः सुप्रजाः प्रजया भूयासम् । सुवीरौ वीरैः सुपोषः पोषैः ॥६॥ (६) ३७

परमेष्ठ्यभिधीतः प्रजापतिर्वाचि व्याहृतायामन्धो अच्छेतः सविता सन्याम् ।

विश्वकर्मा दीक्षार्या पूषा सौमक्रयण्याम् ॥१॥

३८

इन्द्रश्च मरुतश्च क्रयायोपोत्थितः । असुरः पुण्यमानो मित्रः क्रीतः ॥२॥

३९

विष्णुः शिपिविष्ट ऊरा आसन् नो विष्णुर्नरन्धिषः प्रोह्यमाणः ।

सोम आगतो वरुण आसन्ध्यामासन्नः ॥३॥

४०

अग्निराग्नीध्र इन्द्रो हविर्धाने । अथर्वोपावह्रियमाणो विश्वे देवा अशुषु न्युष्यमानेषु ॥४॥ ४१

विष्णुराग्रीतपा आप्याय्यमानो यमः सुयमानो विष्णुः संप्रियमाणः । वायुः पुण्यमानः शुक्रः पूतः ५॥४२

शुक्रः क्षीरश्रीर्मन्थी संक्षुश्रीः । विश्वे देवाश्चमसेपृन्नीतोऽमुहोमायोद्यतः ॥६॥

४३

रुद्रो हुयमानो वातोऽभ्यावृत्तो नृचक्षाः प्रतिग्यातो भक्षः पीतः पितरो नाराशस्याः साद्यमानः ।

सिन्धुरवभुथायोद्यतः समुद्रोऽभ्यवह्रियमाणः सलिलः प्रष्टुतः । ॥७॥

४४

ययोरोजसा स्कभिता रजांसि वीर्यैर्भिवीर्यतमा शर्विष्ठा ।

या पत्येते अप्रतीता सहोर्भिविष्णू अगन्वरुणा पूर्वहंतौ ॥८॥

४५

देवान् दिवमगन्यज्ञस्ततो मा द्रविणमष्टु मनुष्यान्न्तरिक्षमगन्यज्ञस्ततो मा द्रविणमष्टु ।

पितृन् पृथिवीमगन्यज्ञः ततो मा द्रविणमष्टु यं कं च

लोकमगन्यज्ञस्ततो मे भद्रमभूत् ॥९॥ (७)

४६ [४५८]

प्राणाय मे पञ्च ॥५॥ उदु त्यं न व ॥९॥ समिद्र णोऽष्ट ॥८॥ माहिश्चतस्र ॥४॥ एजतु दशमास्यः पञ्च ॥५॥

आजिघ षट् ॥ ६ ॥ परमेष्ठी नव ॥ ९ ॥ सप्तानुवाकेषु पट्चत्वारिंशत् ॥ ४६ ॥

॥ इति शुक्लयजुःकाण्वसंहितायां नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

### अथ दशमोऽध्यायः ।

देवं सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुवेमं भगाय ।

दिव्यो गन्धर्वः केतपाः केतै नः पुनातु वाचस्पतिर्नो अद्य वाजं स्वदतु ॥१॥

१

ध्रुवसदं त्वा नृषदं मनःसदम् ।

उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥२॥ २ [४६०]

अप्सुषदं त्वा घृतसदं व्योमसदम् ।

उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ।

पृथिविसदं त्वाऽन्तरिक्षसदं दिविसदं देवसदं नाकसदम् ।

उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥३॥ ३

अपा२ रसमुद्वेयस२ सूर्ये सन्त२ समाहितम् । अपा२ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तमम् ।

उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥४॥ ४

ग्रहा ऊर्जाहुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम् । तेषां विशिंप्रियाणां वोऽहमिषमूर्जे२ समग्रभम् ।

उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥५॥ ५

संपृचं स्थ सं मा भद्रेण पृङ्क्त । विपृचं स्थ वि मा पापेन पृङ्क्त ॥६॥ (१) ६

इन्द्रस्य वज्रोऽसि वाजसास्त्वया यं वाज२ सेत् ।

वाजस्य नु प्रसवे मातरं महीमदिति नाम वचसा करामहे ।

यस्यामिदं विश्वं भुवनमाविवेश तस्यां नो देवः सविता धर्मं साविषक् ॥१॥ ७

देवीरापो अपानपाद्यो व ऊर्भिः प्रतूर्तिः । ककुन्मान् वाजसास्तेनायं वाज२ सेत् ॥२॥ ८

अप्स्वन्तरमृतमप्सु भैषजमपामुत प्रशस्तिभिः । अश्वा भवत वाजिनः ॥३॥ ९

वातो वा वो मनो वा गन्धर्वाः सप्तविंशतिः । ते अग्रेऽश्वमयुञ्ज२स्ते अस्मिञ्जवमादधुः ॥४॥ १०

वातर२हा भव वाजिन्युज्यमान् इन्द्रस्येव दक्षिणः श्रियैधि ।

युञ्जन्तु त्वा मरुतो विश्ववेदस आ ते त्वष्टा पत्सु जवं दधातु ॥५॥ ११

जवो यस्ते वाजिन्निहितो गुहा यः ज्येने परीतो अचरच्च वाते ।

तेन नो वाजिन् बलवान् बलेन वाजजिच्चैधि समने च पारयिष्णुः ॥६॥ १२

वाजिनो वाजजितो वाज२ मर्ष्यन्तः । बृहस्पतेर्भागमवजिघ्रत ॥७॥ (२) १३

देवस्य वय२ सवितुः सवे सत्यसवमः । बृहस्पतेरुत्तमं नाक२ रुहेमेन्द्रस्योत्तमं नाक२ रुहेम ।

देवस्य वय२ सवितुः सवे सत्यसवमः । बृहस्पतेरुत्तमं नाकमरुहामेन्द्रस्योत्तमं नाकमरुहाम ॥१॥ १४

बृहस्पते वाजं जय बृहस्पतेयं वाचं वदत । बृहस्पतिं वाजं जापयत ॥२॥ १५

इन्द्र वाजं जयेन्द्राय वाचं वदत । इन्द्रं वाजं जापयत ॥३॥ १६

एषा वः सा सत्या संवाग्भूधया बृहस्पतिं वाजमजीजपत ।

आजीजपत बृहस्पतिं वाचं वनस्पतयो विमुच्यध्वम् ॥४॥ १७

देवस्य वय२ सवितुः सवे सत्यसवमः । बृहस्पतेर्वाजजितो वाजं जेष्म ॥५॥ १८ [४७६]



- वाजिनो वाजं जयताध्वेन स्कन्धन्तः । योजेना मिमानाः काष्ठां गच्छत ॥६॥ १९
- एष स्य वाजी क्षिपणिं तुरण्यति ग्रीवायां वद्धो अपिकृक्ष आसनि ।  
 क्रतुं दधिका अनु सन्तवीत्वत्पथामङ्काः स्यन्वापनीफणत् ॥७॥ २०
- उत स्मास्य द्रवतस्तुरण्यतः पर्णं न वेरनुवाति प्रगर्धिनः ।  
 श्येनस्येव ध्रजतो अङ्कुसं परि दधिकाष्णाः सहोर्जा तरित्रतः ॥८॥ २१
- शं नो भवन्तु वाजिनो हवेपु देवताता मितद्रवः स्वर्काः ।  
 जम्भयन्तोऽहिं वृकः रक्षांसि सनेम्यस्मद्युयवन्नमीवाः ॥९॥ २२
- ते नो अर्वन्तो हवनश्रुतो हवं विश्वे शृण्वन्तु वाजिनो मितद्रवः ।  
 सहस्रसा मेधसाता इव त्मना महो ये धनं समिथेषु जग्निरे ॥१०॥ २३
- वाजैवाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृता क्रतज्ञाः ।  
 अस्य मध्वः पिवत मादयध्वं तृप्ता यात पृथिभिर्देवयानैः ॥११॥ २४
- आ मा वाजस्य प्रसवो जगम्यादेमे द्यावापृथिवी विश्वरूपे ।  
 आ मा गतं पितरा मातरा युवमा मा सोमो अमृतत्वाय गम्यात् ॥१२॥ २५
- वाजिनो वाजजितो वाजं ससृवांसः । बृहस्पतेर्भागमवाजिघ्रत निमृजानाः ॥१३॥ (३) २६
- आपये स्वाहा स्वापये स्वाहाऽपिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा । वसवे स्वाहाऽहर्पतये स्वाहा ।  
 अह्वे मुग्धाय स्वाहा मुग्धाय वैनः शिनाय स्वाहा विनः शिनं आन्त्यायनाय स्वाहान्त्याय  
 भौवनाय स्वाहा भुवनस्य पतये स्वाहाधिपतये स्वाहा ॥१॥ २७
- आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पतां श्रोत्रं यज्ञेन कल्पताम् ।  
 पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम् ॥२॥ २८
- जाय एहि स्वो रोहाव । प्रजापतेः प्रजा अभूम स्वर्देवा अगन्मामृता अभूम ॥३॥ २९
- अस्मे वो अस्त्विन्द्रियमस्मे नृम्णमुत क्रतुः । अस्मे वर्चांसि सन्तु वः ॥४॥ ३०
- नमो मात्रे पृथिव्या इयं ते राज्यन्तासि यमनः ।  
 ध्रुवोऽसि धरुणः कृष्यै क्षेमाय रय्यै पोषाय ॥५॥ (४) ३१
- वाजस्येमं प्रसवः सुषुवेऽग्रे सोमः राजानमोषधीष्वप्सु ।  
 ता अस्मभ्यं मधुमतीर्भवन्तु वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः ॥१॥ ३२
- वाजस्येदं प्रसव आबभूवेमा च विश्वा भुवनानि सर्वतः ।  
 सनेमि राजा परियाति विद्वान रयिं पुष्टिं वर्धयमानो अस्मे ॥२॥ ३३ [४९१]

वाजस्येमां प्रसवः शिश्रिये दिवमिमा च विश्वा भुवनानि सम्राट् ।

आदिन्सन्तं दापयति प्रजानन्तं नो रयिः सर्ववीरं नियच्छतु ॥३॥

३४

अग्रे अच्छावदेह नः प्रति नः सुमनां भव ।

प्र नो यच्छ सहस्रजिच्च हि धनदा असि ॥४॥

३५

सोमः राजानमवसेऽग्रिमन्वारंभामहे । आदित्यं विष्णुः सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिम् ॥५॥

३६

प्र नो यच्छत्वर्यमा प्र पूषा प्र सरस्वती । प्र वाग्देवी ददातु नः ॥६॥

३७

अर्यमणं बृहस्पतिमिन्द्रं दानाय चोदय । वाचं विष्णुः सरस्वतीः सवितारं च वाजिनम् ॥७॥ ३८

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।

सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यं तुर्यं दधामि ।

बृहस्पतेष्ट्रा साम्राज्येनाभिषिञ्चामीन्द्रस्य त्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चामि ॥८॥ (५)

३९

अग्निरेकाक्षरेण प्राणमुदजयत् तमुजेषमश्विनौ अक्षरेण द्विपदो मनुष्यानुदजयतां तानुजेषम् ।

विष्णुस्त्र्यक्षरेण त्रीणिमाँल्लोकानुदजयत्तानुजेषः सोमश्चतुरक्षरेण

चतुष्पदः पशूनुदजयत्तानुजेषम् ॥१॥

४०

पूषा पञ्चाक्षरेण पञ्च ऋतूनुदजयत्तानुजेषः सविता षोडशक्षरेण षडृतूनुदजयत्तानुजेषम् ॥

मरुतः सप्ताक्षरेण सप्त ग्राम्यान् पशूनुदजयस्तानुजेषं

बृहस्पतिरष्टाक्षरेण गायत्रीमुदजयत्तामुजेषम् ॥२॥

४१

मित्रो नवाक्षरेण त्रिवृतः स्तोममुदजयत् तमुजेषं वरुणो दशाक्षरेण विराजमुदजयत्तामुजेषम् ।

इन्द्र एकादशाक्षरेण त्रिष्टुभमुदजयत्तामुजेषं विश्वे

देवा द्वादशाक्षरेण जगतीमुदजयस्तामुजेषम् ॥३॥

४२

वसवस्त्रयोदशाक्षरेण त्रयोदशः स्तोममुदजयस्तमुजेषः

रुद्राश्चतुर्दशाक्षरेण चतुर्दशः स्तोममुदजयस्तमुजेषम् ।

आदित्याः पञ्चदशाक्षरेण पञ्चदशः स्तोममुदजयस्तमुजेषः

मदितिः षोडशाक्षरेण षोडशः स्तोममुदजयत्तमुजेषम् ।

प्रजापतिः सप्तदशाक्षरेण सप्तदशः स्तोममुदजयत्तमुजेषम् ॥४॥ (६)

४३ [५०१]

देव सवितृपद ॥ ६ ॥ इन्द्रस्य वज्रः सप्त ॥ ७ ॥ देवस्य वयं त्रयोदश ॥ १३ ॥ आपये षड् ॥ ५ ॥

वाजस्येममष्ट ॥ ८ ॥ अग्निरेकाक्षरेण चतस्रः ॥ ४ ॥ षडनुवाकेषु त्रयश्चत्वारिंशत् ॥ ४३ ॥

॥ इति शुक्लयजुःकाण्वसंहितायां दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

इति प्रथमो दशकः ॥ १ ॥

अथ द्वितीयो दशकः ॥ २ ॥

अथ प्रथमोऽध्यायः ( अथैकादशोऽध्यायः ) ।

एष ते निरुते भागस्तं जुषस्व स्वाहाऽग्निनेत्रेभ्यो देवेभ्यः पुरःसद्भ्यः स्वाहा  
यमनेत्रेभ्यो देवेभ्यो दक्षिणसद्भ्यः स्वाहा ।

विश्वदेवनेत्रेभ्यो देवेभ्यः पश्चात्सद्भ्यः स्वाहा मित्रावरुणेनेत्रेभ्यो

वा मरुत्नेत्रेभ्यो वा देवेभ्य उत्तरसद्भ्यः स्वाहा ।

सोमनेत्रेभ्यो देवेभ्य उपरिसद्भ्यो दुर्वस्वद्भ्यः स्वाहा ॥१॥

१

ये देवा अग्निनेत्राः पुरःसदस्तेभ्यः स्वाहा ये देवा यमनेत्रा दक्षिणसदस्तेभ्यः स्वाहा ।

ये देवा विश्वदेवनेत्राः पश्चात्सदस्तेभ्यः स्वाहा ये देवा

मित्रावरुणेनेत्रा वा मरुत्नेत्रा वोत्तरसदस्तेभ्यः स्वाहा ।

ये देवाः सोमनेत्रा उपरिसदो दुर्वस्वन्तस्तेभ्यः स्वाहा ॥२॥

२

अग्ने सहस्व पृतना अभिमातीरपास्य । दुष्टरस्तरन्नरातीर्विचीं धा यजवाहसि ।

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥३॥

३

उपाशोर्वीर्येण जुहोमि हत रक्षः स्वाहा । रक्षसां त्वा वधायावधिष्म रक्षोऽमुष्यं

त्वा वधायामुमवधिष्म । जुषाणोऽध्वाज्यस्य वेतु स्वाहा ॥४॥ (१)

४

अपो देवा मधुमतीरगृभ्णन्नर्जस्वती राजस्वश्चितानाः ।

याभिर्मित्रावरुणा अभ्यर्षिञ्चन्याभिरिन्द्रमनययन्नत्यरातीः ॥१॥

५

वृष्णा ऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृष्णा ऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रमुष्मै देहि ।

वृषसेनोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृषसेनोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रमुष्मै देहि ॥२॥ ६ [५०७]

अर्थेत् स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा अर्थेत् स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रमुष्मै दत्त ।

ओजस्वती स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा ओजस्वती स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रमुष्मै दत्त ।

आपः परिवाहिणीं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहापः परिवाहिणीं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रमुष्मै दत्त ।

अपां पतिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहापां पतिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रमुष्मै देहि ।

अपां गर्भोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहापां गर्भोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रमुष्मै देहि ।

सूर्यवर्चस स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा सूर्यवर्चस स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रमुष्मै दत्त ।

सूर्यत्वच स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा सूर्यत्वच स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रमुष्मै दत्त ।

वज्रक्षित स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा वज्रक्षित स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रमुष्मै दत्त ।

वाशां स्थ राष्टृदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा वाशां स्थ राष्टृदा राष्ट्रमुष्मै दत्त ।  
 मांदां स्थ राष्टृदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा मांदां स्थ राष्टृदा राष्ट्रमुष्मै दत्त ।  
 शक्ररी स्थ राष्टृदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा शक्ररी स्थ राष्टृदा राष्ट्रमुष्मै दत्त ।  
 जनभृतं स्थ राष्टृदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा जनभृतं स्थ राष्टृदा राष्ट्रमुष्मै दत्त ।  
 विश्वभृतं स्थ राष्टृदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा विश्वभृतं स्थ राष्टृदा राष्ट्रमुष्मै दत्त ।  
 शैष्ठां स्थ राष्टृदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा शैष्ठां स्थ राष्टृदा राष्ट्रमुष्मै दत्त ।  
 आपः स्वाराज्ञी स्थ राष्टृदा राष्ट्रमुष्मै दत्त ॥३॥

७

सं मधुमतीर्मधुमतीभिः पृच्यन्तां महिं क्षत्रं क्षत्रियाय वन्वानाः ।  
 अनाधृष्टाः सीदत सहौजसा महिं क्षत्रं क्षत्रियाय दधतीः ॥४॥ (२)

८

सविता त्वां प्रसवानां सुवतामग्निर्गृहपतीनां सोमो वनस्पतीनाम् ।  
 बृहस्पतिर्वाच इन्द्रो ज्यैष्ठ्याय रुद्रः पशूनां मित्रः सत्याय वरुणो धर्मपतीनाम् ॥१॥ ९  
 इमं देवा असपत्नः सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय ।  
 इममुष्ममुष्यं पुत्रमुष्याः पुत्रमस्य विशे ॥२॥ १०  
 एष वः कुरवो राजैष वः पञ्चाला राजा । सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां राजा ॥३॥ (३) ११

सोमस्य त्विषिरस्यग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा सवित्रे स्वाहा सरस्वत्यै स्वाहा ।  
 पूष्णे स्वाहा बृहस्पतये स्वाहा ॥१॥

१२

इन्द्राय स्वाहा शाय स्वाहा श्लोकाय स्वाहा घोषाय स्वाहा भगाय स्वाहार्यम्णे स्वाहा ।  
 सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।

अनिभृष्टममि वाचो बन्धुस्तपोजाः सोमस्य दात्रमसि स्वाहा राजस्वः ॥२॥

१३

सधमादो द्युम्निनीराप एता अनाधृष्टा अपस्यो वसानाः ।

पस्त्यासु चक्रे वरुणः सधस्थमपां शिशुर्मर्तृतमास्वतः ॥३॥

१४

क्षत्रस्योल्बममि क्षत्रस्य जराग्वसि क्षत्रस्य नाभिरसि क्षत्रस्य योनिरसि ।

इन्द्रस्य वार्त्रममसि त्वयायं वृत्रं वध्यान्मित्रस्यासि वरुणस्यासि ॥४॥

१५

रुजासि द्रुवासि क्षुपासि । पातैनं प्राश्नं पातैनं प्रत्यश्नं पातैनं तिर्यश्नं दिग्भ्यः पात ॥५॥ १६

आविर्मर्या आवित्तो अग्निर्गृहपतिरावित्त इन्द्रो वृद्धश्रवा

आवित्तः पूषा विश्ववेदा आवित्तो मित्रावरुणौ धृत्वतौ ।

आविस्ते द्यावापृथिवी विश्वशंभु आवित्तादितिरुरुशर्मा ॥६॥ (४)

१७ [५१८]

अवेष्टा दन्दशूकाः प्राचीमारोह गायत्री त्वावतु ।

रथन्तरं सामं त्रिवृत्स्तोमो वसन्तऋतुर्ब्रह्म द्रविणम् ॥१॥

१८

दक्षिणमारोह त्रिष्टुप् त्वावतु । बृहत्सामं पञ्चदश स्तोमो ग्रीष्मऋतुः क्षत्रं द्रविणम् ॥२॥

१९

प्रतीचीमारोह जगती त्वावतु । वैरूपं सामं सप्तदश स्तोमो वर्षा ऋतुर्विड् द्रविणम् ॥३॥

२०

उदीचीमारोहानुष्टुप् त्वावतु । वैराजं सामैकविंश स्तोमः शरदृतुः फलं द्रविणम् ॥४॥

२१

ऊर्ध्वमारोह पङ्क्तिस्त्वावतु ।

शाक्ररैवते सामनी त्रिणवत्रयस्त्रिंशौ स्तोमो हेमन्तशिशिरा ऋतू वर्चा द्रविणम् ।

प्रत्यस्तं नमुचेः शिरः ॥५॥

२२

सोमस्य त्विषिरसि तवैव मे त्विषिर्भूयात् । मृत्योः पाह्योजोऽसि सहोऽस्यमृतमसि ॥६॥

२३

हिरण्यरूपा उपसो विरोक उभा इन्द्रा उदितः सूर्यश्च ।

आरोहतं वरुण मित्रं गतं ततश्चक्षाथामदितिं दितिं च । मित्रोऽसि वरुणोऽसि ॥७॥(५) २४

सोमस्य त्वा द्युम्नेनाभिर्षिचाम्यग्रेभ्राजसा सूर्यस्य वर्चसा ।

इन्द्रस्येन्द्रियेण मरुतामोजसा क्षत्राणां क्षत्रपतिरेध्यति दिद्यूनपाहि ॥१॥

२५

इमं देवा असपत्नं सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्याय ।

इमममुमुष्यं पुत्रममुष्याः पुत्रमस्यै विशे ॥२॥

२६

एष वः कुरवो राजैष वः पञ्चाला राजा । सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां राजा ॥३॥

२७

प्र पर्वतस्य वृषभस्य पृष्ठान्नावश्वरन्नि स्वसिच इयानाः ।

ता आववृत्रन्नधरागुदक्ता अहिं बुध्यमनु रीयमाणाः ।

विष्णोर्विक्रमणमसि विष्णोर्विकान्तमसि विष्णोः क्रान्तमसि ॥४॥

२८

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव ।

यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥५॥

२९

रुद्र यत्ते क्रवि परं नाम । तस्मै हुतमस्यमेष्टमसि स्वाहा ॥६॥ ६

३०

इन्द्रस्य वज्रोऽसि मित्रावरुणयोस्त्वा प्रशास्त्रोः प्रशिषा युनग्मि ।

अव्यथायै त्वा स्वधायै त्वारिष्टः फल्गुनः ।

मरुतां प्रसवेन जयापाम मनसा समिन्द्रियेण ॥१॥

३१

मा त इन्द्र ते वयं तुराषाळयुक्तासो अब्रह्मता विदसाम ।

तिष्ठा रथमधि यद्वज्रहस्ता रुमीन्दैव युवसे स्वस्थान् ॥२॥

३२ [५३३]

अग्रये गृहपतये स्वाहा सोमाय वनस्पतये स्वाहा ।  
 इन्द्रस्येन्द्रियाय स्वाहा मरुतामोजसे स्वाहा ।  
 पृथिवि मातर्मा मां हिंसीमो अहं त्वाम् ॥३॥ ३३  
 हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्भोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् ।  
 नृषद्वरसदृतसद्वयोमसदुज्जा गोजा ऋतुजा अद्रिजा ऋतं बृहत् ॥४॥ ३४  
 इयदुस्यायुरस्यायुर्मे देहि युडसि वर्चोऽसि वर्चो मे देहि ।  
 ऊर्गस्यूजं मयि धेहीन्द्रस्य वां बाहू वीर्यकृता उपावहरामि ॥५॥ (७) ३५

स्योनासि सुषदासि क्षत्रस्य योनिरसि ।  
 स्योनामासीद सुषदामासीद क्षत्रस्य योनिमासीद ॥१॥ ३६  
 निषसाद धृतव्रतो वरुणः पुस्त्यास्वा । साम्राज्याय सुक्रतुः ॥२॥ ३७  
 अभिभूरस्ययानामेतास्ते पञ्च दिशः कल्पन्ताम् । ब्रह्मस्त्वं ब्रह्मासि ॥३॥ ३८  
 सवितासि सत्यप्रसवो वरुणोऽसि सत्यौजाः ।  
 इन्द्रोऽसि विशौजा रुद्रोऽसि सुशेवः ॥४॥ ३९  
 प्रियंकर श्रेयस्कर भूयस्कर । इन्द्रस्य वज्रोऽसि तेन मे रभ्य ॥५॥ ४०  
 अग्निः पृथुर्धर्मणस्पतिर्जुषाणो अग्निः पृथुर्धर्मणस्पतिः । आज्यस्य हविषो वेतु स्वाहा ।  
 स्वाहाकृताः सूर्यस्य रश्मिर्मर्यतध्वं मज्जातानां मध्यमेष्ठयाय ॥६॥ (८) ४१

मवित्रा प्रसवित्रा सरस्वत्या वाचा । त्वष्टा रूपैः पूष्णा पशुभिरिन्द्रेणास्मै ॥१॥ ४२  
 बृहस्पतिना ब्रह्मणा वरुणेनौजसाग्निना तेजसा सोमेन राज्ञा ।  
 विष्णुना देवतया दशम्येमे यज्ञं विष्णुमाप्नवानि ॥२॥ (९) ४३

अश्विभ्यां पच्यस्व सरस्वत्यै पच्यस्वेन्द्राय सुत्राम्णे पच्यस्व ।  
 त्रायोः पूतः पवित्रेण प्रत्यङ् सोमो अतिसुतः । इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥१॥ ४४  
 कुविदुङ्ग यवमन्तो यव चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूयं ।  
 इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बहिषो नमउक्ति न जग्मुः ।  
 उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यां त्वा सरस्वत्यै त्वेन्द्राय त्वा सुत्राम्णे ॥२॥ ४५  
 युवः सुरार्ममश्विना नमुचा आसुरे सचा ।  
 विपिपाना शुभस्पती इन्द्रं कर्मस्वावतम् ॥३॥ ४६ [५४७]

पुत्रमिव पितरां अश्विनोभेन्द्रावधुः काव्यैर्दुःसनाभिः ।

यत्सुरामं व्यपिबुः शचीभिः सरस्वती त्वा मघवन्नभिष्णक् ॥४॥ (१०) ४७ [५४८]

एष ते चतस्रः ॥ ४ ॥ अपो देवाश्चतस्रः ॥४॥ सविता त्वा तिस्रः ॥ ३ ॥ सोमस्य त्विषि षट् ॥६॥

अवेष्टा सप्त ॥ ७ ॥ सोमस्य त्वा षट् ॥ ६ ॥ इन्द्रस्य वज्रः पञ्च ॥५॥ स्योनासि षट् ॥ ६ ॥

सवित्रा द्वे ॥ २ ॥ अश्विभ्यां चतस्रः ॥ ४ ॥ दशानुवाकेषु सप्तचत्वारिंशत् ॥४७॥

॥ इति शुक्लयजुःकाण्वसंहितायां एकादशोऽध्यायः ॥११॥

### अथ द्वादशोऽध्यायः ।

युञ्जानः प्रथमं मनस्तत्त्वाय सविता धियः । अग्नेज्योतिर्निचाय्य पृथिव्या अध्याभरत् ॥१॥ १

युक्तेन मनसा वयं देवस्य सवितुः सवे । स्वर्गेयाय शक्त्या ॥२॥ २

युक्त्वाय सविता देवान्त्स्वर्थतो धिया दिवम् ।

बृहज्ज्योतिः करिष्यतः सविता प्रसुवाति तान् ॥३॥ ३

युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः ।

वि होत्रा दधे वयुना विदेक इन्मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः ॥४॥ ४

युजे वां ब्रह्म पूर्य नमोभिर्वि श्लोक एतु पथ्येव सुरैः ।

शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा आ ये धामानि दिव्यानि तस्थुः ॥५॥ ५

यस्य प्रयाणमन्वन्य इद्युर्देवा देवस्य महिमानमोजसा ।

यः पार्थिवानि विममे स एतेशो रजांसि देवः सविता महित्वना ॥६॥ ६

देव सवितुः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय ।

दिव्यो गन्धर्वः केतूपूः केतै नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ॥७॥ ७

इमं नो देव सवितर्यज्ञं प्रणय देवाव्यं सखिविदं सत्राजितं धनजितं स्वर्जितम् ।

ऋचा स्तोमं समर्धय गायत्रेण रथन्तरं बृहद्गायत्रवर्तनि स्वाहा ॥८॥ ८

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।

आर्ददे गायत्रेण छन्दसाङ्गिरस्वत् । पृथिव्याः सुधस्थादुग्निं पुरीष्यमङ्गिरस्वदाभर ।

त्रैष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वत् ॥९॥

९ [५५७]

- अभिरसि नार्यसि त्वया वयमग्निः शकेम खनितुम् ।  
 सधस्थ आ जागतेन छन्दसाङ्गिरस्वत् ॥१०॥ १०
- हस्त आधाय सविता विभ्रदग्निः हिरण्ययीम् ।  
 अग्नेज्योतिर्निचाय्य पृथिव्या अध्याभरदानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वत् ॥११॥ (१) ११
- प्रतूर्तं वाजिन्नाद्रव वरिष्ठामनु संवतम् ।  
 दिवि ते जन्म परममन्तरिक्षे तव नार्भिः पृथिव्यामधि योनिरित् ॥१॥ १२
- युञ्जाथाः रासभं युवमस्मिन् यामे वृषण्वसू । अग्नि भरन्तमस्मयुम् ॥२॥ १३
- योगेयोगे तवस्तरं वाजैवाजे हवामहे । सखाय इन्द्रमूतये ॥३॥ १४
- प्रतूर्तं नेहवक्रामन्नशस्ती रुद्रस्य गाणपत्यं मयोभूरेहि ।  
 उर्वन्तरिक्षं वीहि स्वस्तिगव्यूतिरभयानि कृण्वन् पूष्णा सयुजा सह ॥४॥ १५
- पृथिव्याः सधस्थादग्निं पुरीष्यमङ्गिरस्वदाभर ।  
 अग्निं पुरीष्यमङ्गिरस्वदच्छेमोऽग्निं पुरीष्यमङ्गिरस्वद्भरिष्यामः ॥५॥ १६
- अन्वग्निरुपसामग्रमख्यदन्वहानि प्रथमो जातवेदाः ।  
 अनु सूर्यस्य पुरुत्रा च रश्मीननु द्यावापृथिवी आततन्थ ॥६॥ १७
- आगत्य वाज्यध्वानः सर्वा मृधो विधूनुते । अग्निः सधस्थे महति चक्षुषा निचिकीषते ॥७॥ १८
- आक्रम्य वाजिन्पृथिवीमग्निमिच्छ रुचा त्वम् । भूमेर्वृत्वाय नो ब्रूहि यतः खनेम तं वयम् ॥८॥ १९
- द्यौस्ते पृष्ठं पृथिवी सधस्थमात्मान्तरिक्षः समुद्रो योनिः ।  
 विख्याय चक्षुषा त्वमभि तिष्ठ पृतन्यतः ॥९॥ २०
- उत्क्राम महते सौभगायास्सादास्थानाद् द्रविणोदा वाजिन् ।  
 वयः स्याम सुमतौ पृथिव्या अग्निं खनन्त उपस्थे अस्याः ॥१०॥ २१
- उदकमीद् द्रविणोदा वाज्यर्वाकः सुलोकः सुकृतं पृथिव्याम् ।  
 ततः खनेम सुप्रतीकमग्निः स्वो रुहाणा अधि नार्कमुत्तमम् ॥११॥ २२
- आ त्वा जिघर्षि मनसा धृतेन प्रतिक्षियन्तं भुवनानि विश्वा ।  
 पृथुं तिरश्चा वयसा ब्रूहन्तं व्यचिष्टमन्नै रभसं दृशानम् ॥१२॥ २३
- आ विश्वतः प्रत्यश्चै जिघर्म्यरक्षसा मनसा तज्जुपेत ।  
 मर्यश्रीः स्पृहयद्गर्णो अग्निर्नाभिमृशे तन्वा जर्धराणः ॥१३॥ २४
- परि वाजपतिः क्विरिर्हव्यान्यक्रमीत् । दधद्रत्नानि दाशुषे ॥१४॥ २५ [५७३]



परि त्वाग्ने पुरं वयं विप्रः सहस्य धीमहि । धुषद्वर्णं दिवेर्दिवे भेत्तारं भङ्गुरावताम् ॥१५॥२६  
त्वमग्ने द्युभिस्त्वमाशुशुक्षणिस्त्वमञ्जस्त्वमश्मनस्परि ।

त्वं वनेभ्यस्त्वमोषधीभ्यस्त्वं नृणां नृपते जायसे शुचिः ॥१६॥ (२) २७

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।

पृथिव्याः सधस्थादग्निं पुरीष्यमङ्गिरस्वत् खनामि ।

ज्योतिष्मन्तं त्वाग्ने सुप्रतीकमजस्रेण भानुना दीद्यतम् ।

शिवं प्रजाभ्योऽहिष्मन्तं पृथिव्याः सधस्थादग्निं पुरीष्यमङ्गिरस्वत्खनामः ॥१॥ २८

अपां पृष्ठमसि योनिर्गन्धेः समुद्रमभितुः पिन्वमानम् ।

वर्धमानो मह्यं आ च पुष्करे दिवो मात्रया वरिष्णा प्रथस्व ॥२॥ २९

शर्म च स्थो वर्म च स्थोऽलिद्रे बहुले उभे । व्यचक्ष्वती संवसाथां भृतमग्निं पुरीष्यम् ॥३॥ ३०

संवसाथाः स्वविदा समीची उरसा तमना । अग्निमन्तर्भरिष्यन्ती ज्योतिष्मन्तमजस्रमिति ।

पुरीष्योऽसि विश्वभरा अथर्वा त्वा प्रथमो निरमन्थदग्ने ॥४॥

३१

त्वमग्ने पुष्करादध्यथर्वा निरमन्थत । मूर्धा विश्वस्य वाघतः ॥५॥

३२

तमु त्वा दुष्यङ् ऋषिः पुत्र ईधे अथर्वणः । वृत्रहणं पुरन्दरम् ॥६॥

३३

तमु त्वा पाथ्यो वृषा समीधे दस्युहन्तमम् । धनञ्जयः रणरणे ॥७॥

३४

सीदं होतुः स्व उ लोके चिकित्वान्त्सादया यज्ञः संकृतस्य योनौ ।

देवावीर्देवान्हविषा यज्ञास्यग्ने बृहद्यजमाने वयो धाः ॥८॥

३५

नि होता होतृषदने विदानस्त्वेषो दीदिवं असदत्सुदक्षः ।

अदब्धव्रतप्रमतिर्वसिष्ठः सहस्रं भुरः शुचिजिह्वो अग्निः ॥९॥

३६

सःसीदस्व मह्यं असि शोचस्व देववीतमः ।

वि धूममग्ने अरुषं म्रियेध्य सृज प्रशस्त दर्शतम् ॥१०॥ (३)

३७

अपो देवीरुपसृज मधुमतीरयक्ष्माय प्रजाभ्यः । तासामास्थानादुज्जिहतामोषधयः सुपिप्पलाः ॥१॥३८

सं ते वायुर्मातरिश्वा दधातूत्तानाया हृदयं यद्विकस्तम् ।

यो देवानां चरसि प्राणथेन कस्मै देव वर्षळस्तु तुभ्यम् ॥२॥

३९

सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरुथमासदत्स्वः । वासो अग्ने विश्वरूपः संव्ययस्व विभावसो ॥३॥ ४०

उदु तिष्ठ स्वध्वरावा नो देव्या धिया ।

इशे च भासा बृहता सुशुकनिराग्ने याहि सुशस्तिभिः ॥४॥

४१ [५८९]

ऊर्ध्व ऊ पु ण ऊतये तिष्ठा देवो न संविता ।

ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदुज्जिभिर्वाघज्जिर्विह्वयामहे ॥५॥

४२

स जातो गर्भो असि रोदस्योरग्रे चारुर्विभृत ओषधीषु ।

चित्रः शिशुः परि तमांस्यक्तून्प्र मातृभ्यो अधि कर्निकदद्राः ॥६॥

४३

स्थिरो भव वीड्वङ्ग आशुर्भव वाज्यर्वन् । पृथुर्भव सुषदस्त्वमग्रेः पुरीषवाहणः ॥७॥ ४४

शिवो भव प्रजाभ्यो मातृपीभ्यस्त्वमङ्गिरः ।

मा द्यावापृथिवी अभि शोचीमान्तरिक्षं मा वनस्पतीन् ॥८॥

४५

प्रेतुं वाजी कर्निकदन्नानदद्रासंभस्पत्वा । भरन्नग्निं पुरीष्यं मा पाद्यायुषः पुरा ॥९॥ ४६

वृषाग्निं वृषणं भरन्नपां गर्भं समुद्रियम् । अग्र आयोहि वीतये ।

ऋतं सत्यमृतं सत्यमग्निं पुरीष्यमङ्गिरस्वङ्गरामः ॥१०॥

४७

ओषधयः प्रतिमोदध्वमग्निमेतं शिवमायन्तमभ्यत्र युष्माः ।

व्यस्यन् विश्वा अनिरा अमीवा निपीदन्नो अप दुर्मतिं जहि ॥११॥

४८

ओषधयः प्रतिगृष्णीत पुष्पवतीः सुपिप्पलाः ।

अयं वो गर्भं ऋत्वियः प्रत्नं मधस्थमासदत् ॥१२॥

४९

वि पार्जसा पृथुना शोशुचानो वार्धस्व द्विषो रक्षसो अमीवाः ।

सुशर्मणो बृहतः शर्मणि स्यामग्रेरहं सुहवस्य प्रणीतौ ॥१३॥ (४)

५०

आपो हि ष्ठा मयोजुवस्ता न ऊर्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे ॥१॥

५१

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव मातरः ॥२॥

५२

तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ॥३॥

५३

मित्रः सःसृज्य पृथिवीं भूमिं च ज्योतिषा सह ।

सुजातं जातवैदसमयक्ष्माय त्वा सःसृजामि प्रजाभ्यः ॥४॥

५४

रुद्राः सःसृज्य पृथिवीं बृहज्ज्योतिः समीधिर । तेषां भानुरजस इच्छुक्रो देवेषु रोचते ॥५॥ ५५

सःसृष्टां वसुभी रुद्रैर्धीरैः कर्मण्यां मृदम् ।

हस्ताभ्यां मृद्वीं कृत्वा सिनीवाली कृणोतु ताम् ॥६॥

५६

सिनीवाली सुकपर्दा सुकुरीरा स्वौपशा । सा तुभ्यमदिते मद्योखां दधातु हस्तयोः ॥७॥ ५७

उखां कृणोतु शक्त्या बाहुभ्यामदितिधिया ।

माता पुत्रं यथोपस्थे सार्धं विभर्तु गर्भ आ ॥८॥

५८ [६०६]

मखस्य शिरोऽसि वसवस्त्वा कृण्वन्तु गायत्रेण छन्दसाङ्गिरस्वद् ध्रुवासि पृथिव्यसि ।

धारया मयि प्रजाꣳ रायस्पोषं गौपत्यꣳ सुवीर्यꣳ सजातान्यजमानाय ।

द्रुद्रास्त्वा कृण्वन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वद् ध्रुवास्यन्तरिक्षमसि ।

धारया मयि प्रजाꣳ रायस्पोषं गौपत्यꣳ सुवीर्यꣳ सजातान्यजमानाय ।

आदित्यास्त्वा कृण्वन्तु जागतेन छन्दसाङ्गिरस्वद् ध्रुवासि द्यौरसि ।

धारया मयि प्रजाꣳ रायस्पोषं गौपत्यꣳ सुवीर्यꣳ सजातान्यजमानाय ।

विश्वे त्वा देवा वैश्वानराः कृण्वन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वद् ध्रुवासि दिशोऽसि ।

धारया मयि प्रजाꣳ रायस्पोषं गौपत्यꣳ सुवीर्यꣳ सजातान्यजमानाय ।

अदित्यै रास्नास्यदितिष्टे विलं गृभ्णातु ॥९॥

५९

कृत्वाय सा महीमुखां मृन्मयीं योनिमग्रये । पुत्रेभ्यः प्रायच्छददितिः श्रपयानिति ॥१०॥ ६०

वसवस्त्वा धूपयन्तु गायत्रेण छन्दसाङ्गिरस्वद्रुद्रास्त्वा धूपयन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वत् ।

आदित्यास्त्वा धूपयन्तु जागतेन छन्दसाङ्गिरस्वद्विश्वे त्वा देवा वैश्वानरा

धूपयन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वत् ।

इन्द्रस्त्वा धूपयतु वरुणस्त्वा धूपयतु विष्णुस्त्वा धूपयतु ॥११॥ (५)

६१

अदितिष्ठा देवी विश्वदेव्यावती । पृथिव्याः सधस्थे अङ्गिरस्वत् खनत्ववद् ॥१॥ ६२

देवानां त्वा पत्नीर्देवीर्विश्वदेव्यावतीः । पृथिव्याः सधस्थे अङ्गिरस्वद् धतूखे ।

धिषणास्त्वा देवीर्विश्वदेव्यावतीः । पृथिव्याः सधस्थे अङ्गिरस्वद् भीन्धतामुखे ।

वरूत्रीष्ठा देवीर्विश्वदेव्यावतीः । पृथिव्याः सधस्थे अङ्गिरस्वच्छूपयन्तूखे ।

मास्त्वा देवीर्विश्वदेव्यावतीः । पृथिव्याः सधस्थे अङ्गिरस्वत्पचन्तूखे ।

जनयस्त्वाछिन्नपत्रा देवीर्विश्वदेव्यावतीः । पृथिव्याः सधस्थे अङ्गिरस्वत्पचन्तूखे ॥२॥ ६३

मित्रस्य चर्षणीधृतोऽवो देवस्य सानसि । युष्मं चित्रश्रवस्तमम् ॥३॥ ६४

देवस्वा सवितोर्द्वपतु सुपाणिः स्वङ्गुरिः सुवाहुरुत शक्त्या ।

अव्यथमाना पृथिव्यामाशा दिश आपृण ॥४॥

६५

उत्थार्य बृहती भवोर्दु तिष्ठ ध्रुवा त्वम् । मित्रेतां तं उखां परिददाम्यमित्या एषा मा भेदि ।

वसवस्त्वाछन्दन्तु गायत्रेण छन्दसाङ्गिरस्वद्रुद्रास्त्वाछन्दन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वत् ।

आदित्यास्त्वाछन्दन्तु जागतेन छन्दसाङ्गिरस्वद्विश्वे त्वा

देवा वैश्वानरा आछन्दुन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वत् ॥५॥ (६)

६६ [६१४]

- आकूतिमग्निं प्रयुजꣳ स्वाहा मनो मेधामग्निं प्रयुजꣳ स्वाहा ।  
 चित्तं विज्ञातमग्निं प्रयुजꣳ स्वाहा वाचो विधूतिमग्निं प्रयुजꣳ स्वाहा ।  
 प्रजापतये मनवे स्वाहाग्रये वैश्वानराय स्वाहा ॥१॥ ६७
- विश्वो देवस्य नेतुर्मतीं वुरीत सख्यम् । विश्वो राय इषुष्यति द्युम्नं वृणीत पुष्यसे स्वाहा ॥२॥ ६८
- मा सु भित्था मा सु रिषोऽम्ब धृष्णु वीरयस्व सु । अग्निश्चेदं करिष्यथः ॥३॥ ६९
- दꣳहस्व देवि पृथिवि स्वस्तय आसुरी माया स्वधया कृतासि ।  
 जुष्टं देवेभ्य इदमस्तु हव्यमरिष्टा त्वमुदिहि यज्ञे अस्मिन् ॥४॥ ७०
- द्वेभ्यः सर्पिरासुतिः प्रत्नो होता वरेण्यः । सहसस्पुत्रो अद्भुतः ॥५॥ ७१
- परस्या अधि संवतोऽवराँ३ अभ्यातर । यत्राहमस्मि तारं अव ॥६॥ ७२
- परमस्याः परावतो रोहिदश्च इहागहि । पुरिष्यः पुरुप्रियोऽग्ने त्वं तरा मृधः ॥७॥ ७३
- यदग्ने कानिकानि चिदा ते दारूणि दुधमसि । सर्वं तदस्तु ते घृतं तज्जुषस्व यविष्य ॥८॥ ७४
- यदच्युपजिह्विका यद्वस्रो अतिसर्पति । सर्वं तदस्तु ते घृतं तज्जुषस्व यविष्य ॥९॥ ७५
- अहरहरप्रयात्रं भरन्तोऽश्वयैव तिष्ठते घासमस्मै ।  
 रायस्पोषेण समिषा मदन्तोऽग्ने मा ते प्रतिवेशा रिषाम ॥१०॥ ७६
- नाभां पृथिव्याः समिधाने अग्नौ रायस्पोषाय बृहते हवामहे ।  
 इरम्मदं बृहदुक्थं यजत्रं जेतारमग्निं पृतनासु सासहिम् ॥११॥ ७७
- याः सेना अभीत्वरीराव्याधिनीरुगणा उत ।  
 ये स्तेना ये च तस्करास्ताꣳस्ते अग्नेऽर्पिदधाम्यास्ये ॥१२॥ ७८
- दꣳष्ट्राभ्यां मलिम्लूञ्जम्भ्यैस्तस्कराँ३ उत ।  
 हनुभ्याꣳ स्तेनान् भगवस्ताꣳस्त्वं खादु सुखादितान् ॥१३॥ ७९
- ये जनेषु मलिम्लव स्तेनासस्तस्करा वने ।  
 ये कर्क्षेणघायवस्ताꣳस्ते दधामि जम्भयोः ॥१४॥ ८०
- यो असभ्यमरातीयाद्यश्च नो द्वेषते जनः ।  
 निन्दाद्यो अस्मान्धिप्साच्च सर्वं तं मस्मसा कुरु ॥१५॥ ८१
- सꣳशितं मे ब्रह्म सꣳशितं वीर्यं बलम् । सꣳशितं क्षत्रं जिष्णु यस्याहमस्मि पुरोहितः ॥१६॥ ८२
- उदैषां बाहू अतिरमुद्वर्चो अथो बलम् । क्षिणोमि ब्रह्मणाभिन्नानुन्नयामि स्वाँ३ अहम् ॥१७॥ ८३
- अन्नपतेऽन्नस्य नो देहानमीवस्य शुष्मिणः ।  
 प्र प्र दातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे । विश्वकर्मणे स्वाहा ॥१८॥ ८४[६३१]

पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः ।

घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः स्वाहा ॥१९॥ (७) ८५ [६३३]

युञ्जान एकादश ॥ ११ ॥ प्रतूर्तं वाजिन् षोडश ॥ १६ ॥ देवस्य त्वा दश ॥ १० ॥ अपो देवस्त्रि-  
योदश ॥ १३ ॥ आपो ह्येकादश ॥ ११ ॥ अदितिष्वा पञ्च ॥ ५ ॥ आकृतिमेकोनविंशतिः

॥ १९ ॥ सप्तानुवाकेषु पञ्चाशीति ॥ ८५ ॥

॥ इति श्रुत्यजुःकाण्वसंहितायां द्वादशोऽध्यायः ॥१२॥

### अथ त्रयोदशोऽध्यायः ।

दृशानो रुक्म उर्व्या व्यद्यौर्मुर्मर्षमायुः श्रिये रुचानः ।

अग्निरमृतो अभवद्वयोभिर्यदेनं द्यौरजनयत्सुरेताः ॥१॥

१

नक्तोषासा समनसा विरूपे धापयेते शिशुमेकं समीची ।

द्यावाक्षामा रुक्मो अन्तर्विभाति देवा अग्निं धारयन्द्रविणोदाः ॥२॥

२

विश्वा रूपाणि प्रतिमुञ्चते कविः प्रासावीद्ध्रं द्विपदे चतुष्पदे ।

वि नाकमख्यत्सविता वरेण्योऽनु प्रयाणमुषसो विराजति ॥३॥

३

सुपणोऽसि गरुत्मास्त्रिवृत्ते शिरः । गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ ॥४॥

४

स्तोमं आत्मा छन्दास्सङ्गानि यजूंषि नाम ।

सामं ते तनूर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छं धिष्ण्याः शफाः ॥५॥

५

सुपणोऽसि गरुत्मान्दिवं गच्छ स्वः पत ।

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा गायत्रं छन्द आरोह । पृथिवीमनु विक्रमस्व ।

विष्णोः क्रमोऽस्यभिमातिहा त्रैष्टुभं छन्द आरोह । अन्तरिक्षमनु विक्रमस्व ।

विष्णोः क्रमोऽस्यरातीयतो हन्ता जागतं छन्द आरोह । दिवमनु विक्रमस्व ।

विष्णोः क्रमोऽसि शत्रूयतो हन्तानुष्टुभं छन्द आरोह । दिशेनु विक्रमस्व ॥६॥

६

अक्रन्ददुमि स्तनयन्निव द्यौः क्षामा रेरिहद्वीरुषः समञ्जन् ।

सद्यो जज्ञानो वि हीमिद्धो अख्यदा रोदसी भानुना भात्यन्तः ॥७॥

७

अग्नेऽभ्यावर्तिन्नाभि मा निर्वर्तेस्वार्युषा वर्चसा प्रजया धनेन ।

सन्या मेधया रय्या पोषेण ॥८॥

८

अग्ने अङ्गिरः शतं ते सन्त्वावृतः सहस्रं त उपावृतः ।

अधा पोषस्य पोषेण पुनर्नो नष्टमाकृधि पुनर्नो रयिमाकृधि ॥९॥

९ [६४२]

- पुनरूर्जा निर्वर्तस्व पुनरग्र इषायुषा । पुनर्नः पाह्यः हंसः ॥१०॥ १०
- सह रय्या निर्वर्तस्वाग्ने पिन्वस्व धारया । विश्वप्स्यो विश्वतस्परि ॥११॥ ११
- आ त्वाहार्षमन्तरभूर्ध्रुवस्तिष्ठा विचाचलिः । विशस्तवा सर्वा वाञ्छन्तु मा त्वद्राष्ट्रमधिभ्रशत् ॥१२॥१२
- उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमः श्रथाय ।  
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अर्दितये स्याम ॥१३॥ १३
- अग्ने बृहन्नुपसामूर्ध्वो अस्थान्निर्जगन्वान् तमसो ज्योतिषागात् ।  
अग्निर्मानुना रुशता स्वङ्ग आ जातो विश्वा सन्नान्यप्राः ॥१४॥ १४
- हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्भोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् ।  
नृषद्वरसद्वेतसद्वयोमसद्वजा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत् ॥१५॥ १५
- सीदु त्वं मातुरस्या उपस्थे विश्वान्यग्ने वयुनानि विद्वान् ।  
मैनां तर्पसा मार्चिपाभिर्शोचीरन्तरस्थाः शुक्रज्योतिर्विभाहि ॥१६॥ १६
- अन्तरग्ने रुचा त्वमुखायाः सदर्ने स्वे । तस्यास्त्वः हरसा तपञ्जातवेदः शिवो भव ॥१७॥ १७
- शिवो भूत्वा मह्यमग्ने अथो सीद शिवस्त्वम् । शिवाः कृत्वा दिशः सर्वा स्वं योनिमिहासदः १८(१)१८
- दिवस्परि प्रथमं जज्ञे अग्निस्मद् द्वितीयं परि जातवेदाः ।  
तृतीयमप्सु नुमणा अजस्रमिन्धान एनं जरते स्वाधीः ॥१॥ १९
- विद्या ते अग्ने त्रेधा त्रयाणि विद्या ते धाम विभृता पुरुत्रा ।  
विद्या ते नाम परमं गुहा यद्विद्या तमुत्सं यत आजगन्थ ॥२॥ २०
- समुद्रे त्वा नुमणा अप्स्वन्तर्नृचक्षा ईधे दिवो अग्र ऊधन् ।  
तृतीयं त्वा रजसि तस्थिवाः समपामुपस्थे महिषा अवर्धन् ॥३॥ २१
- अक्रन्ददग्नि स्तनयन्निव द्यौः क्षामा रेहिद्वीरुधः समञ्जन् ।  
सद्यो जज्ञानो वि हीमिद्वो अख्यदा रोदसी भानुना भात्यन्तः ॥४॥ २२
- श्रीणामुदारो धरुणो रयीणां मनीषाणां प्रार्पणः सोमगोपाः ।  
वसुः सुनुः सहसो अप्सु राजा विभात्यग्रं उषसामिधानः ॥५॥ २३
- विश्वस्य केतुर्ध्वनस्य गर्भ आ रोदसी अपृणाज्जायमानः ।  
वीळं चिदद्रिमभिनत् परायञ्जना यदग्निमयजन्त पञ्च ॥६॥ २४
- उशिकपावको अरतिः सुमेधा मर्तेष्वग्निर्मृतो निधायि ।  
इयति धूममरुषं भरिभ्रदुच्छुक्लेण शोचिषा द्यामिन्धन् ॥७॥ २५ [६५८]

दृशानो रुक्म उर्व्या व्यद्यौहुर्मर्षमायुः श्रिये रुचानः ।  
 अग्निरमृतौ अभवद्वयोभिर्यदेनं द्यौरजनयत्सुरेताः ॥८॥ २६  
 यस्तै अद्य कृणवद्भद्रशोचेऽपूपं देव घृतवन्तमग्रे ।  
 प्र तं नय प्रतरं वस्यो अच्छाभि सुभ्रं देवभक्तं यविष्ठ ॥९॥ २७  
 आ तं भज सौश्रवसेष्वग्र उक्थ उक्थ आभज शस्यमाने ।  
 प्रियः सूर्ये प्रियो अग्रा भवात्युज्जातेन भिनददुज्जनित्वैः ॥१०॥ २८  
 त्वामग्रे यजमाना अनु धून् विश्वा वसुं दधिरे वार्याणि ।  
 त्वया सह द्रविणमिच्छमाना व्रजं गोमेन्तमुशिजो विववुः ॥११॥ २९  
 अस्ताव्यग्निर्नरा सुशेवो वैश्वानर ऋषिभिः सोमगोपाः ।  
 अद्वेपे द्यावापृथिवी हुवेम देवा धत्त रयिमस्मे सुवीरम् ॥१२॥ (२) ३०

समिधाग्निं हुवस्यत घृतैर्विधयतातिथिम् । आस्मिन् हव्या जुहोतन ॥१॥ ३१  
 उदु त्वा विश्वे देवा अग्रे भरन्तु चित्तिभिः । स नो भव शिवस्त्व स सुप्रतीको विभावंसुः ॥२॥ ३२  
 प्रेदग्ने ज्योतिष्मान् याहि शिवेभिरर्चिभिष्ट्वम् । बृहद्भिर्भानुभिर्भासन्मा हिंसीस्तन्वा प्रजाः ॥३॥ ३३  
 अक्रन्ददग्निः स्तनयन्निव द्यौः क्षामा रेरिहद्वीरुधः समञ्जन ।  
 सद्यो जज्ञानो वि हीमिद्धो अरुयदा रोदसी भानुना भात्यन्तः ॥४॥ ३४  
 प्र प्रायमग्निर्भरतस्य शृण्वे वि यत्सूर्यो न रोचेत बृहद्भाः ।  
 अभि यः पूरु पृतेनासु तस्थौ दीदाय दैव्यो अतिथिः शिवो नः ॥५॥ ३५  
 आपो देवीः प्रतिगृष्णीत भस्मैतत्स्योने कृणुध्व सूरभा उ लोके ।  
 तस्मै नमन्तां जनयः सुपत्नीर्मातेव पुत्रं विभृताप्स्वेनत् ॥६॥ ३६  
 अप्सवग्रे सधिष्टव सौषधीरनु रुध्यसे । गर्भे सञ्जायसे पुनः ॥७॥ ३७  
 गर्भो अस्योषधीनां गर्भो वनस्पतीनाम् । गर्भो विश्वस्य भूतस्याग्रे गर्भो अपामसि ॥८॥ ३८  
 प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्रे । स सृज्य मातृभिष्ट्वं ज्योतिष्मान् पुनरासदः ॥९॥ ३९  
 पुनरासद्य सदनमपश्च पृथिवीमग्रे । शेषे मातुर्यथोपस्थेऽन्तरस्या स शिवतमः ॥१०॥ ४०  
 पुनरूर्जा निर्वर्तस्व पुनरग्र इषायुषा । पुनर्नः पाह्य हंसः ॥११॥ ४१  
 सह रय्या निर्वर्तस्वाग्रे पिन्वस्व धारया । विश्वप्स्या विश्वतुस्परि ॥१२॥ ४२  
 बोधा मे अस्य वचसो यविष्ठ म हिष्ठस्य प्रभृतस्य स्वधावः ।  
 पीयति त्वो अनु त्वो गृणाति वन्दारुष्टे तन्वं वन्दे अग्रे ॥१३॥ ४३ [६७६]

स बोधि सूरिर्मधवा वसुपते वसुदावन् । युयोध्यस्मद्वेषांसि विश्वकर्मणे स्वाहा ॥१४॥ ४४

पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः ।

घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः स्वाहा ॥१५॥ (३) ४५

अपेत वीत वि च सर्पतातो येऽत्र स्थ पुराणा ये च नूतनाः ।

अदाद्यमोऽवसानं पृथिव्या अक्रन्निमं पितरो लोकमस्मै ॥१॥ ४६

संज्ञानमसि कामधरणं मयि ते कामधरणं भूयात् । अग्नेर्भस्मास्यग्नेः पुरीषमसि ।

चितं स्थ परिचितं ऊर्ध्वचितं श्रयध्वम् ॥२॥ ४७

अयं सो अग्निर्यस्मिन्सोममिन्द्रः सुतं दधे जुठरे वावशानः ।

महास्रियं वाजमत्यं न समिं ससवान्सन्तसूयसे जातवेदः ॥३॥ ४८

अग्ने यत्ते दिवि वर्चः पृथिव्यां यदोषधीष्वप्स्वा यजत्रा ।

येनान्तरिक्षमुर्वीततन्थ त्वेषः स भानुरर्णवो नृचक्षाः ॥४॥ ४९

अग्ने दिवो अर्णमच्छा जिगास्यच्छा देवांश्च ऊचिषे धिष्यता ये ।

या रौचने परस्तात् सूर्यस्य याश्चावस्तादुपतिष्ठन्त आपः ॥५॥ ५०

पुरीष्यासो अग्रयः प्रावणेभिः सजोषसः । जुषन्तां यज्ञमुद्रुहोऽनमीवा इषो महीः ॥६॥ ५१

इळांमग्ने पुरुदंसं सनिं गोः शश्वत्तमं हवमानाय साध ।

स्यान्नः सुनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे ॥७॥ ५२

अयं ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातो अरोचथाः । तं जानन्नग्न आरोहाथा नो वर्धया रयिम् ॥८॥ ५३

चिदमि तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवा सीद । परिचिदमि तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवा सीद ॥९॥ ५४

लोकं पृण छिद्रि पृणार्थो सीद ध्रुवा त्वम् । इन्द्राग्नी त्वा बृहस्पतिरस्मिन् योना असीषदन् ॥१०॥ ५५

ता अस्य स्रददोहमः सोमं श्रीणन्ति पृथयः । जन्मन्देवानां विशस्त्रिवा रौचने दिवः ॥११॥ ५६

इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्तसमुद्रव्यचसं गिरः । रथीतमं रथीनां वाजानां सत्पतिं पतिम् ॥१२॥ ५७

समितुं संकल्पेथा संप्रियौ रोचिष्णु सुमनस्यमानौ । इषमूर्जमभि संवसानौ ॥१३॥ ५८

सं वां मनोऽसि सं व्रता समु चित्तान्याकरम् ।

अग्ने पुरीष्याधिपा भव त्वं न इषमूर्जं यजमानाय धेहि ॥१४॥ ५९

अग्ने त्वं पुरीष्यो रयिमान् पुष्टिमोऽसि । शिवाः कृत्वा दिशः सर्वाः स्वं योनिमिहासदः ॥१५॥ ६०

भवतं नः समनसौ सचेतसा अरेपसौ ।

मा यज्ञं हिंसिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः ॥१६॥ ६१ [६९४]



मातेव पुत्रं पृथिवी पुरीष्यमभिः स्वे योनां अमारुखा ।

तां विश्वेदेवैर्ऋतुभिः संविदानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चतु ॥१७॥(४)

६२

असुन्वन्तमयंजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य ।

अन्यमस्मदिच्छ सा तं इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥१॥

६३

नमः सु ते निर्ऋते तिग्मतेजोऽयस्मयं विचृता बन्धमेतम् ।

यमेन त्वं यस्या संविदानोत्तमे नाके अधिरोहयैनम् ॥२॥

६४

यस्यास्ते घोर असञ्जुहोम्येषां बन्धानामवसर्जनाय ।

यां त्वा जनो भूमिरिति प्रमन्दते निर्ऋतिं त्वाहं परिवेद विश्वतः ॥३॥

६५

यं ते देवी निर्ऋतिराबन्ध पाशं ग्रीवास्वविचृत्यम् ।

तं ते विष्याम्यायुषो न मध्यादथैतं पितुमाद्भि प्रसृतः । नमो भूत्यै येदं चकार ॥४॥ ६६

निवेशनः सङ्गमनो वस्त्रेणां विश्वा रूपाभिचष्टे शचीभिः ।

देव इव सविता सत्यधर्मेन्द्रो न तस्थौ समरे पथीनाम् ॥५॥

६७

सीरा युञ्जन्ति कवयो युगा वितन्वते पृथक् । धीरां देवेषु सुम्रया ॥६॥

६८

युनक्त सीरा वि युगा तनुध्वं कृते योनौ वपतेह बीजम् ।

गिरा च श्रुष्टिः सभरा असन्नो नेदीय इत्सृण्यः पृक्मेयात् ॥७॥

६९

शुनः सु फाला विकृषन्तु भूमिः शुनं कीनाशा अभियन्तु वाहः ।

शुनासीरा हविषा तोशमाना सुषिप्पला ओषधीः कर्तमसे ॥८॥

७०

घृतेन सीता मधुना समज्यतां विश्वेदेवैरनुमता मरुद्भिः ।

ऊर्जस्वती पर्यसा पिन्वमानास्मान्तसीते पर्यसाभ्याववृत्स्व ॥९॥

७१

लाङ्गलं पवीरवत्सुशेवः सोमपित्सरु ।

तदुद्वपति गामर्वि प्रफुर्व्यं च पीवरीं प्रस्थावद्रथवाहणम् ॥१०॥

७२

कामं कामदुघे धुक्व मित्राय वरुणाय च । इन्द्रायाश्विभ्यां पूष्णे प्रजाभ्य ओषधीभ्यः ॥११॥ ७३

विमुच्यध्वमघ्न्या देवयाना अगन्म तमसस्पारमस्या । ज्योतिरापाम ॥१२॥

७४

सजूरब्दो अयं वोभिः सजूरुषा अरुणीभिः ।

सजोषसा अश्विना दःसोभिः सजूः स्र एतंशेन सजूर्वैश्वानर इळ्या घृतेन स्वाहा ॥१३॥(५) ७५

या ओषधीः पूर्वी जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा । मनै नु बभूणामहः शतं धामानि सप्त च ॥१॥ ७६

शतं वो अम्ब धामानि सहस्रमुत वो रुहः । अघा शतक्रत्वो यूयमिमं मे अगदं कृता ॥२॥ ७७

[ ७१० ]

ओषधीः प्रति गृष्णीत पुष्पवतीः प्रसूवरीः । अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः ॥३॥ ७८  
 ओषधीरिति मातरस्तद्वौ देवीरुपब्रुवे । सनेयमश्वं गां वासं आत्मानं तव पूरुष ॥४॥ ७९  
 अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता । गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम् ॥५॥ ८०  
 यत्रौषधीः समग्मत राजानः समिता इव । विप्रः स उच्यते भिषग्रक्षोहामीवचार्तनः ॥६॥ ८१  
 अश्वावतीः सोमावतीमूर्जयन्तीमुदोजसम् । आवित्मि सर्वा ओषधीरस्मा अरिष्टतातये ॥७॥ ८२  
 उच्छुष्मा ओषधीनां गावो गोष्ठादिवेरते । धनं सनिष्यन्तीनामात्मानं तव पूरुष ॥८॥ ८३

इष्कृतिर्नाम वो माताथो यूयः स्थ निष्कृतीः ।

मीराः पतत्रिणीं स्थन यदामयति निष्कृथ ॥९॥

अति विश्वाः परिष्ठा स्तेन इव व्रजमक्रमुः । ओषधीः प्राचुच्यवुर्यतिकं च तन्वो रपः ॥१०॥ ८५  
 यद्विमा वाजयन्नहमोषधीर्हस्त आदधे । आत्मा यक्ष्मस्य नश्यति पुरा जीवगृभो यथा ॥११॥ ८६  
 यस्यौषधीः प्रसर्पथाङ्गमङ्गं परुष्परुः । ततो यक्ष्मं विवाधध्व उग्रो मध्यमशीरिव ॥१२॥ ८७  
 साकं यक्ष्म प्रपत चापेण किकिदीविना । साकं वातस्य भ्राज्या साकं नश्य निहाकया ॥१३॥ ८८  
 अन्या वो अन्यामवत्वन्यान्यस्या उपावता । ताः सर्वाः संविदाना इदं मे प्रावता वचः ॥१४॥ ८९

याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वहसः ॥१५॥

मुञ्चन्तु मा शपथ्यादथो वरुण्यादुत । अथो यमस्य पड्वीशात्सर्वस्मादेवकिल्बिषात् ॥१६॥ ९१  
 अवयतीः समवदन्त दिव ओषधयस्परि । यं जीवमश्वमहै न स रिष्याति पूरुषः ॥१७॥ ९२  
 या ओषधीः सोमराजीर्विह्वीः शतविचक्षणाः । तासाममि त्वमुत्तमारं कामाय शः हृदे ॥१८॥ ९३  
 या ओषधीः सोमराजीर्विष्टिताः पृथिवीमनु । बृहस्पतिप्रसूता अस्यै संदत्त वीर्यम् ॥१९॥ ९४  
 याश्चेदमुपशृण्वन्ति याश्च दूरं परागताः । सर्वाः संगत्य वीरुधोऽस्यै संदत्त वीर्यम् ॥२०॥ ९५  
 नाशयित्री बलासस्यार्शस उपचितामसि । अथो शतस्य यक्ष्माणां पाकारोरमि नाशनी ॥२१॥ ९६  
 मा वो रिषत् खनिता यस्मै चाहं खनामि वः । द्विपचतुष्पदस्माकं सर्वमस्त्वनातुरम् ॥२२॥ ९७  
 ओषधयः संवदन्ते सोमेन सह राजा । यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तः राजन् पारयामसि ॥२३॥ ९८

त्वां गन्धर्वा अखनः स्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः ।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत ॥२४॥

त्वमुत्तमास्योषधे तव वृक्षा उपस्तयः ।

उपस्तिगस्तु सोऽस्माकं यो अस्माँ३ अभिदासति ॥२५॥ (६)

|  |           |
|--|-----------|
| मा मां हिंसीज्जनिता यः पृथिव्या यो वा दिवं सत्यधर्मा व्यानत् ।               |           |
| यश्चापश्चन्द्राः प्रथमो जजान कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥१॥                     | १०१       |
| अभ्यावर्तस्व पृथिवि यज्ञेन पर्यसा मह । वपां ते अग्निरिषितो अरोहत् ॥२॥        | १०२       |
| अग्रे यत्ते शुक्रं यच्चन्द्रं यत्पुतं यच्च यज्ञियम् । तद्देवेभ्यो भरामसि ॥३॥ | १०३       |
| इषमूर्जमहमित आदमृतस्य योनिं महिषस्य धाराम् ।                                 |           |
| आ मा गोषु विशत्वा तनूषु जहामि सेदिमनिराममीवाम् ॥४॥                           | १०४       |
| अग्रे तव श्रवो वयो महि भ्राजन्ते अर्चयो विभावसो ।                            |           |
| बृहद्भानो शर्वसा वाजमुक्थ्यं दधासि दाशुपे कवे ॥५॥                            | १०५       |
| पावकवर्चाः शुक्रवर्चा अनूनवर्चा उदियपि भानुना ।                              |           |
| पुत्रो मातरां विचरन्नुपावसि पूणक्षि रोदसी उभे ॥६॥                            | १०६       |
| ऊर्जो नपाज्जातवेदः सुशस्तिभिर्मन्दस्व धीतिभिर्हितः ।                         |           |
| त्वे इषः सन्दधुर्भूरिवर्षसश्चित्रोतयो वामजाताः ॥७॥                           | १०७       |
| इरज्यन्नग्रे प्रथयस्व जन्तुभिरस्मे रायो अमर्त्या ।                           |           |
| स दर्शतस्य वपुषो विराजसि पूणक्षि सानसि क्रतुम् ॥८॥                           | १०८       |
| इष्कर्तारमध्वरस्य प्रचेतसं क्षयन्तः राधसो महः ।                              |           |
| राति वामस्य सुभगां महीमिषं दधासि सानसि रयिम् ॥९॥                             | १०९       |
| क्रतावानं महिषं विश्वदर्शतमग्निं सुमनाय दधिरे पुरो जनाः ॥                    |           |
| श्रुत्कर्णं सप्रथस्तमं त्वा गिरा दैव्यं मानुषा युगा ॥१०॥                     | ११०       |
| आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् । भवा वाजस्य सङ्गथे ॥११॥            | १११       |
| स ते पर्यामि समु यन्तु वाजाः सं वृष्ण्यान्यभिमातिपाहः ।                      |           |
| आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि श्रवांस्युत्तमानि धिष्व ॥१२॥                      | ११२       |
| आप्यायस्व मदिन्तम् सोम विश्वेभिर्यशुभिः । भवा नः सप्रथस्तमः सखा वृधे ॥१३॥    | ११३       |
| आ ते वत्सो मनो यमत्परमाचित्सधस्थात् । अग्रे त्वां कामया गिरा ॥१४॥            | ११४       |
| तुभ्यं ता अङ्गिरस्तम् विश्वाः सुक्षितयः पृथक् । अग्रे कामाय येमिरे ॥१५॥      | ११५       |
| अग्निः प्रियेषु धामसु कामो भूतस्य भव्यस्य । सम्राळेको विराजति ॥१६॥(७)        | ११६ [७४९] |

दृशानोऽष्टादश ॥१८॥ दिवस्परि द्वादश ॥१२॥ समिधाग्निं दुव० पञ्चदश ॥१५॥ अपेत सप्तदश ॥ १७ ॥

असुन्वन्तं त्रयोदश ॥ १३ ॥ या ओषधीः पञ्चविंशतिः ॥ २५ ॥ मा मा षोडश ॥ १६ ॥

ससानुवाकेषु षोडशोत्तरं शतम् ॥ ११६ ॥ इति शुक्लयजुःकाण्वसंहितायां त्रयोदशोऽध्यायः ॥१३॥

## अथ चतुर्दशोऽध्यायः ।

- मयि गृह्णाम्यग्ने अग्निः रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय । मासु देवताः सचन्ताम् ॥१॥ १
- अपां पृष्ठमसि योनिर्ग्रेः समुद्रमभितः पिन्वमानम् ।  
वर्धमानो महौ३ आ च पुष्करे दिवो मात्रया वरिष्णा प्रथस्व ॥२॥ २
- ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचौ वेन आवः  
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्टाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥३॥ ३
- हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।  
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥४॥ ४
- द्रुप्तश्चस्कन्द पृथिवीमनु द्यामिमं च योनिमनु यश्च पूर्वः ।  
समानं योनिमनु सञ्चरन्तं द्रुप्तं जुहोम्यनु सप्त होत्राः ॥५॥ ५
- नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु । ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥६॥ ६
- या इषवो यातुधानानां ये वा वनस्पतीरनु । ये वावटेपु शेरते तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥७॥ ७
- ये वामी रौचने दिवो ये वा सूर्यस्य रश्मिषु । येषामप्सु सदस्कृतं तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥८॥ ८
- कृणुष्व पाजुः प्रसितिं न पृथ्वीं याहि गजेवार्मवाँ३ इभेन ।  
तृष्वीमनु प्रसितिं दृणानोऽस्तासि विध्यं रक्षसस्तपिष्ठैः ॥९॥ ९
- तव भ्रमास आशुया पतन्त्यनुस्पृश धृपता शोशुचानः ।  
तपूँक्ष्यग्रे जुह्वा पतज्ज्ञानसन्दिता विस्मृज विष्वगुल्काः ॥१०॥ १०
- प्रति स्पशो विस्मृज तूर्णितमो भवा पायुर्विशो अस्या अदब्धः ।  
यो नो दूरे अघशंसो यो अन्त्यग्रे मा किष्टे व्यथिरादधर्षीत् ॥११॥ ११
- उदग्रे तिष्ठ प्रत्यातनुष्व न्यमित्रौ३ ओपतात्तिग्महेते ।  
यो नो अरातिः समिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यतसं न शुष्कम् ॥१२॥ १२
- ऊर्ध्वो भव प्रतिविध्याध्यस्मदाविष्कृणुष्व दैव्यान्यग्रे ।  
अव स्थिरा तनुहि यातुज्जनां जामिमजामि प्रमृणीहि शत्रून् ॥१३॥ १३
- अग्नेष्ट्वा तेजसा सादयामि । अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् ।  
अपाः रताः सि जिन्वति । इन्द्रस्य त्वौजसा सादयामि ॥१४॥ १४
- ध्रुवो यज्ञस्य रजसश्च नेता यत्रा नियुद्धिः सचसे शिवाभिः ।  
दिवि मूर्धानं दधिषे स्वर्षा जिह्वामग्ने चकृषे हव्यवाहम् ॥१५॥ (१) १५ [७६४]

ध्रुवासि धरुणास्तृता विश्वकर्मणा ।

मा त्वा समुद्र उद्वधीन्मा सुपर्णोऽव्यथमानां पृथिवीं दृ३ह ॥१॥ १६

प्रजापतिष्ठा सादयत्वपां पृष्ठे समुद्रस्येमेन । व्यचस्वतीं प्रथस्वतीं प्रथस्व पृथिव्यसि ॥२॥ १७

भूरसि भूमिरस्यादितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धत्री ।

पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ३ह पृथिवीं मा हिंसीः ॥३॥ १८

विश्वस्मै प्राणायानाय व्यानायोदानाय प्रतिष्ठायै चरित्राय ।

अग्निष्ठाभिपातु मद्या स्वस्त्या छदिपा शन्तमेन तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवा सीद ॥४॥ १९

काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः-परुषस्परि । एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन चा॥५॥ २०

या शतेन प्रतनोषि सहस्रेण विरोहसि । तस्यास्ते देवीष्टके विधेम हविषा वयम् ॥६॥ २१

यास्ते अग्रे सूर्ये रुचो दिवमातन्वन्ति रश्मिभिः ।

ताभिर्नो अद्य सर्वाभी रुचे जनाय नस्कृधि ॥७॥ २२

या वो देवाः सूर्ये रुचो गोवश्वेषु या रुचः ।

इन्द्राग्नी ताभिः सर्वाभी रुचं नो धत्त बृहस्पते ॥८॥ २३

विराड्ज्योतिरधारयत्स्वराड्ज्योतिरधारयत् ।

प्रजापतिष्ठा सादयतु पृष्ठे पृथिव्या ज्योतिष्मतीम् ॥९॥ २४

विश्वस्मै प्राणायानाय व्यानाय विश्वं ज्योतिर्यच्छ ।

अग्निष्टेऽधिपतिस्तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवा सीद ॥१०॥ २५

मधुश्च माध्वश्च वासन्तिका ऋतू अग्रेरन्तःश्रेषोऽसि ।

कल्पेतां द्यावापृथिवी कल्पन्तामाप ओषधयः कल्पन्तामग्नयः पृथङ् मम ज्यैष्ठ्याय सव्रताः ।

ये अग्नयः समनसोऽन्तरा द्यावापृथिवी इमे ।

वासन्तिका ऋतू अभिकल्पमाना इन्द्रामिव

देवा अभिसंविशन्तु तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम् ॥११॥ २६

अषाढहासि सहमाना सहस्वरातीः सहस्व पृतनायतः । सहस्रवीर्यासि सा मा जिन्व ॥१२॥ २७

सहस्वेमा अभिमातीः सहस्व पृतनायतः । सहस्व सर्वे पाप्मानन् सहमानास्योषधे ॥१३॥ (२) २८

मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥१॥ २९

मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥२॥ ३०

मधुमाशो वनस्पतिर्मधुमाँ३ अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥३॥ ३१ [७८०]

|  |          |
|--|----------|
| अपां गम्भन्त्सीद मा त्वा सूर्योऽभिताप्सीन्माग्निर्वैश्वानरः ।                      |          |
| अच्छिन्नपत्राः प्रजा अनुवीक्षस्वानु त्वा दिव्या वृष्टिः सचताम् ॥४॥                 | ३२       |
| त्रीन्त्समुद्रान्त्समसृपत् स्वर्गानपां पतिवृषभ इष्टकानाम् ।                        |          |
| पुरीषं वसानः सुकृतस्य लोके तत्र गच्छ यत्र पूर्वं परेताः ॥५॥                        | ३३       |
| मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम् । पिपृतां नो भरीमभिः ॥६॥                | ३४       |
| विष्णोः कर्माणि पश्यत् यतो व्रतानि पस्पशे । इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥७॥               | ३५       |
| ध्रुवासि धरुणतो जज्ञे प्रथममेभ्यो योनिभ्यो अधि जातवेदाः ।                          |          |
| स गायत्र्या त्रिष्टुभानुष्टुभा च देवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन् ॥८॥                  | ३६       |
| इषे राये रमस्व सहसे द्युम्न ऊर्जे अपत्याय ।  |          |
| सम्राळसि स्वराळसि सारस्वतौ त्वात्सौ प्रावताम् ॥९॥                                  | ३७       |
| अग्ने युक्ष्वा हि ये तवाश्वासो देव साधवः । अरं वहन्ति मन्यवे ॥१०॥                  | ३८       |
| युक्ष्वा हि देवहूतमां३ अश्वां३ अग्ने रथीरिव । नि होता पूर्यः संदः ॥११॥ (३)         | ३९       |
| सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेना अन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः ।                            |          |
| घृतस्य धारा अभिचाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्ये अग्नेः ॥१॥                             | ४०       |
| ऋचे त्वा रुचे त्वा भासे त्वा ज्योतिषे त्वा ।                                       |          |
| अभूद्विदं विश्वस्य भुवनस्य वार्जिनमग्नेर्वैश्वानरस्य च ॥२॥                         | ४१       |
| अग्निज्योतिषा ज्योतिष्मान् रुक्मो वर्चसा वर्चस्वान् । सहस्रदा असि सहस्राय त्वा ॥३॥ | ४२       |
| आदित्यं गर्भं पर्यसा समङ्धि सहस्रस्य प्रतिमां विश्वरूपम् ।                         |          |
| परिवृङ्धि हरसा माभिमंस्थाः शतायुषं कृणुहि चीयमानः ॥४॥                              | ४३       |
| वार्तस्य जूतिं वरुणस्य नाभिमश्वं जज्ञानं सरिरस्य मध्ये ।                           |          |
| शिशुं नदीनां हरिमद्रिबुध्नमग्ने मा हिंसीः परमे व्योमन् ॥५॥                         | ४४       |
| अजस्रमिन्दुमरुषं भुरण्युमग्निमीळे पूर्वचित्तिं नमोभिः ।                            |          |
| स पर्वभिर्ऋतुशः कल्पमानो गां मा हिंसीरदिति विराजम् ॥६॥                             | ४५       |
| वरूत्रीं त्वष्टुर्वरुणस्य नाभिमविं जज्ञानां रजसः परस्मात् ।                        |          |
| महीं साहस्रीमसुरस्य मायामग्ने मा हिंसीः परमे व्योमन् ॥७॥                           | ४६       |
| यो अग्निरेरध्यजायत शोकात्पृथिव्या उत वा दिवस्पतिं ।                                |          |
| येन प्रजा विश्वकर्मा जज्ञान तमग्ने हेळः परि ते वृणक्तु ॥८॥                         | ४७ [७९६] |

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः ।

आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्ये आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥९॥ (४)

४८

इमं मा हिंसीद्विषादं पशुं सहस्राक्ष मेधाय चीयमानः ।

मयुं पशुं मेधमग्ने जुषस्व तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद ।

मयुं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु ॥१॥

४९

इमं मा हिंसीरेकशफं पशुं कनिकृदं वाजिनं वाजिनेषु ।

गौरमारण्यमनु ते दिशामि तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद ।

गौरं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु ॥२॥

५०

इमं साहस्रं शतधारमुत्सं व्यच्यमानं सरिरम्य मध्ये ।

घृतं दुहानामादिति जनायाग्ने मा हिंसीः परमे व्योमन् ।

गवयमारण्यमनु ते दिशामि तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद ।

गवयं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु ॥३॥

५१

इममूर्णायुं वरुणस्य नाभिं त्वचं पशूनां द्विषदां चतुष्पदाम् ।

त्वष्टुः प्रजानां प्रथमं जनित्रमग्ने मा हिंसीः परमे व्योमन् ।

उष्ट्रमारण्यमनु ते दिशामि तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद ।

उष्ट्रं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु ॥४॥

५२

अजो ह्यग्नेरजनिष्ट शोकान्तसो अपश्यज्जनितारमग्ने ।

तेन देवा देवतामग्रमायस्तेन रोहमायन्नुप मेध्यांसः ।

शरभमारण्यमनु ते दिशामि तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद ।

शरभं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु ॥५॥

५३

त्वं यविष्ठ दाशुषो नृः पाहि शृणुधी गिरः । रक्षां तोकमुत त्मना ॥६॥ (५) ५४ [८०३]

अपां त्वेमन्त्सादयाम्यपां त्वोन्नन्त्सादयाम्यपां त्वा भस्मन्त्सादयामि ।

अपां त्वा ज्योतिषि सादयाम्यपां त्वायने सादयामि ।

अर्णवे त्वा सदेने सादयामि समुद्रे त्वा सदेने सादयामि सरिरे त्वा सदेने सादयामि ।

अपां त्वा क्षये सादयाम्यपां त्वा सधिषि सादयामि ।

अपां त्वा सदेने सादयाम्यपां त्वा सधस्थे सादयाम्यपां त्वा योनौ सादयामि ।

अपां त्वा पुरीषे सादयाम्यपां त्वा पार्थसि सादयामि ।

गायत्रेण त्वा छन्दसा सादयामि त्रैष्टुभेन त्वा छन्दसा सादयामि जागतेन त्वा छन्दसा सादयामि ।

आनुष्टुभेन त्वा छन्दसा सादयामि पाङ्क्तैन त्वा छन्दसा सादयामि ॥१॥ (६) ५५

अयं पुरो भुवस्तस्य प्राणो भौवायनो वसन्तः प्राणायनः । गायत्री वासन्ती ॥१॥ ५६

गायत्र्यै गायत्रं गायत्रादुपांशुरुपांशोस्त्रिवृत् त्रिवृत्तो रथन्तरम् ।

वसिष्ठ ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया प्राणं गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥२॥ ५७

अयं दक्षिणा विश्वकर्मा तस्य मनो वैश्वकर्मणम् । ग्रीष्मो मानसस्त्रिष्टुब्ग्रीष्मी ॥३॥ ५८

त्रिष्टुभः स्वारः स्वारान्तर्यामोऽन्तर्यामात्पञ्चदशः पञ्चदशाद् बृहत् ।

भरद्वाज ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया मनो गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥४॥ ५९

अयं पश्चाद्विश्वव्यचास्तस्य चक्षुर्वैश्वव्यचसम् । वर्षाश्चाक्षुष्यो जगती वार्षी ॥५॥ ६०

जगत्या कक्संसमृक्ससमचक्षुः शुक्रात्सप्तदशः सप्तदशाद्विरूपम् ।

जमदग्निर्ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया चक्षुर्गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥६॥ ६१

इदमुत्तरात् स्वस्तस्य श्रोत्रं सौवम् । शरच्छ्रौत्र्यनुष्टुप्छारदी ॥७॥ ६२

अनुष्टुभं ऐळमैळान्मन्थी मन्थिन एकविंश एकविंशार्द्धैराजम् ।

विश्वार्मित्र ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया श्रोत्रं गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥८॥ ६३

इयमुपरि मतिस्तस्यै वाङ्मात्या । हेमन्तो वाच्यः पङ्क्तिर्हेमन्ती ॥९॥ ६४

पङ्क्त्यै निधनवन्निधनवत आग्रयण आग्रयणात् त्रिणवत्रयस्त्रिंशौ त्रिणवत्रयस्त्रिंशाभ्यां शाकरैवते ।

विश्वकर्म ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया वाचं गृह्णामि प्रजाभ्यः ।

लोकं पृण ता अस्येन्द्रं विश्वाः ॥१०॥ (७)

६५ [८१४]

मयि गृह्णामि पञ्चदश ॥१५॥ ध्रुवासि त्रयोदश ॥१३॥ मधुवाता एकादश ॥११॥ सम्यक्स्रवस्ति

नव ॥९॥ इम मा षट् ॥६॥ अपान्वेका ॥१॥ अयं पुरो दश ॥१०॥ सप्तानुवाकेषु पञ्चषष्टिः ॥ ६५ ॥

॥ इति शुक्लयजुःकाण्वसंहितायां चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

अथ पञ्चदशोऽध्यायः ।

ध्रुवक्षितिर्ध्रुवयोनिर्ध्रुवासि ध्रुवं योनिमासीद साधुया ।

उख्यस्य केतुं प्रथमं जुपाणाश्विनाध्वर्युं सादयतामिह त्वा ॥१॥ १

कुलायिनीं वृत्तवतीं पुरन्धिः स्योने सीदु सदर्ने पृथिव्याः ।

अभि त्वा रुद्रा वसवो गृणन्त्विमा ब्रह्म पीपिहि सौमगायाश्विनाध्वर्युं सादयतामिह त्वा ॥२॥ २ [८१६]



स्वैर्देसैर्दक्षपितेह सीद देवानां सुमे बृहते रणाय ।  
 पितेवैधि सूनव आ सुशेवा स्वावेशा तन्वा संविशस्वाश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा ॥३॥ ३  
 पृथिव्याः पुरीषमस्यप्सो नाम तां त्वा विश्वे अभिगृणन्तु देवाः ।  
 स्तोमपृष्ठा घृतवतीह सीद प्रजावदस्मे द्रविणायजस्वाश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा ॥४॥ ४  
 अदित्यास्त्वा पृष्ठे सादयाम्यन्तरिक्षस्य धर्त्री विष्टम्भनीं दिशामधिपतीं भुवनानाम् ।  
 उर्मिर्द्रप्सो अपामसि विश्वकर्मा त ऋषिगश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा ।  
 शुक्रश्च शुचिश्च ग्रैष्मा ऋतु अग्रेरन्तः श्रेषोऽसि ।  
 कल्पेतां द्यावापृथिवी कल्पन्तामाप ओषधयः कल्पन्तामग्नयः पृथङ्मम ज्यैष्ठ्याय सव्रताः ।  
 ये अग्नयः समनमोऽन्तरा द्यावापृथिवी इमे ।  
 ग्रैष्मा ऋतू अभिकल्पमाना इन्द्रमिव देवा अभिसंविशन्तु  
 तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम् ॥५॥ (१)

५

सजृक्षतुभिः सजृविधाभिः सजृदेवैः सजृदेवैर्वयोनाधैः ।  
 अग्नये त्वा वैश्वानरायाश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा ।  
 सजृक्षतुभिः सजृविधाभिः सजृवसुभिः सजृदेवैर्वयोनाधैः ।  
 अग्नये त्वा वैश्वानरायाश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा ।  
 सजृक्षतुभिः सजृविधाभिः सजृ रुद्रैः सजृदेवैर्वयोनाधैः ।  
 अग्नये त्वा वैश्वानरायाश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा ।  
 सजृक्षतुभिः सजृविधाभिः सजृरादित्यैः सजृदेवैर्वयोनाधैः ।  
 अग्नये त्वा वैश्वानरायाश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा ।  
 सजृक्षतुभिः सजृविधाभिः सजृविश्वेदेवैः सजृदेवैर्वयोनाधैः ।  
 अग्नये त्वा वैश्वानरायाश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा ॥१॥ ६  
 ग्राणं मे पाह्यपानं मे पाहि व्यानं मे पाहि । चक्षुर्म उर्व्या विभाहि श्रोत्रं मे श्लोक्य ॥२॥ ७  
 अपः पिन्वौषधीजिन्व द्विपादव चतुष्पात् पाहि । दिवो वृष्टिमेरय ॥३॥ (२)

६

८

मूर्धा वयः प्रजापतिश्छन्दः क्षत्रं वयो मर्यदुं छन्दः ।  
 विष्टम्भो वयोऽधिपतिश्छन्दो विश्वकर्मा वयः परमेष्ठी छन्दः ॥१॥ ९  
 बस्तो वयो विवलं छन्दो वृष्णिर्वयो विशालं छन्दः ।  
 पुरुषो वयस्तन्द्रं छन्दो व्याघ्रो वयोऽनाधृष्टं छन्दः ॥२॥

९

१० [८२४]

सिंहो वयश्छदिश्छन्दः पृष्ठवाङ्वयो बृहती छन्दः ।

उक्षा वयः ककुच्छन्दः ऋषभो वयः सतोबृहती छन्दः ॥३॥

११

अनड्वान्वयः पङ्क्तिश्छन्दो धेनुर्वयो जगती छन्दः ।

व्यविवर्यास्त्रिष्टुप् छन्दो दित्यवाङ्वयो विराट् छन्दः ॥४॥

१२

पञ्चाविवर्यो गायत्री छन्दस्त्रिवत्सो वयः उष्णिक् छन्दः ।

तुर्यवाङ्वयोऽनुष्टुप् छन्दो लोकं पृण ता अस्येन्द्रं विश्वाः ॥५॥(३)

१३

इन्द्राग्नी अच्यथमानामिष्टकां दृहन्तं युवम् । पृष्ठेन द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं च विबाधसे ॥१॥ १४

विश्वकर्मा त्वा सादयत्वन्तरिक्षस्य पृष्ठे व्यचस्वतीं प्रथस्वतीम् ।

अन्तरिक्षं यच्छान्तरिक्षं दृहन्तर्क्षिं मा हिंसीः ।

विश्वस्मै प्राणायानाय व्यानायोदानाय प्रतिष्ठायै चरित्राय ।

वायुष्ट्रभिपातु मद्या स्वस्त्या छर्दिषा शन्तमेन तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवा सीद ॥२॥

१५

गज्यमि प्राची दिग्विराळसि दक्षिणा दिक् सम्राळसि प्रतीचीदिक्

स्वराळस्युदीची दिगधिपत्यसि बृहती दिक् ।

विश्वकर्मा त्वा सादयत्वन्तरिक्षस्य पृष्ठे ज्योतिष्मतीम् ।

विश्वस्मै प्राणायानाय व्यानाय विश्वं ज्योतिर्यच्छ ।

वायुष्टेऽधिपतिस्तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवा सीद ।

नमश्च नभस्यश्च वार्षिका ऋतू अग्रेरन्तः श्लेषोऽसि ।

कल्पेतां द्यावापृथिवी कल्पन्तामाप ओषधयः कल्पन्तामग्नयः पृथङ् मम ज्यैष्ठ्याय सव्रताः ।

ये अग्नयः समनसोऽन्तरा द्यावापृथिवी इमे ।

वार्षिका ऋतू अभिकल्पमाना इन्द्रमिव देवा अभिसंविशन्तु तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम् ।

इषश्चोर्जश्च शारदा ऋतू अग्रेरन्तः श्लेषोऽसि ।

कल्पेतां द्यावापृथिवी कल्पन्तामाप ओषधयः कल्पन्तामग्नयः पृथङ् मम ज्यैष्ठ्याय सव्रताः ।

ये अग्नयः समनसोऽन्तरा द्यावापृथिवी इमे ।

शारदा ऋतू अभिकल्पमाना इन्द्रमिव देवा अभिसंविशन्तु

तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम् ॥३॥(४)

१६

आयुर्मे पाहि प्राणं मे पाह्यपानं मे पाहि व्यानं मे पाहि ।

चक्षुर्मे पाहि श्रोत्रं मे पाहि वाचं मे पित्र मनो मे जिन्वात्मानं मे पाहि ज्योतिर्मे यच्छ ॥१॥ १७ [८३१]

मा छन्दः प्रमा छन्दः प्रतिमा छन्दो अस्तीवयश्छन्दः । पङ्क्तिश्छन्द उष्णिक् छन्दः ॥२॥ १८  
बृहती छन्दोऽनुष्टुप् छन्दो विराट् छन्दो गायत्री छन्दः । त्रिष्टुप् छन्दो जगती छन्दः ॥३॥ १९

पृथिवी छन्दोऽन्तरिक्षं छन्दो द्यौश्छन्दः समाश्छन्दः ।

नक्षत्राणि छन्दो वाक् छन्दः ॥४॥

२०

मनश्छन्दः कृषिश्छन्दो हिरण्यं छन्दो गौश्छन्दः । अजाछन्दोऽश्वश्छन्दः ॥५॥

२१

अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता । वसवो देवता रुद्रा देवता ।

आदित्या देवता मरुतो देवता विश्वे देवा देवता बृहस्पतिर्देवता ।

इन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥६॥ (५)

२२

मूर्धासि राड् ध्रुवासि ध्रुणा ध्रुव्यसि धरणी । आयुषे त्वा वर्चसे त्वा कृष्ये त्वा क्षेमाय त्वा ॥१॥ २३

यन्त्री राड् यन्त्र्यसि यमनी ध्रुवासि धरित्री । इषे त्वोर्जे त्वा रय्यै त्वा पोषाय त्वा ।

लोकं पृण ता अस्येद्रं विश्वाः ॥२॥ (६)

२४

आशुस्त्रिवृद्भान्तः पञ्चदशो व्योमा सप्तदशो ध्रुवः एकविंशः प्रतूर्तिरष्टादशः ।

तपो नवदशोऽभीवर्तः सत्रिंशो वर्चो द्वाविंशः सम्भरणस्त्रयोविंशो योनिश्चतुर्विंशः ॥१॥ २५

गर्भोः पञ्चविंश ओजस्त्रिणवः क्रतुरेकत्रिंशः प्रतिष्ठा त्रयस्त्रिंशो ब्रह्मस्य विष्टपं चतुस्त्रिंशः ।

नाकः षट्त्रिंशो विवर्तोऽष्टाचत्वारिंशो ध्रुवश्चतुष्टोमः ॥२॥ (७)

२६

अग्नेर्भागोऽसि दीक्षाया आधिपत्यं ब्रह्म स्पृतं त्रिवृत्स्तोमः ।

इन्द्रस्य भागोऽसि विष्णोराधिपत्यं क्षत्रं स्पृतं पञ्चदश स्तोमः ॥१॥

२७

नृचक्षसां भागोऽसि धातुराधिपत्यं जनित्रं स्पृतं सप्तदश स्तोमः ।

मित्रस्य भागोऽसि वरुणस्याधिपत्यं दिवो वृष्टिर्वातं स्पृतं एकविंश स्तोमः ॥२॥

२८

वसूनां भागोऽसि रुद्राणामाधिपत्यं चतुष्पात् स्पृतं चतुर्विंश स्तोमः ।

आदित्यानां भागोऽसि मरुतामाधिपत्यं गर्भो स्पृताः पञ्चविंश स्तोमः ॥३॥

२९

अदितेर्भागोऽसि पूष्ण आधिपत्यमोजं स्पृतं त्रिणव स्तोमः ।

देवस्य सवितुर्भागोऽसि बृहस्पतेराधिपत्यं समीचीर्दिशं स्पृताश्चतुष्टोम स्तोमः ॥४॥ ३० [८४४]

यवानां भागोऽस्य यवानामाधिपत्यं प्रजा स्पृताश्चतुश्चत्वारिंश स्तोमः ।

ऋभूणां भागोऽसि विश्वेषां देवानामाधिपत्यं भूतं स्पृतं त्रयस्त्रिंश स्तोमः ।

सहस्रं सहस्रंश्च हैमन्तिका ऋतू अग्रेरन्तः श्लेषोऽसि ।  
 कल्पेतां द्यावापृथिवी कल्पन्तामाप ओषधयः कल्पन्तामग्नयः पृथङ् मम ज्यैष्ठ्याय सव्रताः ।  
 ये अग्नयः समनसोऽन्तरा द्यावापृथिवी इमे ।  
 हैमन्तिका ऋतू अभिकल्पमाना इन्द्रमिव देवा अभिसंविशन्तु  
 तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम् ॥५॥ (८)

३१

एकयास्तुवत प्रजा अधीयन्त प्रजापतिरधिपतिरासीत्सप्तभिस्तुवत  
 ब्रह्मासृज्यत ब्रह्मणस्पतिरधिपतिरासीत् ।  
 पञ्चभिस्तुवत भूतान्यसृज्यन्त भूतानां पतिरधिपतिरासीत्सप्तभिस्तुवत  
 सप्त ऋषयोऽसृज्यन्त धाताधिपतिरासीत् ॥१॥

३२

नवभिस्तुवत पितरोऽसृज्यन्तार्दितिरधिपत्यासीदेकादशभिस्तुवत  
 ऋतवोऽसृज्यन्तार्तवा अधिपतय आसन् ।  
 त्रयोदशभिस्तुवत मासा अमृज्यन्त संवत्सरोऽधिपतिरासीत्पञ्चदशभिस्तुवत  
 क्षत्रमसृज्यतेन्द्रोऽधिपतिरासीत् ॥२॥

३३

सप्तदशभिस्तुवत ग्राम्याः पशवोऽसृज्यन्त बृहस्पतिरधिपतिरासीन्नवदशभिस्तुवत  
 शूद्रार्या असृज्येतामहोरात्रे अधिपत्नी आस्ताम् ।

एकविंशत्यास्तुवतैकशफाः पशवोऽसृज्यन्त वरुणोऽधिपतिरासीत्  
 त्रयोविंशत्यास्तुवत क्षुद्राः पशवोऽसृज्यन्त पूषाधिपतिरासीत् ॥३॥

३४

पञ्चविंशत्यास्तुवतारण्याः पशवोऽसृज्यन्त वायुरधिपतिरासीत्सप्तविंशत्यास्तुवत  
 द्यावापृथिवी व्यैतां वसवो रुद्रा आदित्या अनुव्यायंस्त एवाधिपतय आसन् ।  
 नवविंशत्यास्तुवत वनस्पतयोऽसृज्यन्त सोमोऽधिपतिरासीदेकत्रिंशतास्तुवत  
 प्रजा असृज्यन्त यवाश्चायवाश्चाधिपतय आसन् ।

त्रयस्त्रिंशतास्तुवत भूतान्यशाम्यन्प्रजापतिः परमेष्ठ्यधिपतिरासीत् ।

लोकं पृण ता अस्येन्द्रं विश्वाः ॥४॥ (९)

३५ [८४९]

भुवक्षितिः पञ्च ॥ ५ ॥ सजूर्ऋतुभिस्तिस्रः ॥ ३ ॥ मूर्ध्ना वयः पञ्च ॥ ५ ॥ इन्द्राग्नी तिस्रः ॥ ३ ॥ आयुर्मे  
 पद् ॥ ६ ॥ मूर्ध्नासि द्वे ॥ २ ॥ आशुश्च द्वे ॥ २ ॥ अग्नेर्भागः पञ्च ॥ ५ ॥ एकया चतस्रः ॥ ४ ॥

॥ नवानुवाकेषु पञ्चविंशत् ॥ ३५ ॥

॥ इति शुक्लयजुःकाण्वसंहितायां पञ्चदशोऽध्यायः ॥१५॥

## अथ षोडशोऽध्यायः ।

- अग्नें जातान्प्रणुदा नः सपत्नान्प्रत्यजाताञ्जातवेदो नुदस्व ।  
 अधि नो ब्रूहि सुमना अहेलंस्त्वं स्याम शर्मंस्त्रिवरूथ उद्भौ ॥१॥ १
- सहसा जातान्प्रणुदा नः सपत्नान्प्रत्यजातान्नुद जातवेदः ।  
 अधि नो ब्रूहि सुमनस्यमानो वयं स्याम प्रणुदा नः सपत्नान् ।  
 षोडशी स्तोमोऽजो द्रविणं चतुश्चत्वारिंश स्तोमो वर्चो द्रविणम् ॥२॥ २
- अग्नेः पुरीषमस्यप्सो नाम तां त्वा विश्वे अभिगृणन्तु देवाः ।  
 स्तोमपृष्ठा घृतवतीह सीद प्रजावदस्मे द्रविणायजस्व ॥३॥ ३
- एवञ्छन्दो वरिवञ्छन्दः शम्भूञ्छन्दः परिभूञ्छन्दः । आच्छच्छन्दो मनञ्छन्दो व्यच्छच्छन्दः ॥४॥ ४
- सिन्धुञ्छन्दः समुद्रञ्छन्दः सरिरं छन्दः ।  
 ककुप् छन्दःसिककुप् छन्दः काव्यं छन्दो अङ्कुपं छन्दः ॥५॥ ५
- अक्षरपङ्क्तिञ्छन्दः पदपङ्क्तिञ्छन्दो विष्टारपङ्क्तिञ्छन्दः क्षुरोभ्रजञ्छन्दः ।  
 आच्छच्छन्दः प्रच्छच्छन्दः संयच्छन्दो वियच्छन्दः ॥६॥ ६
- बृहच्छन्दो रथन्तरं छन्दो निकायञ्छन्दो विवधञ्छन्दः ।  
 गिरञ्छन्दो भ्रजञ्छन्दः सस्तुप् छन्दोऽनुष्टुप् छन्दः ॥७॥ ७
- एवञ्छन्दो वरिवञ्छन्दो वयञ्छन्दो वयस्कृच्छन्दः ।  
 विष्पर्धाञ्छन्दो विशालं छन्दश्छदिञ्छन्दो द्रोहणं छन्दः । तन्द्रं छन्दो अङ्गाङ्गं छन्दः ॥८॥(१)८
- रश्मिना सत्याय सत्यं जित्वा प्रेतिना धर्मेणा धर्मं जित्वा ।  
 अन्वित्या दिवा दिवं जित्वा सन्धिनान्तरिक्षेणान्तरिक्षं जित्वा ॥१॥ ९
- प्रतिधिना पृथिव्या पृथिवीं जित्वा विष्टम्भेन वृष्ट्या वृष्टिं जित्वा ।  
 प्रवयाङ्गार्हजित्वानुया रात्र्या रात्रीं जित्वा ॥२॥ १०
- उशिजा वसुभ्यो वसूञ्जित्वा प्रकृतेनादित्येभ्य आदित्याञ्जित्वा ।  
 तन्तुना रायस्पोषेण रायस्पोषं जित्वा ससर्पेण श्रुताय श्रुतं जित्वा ॥३॥ ११
- ऐळेनौषधीभिरौषधीजित्वात्तमेन तनूभिस्तनूजित्वा ।  
 वयोधसार्धतिनाधीतं जित्वाभिजिता तेजसा तेजो जित्वा ॥४॥ १२
- प्रतिपदसि प्रतिपदे त्वानुपदस्यनुपदे त्वा । सम्पदसि सम्पदे त्वा तेजोऽसि तेजसे त्वा ॥५॥ १३
- त्रिवृदसि त्रिवृते त्वा प्रवृदसि प्रवृते त्वा । विवृदसि विवृते त्वा सवृदसि सवृते त्वा ॥६॥१४[८६३]

आक्रमोऽस्याक्रमाय त्वा सङ्क्रमोऽसि सङ्क्रमाय त्वा ।

उत्क्रमोऽस्युत्क्रमाय त्वोत्क्रान्तिरस्युत्क्रान्त्यै त्वा ।

अधिपतिनोजोर्जो जिव्व वेषश्रीः क्षत्राय ध्वत्रं जिव्व ॥७॥ (२)

१५

राइयसि प्राची दिग्वसवस्ते देवा अधिपतयः । अग्निहेतीनां प्रतिधर्ता ॥१॥

१६

त्रिवृत् त्वा स्तोमः पृथिव्याः श्रयत्वाज्यमुक्थमव्यथायै स्तभ्नातु ।

रथन्तरः साम प्रतिष्ठित्या अन्तरिक्षे ॥२॥

१७

ऋषयस्त्वा प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया वरिम्णा प्रथन्तु ।

विधर्ता चायमधिपतिश्च ते त्वा सर्वे संविदाना नाकस्य

पृष्ठे स्वर्गे लोके यजमानं च सादयन्तु ॥३॥

१८

विराळसि दक्षिणा दिगुद्रास्ते देवा अधिपतयः । इन्द्रो हेतीनां प्रतिधर्ता ॥४॥

१९

पञ्चदशस्त्वा स्तोमः पृथिव्याः श्रयतु प्र उगमुक्थमव्यथायै स्तभ्नातु ।

बृहत्साम प्रतिष्ठित्या अन्तरिक्षे ॥५॥

२०

ऋषयस्त्वा प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया वरिम्णा प्रथन्तु ।

विधर्ता चायमधिपतिश्च ते त्वा सर्वे संविदाना नाकस्य

पृष्ठे स्वर्गे लोके यजमानं च सादयन्तु ॥६॥

२१

सम्राळसि प्रतीची दिगादित्यास्ते देवा अधिपतयः । वरुणो हेतीनां प्रतिधर्ता ॥७॥

२२

सप्तदशस्त्वा स्तोमः पृथिव्याः श्रयतु मरुत्वतीयमुक्थमव्यथायै स्तभ्नातु ।

वैरूपः साम प्रतिष्ठित्या अन्तरिक्षे ॥८॥

२३

ऋषयस्त्वा प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया वरिम्णा प्रथन्तु ।

विधर्ता चायमधिपतिश्च ते त्वा सर्वे संविदाना नाकस्य

पृष्ठे स्वर्गे लोके यजमानं च सादयन्तु ॥९॥

२४

स्वराळस्युदीची दिङ् मरुतस्ते देवा अधिपतयः । सोमो हेतीनां प्रतिधर्ता ॥१०॥

२५

एकविंशस्त्वा स्तोमः पृथिव्याः श्रयतु निष्कैवल्यमुक्थमव्यथायै स्तभ्नातु ।

वैराजः साम प्रतिष्ठित्या अन्तरिक्षे ॥११॥

२६

ऋषयस्त्वा प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया वरिम्णा प्रथन्तु ।

विधर्ता चायमधिपतिश्च ते त्वा सर्वे संविदाना नाकस्य पृष्ठे स्वर्गे लोके यजमानं च सादयन्तु ॥१२॥२७

अधिपत्यसि बृहती दिग्विश्वे ते देवा अधिपतयः । बृहस्पतिहेतीनां प्रतिधर्ता ॥१३॥ २८ [८७७]

त्रिणवत्रयस्त्रिंशौ त्वा स्तोमौ पृथिव्याः श्रयतां वैश्वदेवाग्रिमामृते उक्थे अव्यथायै स्तम्नीताम् ।

शाक्ररैवते सामनी प्रतिष्ठित्या अन्तरिक्षे ॥१४॥

२९

ऋषयस्त्वा प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया वरिष्णा ग्रथन्तु ।

विधृता चायमधिपतिश्च ते त्वा सर्वे संविदाना नाकस्य

पृष्ठे स्वर्गे लोके यजमानं च सादयन्तु ॥१५॥ (३)

३०

अयं पुरो हरिकेशः सूर्यरश्मिस्तस्य रथगृन्सश्च रथौजाश्च सेनानीग्रामण्यौ ।

पुञ्जिकस्थला च क्रतुस्थला चाप्सरसौ दुङ्क्ष्णवः पशवो हेतिः पौरुषेयो वृधः प्रहेतिः ॥१॥ ३१

तेभ्यो नमो अस्तु ते नो मृळयन्तु ते नोऽवन्तु ।

ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ॥२॥

३२

अयं दक्षिणा विश्वकर्मा तस्य रथस्वनश्च रथेचित्रश्च सेनानीग्रामण्यौ ।

मेनका च सहजन्या चाप्सरसौ यातुधाना हेती रक्षाश्मि प्रहेतिः ॥३॥

३३

तेभ्यो नमो अस्तु ते नो मृळयन्तु ते नोऽवन्तु । ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ॥४॥ ३४

अयं पश्चाद्विश्वव्यास्तस्य रथप्रोतश्चासंमरथश्च सेनानीग्रामण्यौ ।

प्रम्लोचन्ती चानुम्लोचन्ती चाप्सरसौ व्याघ्रा हेतिः सर्पाः प्रहेतिः ॥५॥

३५

तेभ्यो नमो अस्तु ते नो मृळयन्तु ते नोऽवन्तु ।

ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ॥६॥

३६

अयमुत्तरातस्यद्वेसुस्तस्य तार्क्ष्यश्चारिष्टनेमिश्च सेनानीग्रामण्यौ ।

विश्वाची च घृताची चाप्सरसा आपो हेतिर्वातः प्रहेतिः ॥७॥

३७

तेभ्यो नमो अस्तु ते नो मृळयन्तु ते नोऽवन्तु ।

ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ॥८॥

३८

अयमुपर्यर्वाग्वसुस्तस्य सेनजिच्च सुषेणश्च सेनानीग्रामण्यौ ।

उर्वशी च पूर्वचित्तिश्चाप्सरसा अवस्फूर्जन्हेतिर्विद्युत्प्रहेतिः ॥९॥

३९

तेभ्यो नमो अस्तु ते नो मृळयन्तु ते नोऽवन्तु ।

ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ॥१०॥ (४)

४०

अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् । अपाः रेतांसि जिन्वति ॥१॥

४१

अयमग्निः सहस्रिणो वार्जस्य शतिनस्पतिः । मूर्धा कवी रयीणाम् ॥२॥

४२

त्वामग्ने पुष्करादध्यथर्वा निरमन्थत । मूर्धो विश्वस्य वाघतः ॥३॥

४३

भुवो यज्ञस्य रजसश्च नेता यत्रा नियुज्जिः सचसे शिवार्भिः ।

दिवि मूर्धानं दधिषे स्वर्षा जिह्वामग्रे चकृषे हव्यवाहम् ॥४॥

४४

अवोध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुर्मिवायतीमुपासम् ।

यद्वा इव प्र वयामुजिह्वानाः प्र भानवः सिस्रते नाकमच्छ ॥५॥

४५

अवोचाम कवये मेध्याय वचो वन्दारु वृषभाय वृष्णे ।

गर्विष्ठिगे नममा स्तोममग्नौ दिवीव रुक्ममुरुव्यञ्चमश्रेत् ॥६॥

४६

अयमिह प्रथमो धायि धातृभिर्होता यजिष्ठो अध्वरेष्वीड्यः ।

यममवानो भृगवो विरुरुचुर्वनेषु चित्रं विभ्वं विशेविशे ॥७॥

४७

जनस्य गोपा अजनिष्ट जागृविरग्निः सुदक्षः सुविताय नव्यसे ।

घृतप्रतीको बृहता दिविस्पृशा द्युमद्विभाति भरतेभ्यः शुचिः ॥८॥

४८

त्वामग्रे अङ्गिरमो गुहा हितमन्वविन्दच्छिप्रियाणं वनेवने ।

म जायसे मध्यमानः सहो महत्त्वामाहुः सहसस्पुत्रमङ्गिरः ॥९॥

४९

सखायः मं वः सम्यञ्चमिषः स्तोमं चाग्रये । वर्षिष्ठाय क्षितीनामूर्जो नष्ट्रे सहस्वते ॥१०॥

५०

मः समिद्युवसे वृषन्नग्रे विश्वान्यय्य आ । इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्याभर ॥११॥

५१

त्वामग्रे हविष्मन्तो देवं मतीस ईळते । मन्ये त्वा जातवेदसः स हव्या वक्ष्यानुषक् ॥१२॥

५२

त्वां चित्रश्रवस्तम हवन्ते विश्व जन्तवः । शोचिष्केशं पुरुप्रियाग्रे हव्याय वोळ्हवे ॥१३॥

५३

एना वो अग्निं नमसोर्जो नपातुमाहुवे । प्रियं चेतिष्ठमरतिः स्वध्वरं विश्वस्य दूतममृतम् ॥१४॥

५४

विश्वस्य दूतममृतं विश्वस्य दूतममृतम् । स योजते अरुषा विश्वभोजसा स दुद्रवत्स्वाहुतः ॥१५॥

५५

स दुद्रवत् स्वाहुतः स दुद्रवत् स्वाहुतः । सुब्रह्मा यज्ञः मुशमी वक्ष्णां देवः राधो जनानाम् ॥१६॥

५६

अग्रे वाजस्य गोमृत ईशानः सहसो यहो । अस्मे धैहि जातवेदो महि श्रवः ॥१७॥

५७

म ईध्वानो वसुष्कविरग्रीळैन्यो गिरा । रेवदुस्मभ्यं पुर्वणीक दीदिहि ॥१८॥

५८

क्षपो राजन्नुत त्मनाग्रे वस्तोरुतोपसः । स तिग्मजम्भ रक्षसो दह प्रति ॥१९॥

५९

भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः । भद्रा उत प्रशस्तयः ॥२०॥

६०

भद्रा उत प्रशस्तयो भद्रं मनः कृणुष्व वृत्रतुर्यै । येनां समत्सु सासहः ॥२१॥

६१

येनां समत्सु सासहोऽव स्थिरा तनुहि भूरि शर्धताम् । वनेमां ते अभिष्टिभिः ॥२२॥

६२

अग्निं तं मन्ये यो वसुरस्तं यं यन्ति धेनवः ।

अस्तमर्वन्त आशवोऽस्तं नित्यासो वाजिन इषः स्तोतृभ्य आभर ॥२३॥

६३ [११२]



सो अग्नियो वसुगृणे सं यमायन्ति धेनवः ।

समर्वन्तो रघुदुवः सः सुजातासः सूर्य इषः स्तोतृभ्य आभर ॥२४॥

६४

उभे सुश्चन्द्र सर्पिषो दर्वी श्रीणीप आसनि ।

उतो न उत्पुपूर्या उक्थेषु शवसस्पत इषः स्तोतृभ्य आभर ॥२५॥

६५

अग्ने तमद्याश्वं न स्तोमैः क्रतुं न भद्रः हृदिस्पृशम् । ऋध्यामा तु ओहेः ॥२६॥

६६

अधा ह्यग्ने क्रतोर्भद्रस्य दक्षस्य माधोः । रथीर्ऋतस्य बृहतो बभूय ॥२७॥

६७

एभिर्नो अर्केर्भवा नो अर्वाङ् स्पर्ण ज्योतिः । अग्ने विश्वेभिः सुमना अनीकैः ॥२८॥

६८

अग्निः होतारं मन्ये दास्वन्तं वसुः सनुः सहसो जातवेदसं विप्रं न जातवेदसम् ।

य ऊर्ध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या कृपा ।

घृतस्य विभ्राष्टिमनुवष्टि शोचिपाजुह्वानस्य सर्पिपः ॥२९॥

६९

अग्ने त्वं नो अन्तम उते वाता शिवो भवा वरूध्यः ।

वसुराग्निरवसुश्रवा अच्छा नक्षि द्युमत्तमः रयिन्दाः ।

तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः सुभ्राय नूनर्भामहे सखिभ्यः ॥३०॥ (५)

७०

येन ऋषयस्तपसा मन्त्रमायन्निन्धाना अग्निः स्वर्गभरन्तः ।

तस्मिन्नहं निदधे नाकं अग्निं यमाहुर्मनव स्तीर्णवर्हिपम् ॥३१॥

७१

तं पत्नीभिरनु गच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः ।

नाकं गृष्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीयं पुष्ट अधिरोचने दिवः ॥३२॥

७२

आ वाचो मध्यमरुहद्गुरण्युरयमग्निः सत्पतिश्चेकितानः ।

पृष्ठे पृथिव्या निहितो दविद्युतदधस्पदं कृणुतां ये पृतन्यवः ॥३३॥

७३

अयमग्निर्वीरितमो वयोधाः सहस्रियो द्योततामप्रयुच्छन् ।

विभ्राजमानः सरिरस्य मध्य उप प्रयाहि दिव्यानि धाम ॥३४॥

७४

संप्रच्यवध्वमुप संप्रयाताग्ने पथो देवयानान् कृणुध्वम् ।

पुनः कृण्वाना पितरा युवानान्वातांसीत् त्वयि तन्तुमेतम् ॥३५॥

७५

उद्ध्वस्वाग्ने प्रर्तिजागृहि त्वमिष्टापूते सः संजेषामयं च ।

अस्मिन्तसधस्थे अधुत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥३६॥

७६

येन वहसि सहस्रं येनाग्ने सर्ववेदसम् । तेनेमं यज्ञं नो नय स्वर्देवेषु गन्तवे ॥३७॥

७७

अयं ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातो अरोचथाः । तं जानन्नग्र आरोहाथा नो वर्धया रयिम् ॥३८॥ (६)

७८

तपश्च तपस्यश्च शैशिरा ऋतू अग्रेरन्तःश्लेषोऽसि ।

कल्पेतां द्यावापृथिवी कल्पन्तामाप ओषधयः कल्पन्तामग्नयः पृथङ् मम ज्यैष्ठ्याय सव्रताः ।

ये अग्नयः समनसोऽन्तरा द्यावापृथिवी इमे ।

शैशिरा ऋतू अभिकल्पमाना इन्द्रमिव देवा अभिसंविशन्तु तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम् ।

परमेष्ठी त्वा सादयतु दिवस्पृष्टे ज्योतिष्मतीम् ।

विश्वस्मै प्राणायानाय व्यानाय विश्वं ज्योतिर्यच्छ ।

सूर्यस्तेऽधिपतिस्तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवा सीद ॥१॥

७९

लोकं पृण छिद्रं पृणार्थो सीद ध्रुवा त्वम् । इन्द्राग्नी त्वा बृहस्पतिरस्मिन् योनां असीषदन् ॥२॥ ८०

ता अस्य स्रद्धदोहसः सोमं श्रीणन्ति पृथ्वयः । जन्मन्देवानां विशश्चिखवारोचने दिवः ॥३॥ ८१

इन्द्रं विश्वां अवीवृधन्तसमुद्रव्यचसं गिरः । रथीतमं रथीनां वाजानां सत्पतिं पतिम् ॥४॥ ८२

शोथदश्चो न यवसेऽविष्यन्यदा महः संवरणाद्व्यचस्थात् ।

आदस्य वातो अनुवाति शोचिरथं स्म ते व्रजनं कृष्णमस्ति ॥५॥

८३

आयोष्ट्वा सदेने सादयाम्यवतश्छायायां समुद्रस्य हृदये ।

रश्मीवतीं भास्वतीमा या द्यां भास्यापृथिवीमोर्वन्तरिक्षम् ।

परमेष्ठी त्वा सादयतु दिवस्पृष्टे व्यचस्वतीं प्रथस्वतीम् । दिवं यच्छ दिवं दृष्ट्वा दिवं मा हिंसीः ।

विश्वस्मै प्राणायानाय व्यानायोदानाय प्रतिष्ठायै चरित्राय ।

सूर्यस्त्वाभिपातु मह्यं स्वस्त्या छर्दिषा शन्तमेन तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम् ॥६॥ ८४

सहस्रस्य प्रमासिं सहस्रस्य प्रतिमासिं सहस्रस्योन्मार्गिं । माहसोऽसि सहस्राय त्वा ॥७॥ (७) ८५ [९३४]

अग्ने जातानष्ट ॥ ८ ॥ रश्मिना सत्याय सप्त ॥ ७ ॥ राश्यासि पञ्चदश ॥ १५ ॥ अयं पुरो दश ॥ १० ॥

अग्निर्मूर्धा त्रिंशत् ॥ ३० ॥ येन ऋषयोऽष्ट ॥ ८ ॥ तपश्च सप्त ॥ ७ ॥

सप्तानुवाकेषु पञ्चाशीतिः ॥ ८५ ॥

॥ इति शुक्लयजुःकाण्वसंहितायां षोडशोऽध्यायः ॥१६॥

अथ सप्तदशोऽध्यायः ।

नमस्ते रुद्र मन्यवं उतो त इषवे नमः । बाहुभ्यामुत ते नमः ॥१॥

१

या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी । तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥२॥ २

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे । शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिंसीः पुरुषं जगत् ॥३॥ ३

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि । यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्म सुमना असत् ॥४॥ ४

[९३८]

अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् ।

अहीँश्च सर्वाँज्जम्भयन्त्सर्वाँश्च यातुधान्योऽधराचीः परासुव ॥५॥

५

असौ यस्ताम्रो अरुण उत वभ्रुः सुमङ्गलः ।

ये चैनरुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवेषाँ हेळ ईमहे ॥६॥

६

असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः ।

उतैनं गोपा अदृशन्नदृशन्नदहार्यः स दृष्टो मृकयाति नः ॥७॥

७

नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीळहुपे ।

अथो ये अस्य सत्त्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः ॥८॥

८

प्रमुञ्च धन्वंनस्त्वमुभयोरान्न्योर्ज्याम् । याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप ॥९॥ ९

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो वाणवाँ उत ।

अनंशन्नस्य या इषव आभुरस्य निपङ्गधिः ॥१०॥

१०

परिं ते धन्वंनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः । अथो य इपुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तम् ॥११॥ ११

या ते हेतिर्मीळहुष्टम् हस्ते वभ्रुव ते धनुः । तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज ॥१२॥ १२

अवतत्य धनुर्ध्रं सहस्राक्ष शतेषुधे । निशीर्य शल्यानां मुखां शिवो नः सुमनां भव ॥१३॥ १३

नमस्त आयुधायानां तताय धृष्णवं । उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने ॥१४॥ १४

मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम् ।

मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः ॥१५॥

१५

मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः ।

मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वां हवामहे ॥१६॥ (१)

१६

नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशां च पतये नमो नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनां पतये नमः ।

नमः शष्पिज्जराय त्विषीमते पथीनां पतये नमो नमो

हरीकेशायोपवीतिने पुष्टानां पतये नमः ॥१७॥

१७

नमो बभ्रुशायान्याधिनेऽन्नानां पतये नमो नमो भवस्य हेत्यै जगतां पतये नमः ।

नमो रुद्रायाततायिने क्षेत्राणां पतये नमो नमः सूतायाहन्त्यै वनानां पतये नमः ॥१८॥

१८

नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणां पतये नमो नमो भुवन्तये वारिवस्कृतायौषधीनां पतये नमः ।

नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणां पतये नमो नम उच्चैषीषायाक्रन्दयते पत्नीनां पतये नमः ॥१९॥ १९

[ १५३ ]

नमः कृत्स्नायताय धावते सत्त्वंनां पतये नमो नमः

सहमानाय निव्याधिर्न आव्याधिर्नीनां पतये नमः ।

नमः ककुभाय निषङ्गिणे स्तेनानां पतये नमो नमो निचेरवे परिचरायारण्यानां पतये नमः ॥४॥ २०

नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनां पतये नमो नमो निषङ्गिण इषुधिमते तस्कराणां पतये नमः ।

नमः सृक्कायिभ्यो जिघांसद्भ्यो मुष्णतां पतये नमो

नमोऽसिमद्भ्यो नक्तश्चरद्भ्यो विकृन्तानां पतये नमः ॥५॥ (२)

२१

नम उष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानां पतये नमो नम इषुमद्भ्यो धन्वायिभ्यश्च वो नमः ।

नम आतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमो नम आयच्छद्भ्योऽस्यद्भ्यश्च वो नमः ॥१॥ २२

नमो विसृजद्भ्यो विध्यद्भ्यश्च वो नमो नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमः ।

नमः शयानेभ्य आसीनेभ्यश्च वो नमो नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमः ॥२॥ २३

नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमो नमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमः ।

नम आव्याधिनीभ्यो विविध्यन्तीभ्यश्च वो नमो नम उगणाभ्यस्तृहतीभ्यश्च वो नमः ॥३॥ २४

नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमः ।

नमो गृत्सेभ्यो गृत्सेपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विरूपेभ्यश्च वो नमः ॥४॥ २५

नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमो नमो रथिभ्यो अरथेभ्यश्च वो नमः ।

नमः क्षत्रभ्य सहगृहीतृभ्यश्च वो नमो नमो महद्भ्यो अर्भकेभ्यश्च वो नमः ॥५॥ (३) २६

नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यश्च वो नमः ।

नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमो नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः ॥१॥ २७

नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च ।

नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च ॥२॥ २८

नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च ।

नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीळहुष्टमाय चेषुमते च ॥३॥ २९

नमो ऋस्वाय च वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च ।

नमो वृद्धाय च सवृधे च नमोऽड्याय च प्रथमाय च ॥४॥

३०

नम आशवे चाजिराय च नमः शीघ्राय च शीभ्याय च ।

नम ऊर्म्याय चावस्वन्वाय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च ॥५॥ (४) ३१ [९६५]

|   |         |
|---|---------|
| नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च ।           |         |
| नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्याय च ॥१॥           | ३२      |
| नमः सोम्याय च प्रतिसर्याय च नमो याम्याय च क्षम्याय च ।        |         |
| नमः श्लोक्याय चावसान्याय च नम उर्वर्याय च खल्याय च ॥२॥        | ३३      |
| नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च ।          |         |
| नम आशुषेणाय चाशुरथाय च नमः शूराय चावभेदिने च ॥३॥              | ३४      |
| नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च ।             |         |
| नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च ॥४॥    | ३५      |
| नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च ।          |         |
| नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च ॥५॥ (५) | ३६      |
| नमः सुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च ।              |         |
| नमः कुल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय च वैशन्ताय च ॥१॥          | ३७      |
| नमः कूप्याय चावट्याय च नम ईध्याय चातप्याय च ।                 |         |
| नमो मेघ्याय च विद्युत्याय च नमो वर्ष्याय चावर्ष्याय च ॥२॥     | ३८      |
| नमो वात्याय च रेष्म्याय च नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च ।      |         |
| नमः सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च ॥३॥               | ३९      |
| नमः शङ्गवे च पशुपतये च नम उग्राय च भीमाय च ।                  |         |
| नमोऽग्नेवधाय च दूरेवधाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे च ॥४॥          | ४०      |
| नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय ।                        |         |
| नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय                  |         |
| च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥५॥ (६)                               | ४१      |
| नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च ।            |         |
| नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः शण्ड्याय च फेन्याय च ॥१॥        | ४२      |
| नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च नमः किंशिलाय च क्षयणाय च ।        |         |
| नमः कपर्दिने च पुलस्तिके च नम इरिण्याय च प्रपथ्याय च ॥२॥      | ४३      |
| नमो ब्रज्याय च गोष्ठ्याय च नमस्तल्प्याय च गेह्याय च ।         |         |
| नमो ह्याय च निवेण्याय च नमः काट्याय च गङ्गेष्ट्याय च ॥३॥      | ४४[९७८] |

नमः शुष्क्याय च हरित्याय च नमः पा५म्व्याय च रजस्याय च ।

नमो लोप्याय चोलप्याय च नम ऊर्व्याय च सूर्याय च ॥४॥

४५

नमः पर्णाय च पर्णशदाय च नम उद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च ।

नम आखिदुते च प्रखिदुते च नम इपुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमः ।

नमो वः किरिकेभ्यो देवानां हृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो

नमो विक्षिणत्केभ्यो नम आनिर्हतेभ्यः ॥५॥ (७)

४६

द्रापे अन्धसस्पते दरिद्र नीललोहित ।

आसां प्रजानामिषां पशूनां मा भेमो रोद्धो च नः किञ्चनाममत् ॥१॥

४७

इमा रुद्राय तवसे कपदिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः ।

यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्नातुरम् ॥२॥

४८

या ते रुद्र शिवा तनः शिवा विश्वाहा भेषजी । शिव रुतस्य भेषजी तया नो मृळ जीवसे ॥३॥

४९

परि णो हेती रुद्रस्य वृज्यात् परि त्वेपस्य दुर्मतिर्महीगात् ।

अव स्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीद्वस्तोकाय तनयाय मृळ ॥४॥

५०

मीळहुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव ।

परमे वृक्ष आयुधं निधाय कृत्ति वसान आचर पिनाकं विश्रदागहि ॥५॥

५१

विकिरिद्र विलोहित नमस्ते अस्तु भगवः । यास्ते सहस्रं हेतयोऽन्यमस्मन्निवपन्तु ताः ॥६॥

५२

सहस्राणि सहस्रशो शङ्खोस्तव हेतयः । तामामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि ॥७॥

५३

असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम् । तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥८॥

५४

अस्मिन् महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भवा अधि । तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥९॥

५५

नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवः रुद्रा उपश्रिताः । तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥१०॥

५६

नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः क्षमाचराः । तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥११॥

५७

ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः । तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥१२॥

५८

ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपदिनः । तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥१३॥

५९

ये पथां पथिरक्षिण एलबृदा आयुर्युधः । तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥१४॥

६०

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सूकाहस्ता निषाङ्गिणः । तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥१५॥

६१

येऽन्त्रेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबन्तो जनान् । तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥१६॥

६२

य एतावन्तश्च भूयांसश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे । तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥१७॥

६३

[१९७]

नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवः ।  
 तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः ।  
 तेभ्यो नमो अस्तु ते नो मृळयन्तु ते नोऽवन्तु ।  
 ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ।  
 नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां वात इषवः ।  
 तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः ।  
 तेभ्यो नमो अस्तु ते नो मृळयन्तु ते नोऽवन्तु ।  
 ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ।  
 नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवः ।  
 तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः ।  
 तेभ्यो नमो अस्तु ते नो मृळयन्तु ते नोऽवन्तु ।  
 ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ॥१८॥(८)

६४ [१९८]

नमस्ते षोडश ॥ १६ ॥ नमो हिरण्यवाहवे पञ्च ॥५॥ नम उष्णीषिणे पञ्च ॥५॥ नमस्तक्षभ्यः पञ्च ॥५॥  
 नमो ज्येष्ठाय पञ्च ॥५॥ नमः स्नुत्याय पञ्च ॥ ५ ॥ नमः पार्याय पञ्च ॥ ५ ॥ द्रापे अन्धसस्पत  
 अष्टादश ॥ १८ ॥ अष्टानुवाकेषु चतुःषष्टिः ॥ ६४ ॥  
 ॥ इति शुक्लयजुःकाण्वसंहितायां सप्तदशोऽध्यायः ॥१७॥

### अथाष्टादशोऽध्यायः ।

अश्मभूर्जं पर्वते शिश्रियाणामद्भ्य ओषधीभ्यो वनस्पतिभ्यो अधि संभृतं पयः ।  
 तां न इषमूर्जं घत्त मरुतः सःरराणा अश्मस्ते क्षुन्मरिं त ऊर्ग्यं द्विष्मस्तं ते शुर्गृच्छतु ॥१॥१  
 इमा मे अग्र इष्टका धेनवः सन्त्वेका च दश च दश च शतं च शतं च ।  
 सहस्रं च सहस्रं चायुतं चायुतं च नियुतं च नियुतं च ॥२॥ २  
 अर्बुदं च न्यर्बुदं च समुद्रश्च मध्यं चान्तश्च परार्धश्च ।  
 एता मे अग्र इष्टका धेनवः सन्त्वमुत्रामुष्मिँल्लोके ॥३॥ ३  
 ऋतव स्थ ऋतावृधं ऋतुष्ठा स्थ ऋतावृधः ।  
 घृतश्च्युतो मधुश्च्युतो विराजो नाम कामदुघा अक्षीयमाणाः ॥४॥ ४  
 समुद्रस्य त्वावक्याग्ने परिच्ययामसि । पावको अस्मभ्यं शिवो भव ॥५॥ ५  
 हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परिच्ययामसि । पावको अस्मभ्यं शिवो भव ॥६॥ ६ [१००४]

उप ज्मन्नुप वेतसेऽवतर नदीष्व ।

अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकि ताभिरागहि सेमं नो यज्ञं पावकवर्णं शिवं कृधि ॥७॥ ७

अपामिदं न्ययनं समुद्रस्य निवेशनम् ।

अन्यास्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यं शिवो भव ॥८॥ ८

अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया । आ देवान्वक्षि यक्षि च ॥९॥ ९

स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ३ इहावह । उप यज्ञं हविश्च नः ॥१०॥ १०

पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामन् रुरुच उपसो न भानुना ।

तूर्वन्न यामन्नेतशस्य नू रण आ यो घृणे न ततृषाणो अजरः ॥११॥ ११

नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे ।

अन्यास्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यं शिवो भव ।

नृषदे वेळ्पसुपदे वेङ् वरिषदे वेङ् वनसदे वेट् स्वर्विदे वेट् ॥१२॥ १२

ये देवा देवानां यज्ञियां यज्ञियानां संवत्सरीणमुप भागमासते ।

अहुतादो हविषो यज्ञे अस्मिन्त्स्वयं पिबन्तु मधुनो घृतस्य ॥१३॥ १३

ये देवा देवेष्वधि देवत्वमायन्ये ब्रह्मणः पुर एतारो अस्य ।

येभ्यो न ऋते पर्वते धाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिव्या अधि स्नुषु ॥१४॥ १४

प्राणदा अपानदा व्यानदा वचोदा वरिवोदाः ।

अन्यास्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यं शिवो भव ॥१५॥ (१) १५

अग्निस्तिग्मेन शोचिषा यामद्विश्वं न्यत्रिणम् । अग्निर्नो वनुते रयिम् ॥१॥ १६

य इमा विश्वा भुवनानि जुह्वदपिर्होता न्यसीदत्पिता नः ।

स आशिषा द्रविणमिच्छमानः प्रथमच्छदर्वराँ३ आविवेश ॥२॥ १७

किंस्विदासीदधिष्ठानमारम्भणं कतमत्स्वित्कथासीत् ।

यतो भूमिं जनयन्विश्वकर्मा वि द्यामौर्णोन्महिना विश्वचक्षाः ॥३॥ १८

विश्वतश्चरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात् ।

स बाहुभ्यां धर्मति सं पतत्रैर्द्यावाभूमीं जनयन्देव एकः ॥४॥ १९

किंस्विद्वनं क उ म वृक्ष आस यतो द्यावापृथिवी निष्टतक्षुः ।

मनीषिणो मनसा पृच्छतेदु तद्यदुध्यतिष्ठद्भुवनानि धारयन् ॥५॥



- या ते धामानि परमाणि यावमा या मध्यमा विश्वकर्मन्नुतेमा ।  
 शिक्षा सखिभ्यो हविषि स्वधावः स्वयं यजस्व तन्वः वृधानः ॥६॥ २१
- वाचस्पतिं विश्वकर्माणमतये मनोजुवं वाजे अद्या हुवेम ।  
 स नो विश्वानि हव्नानि जोषद्विश्वशम्भूरवसे साधुकर्मा ॥७॥ २२
- विश्वकर्मन् हविषा वावृधानः स्वयं यजस्व पृथिवीमुत द्याम् ।  
 मुह्यन्त्वन्ये अभितः सपत्ना इहास्माकं मघवा सुरिरस्तु ॥८॥ २३
- विश्वकर्मन् हविषा वर्धनेन ज्ञातारमिन्द्रमकृणोर्युध्यम् ।  
 तस्मै विशः समनमन्त पूर्वोर्यमुग्रो विहव्यो यथासत् ॥९॥ (२) २४
- चक्षुषः पिता मनसा हि धीरो घृतमेने अजनन्नमनमाने ।  
 यदेदन्ता अददहन्त पूर्व आदिह्यावापृथिवी अप्रथेताम् ॥१॥ २५
- विश्वकर्मा विमना आद्विहाया धाता विधाता परमोत संदृक् ।  
 तेषामिष्टानि समिषा मदन्ति यत्रा सप्त ऋषीन्पर एकमाहुः ॥२॥ २६
- यो नः पिता जनिता यो विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।  
 यो देवानां नामधा एक एव तं संप्रश्नं भुवना यन्त्यन्या ॥३॥ २७
- त आर्यजन्त द्रविणं समस्मा ऋषयः पूर्वे जरितारो न भुना ।  
 अस्मर्ते स्मर्ते रजसि निषत्ते ये भूतानि समकृष्वन्निमानि ॥४॥ २८
- परो दिवा पर एना पृथिव्या परो देवेभिरसुरैर्यदस्ति ।  
 कश्चिद् गर्भं प्रथमं दध्न आपो यत्र देवाः समपश्यन्त पूर्वे ॥५॥ २९
- तमिद्गर्भं प्रथमं दध्न आपो यत्र देवाः समगच्छन्त विश्वे ।  
 अजस्य नाभा अध्येकमर्पितं यस्मिन् विश्वानि भुवनानि तस्थुः ॥६॥ ३०
- न तं विदाथ य इमा जजानान्यद्युष्माकमन्तरं बभूव ।  
 नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृष उक्थशासंश्चरन्ति ॥७॥ ३१
- विश्वकर्मा ह्यजनिष्ट देव आदिद्वन्धवो अभवद् द्वितीयः ।  
 तृतीयः पिता जनितापैषधीनामपां गर्भं व्यदधात्पुरुत्रा ॥८॥ (३) ३२
- आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ।  
 संक्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतं मेना अजयत्सकमिन्द्रः ॥१॥ ३३

- संकन्देनेनानिमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना ।  
तदिन्द्रेण जयत तत्सहध्वं युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा ॥२॥ ३४
- स इषुहस्तैः स निषङ्गिभिर्वशी सस्सष्टा स युध इन्द्रो गणेन ।  
सस्सष्टजित्सोमपा बाहुशर्धुग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता ॥३॥ ३५
- बृहस्पते परिदीया रथेन रक्षोहामित्राँ३ अपबाधमानः ।  
प्रभञ्जन्त्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नस्माकमेध्यविता रथानाम् ॥४॥ ३६
- बलविज्ञाय स्थविरः प्रवीरः सहस्वान् वाजी सहमान उग्रः ।  
अभिवीरो अभिस्तवा सहोजा जैत्रमिन्द्र रथमार्तिष्ठ गोवित् ॥५॥ ३७
- गोत्रभिदं गोविदं वज्रबाहुं जयन्तमज्मं प्रमृणन्तमोजसा ।  
इमस् संजाता अनु वीरयध्वमिन्द्रस् सखायो अनु सस्स्रभध्वम् ॥६॥ ३८
- अभि गोत्राणि सहसा गार्हमानोऽदयो वीरः शतमन्युरिन्द्रः ।  
दुश्च्यवनः पृतनापाळयुध्योऽस्माकस् सेना अवतु प्र युत्सु ॥७॥ ३९
- इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः ।  
देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् ॥८॥ ४०
- इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आदित्यानां मरुतास् शर्ध उग्रम् ।  
महार्मनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात् ॥९॥ ४१
- उद्धर्षय मघवन्नायुधान्युत्सत्त्वेनां मामकानां मनास्सि ।  
उद्धृत्रहन् वाजिनां वाजिनान्युद्रथानां जयतां यन्तु घोषाः ॥१०॥ ४२
- अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्ता जयन्तु ।  
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्माँ३ उ देवा अवता हवेषु ॥११॥ ४३
- अमीषां चित्तं प्रतिलोभयन्ती गृहाणाङ्गान्यध्वे परेहि ।  
अभि प्रेहि निर्देह हत्सु शौकैरन्धेनामित्रास्तमसा सचन्ताम् ॥१२॥ ४४
- अवसृष्टा परापत शरच्ये ब्रह्मस्सिति । गच्छामित्रान्प्रपद्यस्व मामीषां कञ्चनोच्छिषः ॥१३॥ ४५
- प्रेता जयता नर इन्द्रो वः शर्म यच्छतु । उग्रा वः सन्तु बाहवोऽनाधृष्या यथासथ ॥१४॥ ४६
- असौ या सेना मरुतः परेषामभ्यैति न ओजसा स्पर्धमाना ।  
तां गूहत तमसापत्रतेन यथामी अन्यो अन्यं न जानन् ॥१५॥ ४७
- यत्र बाणाः मंपतन्ति कुमारा विशिखा इव ।  
तन्न इन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु ॥१६॥ ४८ [१०४६]

मर्माणि ते वर्मेणा छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानुवस्ताम् ।

उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु ॥१७॥ (४)

४९

उदेनमुत्तरां नयाग्रे घृतेनाहुत । रायस्पोषेण सःसृज प्रजया च बहूं कृधि ॥१॥

५०

इन्द्रेमं प्रतरां नय सजातानामसद्वशी । समेनं वर्चसा सृज देवानां भागदा असत् ॥२॥५१

यस्य कुर्मो गृहे हविस्तमग्रे वर्धया त्वम् । तस्मै देवा अधिब्रुवन्नयं च ब्रह्मणस्पतिः ॥३॥

५२

उदु त्वा विश्वे देवा अग्रे भरन्तु चित्तिभिः । स नो भव शिवस्त्वः सुप्रतीको विभार्वसुः ॥४॥

५३

पञ्च दिशो दैवीर्यज्ञमवन्तु देवीरपामति दुर्मतिं बार्धमानाः ।

रायस्पोषे यज्ञपतिमाभजन्ती रायस्पोषे अधि यज्ञो अस्थात् ॥५॥

५४

समिद्धे अग्रा अधि मामहान उक्थपत्र ईड्यो गृभीतः ।

तप्तं घर्मं परिगृह्णायजन्तोर्जा यद्यज्ञमयजन्त देवाः ॥६॥

५५

दैव्याय धर्त्रे जोष्ट्रे देवश्रीः श्रीमणाः शतपयाः ।

परिगृह्य देवा यज्ञमायन् देवा देवेभ्यो अध्वर्यन्तो अस्थुः ॥७॥

५६

वीतः हविः शमितः शमिता यजध्वै तुरीयो यज्ञो यत्र हव्यमेति ।

ततो वाका आशिषो नो जुपन्ताम् ॥८॥

५७

सूर्यरश्मिर्हरिकेशः पुरस्तात्सविता ज्योतिरुदयाँ अजस्रम् ।

तस्य पूषा प्रसवे याति विद्वान्तसंपश्यन्विश्वा भुवनानि गोपाः ॥९॥

५८

विमानं एष दिवो मध्यं आस्त आपप्रिवात्रोदसी अन्तरिक्षम् ।

स विश्वाचीरभिचष्टे घृताचीरन्तरा पूर्वमपरं च केतुम् ॥१०॥

५९

उक्षा समुद्रो अरुणः सुपर्णः पूर्वस्य योनिं पितुराविवेश ।

मध्ये दिवो निहितः पृश्निरश्मा विचक्रमे रजसस्पात्यन्तौ ॥११॥

६०

इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्तसमुद्रव्यचसं गिरः । रथीतमः रथीनां वाजानां सत्पतिं पतिम् ॥१२॥६१

देवहूर्यज्ञ आ च वक्षत्सुहूर्यज्ञ आ च वक्षत् । यक्षदग्निदेवो देवाँ अ आ च वक्षत् ॥१३॥

६२

वाजस्य मा प्रसव उद्ग्राभेणोदग्रभीत् । अधा सपत्नानिन्द्रो मे निग्राभेणाधराँ अकः ॥१४॥

६३

उद्ग्राभं च निग्राभं च ब्रह्म देवा अवीवृधन् ।

अधा सपत्नानिन्द्राग्नी मे विषूचीनान्व्यस्यताम् ॥१५॥ (५)

६४

क्रमध्वमग्निना नाकमुख्यः हस्तेषु चित्रतः । दिवस्पृष्टः स्वर्गत्वा मिश्रा देवेभिराध्वम् ॥१॥६५(१०६३)

|  |    |
|--|----|
| प्राचीमनु प्रदिशं प्रेहि विद्वानग्रेऽग्रे पुरो अग्निर्भवेह ।                             |    |
| विश्वा आशा दीर्घानो विभाहूर्जी नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥२॥                              | ६६ |
| पृथिव्या अहमुदन्तरिक्षमारुहमन्तरिक्षादिवमारुहम् ।  |    |
| दिवो नार्कस्य पृष्ठात् स्वर्ज्योतिरगामहम् ॥३॥  | ६७ |
| स्वर्यन्तो नापेक्षन्त आ द्याः रोहन्ति रोदसी ।  |    |
| यज्ञं ये विश्वतोधारः सुविद्वांसो वितेनिरे ॥४॥  | ६८ |
| अग्ने प्रेहि प्रथमो देवयतां चक्षुर्देवानामुत मर्त्यानाम् ।                               |    |
| इयक्षमाणा भृगुभिः सजोषाः स्वर्यन्तु यजमानाः स्वस्ति ॥५॥                                  | ६९ |
| नक्तोषासा समनसा विरूपे धापयेते शिशुमेकः समीची ।  |    |
| द्यावाक्षामा रुक्मो अन्तर्विभाति देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाः ॥६॥                       | ७० |
| अग्ने सहस्राक्ष शतमूर्धञ्छतं ते प्राणाः सहस्रं व्यानाः ।                                 |    |
| त्वः साहस्रस्य राय ईशिषे तस्मै ते विधेम वाजांय स्वाहा ॥७॥                                | ७१ |
| सुपर्णोऽसि गरुत्मान् पृष्ठे पृथिव्याः सीद ।  |    |
| भासान्तरिक्षमपृण ज्योतिषा दिवमुत्तमान् तेजसा दिश उदृह ॥८॥                                | ७२ |
| आजुह्वानः सुप्रतीकः पुरस्तादग्ने स्वं योनिमासीद साधुया ।                                 |    |
| अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन्विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥९॥                             | ७३ |
| ताः सवितुर्वरेण्यस्य चित्रामाहं वृणे सुमतिं विश्वजंन्याम् ।                              |    |
| यामस्य कण्वो अदुहत्प्रपीनाः सहस्रधारां पर्यसा महीं गाम् ॥१०॥                             | ७४ |
| विधेम ते परमे जन्मन्नग्ने विधेम स्तोमैरवरे सधस्थे ।                                      |    |
| यस्माद्योनैरुदारिथा यजे तं प्र त्वे हवीःपि जुहुरे समिद्धे ॥११॥                           | ७५ |
| प्रेद्धौ अग्ने दीदिहि पुरो नोऽजस्रया सूर्या यविष्ठ । त्वाः शश्वन्त उपयन्ति वाजाः ॥१२॥ ७६ |    |
| अग्ने तमद्याश्वं न स्तोमैः क्रतुं न भद्रः हृदिस्पृशम् । ऋध्यामा त ओहैः ॥१३॥ ७७           |    |
| चित्ति जुहोमि मनसा घृतेन यथा देवा इहागमन्वीतिहोत्रा क्रतुवृधः ।                          |    |
| पत्ये विश्वस्य भूमनो जुहोमि विश्वकर्मणे विश्वाहादाभ्यः हविः ॥१४॥ ७८                      |    |
| सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धाम प्रियाणि ।                           |    |
| सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा ॥१५॥ (६) ७९               |    |

शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्माःश्च । शुक्रश्च क्रतुपाश्चात्यःहाः ॥१॥ ८० (१०७८)

- ईदृङ् चान्यादृङ् च सृदृङ् च प्रतिसदृङ् च । मितश्च संमितश्च सभराः ॥२॥ ८१
- ऋतजिच्च सत्यजिच्च सेनजिच्च सुषेणश्च । अन्तिमित्रश्च दूरे अमित्रश्च गुणः ॥३॥ ८२
- ऋतश्च सत्यश्च ध्रुवश्च धरुणश्च । धर्ता च विधर्ता च विधारयः ॥४॥ ८३
- ईदृक्षास एतादृक्षास ऊ षु णः सदृक्षासः प्रतिसदृक्षास एतन ।  
मितासश्च संमितासो नो अद्य सभरसो मरुतो यज्ञे अस्मिन् ॥५॥ ८४
- स्वर्तवाश्च प्रघासी च सान्तपनश्च गृहमेधी च । क्रीळी च शाकी चोज्जेपी ॥६॥ ८५
- इन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन्त्येन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन् ।  
एवमिमं यजमानं दैवीश्च विशो मानुषीश्चानुवर्त्मानो भूयासुः ॥७॥ (७) ८६[१०८४]

अश्मन्मूर्जं पञ्चदश ॥१५॥ अग्निस्तिग्मेन नव ॥९॥ चक्षुषः पिता अष्ट ॥८॥ आशुः शिशानः सप्तदश ॥१७॥

उदेनं पञ्चदश ॥१५॥ क्रमध्वमग्निना पञ्चदश ॥ १५ ॥ शुक्रज्योतिश्च सप्त ॥ ७॥

सप्तानुवाकेषु षडशीतिः ॥८६॥

इति शुक्लयजुःकाण्वसंहितायां अष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

### अथैकोनविंशोऽध्यायः ।

- इमं स्तनमूर्जस्वन्तं धयापां प्रपीनमग्रे सारिरस्य मध्ये ।  
उत्सं जुषस्व शतधारमर्वन्त्समुद्रियं सदनमार्विशस्व ॥१॥ १
- घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिंघृते श्रितो घृतम्वस्य धाम ।  
अनुष्वधमार्वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम् ॥२॥ २
- समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ३ उदारदुपाँ३ शुना सममृतत्वमानत् ।  
घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः ॥३॥ ३
- वयं नाम प्रब्रवामा घृतस्यास्मिन् यज्ञे धारयामा नमोभिः ।  
उप ब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं चतुःशृङ्गोऽवमीद्वर एतत् ॥४॥ ४
- चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य ।  
त्रिधा बद्धो वृषभो रौरवीति महो देवो मर्त्याँ३ आर्विवेश ॥५॥ ५
- त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानं गवि देवासो घृतमन्वविन्दन् ।  
इन्द्र एकं सूर्य एकं जजान वेनादेकं स्वधया निष्टतक्षुः ॥६॥ ६[१०९०]
- एता अर्षन्ति ह्यधात्समुद्राच्छतव्रजा रिपुणा नावचक्षे ।  
घृतस्य धारा अभिचाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्य आसाम् ।

- मभ्यक् स्रवन्ति सरितो न धेना अन्तर्हुदा मनसा पुयमानाः ।  
 एते अर्षन्यूर्मयो घृतस्य मुगा इव क्षिपणोरीषमाणाः ॥७॥ ७
- सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यद्वाः ।  
 घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नुर्मभिः पिन्वमानः ॥८॥ ८
- अभिप्रवन्तु समनेव योषाः कल्याण्यः स्मर्यमानासो अग्निम् ।  
 घृतस्य धाराः समिधो न सन्त ता जुषाणो हर्यति जातवेदाः ॥९॥ ९
- कन्या इव बहुतमेतवा उ अङ्गयञ्जाना अभिचाकशीमि ।  
 यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा अभि तत्पवन्ते ॥१०॥ १०
- अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त ।  
 इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते ॥११॥ ११
- धाम ते विश्वं भुवनमधि श्रितमन्तः समुद्रे ह्यन्तरायुषि ।  
 अपामनीके समिधे य आर्भुतस्तमश्याम मधुमन्तं त ऊर्मिम् ॥१२॥ (१) १२
- वाजश्च मे प्रसवश्च मे प्रयतिश्च मे प्रसितिश्च मे ।  
 धीतिश्च मे क्रतुश्च मे स्वरश्च मे श्लोकश्च मे ।  
 श्रावश्च मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे स्वश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१॥ १३
- प्राणश्च मेऽपानश्च मे व्यानश्च मेऽसु च मे । चित्तं च मे आधीतं च मे वाक् च मे मनश्च मे ।  
 चक्षुश्च मे श्रोत्रं च मे दक्षश्च मे बलं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२॥ १४
- ओजश्च मे सहश्च मे आत्मा च मे तनूश्च मे । शर्म च मे वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थीनि च मे ।  
 परूश्च मे शरीराणि च मे आयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥३॥ १५
- ज्यैष्ठ्यं च मे आधिपत्यं च मे मन्युश्च मे भामश्च मे ।  
 अर्मश्च मेऽम्भश्च मे जेमा च मे महिमा च मे वरिमा च मे प्रथिमा च मे वर्षिमा च मे द्राघिमा च मे ।  
 वृद्धं च मे वृद्धिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥४॥ (२) १६
- मृत्यं च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनं च मे । विश्वं च मे महश्च मे क्रीळा च मे मोदश्च मे ।  
 जातं च मे जनिष्यमाणं च मे सूक्तं च मे सुकृतं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१॥ १७
- वित्तं च मे वेद्यं च मे भूतं च मे भविष्यच्च मे । सुगं च मे सुपथ्यं च मे ऋद्धं च मे ऋद्धिश्च मे ।  
 क्लृप्तं च मे क्लृप्तिश्च मे मतिश्च मे सुमतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२॥ १८[११०२]

यन्ता च मे धर्ता च मे क्षेमश्च मे धृतिश्च मे । विश्वं च मे महश्च मे संविच्च मे ज्ञात्रं च मे ।  
 सीरं च मे लयश्च मे स्रश्च मे प्रस्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥३॥ १९  
 शं च मे मयश्च मे प्रियं च मेऽनुकामश्च मे । कामश्च मे सौमनसश्च मे भगश्च मे द्रविणं च मे ।  
 भद्रं च मे श्रेयश्च मे वसीयश्च मे यशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥४॥ (३) २०

ऊर्क्च मे सूनृता च मे पर्यश्च मे रसश्च मे । घृतं च मे मधु च मे सग्धिश्च मे सपीतिश्च मे ।  
 कृषिश्च मे वृष्टिश्च मे जैत्रं च मे औद्भिद्यं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१॥ २१

ऋतं च मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयश्च मे ।

जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वं च मेऽनमित्रं च मेऽभयं च मे ।

सुगं च मे शयनं च मे सूषाश्च मे सुदिनं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२॥ २२

रयिश्च मे रायश्च मे पुष्टं च मे पुष्टिश्च मे । विभु च मे प्रभु च मे पूर्णं च मे पूर्णतरं च मे ।

कुर्यं च मेऽक्षितं च मेऽन्नं च मेऽक्षुच मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥३॥ २३

व्रीहयश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे । मुद्राश्च मे खल्वाश्च मे प्रियङ्गवश्च मेऽणवश्च मे ।

इयामाकाश्च मे नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥४॥ (४) २४

अश्मा च मे मृत्तिका च मे गिरयश्च मे पर्वताश्च मे ।

सिकताश्च मे वनस्पतयश्च मे हिरण्यं च मेऽयश्च मे ।

सीसं च मे त्रपु च मे श्यामं च मे लोहं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१॥ २५

अग्निश्च मे आपश्च मे वीरुधश्च मे ओषधयश्च मे ।

कृष्टपच्याश्च मेऽकृष्टपच्याश्च मे ग्राम्याश्च मे पशव आरण्याश्च मे ।

वित्तं च मे विचिश्च मे भूतं च मे भूतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२॥ २६

वसुं च मे वसतिश्च मे कर्म च मे शक्तिश्च मे ।

अर्थश्च मे यामश्च मे इत्या च मे गतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥३॥ (५) २७

अग्निश्च मे इन्द्रश्च मे सोमश्च मे इन्द्रश्च मे ।

सुविता च मे इन्द्रश्च मे सरस्वती च मे इन्द्रश्च मे ।

पूषा च मे इन्द्रश्च मे बृहस्पतिश्च मे इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१॥ २८

मित्रश्च मे इन्द्रश्च मे वरुणश्च मे इन्द्रश्च मे । धाता च मे इन्द्रश्च मे त्वष्टा च मे इन्द्रश्च मे ।

मरुतश्च मे इन्द्रश्च मे विश्वे च मे देवा इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२॥ २९[१११३]

पृथिवी च म इन्द्रश्च मेऽन्तरिक्षं च म इन्द्रश्च मे । द्यौश्च म इन्द्रश्च मे समाश्च म इन्द्रश्च मे ।  
नवक्षणि च म इन्द्रश्च मे दिशश्च म इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥३॥ (६) ३०

अंशुश्च मे रश्मिश्च मेऽदाभ्यश्च मेऽधिपतिश्च मे ।  
उपांशुश्च मेऽन्तर्यामश्च मे ऐन्द्रवायवश्च मे मैत्रावरुणश्च मे ।  
आश्विनश्च मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्रश्च मे मन्थी च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१॥ ३१

आग्रयणश्च मे वैश्वदेवश्च मे ध्रुवश्च मे वैश्वानरश्च मे ।  
ऐन्द्राग्रश्च मे महावैश्वदेवश्च मे मरुत्वतीयाश्च मे निष्कैवल्यश्च मे ।  
सावित्रश्च मे सारस्वतश्च मे पालीवतश्च मे हारियोजनश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२॥ ३२

सुचश्च मे चमसाश्च मे वायव्यानि च मे द्रोणकलशश्च मे ।  
ग्रावाणश्च मेऽधिपवणे च मे पूतभृच्च म आधवनीर्यश्च मे ।  
वेदिश्च मे बर्हिश्च मे स्वगाकारश्च मेऽवभृथश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥३॥ ३३

अग्निश्च मे घर्मश्च मेऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे । प्राणश्च मेऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे ।  
दितिश्च मे द्यौश्च मेऽङ्गुलयः शकरो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥४॥ ३४

व्रतं च म ऋतवश्च मे संवत्सरश्च मे तपश्च मे ।  
अहोरात्रे ऊर्वेष्टीवे बृहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥५॥ (७) ३५

एकां च मे तिस्रश्च मे तिस्रश्च मे पञ्च च मे पञ्च च मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे  
नव च म एकादश च म एकादश च मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे ।  
पञ्चदश च मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे सप्तदश च मे नवदश च मे नवदश च म  
एकविंशतिश्च म एकविंशतिश्च मे त्रयोविंशतिश्च मे त्रयोविंशतिश्च मे ।  
पञ्चविंशतिश्च मे पञ्चविंशतिश्च मे सप्तविंशतिश्च मे सप्तविंशतिश्च मे नवविंशतिश्च मे  
नवविंशतिश्च म एकत्रिंशच्च म एकत्रिंशच्च मे त्रयस्त्रिंशच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१॥ ३६  
चतस्रश्च मेऽष्टौ च मेऽष्टौ च मे द्वादश च मे द्वादश च मे षोडश च मे षोडश च मे विंशतिश्च मे  
विंशतिश्च मे चतुर्विंशतिश्च मे चतुर्विंशतिश्च मेऽष्टाविंशतिश्च मेऽष्टाविंशतिश्च मे ।  
द्वात्रिंशच्च मे द्वात्रिंशच्च मे पट्त्रिंशच्च मे पट्त्रिंशच्च मे चत्वारिंशच्च मे चत्वारिंशच्च मे  
चतुश्चत्वारिंशच्च मे चतुश्चत्वारिंशच्च मेऽष्टाचत्वारिंशच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२॥ ३७[११११]



त्र्यविश्व मे त्र्यवी च मे दित्यवाट् च मे दित्यौही च मे ।

पञ्चाविश्व मे पञ्चावी च मे त्रिवत्सश्च मे त्रिवत्सा च मे ।

तुर्यवाट् च मे तुर्यौही च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥३॥

३८

पृष्ठवाट् च मे पृष्ठौही च मे उक्षा च मे वशा च मे ।

ऋषभश्च मे वेहच्च मेऽनड्वाश्च मे धेनुश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥४॥ (८)

३९

वाजाय स्वाहा प्रसवाय स्वाहापिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा । वसवे स्वाहाहर्षतये स्वाहा ।

अह्ने मुग्धाय स्वाहा मुग्धाय वैनःशिन्याय स्वाहा विनःशिनं आन्त्यायनाय स्वाहान्त्याय

भौवनाय स्वाहा भुवनस्य पतये स्वाहाधिपतये स्वाहा प्रजापतये स्वाहा ॥१॥

४०

इयं ते राष्मित्राय यन्तामि यमनः । ऊर्जे त्वा वृष्ट्यै त्वा प्रजानां त्वाधिपत्याय ॥२॥

४१

आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पतां श्रोत्रं यज्ञेन कल्पताम् ।

वाग्यज्ञेन कल्पतां मनो यज्ञेन कल्पतामात्मा यज्ञेन कल्पतां पृष्ठं यज्ञेन कल्पताम् ।

ब्रह्मं यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पतां ज्योतिर्यज्ञेन कल्पतां स्वर्ग्यज्ञेन कल्पताम् ॥३॥

४२

स्तोमश्च यजुश्च ऋक् च सामं च बृहच्च रथन्तरं च ।

स्वर्देवा अगन्मामृता अभूम प्रजापतेः प्रजा अभूम वेद् स्वाहा ॥३॥ (९) ४३ [११०७]

इमं स्तनं द्वादश ॥१२॥ वाजश्चतस्रः ॥४॥ सत्यं चतस्रः ॥४॥ ऊर्ध्वं चतस्रः ॥४॥ अश्मा च तिस्रः ॥३॥

द्वितीयोऽग्निश्च तिस्रः ॥३॥ अंशुः पञ्च ॥५॥ एका चतस्रः ॥४॥ वाजाश्चतस्रः ॥४॥

नवानुवाकेषु त्रयश्चत्वारिंशन् ॥४३॥

इति ऋक्यजुःकाण्वसंहितायां एकोनविंशोऽध्यायः ॥१९॥

### अथ विंशोऽध्यायः ।

वाजस्य नु प्रसवे मातरं महीमदिति नाम वचसा करामहे ।

यस्यामिदं विश्वं भुवनमाविवेश तस्यां नो देवः संविता धर्मं साविषक् ॥१॥

१

विश्वे अद्य मरुतो विश्वं ऊती विश्वे भवन्त्वग्नयः समिद्धाः ।

विश्वे नो देवा अवसागमन्तु विश्वमस्तु द्रविणं वाजो अस्मे ॥२॥

२

वाजो नः सप्त प्रदिशश्चतस्रो वा परावर्तः । वाजो नो विश्वेद्वैर्धनसाता इहावतु ॥३॥

३

वाजो नो अद्य प्रसुवाति दानं वाजो देवाँः ऋतुभिः कल्पयाति ।

वाजो हि मा सर्ववीरं चकार सर्वा आशा वाजपतिर्भवेयम् ॥४॥

४ [११३१]

वाजः पुरस्तादुत मध्यतो नो वाजो देवान् हविषा वर्धयाति ।

वाजो हि मा सर्ववीरं चकार विश्वा आशा वाजपतिर्जयेयम् ॥५॥

५

सं मा सृजामि पर्यसा पृथिव्याः सं मा सृजाम्यद्भिरोषधीभिः । सोऽहं वाजं सनेयमग्ने ॥६॥ ६

पर्यः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः ।

पर्यस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् । देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।

सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि ॥७॥ (१)

७

ऋताषाळुतधामाग्निर्गन्धर्वः । तस्यौषधयोऽप्सरसो मुदो नाम ।

स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ताभ्यः स्वाहा ॥१॥

८

संहितो विश्वसामा सूर्यो गन्धर्वः । तस्य मरीचयोऽप्सरसं आयुवो नाम ।

स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ताभ्यः स्वाहा ॥२॥

९

सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वः । तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो भेकुर्यो नाम ।

स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ताभ्यः स्वाहा ॥३॥

१०

इषिरो विश्वव्यचा वातो गन्धर्वः । तस्यापो अप्सरस ऊर्जो नाम ।

स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ताभ्यः स्वाहा ॥४॥

११

भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वः । तस्य दक्षिणा अप्सरसस्तावा नाम ।

स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ताभ्यः स्वाहा ॥५॥

१२

प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनो गन्धर्वः । तस्य ऋक्मामान्यप्सरस एष्ट्यो नाम ।

स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ताभ्यः स्वाहा ॥६॥

१३

स नो भुवनस्य पते प्रजापते यस्य त उपरि गृहा यस्य वेह ।

अस्मै ब्रह्मणेऽस्मै क्षत्राय महि शर्म यच्छ स्वाहा ॥७॥

१४

समुद्रोऽग्नि नभस्वानार्द्रदानुः शम्भूर्मयोभूरभि मा वाहि स्वाहा ।

मारुतोऽसि मरुतो गणः शम्भूर्मयोभूरभि मा वाहि स्वाहा ।

अवस्यूरमि दुर्वस्वाञ्छम्भूर्मयोभूरभि मा वाहि स्वाहा । ॥८॥

१५

यास्ते अग्ने सूर्ये रुचो दिवमातन्वन्ति रश्मिभिः ।

तार्भिर्नो अद्य सर्वाभी रुचे जनाय नस्कृधि ॥९॥

१६

या वो देवाः सूर्ये रुचो गोष्वश्वेषु या रुचः ।

इन्द्राग्नी ताभिः सर्वाभी रुचं नो धचा बृहस्पते ॥१०॥

१७ [११४४]

रुचं नो धेहि ब्राह्मणेषु रुचं राजसु नस्कृधि ।  
 रुचं विश्वेषु शूद्रेषु मयि धेहि रुचा रुचम् ॥११॥ १८  
 तत्त्वां यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ।  
 अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्रमोषीः ॥१२॥ १९  
 स्वर्णं धर्मः स्वाहा स्वर्णार्कः स्वाहा स्वर्णं शुक्रः स्वाहा ।  
 स्वर्णं ज्योतिः स्वाहा स्वर्णं सूर्यः स्वाहा ॥१३॥ (२) २०

अग्निं युनज्मि शर्वसा घृतेन दिव्यं सुपूर्णं वयंसा बृहन्तम् ।  
 तेन गमेम ब्रह्मस्य विष्टपं स्वो रुहाणा अधि नार्कमुत्तमम् ॥१॥ २१  
 इमौ ते पक्षा अजरा पतत्रिणो याभ्यां रक्षांस्यपहंस्यग्ने ।  
 ताभ्यां पतेम सुकृतासु लोकं यत्र ऋषयो जग्मुः प्रथमजाः पुराणाः ॥२॥ २२  
 इन्दुर्दक्षः इयेन ऋतावा हिरण्यपक्षः शकुनो भुरण्युः ।  
 महान्तसधस्थे ध्रुव आ निषत्तो नमस्ते अस्तु मा मा हिंसीः ॥३॥ २३  
 दिवो मुर्धासि पृथिव्या नाभिरूर्गपामोषधीनाम् ।  
 विश्वायुः शर्म सप्रथा नमस्पथे ॥४॥ २४  
 विश्वस्य मूर्धन्नाधि तिष्ठसि श्रितः समुद्रे ते हृदयमस्वायुरपो दत्तोदधि भिन्त ।  
 दिवस्पर्जन्यादन्तरिक्षात्पृथिव्यास्ततो नो वृष्ट्याव ॥५॥ २५  
 इष्टो यजो भृगुभिराशीर्दा वसुभिः । तस्य न इष्टस्य प्रीतस्य द्रविणेहागमेः ॥६॥ २६  
 इष्टो अभिराहुतः पिपर्तु न इष्टं हविः । स्वगेदं देवेभ्यो नमः ॥७॥ (३) २७

यदाकृतात्समसुसोद्धृदो वा मनसो वा संभृतं चक्षुषो वा ।  
 तदनु प्रेतं सुकृतासु लोकं यत्र ऋषयो जग्मुः प्रथमजाः पुराणाः ॥१॥ २८  
 एतं सधस्थ परि ते ददामि यमावहाच्छेवाधिं जातवेदाः ।  
 अन्वागन्ता यज्ञपतिर्वो अत्र तं स्म जानीथ परमे व्योमन् ॥२॥ २९  
 एतं जानाथ परमे व्योमन्देवाः सधस्था विद रूपमस्य ।  
 यदागच्छात्पृथिभिर्देवयानैरिष्टापूते कृणवथाविरस्मै ॥३॥ ३०  
 उद्धृध्यस्वाग्ने प्रतित्तिजागृहि त्वमिष्टापूते संसृजेथामयं च ।  
 अस्मिन्तसधस्थे अध्युत्तरस्मिन्विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥४॥ ३१ [११५८]

येन वहसि सहस्रं येनाग्ने सर्ववेदसम् । तेनेमं यज्ञं नो नय स्वर्देवेषु गन्तवे ॥५॥ ३२  
 प्रस्तरणं परिधिना सुचा वेद्या च बर्हिषा । ऋचेमं यज्ञं नो नय स्वर्देवेषु गन्तवे ॥६॥ ३३  
 यद्वत्तं यत्परादानं यत्पुर्तं याश्च दक्षिणाः । तदग्निर्वैश्वकर्मणः स्वर्देवेषु नो दधत् ॥७॥ ३४  
 यत्र धारा अनपेता मधोर्धृतस्य च याः । तदग्निर्वैश्वकर्मणः स्वर्देवेषु नो दधत् ॥८॥ ३५  
 ये अग्नयः पाञ्चजन्या अस्यां पृथिव्यामधि । तेषामसि त्वमुत्तमः प्र नो जीवातवे सुवा ॥९॥ (४) ३६

वात्रैहत्याय शर्वसे पृतनाषाह्याय च । इन्द्र त्वार्वतयामसि ॥१॥ ३७  
 सहदानुं पुरुहूत क्षियन्तमहस्तमिन्द्र संपिणक् कुणारुम् ।  
 अभि वृत्रं वर्धमानं पियारुमपादमिन्द्र तवसा जघन्थ ॥२॥ ३८  
 वि ने इन्द्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः ।  
 यो अस्माँ३ अभिदासत्यधरं गमया तमः ॥३॥ ३९  
 मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आजगन्था परस्याः ।  
 सुक् ५ स ५शायं पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून्ताळिह वि मृधो नुदस्व ॥४॥ ४०  
 वैश्वानरो ने ऊतय आ प्र यातु परावतः । अग्निर्नः सुष्टुतीरुप ॥५॥ ४१  
 पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः पृथिव्यां पृष्टो विश्वा ओषधीरा विवेश ।  
 वैश्वानरः सहसा पृष्टो अग्निः स नो दिवा स रिषस्पातु नक्तम् ॥६॥ ४२  
 अश्याम तं काममग्ने तवोती अश्याम रयि ५ रयिवः सुवीरम् ।  
 अश्याम वाजमभि वाजयन्तोऽश्याम द्युम्रमजराजरं ते ॥७॥ ४३  
 वयं ते अद्य ररिमा हि काममुत्तानहस्ता नमसोपसद्य ।  
 यजिष्ठेन मनसा यक्षि देवानस्त्रेधता मन्मना विप्रो अग्ने ॥८॥ ४४  
 धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः ।  
 सचेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्रार्वन्तु नः शुभे ॥९॥ ४५  
 त्वं यविष्ठ दाशुपो नृ ५ पाहि शृणुधी गिरः । रक्षां तोक्मुत त्मना ॥१०॥ (५) ४६ [११७३]

वाजस्यनु सप्त ॥७॥ ऋतापाद त्रयोदश ॥१३॥ अग्निं युनज्मि सप्त ॥७॥ यदाकृताञ्जव ॥९॥ वात्रैहत्याय दश ॥१०॥  
 पञ्चानुवाकेषु षट्चत्वारिंशत् ॥४६॥

॥ इति शुक्लयजुःकाण्वसंहितायां विशोऽध्यायः ॥ २० ॥

॥ इति द्वितीयो दशकः ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीयो दशकः ॥ ३ ॥

## एकविंशोऽध्यायः ।

- स्वाद्वां त्वा स्वादुना तीत्रां तीत्रेणामृतामृतेन ।  
 मधुमतीं मधुमता सृजामि सः सोमेन ।  
 सोमोऽस्यश्चिभ्यां पच्यस्व सरस्वत्यै पच्यस्वेन्द्राय सुत्राम्णे पच्यस्व ॥१॥ १
- परीतो पिञ्चता सुतः सोमो य उत्तमः हविः ।  
 दुधन्वा यो नर्यो अप्सवन्तरा सुषाव सोममद्रिभिः ॥२॥ २
- वायोः पूतः पवित्रेण प्राङ्कसोमो अतिद्रुतः । इन्द्रस्य युज्यः सखा ।  
 वायोः पूतः पवित्रेण प्रत्यङ्कसोमो अतिद्रुतः । इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥३॥ ३
- पुनार्तिं ते परिस्रुतः सोमः सूर्यस्य दुहिता । वारेण शश्वता तना ॥४॥ ४
- ब्रह्म क्षत्रं पवते तेज इन्द्रियः सुरया सोमः सुत आसुतो मदाय ।  
 शुक्रेण देव देवताः पिपृग्धि रसेनान्नं यजमानाय धेहि ।  
 कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूयं ।  
 इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्ति न जग्मुः ।  
 उपयामगृहीतोऽस्यश्चिभ्यां त्वा सरस्वत्यै त्वेन्द्राय त्वा सुत्राम्णे ।  
 एष ते योनिस्तेजसे त्वा वीर्याय त्वा बलाय त्वा ॥५॥ ५
- नाना हि वां देवहितः सदस्कृतं मा सः सृक्षाथां परमे व्योमन् ।  
 सुरा त्वमसि शुष्मिणी सोम एष मा मां हिः सीः स्वां योनिमाविशन्ती ॥६॥ ६
- उपयामगृहीतोऽस्याश्चिनं तेजः सारस्वतं वीर्यमैन्द्रं बलम् ।  
 एष ते योनिर्मोदाय त्वानन्दाय त्वा महसे त्वा ॥७॥ ७
- तेजोऽसि तेजो मर्यि धेहि वीर्यमसि वीर्यं मर्यि धेहि  
 बलमसि बलं मर्यि धेह्योजोऽस्योजो मर्यि धेहि ।  
 मन्युरसि मन्युं मर्यि धेहि सहोऽसि सहो मर्यि धेहि ॥८॥ ८
- या व्याघ्रं विषूचिकोभौ वृकं च रक्षति ।  
 इयेनं पतत्रिणः सिः हः सेमं पात्वः हंसः ॥९॥ ९
- यदापिपेष मातरं पुत्रः प्रमुदितो धयन् ।  
 एतच्चदग्ने अनृणो भवाम्यहंतौ पितरौ मर्या ॥१०॥ १० [११८३]

|   |           |
|---|-----------|
| संपृचं स्थ सं मा भद्रेण पृङ्क्त । विपृचं स्थ वि मा पापेन पृङ्क्त ॥११॥ (१) | ११        |
| देवा यज्ञमन्तन्वत भेषजं भिषज्जानिना ।                                     |           |
| वाचा सरस्वती भिषगिन्द्रायेन्द्रियाणि दधतः ॥१॥                             | १२        |
| दीक्षायै रूपं शष्पाणि प्रायणीयस्य तोक्मानि ।                              |           |
| ऋयस्य रूपं सोमस्य लाजाः सौमांश्शवो मधु ॥२॥                                | १३        |
| आतिथ्यरूपं मासरं महावीरस्य नग्रहुः ।                                      |           |
| रूपमुपसदामेतत्तिस्रो रात्रीः सुरासुता ॥३॥                                 | १४        |
| सोमस्य रूपं क्रीतस्य परिसुत्परिषिच्यते ।                                  |           |
| अश्विभ्यां दुग्धं भेषजमिन्द्रायैन्द्रं सरस्वत्या ॥४॥                      | १५        |
| आसन्दी रूपं राजासन्धौ वेद्यै कुम्भी सुराधानी ।                            |           |
| अन्तर उत्तरवेद्या रूपं कारोतरो भिषक् ॥५॥                                  | १६        |
| वेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरीन्द्रियम् ।                          |           |
| यूपेन यूप आप्यते प्रणीतो अग्निरग्निना ॥६॥                                 | १७        |
| हविर्धानं यदश्विनाग्नीध्रं यत्सरस्वती ।                                   |           |
| इन्द्रायैन्द्रं सदस्कृतं पत्नीशालं गार्हपत्यः ॥७॥                         | १८        |
| प्रैषेभिः प्रैषानामोत्याग्नीभिराग्निर्यज्ञस्य ।                           |           |
| प्रयाजेभिर्नुयाजान्वषट्कारेभिराहुतीः ॥८॥                                  | १९        |
| पशुभिः पशूनामोति पुरोळाशैर्हवीं ष्या ।                                    |           |
| छन्दोभिः सामिधेनीर्याज्याभिर्वषट्कारान् ॥९॥                               | २०        |
| धानाः कर्मभः सक्तवः परीवापः पयो दधि ।                                     |           |
| सोमस्य रूपं हविषं आमिक्षा वाजिनं मधु ॥१०॥                                 | २१        |
| धानानां रूपं कुर्वलं परीवापस्य गोधूमाः ।                                  |           |
| सक्तूनां रूपं बदरमुपवाकाः कर्मभस्य ॥११॥                                   | २२        |
| पर्यसो रूपं यद्यवा दुधो रूपं कर्कन्धूनि ।                                 |           |
| सोमस्य रूपं वाजिनं सौम्यस्य रूपमामिक्षा ॥१२॥                              | २३        |
| आश्रावयेति स्तोत्रियाः प्रत्याश्रावो अनुरूपः ।                            |           |
| यजेति धाव्यारूपं प्रगाथा यैयजामहाः ॥१३॥                                   | २४ [११९७] |

|   |    |
|---|----|
| अर्धं ऋचैरुक्थानां रूपं पदैराप्नोति निविदः ।  |    |
| प्रणवैः शस्त्राणां रूपं पर्यसा सोमं आप्यते ॥१४॥   | २५ |
| अश्विभ्यां प्रातःसवनमिन्द्रैर्गैन्द्रं माध्यंदिनम् ।  |    |
| वैश्वदेवं सरस्वत्या तृतीयमाप्तं सवनम् ॥१५॥  | २६ |
| वायव्यैर्वायव्यान्याप्नोति सतेन द्रोणकलशम् ।  |    |
| कुम्भीभ्यामम्भृणौ सुते स्थालीभिः स्थालीराप्नोति ॥१६॥  | २७ |
| यजुर्भिराप्यन्ते ग्रहा ग्रहैः स्तोमाश्च विष्टुतीः ।   |    |
| छन्दोभिरुक्थाशस्त्राणि साम्नावभृथ आप्यते ॥१७॥   | २८ |
| इळाभिर्भक्षानाप्नोति सूक्तावाकेनाशिषः ।   |    |
| शंयुना पत्नीसंयजान्तसमिष्टयजुषा संस्थाम् ॥१८॥   | २९ |
| व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ।   |    |
| दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥१९॥   | ३० |
| एतावद्रूपं यज्ञस्य यदेवैर्ब्रह्मणा कृतम् । तदेतत्सर्वमाप्नोति युज्ञे सौत्रामणी सुते ॥२०॥(२) | ३१ |

|  |    |
|--|----|
| सुरावन्तं बर्हिषदं सुवीरं यज्ञं हिंन्वन्ति महिषा नमोभिः ।                            |    |
| दधानाः सोमं दिवि देवतासु मदेमेन्द्रं यजमानाः स्वर्काः ॥१॥                            | ३२ |
| यस्ते रसः संभृत ओषधीषु सोमस्य शुष्मः सुरया सुतस्य ।                                  |    |
| तेन जित्व यजमानं मदेन सरस्वतीमश्विना इन्द्रमग्निम् ॥२॥                               | ३३ |
| यमश्विना नमुचेरासुरादधि सरस्वत्यसुनोदिन्द्रियाय ।                                    |    |
| इमं तं शुक्रं मधुमन्तमिन्दुं सोमं राजानमिह भक्षयामि ॥३॥                              | ३४ |
| यदत्र रिप्तं रसिनः सुतस्य यदिन्द्रो अपिबच्छचीभिः ।                                   |    |
| अहं तदस्य मनसा शिवेन सोमं राजानमिह भक्षयामि ॥४॥                                      | ३५ |
| पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः ।                   |    |
| प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः ॥ ५ ॥   | ३६ |
| अक्षन् पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतुपन्त पितरः । पितरः शुन्धध्वम् ॥६॥                     | ३७ |
| पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः ।                  |    |
| पवित्रेण शतार्युषा ॥७॥   | ३८ |
| पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः । पवित्रेण शतार्युषा विश्वमायुर्व्यश्ववै ॥८॥ | ३९ |

|   |    |
|---|----|
| अग्र आयूँषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः । आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥९॥                        | ४० |
| पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः । पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥१०॥४१ | ४१ |
| पवित्रेण पुनीहि मा शुक्लेण देव दीर्घत् । अग्ने कृत्वा क्रतूँरनु ॥११॥                  | ४२ |
| यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने विततमन्तरा । ब्रह्म तेन पुनातु मा ॥१२॥                       | ४३ |
| पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः । यः पोता स पुनातु मा ॥१३॥                       | ४४ |
| उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सुवेन च । मां पुनीहि विश्वतः ॥१४॥                         | ४५ |
| वैश्वदेवी पुनती देव्यागाद्यस्यामिमा बह्वयस्तन्वो वीतपृष्ठाः ।                         |    |
| तथा मदन्तः सधमादैषु वयँ स्याम पतयो रयीणाम् ॥१५॥                                       | ४६ |
| ये समानाः समनसः पितरो यमराज्ये ।  |    |
| तेषाँल्लोकः स्वधा नमो यज्ञो देवेषु कल्पताम् ॥१६॥                                      | ४७ |
| ये समानाः समनसो जीवा जीवेषु मामकाः ।  |    |
| तेषाँ श्रीर्मयि कल्पतामस्मिँल्लोके शतँ समाः ॥१७॥                                      | ४८ |
| द्वे सृती अशृणवं पितृणामहं देवानामुत मर्त्यानाम् ।                                    |    |
| ताभ्यामिदं विश्वमेजत्समेति यदन्तरा पितरं मातरं च ॥१८॥                                 | ४९ |
| इदँ हविः प्रजननं मे अस्तु दर्शवीरँ सर्वगणँ स्वस्तये ।                                 |    |
| आत्मसनिं प्रजासनिं पशुसनिं लोकसन्यभयसनिं ।  |    |
| अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त ॥१९ (३)                      | ५० |

|   |           |
|---|-----------|
| उदीरतामवर उत्परां उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः ।             |           |
| असुं य ईयुरवृका क्रतुज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु ॥१॥    | ५१        |
| त्वँ सोम प्रचिकितो मनीषा त्वँ रजिष्ठमनु नेषि पन्थाम् ।    |           |
| तव प्रणीती पितरो न इन्दो देवेषु रत्नमभजन्त धीराः ॥२॥      | ५२        |
| त्वया हि नः पितरः सोम पूर्वं कर्माणि चक्रुः पवमान धीराः । |           |
| वन्वन्नवातः परिधीँरपोर्णु वीरेभिरश्वैर्मघवा भवा नः ॥३॥    | ५३        |
| त्वँ सोमँ पितृभिः संविदानोऽनु द्यावापृथिवी आ ततन्थ ।      |           |
| तस्मै त इन्दो हविषा विधेम वयँ स्याम पतयो रयीणाम् ॥४॥      | ५४        |
| बर्हिपदः पितर उत्पवाग्निमा वो हव्या चक्रुमा जुषध्वम् ।    |           |
| त आ गतावसा शन्तमेनाथा नः शं योररपो दधात ॥५॥               | ५५ [१२२८] |



उपहूताः पितरः सोम्यासौ बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु ।

त आ गमन्तु त इह श्रुवन्त्वधि ब्रुवन्तु तैऽवन्त्वस्मान् ॥६॥

५६

आहं पितृन्सुविदत्रौ२ अविस्मि नपातं च विक्रमणं च विष्णोः ।

बर्हिषदो ये स्वधया सुतस्य भजन्त पित्वस्त इहागमिष्ठाः ॥७॥

५७

अग्निष्वात्ताः पितर एह गच्छत सदःसदः सदत सुप्रणीतयः ।

अत्ता हवींषि प्रयतानि बर्हिष्यथा रयिं सर्ववीरं दधातन ॥८॥

५८

आ यन्तु नः पितरः सोम्यासौऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः

अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तैऽवन्त्वस्मान् ॥९॥

५९

ये अग्निष्वात्ता ये अग्निष्वात्ता मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते ।

तेभ्यः स्वराळसुनीतिमेतां यथावशं तन्वं कल्पयाति ॥१०॥

६०

अग्निष्वात्तानृतुमतो हवामहे नाराशसे सोमपीथं य आशुः ।

ते नो विप्रांसः सुहवा भवन्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥११॥

६१

आच्या जानु दक्षिणतो निषद्येमं यज्ञमभि गृणीत विश्वे ।

मा हिंसिष्ट पितरः केन चिन्नो यद्वा आगः पुरुषता करोम ॥१२॥

६२

आसीनासो अरुणीनामुपस्थे रयिं धत्त दाशुषे मर्त्यीय ।

पुत्रेभ्यः पितरस्तस्य वस्वः प्र यच्छत त इहोर्जं दधात ॥१३॥

६३

यमग्ने कव्यवाहन त्वं चिन्मन्यसे रयिम् । तन्नो गीभिः श्रवाय्यं देवत्रा पनया युजम् ॥१४॥ ६४

यो अग्निः कव्यवाहनः पितृन्यक्षदत्तावृधः । प्रेदु हव्यानि वोचति देवेभ्यश्च पितृभ्य आ॥१५॥६५

त्वमग्र ईळितो जातवेदो वाङ्मन्यानि सुरभीणि कृत्वी ।

प्रादाः पितृभ्यः स्वधया ते अक्षन्नाद्रि त्वं देव प्रयता हवींषि ॥१६॥

६६

इदं पितृभ्यो नमो अस्त्वद्य ये पूर्वासो य उपरास ईयुः ।

ये पार्थिवे रजस्या निषत्ता ये वा नूनं सुवृजनासु विष्णु ॥१७॥

६७

ये चेह पितरो ये च नेह याश्च विद्य याँ२ उ च न प्रविद्य ।

त्वं वैतथ यति ते जातवेदः स्वधार्भिर्यज्ञं सुकृतं जुषस्व ॥१८॥

६८

अधा यथा नः पितरः परांसः प्रत्तासो अग्र क्रतमाशुषाणाः ।

शुचीर्दयन्दीधितिमुक्थशासः क्षामा भिन्दन्तो अरुणीरप वन् ॥१९॥

६९

उशन्तस्त्वा नि धीमह्युशन्तः समिधीमहि ।

उशन्तुशत आ वह पितृन् हविषे अत्तवे ॥२०॥

७० [१४३]

अपां फेनेन नमुचेः शिरं इन्द्रोदवर्तयः । विश्वा यदजय स्पृधः ॥२१॥ (४) ७१

सोमो राजामृतं सुत ऋजीषेणाजहान्मृत्युम् ।  
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु ॥१॥ ७२

अञ्चः क्षीरं व्यपिबत् कुङ्कुज्जिरसो धिया ।  
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु ।  
सोममञ्चो व्यपिबच्छन्दसा हंसः शुचिषत् ।

ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु ।  
अन्नात्परिस्तुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः ।  
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु ॥२॥ ७३

रेतो मूत्रं वि जहाति योनिं प्रविशदिन्द्रियम् ।  
गर्भो जरायुणावृत उल्बं जहाति जन्मना ।  
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु ॥३॥ ७४

दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् सत्यानृते प्रजापतिः ।  
अश्रद्धामनृते दधाच्छ्रद्धा सत्ये प्रजापतिः ।  
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु ॥४॥ ७५

वेदेन रूपे व्यपिबत् सुतासुतौ प्रजापतिः ।  
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु ।  
दृष्ट्वा परिस्तुतो रसं शुक्रेण शुक्रं व्यपिबत्पयः सोमं प्रजापतिः ।

ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु ॥५॥ (५) ७६

सीसेन तन्त्रं मनसा मनीषिण ऊर्णासूत्रेण क्वयो वयन्ति ।  
अश्विना यज्ञं सविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं वरुणो भिषज्यन् ॥१॥ ७७

तदस्य रूपममृतं शचीभिस्तिष्ठो दधुर्देवताः सः सराणाः ।  
लोमानि शर्षपैर्बहुधा न तोकमभिस्त्वगस्य मांसमभवन्न लाजाः ॥२॥ ७८

तदश्विना भिषजा रुद्रवर्तनी सरस्वती वयति पेशो अन्तरम् ।  
अस्थि मज्जानं मांसैः कारोतरेण दधतो गवां त्वचि ॥३॥ ७९

सरस्वती मनसा पेशलं वसु नासत्याभ्यां वयति दर्शतं वपुः ।  
रसं परिस्तुता न रोहितं नग्रहुर्धारस्तसरं न वेम ॥४॥ ८० [१२५३]

- पर्यसा शुक्रममृतं जनित्रं सुरया मूत्राजनयन्त रेतः ।  
 अपामर्तिं दुर्मर्तिं बाधमाना ऊर्वध्यं वातं स्रब्धं तदारात् ॥५॥ ८१
- इन्द्रः सुत्रामा हृदयेन सत्यं पुरोलाशेन सविता जजान ।  
 यकृतं क्लोमानं वरुणो भिषज्यन् मत्तस्ने वायव्यैर्न मिनाति पित्तम् ॥६॥ ८२
- आन्त्राणि स्थालीर्मधु पिन्वमाना गुदाः पात्राणि सुदुघा न धेनुः ।  
 श्येनस्य पत्रं न प्लीहा शचीभिरासन्दी नाभिर्दरं न माता ॥७॥ ८३
- कुम्भो वनिष्ठुर्जनिता शचीभिर्यस्मिन्ने योन्यां गर्भो अन्तः ।  
 प्लाशिव्यक्तः शतधार उत्सो दुहे न कुम्भी स्वधां पितृभ्यः ॥८॥ ८४
- मुखं सदैव शिर इत् सतेन जिह्वा पवित्रमश्विनामन्तरस्वती ।  
 चण्डं न पायुर्भिषगस्य वालो वस्तिर्न शेषो हरसा तरस्वी ॥९॥ ८५
- अश्विभ्यां चक्षुरमृतं ग्रहाभ्यां छागेन तेजो हविषा श्रुतेन ।  
 पक्ष्माणि गोधूमैः कुर्वलैरुतानि पेशो न शुक्रमसितं वसाते ॥१०॥ ८६
- अविर्न मेपो नसि वीर्याय प्राणस्य पन्था अमृतो ग्रहाभ्याम् ।  
 सरस्वत्युपवाकैर्व्यानि नस्यानि बहिर्बदरैर्जजान ॥११॥ ८७
- इन्द्रस्य रूपमृषभो बलाय कर्णाभ्यां श्रोत्रममृतं ग्रहाभ्याम् ।  
 यवा न बहिर्भ्रुवि केसराणि कर्कन्धु जज्ञे मधु सारघं मुखात् ॥१२॥ ८८
- आत्मन्नुपस्थे न वृकस्य लोम मुखे श्मश्रूणि न व्याघ्रलोम ।  
 केशा न शीर्षन्यशसे श्रियै शिखा सिंहस्य लोम त्विषिरिन्द्रियार्णि ॥१३॥ ८९
- अङ्गान्यात्मन् भिषजा तदश्विनात्मानमङ्गैः समधात् सरस्वती ।  
 इन्द्रस्य रूपं शतमानमायुश्चन्द्रेण ज्योतिरमृतं दधानाः ॥१४॥ ९०
- सरस्वती योन्यां गर्भमन्तरश्विभ्यां प्ली सुकृतं विभर्ति ।  
 अपां रसेन वरुणो न साम्नेन्द्रं श्रियै जनयन्नप्सु राजा ॥१५॥ ९१
- तेजः पशूनां हविरिन्द्रियावत् परिस्रुता पर्यसा सारघं मधु ।  
 अश्विभ्यां दुग्धं भिषजा सरस्वत्या सुतासुताभ्याममृतः सोम इन्दुः ॥१६॥ (६) ९२

क्षत्रस्य नाभिरसि क्षत्रस्य योनिरसि । मा त्वा हिंसीन्मा मा हिंसीः ।

निषसाद धृतव्रतो वरुणः पस्त्यास्वा । साम्राज्याय सुकृतः । मृत्योः पाहि विद्योत्पाहि ।

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥१॥

अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभि पिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभि पिञ्चामि ।

इन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभि पिञ्चामि ॥२॥ ९४

कौऽसि कतमोऽसि कस्मै त्वा कायं त्वा । सुश्लोकं सुमङ्गलं सत्यराजन् ॥३॥ ९५

शिरो मे श्रियंशो मुखं त्विषिः केशाश्च श्मश्रूणि ।

राजा मे प्राणो अमृतं सप्ताद् चक्षुर्विराट् श्रोत्रम् ॥४॥ ९६

जिह्वा मे भद्रं वाङ् महो मनो मन्युः स्वराड् भामः ।

मोदाः प्रमोदा अङ्गुलीरङ्गानि मित्रं मे सहः ॥५॥ ९७

बाहू मे बलमिन्द्रियं हस्तौ मे कर्म वीर्यम् । आत्मा क्षत्रमुरो मम ॥६॥ ९८

पृष्ठीर्मे राष्ट्रमुदरमसौ ग्रीवाश्च श्रोणी । ऊरू अरन्ती जानुनी विशो मेऽङ्गानि सर्वतः ॥७॥ ९९

नाभिर्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्मेऽपचितिर्भसत् ।

आनन्दनन्दा आण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः ॥८॥ १००

जङ्घाभ्यां पङ्क्त्यां धर्मोऽस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः ।

प्रति क्षत्रे प्रति तिष्ठामि राष्ट्रे प्रत्यश्वेषु प्रति तिष्ठामि गोषु ॥९॥ १०१

प्रत्यङ्गेषु प्रति तिष्ठाम्यात्मन् प्रति प्राणेषु प्रति तिष्ठामि पुष्टे ।

प्रति द्यावापृथिव्योः प्रति तिष्ठामि यज्ञे ॥१०॥ १०२

त्रया देवा एकादश त्रयस्त्रिंशः सुरार्धसः ।

बृहस्पतिपुरोहिता देवस्य सवितुः सवे । देवा देवैरवन्त मा ॥११॥ १०३

प्रथमा द्वितीयैर्द्वितीयास्तृतीयैस्तृतीयाः सत्येन ।

सत्यं यज्ञेन यज्ञो यजुर्भिर्यजूंश्च सामभिः ॥१२॥ १०४

सामान्यगृभिर्ऋचैः पुरोऽनुवाक्याभिः पुरोऽनुवाक्या याज्याभिर्याज्या वषट्कारैः ।

वषट्काग आहुतिभिराहुतयो मे कामान्तसमर्धयन्तु भूः स्वाहा ॥१३॥ १०५

लोमानि प्रयतिर्मम त्वङ् म आनतिरागतिः ।

मासं म उपनतिर्वस्वस्थि मज्जा म आनतिः ॥१४॥७॥ १०६ [१२७९]

स्वाहा त्वेकादश ॥११॥ देवा यज्ञं विंशतिः ॥२०॥ सुरावन्तमेकानविंशतिः ॥१९॥ उदीरतामेकाविंशतिः ॥२१॥

सोमो राजा पञ्च ॥५॥ सीसेन तन्त्रं षोडश ॥१६॥ क्षत्रस्य नाभिश्चतुर्दश ॥१४॥

॥ समानुवाकेषु पट्टत्तरशतम् ॥ १०६ ॥

॥ इति शुक्लयजुःकाण्वसंहितायां एकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

## द्वाविंशोऽध्यायः ।

यदेवा देवहेळनं देवासश्चक्रुमा वयम् । अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वहंसः ॥१॥ १

यदि दिवा यदि नक्तमेनांसि चक्रुमा वयम् ।

वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वहंसः ॥२॥ २

यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एनांसि चक्रुमा वयम् ।

सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वहंसः ॥३॥ ३

यद् ग्रामे यदरण्ये यत्सभायां यदिन्द्रिये । यच्छूद्रे यदर्यं यदेनश्चक्रुमा वयम् ।

यदेकस्याधि धर्मेणि तस्यावयजनमसि ।

यदापो अघ्या इति वरुणेति शर्षामहे ततो वरुण नो मुञ्च ।

अवभृथ निचुम्पुण निचेरुरसि निचुम्पुणः ।

अवेदैवैदेवकृतमेनोऽयक्षयव मर्त्यैर्मर्त्यैकृतं पुरुराव्णो देव रिषस्पाहि ।

समुद्रे ते हृदयमप्स्वन्तः सं त्वा विशन्त्वोषधीरुतापः ।

सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु । योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः ॥४॥ ४

द्रुपदादिव मुमुक्षानः स्विन्नः स्नातो मलादिव । पूतं पवित्रेणैवाज्यमारपः शुन्धन्तु मैर्नसः ॥५॥ ५

उद्वयं तर्मसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम् । देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥६॥ ६

अपो अद्यान्वचारिषु रसेन समसृक्षमहि ।

पयस्वानग्र आगमं तं मा सः सृज वचसा प्रजया च धनैन च ।

एधोऽस्येधिषीमहि समिदसि तेजोऽसि तेजो मयि धेहि ॥७॥ ७

समाववर्ति पृथिवी समुषाः समु सूर्यः । समु विश्वमिदं जगत् ।

वैश्वानरज्योतिर्भूयासं विभून्कामान्वयश्च वै भूः स्वाहा ॥८॥ (१) ८

अभ्या दधामि समिधमग्ने व्रतपते त्वर्यि । व्रतं च श्रद्धां चोपैमीन्धे त्वा दीक्षितो अहम् ॥१॥ ९

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह । तं लोकं पुण्यं प्रज्ञैषं यत्र देवाः सहाग्निना ॥२॥ १०

यत्रेन्द्रश्च वायुश्च सम्यञ्चौ चरतः सह । तं लोकं पुण्यं प्रज्ञैषं यत्र सेदिर्न विद्यते ॥३॥ ११

अशुना ते अशुः पृच्यतां परुषा परुः । गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः ॥४॥ १२

सिञ्चन्ति परिषिञ्चन्त्युत्सिञ्चन्ति पुनन्ति च । सुरायै बभ्रवै मदं किन्त्वो वदति किन्त्वः ॥५॥ १३

धानावन्तं करम्भिर्णमपुष्वन्तमुक्थिनम् । इन्द्रं प्रातर्जुषस्व नः ॥६॥ १४

बृहदिन्द्राय गायत मरुतो बृत्रहन्तमम् ।

येन ज्योतिरजनयन्नृतावृधो देवं देवाय जागृवि ॥७॥ १५

अध्वर्यो अद्रिभिः सुतः सोमं पवित्र आ नय । पुनीहीन्द्राय पातवे ॥८॥ (२) १६

यो भूतानामधिपतिर्यसिंल्लोका अधि श्रिताः ।

य ईशे महतो महास्तेन गृह्णामि त्वामहं मयि गृह्णामि त्वामहम् ॥१॥ १७

उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यां त्वा सरस्वत्यै त्वेन्द्राय त्वा सुत्राम्णे ।

एष ते योनिरश्विभ्यां त्वा सरस्वत्यै त्वेन्द्राय त्वा सुत्राम्णे ॥२॥ १८

प्राणपा मे अपानपाश्चक्षुष्पाः श्रोत्रपाश्च मे । वाचो मे विश्वभैषजो मनसोऽसि विलायकः ॥३॥ १९

अश्विनकृतस्य ते सरस्वतिकृतस्येन्द्रेण सुत्राम्णा कृतस्य । उपहूत उपहूतस्य भक्षयामि ॥४॥ (३) २०

समिद्ध इन्द्रं उपसामनीके पुरोरुचां पूर्वकृद्वावृधानः ।

त्रिभिर्देवैस्त्रिंशता वज्रबाहुर्जघान वृत्रं वि दुरो ववार ॥१॥ २१

नराशः सः प्रति शूरो मिमानस्तनूनपात्प्रति यज्ञस्य धाम ।

गोभिर्वपावान्मधुना समञ्जन् हिरण्यैश्चन्द्री यजति प्रचेताः ॥२॥ २२

ईळितो देवैर्हरिवाँर अभिष्टिराजुह्वानो हविषा शर्धमानः ।

पुरन्दुरो गोत्रभिद्वज्रबाहुरा यातु यज्ञमुप नो जुषाणः ॥३॥ २३

जुषाणो बर्हिर्हरिवान् इन्द्रः प्राचीनः सीदत्प्रदिशा पृथिव्याः ।

उरुप्रथाः प्रथमानः स्योनमादित्यैरक्तं वसुभिः सजोषाः ॥४॥ २४

इन्द्रं दुरः कव्यो धावमाना वृषाणं यन्तु जनयः सुपत्नीः ।

द्वारो देवीरभितो वि श्रयन्ताः सुवीरा वीरं प्रथमाना महोभिः ॥५॥ २५

उषासानक्ता बृहती बृहन्तं पर्यस्वती सुदुघे शूरमिन्द्रम् ।

तन्तुं ततं पेशसा संवयन्ती देवानां देवं यजतः सुरुक्मे ॥६॥ २६

दैव्या मिमाना मनुषः पुरुत्रा होतारा इन्द्रं प्रथमा सुवाचा ।

मूर्धन्यज्ञस्य मधुना दधाना प्राचीनं ज्योतिर्हविषा वृधातः ॥७॥ २७

तिस्रो देवीर्हविषा वर्धमाना इन्द्रं जुषाणा जनयो न पत्नीः ।

अच्छिन्नं तन्तुं पर्यसा सरस्वतीळा देवी भारती विश्वतूर्तिः ॥८॥ २८ [१३०७]

त्वष्टा दधच्छुष्ममिन्द्राय वृष्णेऽपाकोचिष्टुर्यशसे पुरुणि ।

वृषा यजन्वृषणं भूरिरेता मूर्धन्यज्ञस्य समनक्तु देवान् ॥९॥

२९

वनस्पतिरवसष्टो न पाशैस्त्वन्या समञ्जच्छमिता न देवः ।

इन्द्रस्य हव्यैर्जठरं पृणानः स्वदाति यज्ञं मधुना घृतेन ॥१०॥

३०

स्तोकानामिन्दुं प्रति शूर इन्द्रो वृषायमाणो वृषभस्तुराषाद् ।

घृतप्रुषा मनसा मोदमानाः स्वाहा देवा अमृता मादयन्ताम् ॥११॥ (४)

३१

आ यात्विन्द्रोवस उप न इह स्तुतः सधमादस्तु शूरः ।

वावृधानस्तविषीर्यस्य पूर्वीद्यौर्न क्षत्रमभिभृति पुष्यात् ॥१॥

३२

आ न इन्द्रो दूरादा न आसादभिष्टिकृदवसे यासदुग्रः ।

ओजिष्ठेभिर्नृपतिर्वज्रबाहुः संगे समत्सु तुर्वणिः पृतन्यून् ॥२॥

३३

आ न इन्द्रो हरिभिर्यात्वच्छावाचीनोऽवसे राधसे च ।

तिष्ठाति वज्री मधवा विरप्शीमं यज्ञमनु नो वाजसातौ ॥३॥

३४

त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे मुहवः शूरमिन्द्रम् ।

ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्ति नो मधवा धात्विन्द्रः ॥४॥

३५

इन्द्रः सुत्रामा स्ववोर अवोभिः सुमृलीको भवतु विश्वेवेदाः ।

बाधतां द्वेपो अभयं कृणोत सुवीर्यस्य पतयः स्याम ॥५॥

३६

तस्य वयः सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्याम ।

स सुत्रामा स्ववोर इन्द्रो अस्मे आराच्चिद् द्वेपः सनुतयुयोतु ॥६॥

३७

आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिर्याहि मयूररोमभिः ।

मा त्वा के चिन्नि यमन्वि न पाशिनोति धन्वेव ताँर इहि ॥७॥

३८

एवेदिन्द्रं वृषणं वज्रबाहुं वसिष्ठासो अभ्यर्चन्त्यकैः ।

स न स्तुतो वीरवद्धातु गोमद्युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥८॥ (५)

३९

समिद्धो अग्निराश्विना तप्तो घर्मो विराद् सुतः ।

दुहे धेनुः सरस्वती सोमं शुक्रमिहेन्द्रियम् ॥१॥

४०

तनुषा भिषजां सुतेऽश्विनोभा सरस्वती । मध्वा रजांसीन्द्रियमिन्द्राय पथिभिर्वहान् ॥२॥

४१

इन्द्रायेन्दुः सरस्वती नराशःसेन नग्रहम् ।

अघातामश्विना मधु भेषजं भिषजां सुते ॥३॥

४२ [१३२१]

अजुहाना सरस्वतीन्द्रायेन्द्रियाणि वर्यम् । इळाभिरश्विना इषः समूर्जः सः रयि दधुः ॥४॥ ४३

अश्विना नमुचेः सुतः सोमः शुक्रं परिस्नुता । सरस्वती तमा भरद्वाहिषेन्द्राय पातवे ॥५॥ ४४

कवण्यो न व्यचस्वतीरश्विभ्यां न दुरो दिशः ।

इन्द्रो न रोदसी उभे दुहे कामान्तरस्वती ॥६॥

४५

उपासानक्तमश्विना दिवेन्द्रः मायमिन्द्रियैः । संजानाने मुपेशमा समञ्जाते सरस्वत्या ॥७॥ ४६

पातं नो अश्विना दिवा पाहि नक्तः सरस्वति ।

दैव्या होतारा भिषजा पातमिन्द्रः सचा सुते ॥८॥

४७

तिस्रस्त्रेधा सरस्वत्यश्विना भारतीळा । तीत्रं परिस्नुता सोममिन्द्राय सुषुबुर्मदम् ॥९॥ ४८

अश्विना भेषजं मधुं भेषजं नः सरस्वती । इन्द्रे त्वष्टा यज्ञः श्रियः रूपः रूपमधुः सुते ॥१०॥ ४९

क्रतुथेन्द्रो वनस्पतिः शशमानः परिस्नुता । कीलालमश्विभ्यां मधुं दुहे धेनुः सरस्वती ॥११॥ ५०

गोभिर्न सोममश्विना मायरेण परिस्नुता । समघातः सरस्वत्या स्वाहेन्द्रैः सुतं मधुं ॥१२॥ (६) ५१

अश्विना हविरिन्द्रियं नमुचेधिया सरस्वती । आ शुक्रमासुरादसु मघमिन्द्राय जभ्रिरे ॥१॥ ५२

यमश्विना सरस्वती हविषेन्द्रमवर्धयन् । स विभेद बलं मघं नमुचा आसुरं सचा ॥२॥ ५३

तमिन्द्रं पशवः सचाश्विनोभा सरस्वती । दधाना अभ्यनूपत हविषा यज्ञ इन्द्रियैः ॥३॥ ५४

य इन्द्र इन्द्रियं दुधुः सविता वरुणो भगः । म सुत्रामा हविष्यतिर्यजमानाय सश्वत ॥४॥ ५५

सविता वरुणो दधद्यजमानाय दाशुषे । आदत्त नमुचेर्वसु सुत्रामा बलमिन्द्रियम् ॥५॥ ५६

वरुणः अत्रमिन्द्रियं भगेन सविता श्रियम् । सुत्रामा यशमा बलं दधाना यज्ञमाशत ॥६॥ ५७

अश्विना गोभिरिन्द्रियमश्विर्वीर्यं बलम् । हविषेन्द्रः सरस्वती यजमानमवर्धयन् ॥७॥ ५८

ता नामत्या मुपेशमा हिरण्यवर्तनी नरा । सरस्वती हविष्मतीन्द्र कर्मसु नोऽवत ॥८॥ ५९

ता भिषजा मुकर्मणा सा मुदुद्या सरस्वती । म वृत्रहा शतक्रतुरिन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ॥९॥ ६०

युवः मुराममश्विना नमुचा आसुरं सचा । विपिपानाः सरस्वतीन्द्रं कर्मस्वावत ॥१०॥ ६१

पुत्रमिव पितरा अश्विनोभेन्द्रावधुः काव्यैर्दुःसनाभिः ।

यत्सुरामं व्यर्पिवः शचीभिः सरस्वती त्वा मघवन्नभिष्णक् ॥११॥ ६२

यस्मिन्नश्वाम कपभासं उक्ष्णो वशा मेपा अवसृष्टाम आहुताः ।

कीलालपे सोमपृष्ठाय वेधसे हृदा मतिं जनय चारुमग्रये ॥१२॥ ६३

अहोव्यग्रे हविरास्ये ते सुचीव घृतं चम्बीव सोमः ।

वाजमनिः रयिमस्मे सुवीरं प्रशस्तं धेहि यशसे बृहन्तम् ॥१३॥ (७) ६४ [१३४३]



|   |           |
|---|-----------|
| अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम् । वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ॥१॥ | ६५        |
| गोमदू पु णासत्याश्वावद्यातमश्विना । वर्ती रुद्रा नृपाय्यम् ॥२॥                            | ६६        |
| न यत्परो नान्तर आदुर्धर्षद्वयवसू । दुःशंसो मर्त्यो रिपुः ॥३॥                              | ६७        |
| ता न आ वोळ्हमश्विना रयिं पिशङ्गं मन्दशम् । धिण्या वरिवोविदम् ॥४॥                          | ६८        |
| पावका नः सरस्वती वाजैर्भिर्वाजिनीवती । यज्ञं वृष्टु धियावसुः ॥५॥                          | ६९        |
| चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम् । यज्ञं दधे सरस्वती ॥६॥                             | ७०        |
| महो अर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना । धियो विश्वा वि राजति ॥७॥                            | ७१        |
| इन्द्रा याहि चित्रभानो सुता इमे त्वायवः । अर्णोभिस्तना पूतासः ॥८॥                         | ७२        |
| इन्द्रा याहि धियेपितो विप्रजतः सुतावतः । उप ब्रह्माणि वाधतः ॥९॥                           | ७३        |
| इन्द्रा याहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः । सुते दधिष्व नश्चनः ॥१०॥                         | ७४        |
| अश्विना पिबतां मधु सरस्वत्या सजोषसा ।   |           |
| इन्द्रः सुत्रामा वृत्रहा जुपन्तांसोम्यं मधु ॥११॥ (८)                                      | ७५ [१३५४] |

यद्देवा अष्ट ॥ ८ ॥ अभ्यादधामीत्यष्ट ॥ ८ ॥ यो भूतानां चतस्रः ॥ ४ ॥ समिद्ध इन्द्र एकादश ॥ ११ ॥  
अयात्वष्ट ॥ ८ ॥ समिद्धो अग्निर्द्वादश ॥ १२ ॥ अश्विना हविस्त्रयोदश ॥ १३ ॥ अश्विना तेजसैकादश ॥ ११ ॥

॥ अष्टानुवाकेषु पञ्चसप्ततिः ॥ ७५ ॥

॥ इति शुक्रयजुःकाण्वसंहितायां द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

### अथाविंशोऽध्यायः ।

|   |   |
|---|---|
| इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय । त्वामवस्युरा चक्रे ॥१॥        | १ |
| तत्त्वां यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः ।      |   |
| अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्र मोषीः ॥२॥               | २ |
| त्वं नो अग्रे वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेळो अव यामिमिष्टाः ।       |   |
| यजिष्ठो बह्वितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् ॥३॥ | ३ |
| स त्वं नो अग्रेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उपमो व्युष्टौ ।          |   |
| अव यक्ष्व नो वरुणंसं रराणो वीहि मृळीकंसं सुहवो न एधि ॥४॥          | ४ |
| महीम् पु मातरंसं सुव्रतानामृतस्य पत्नीमवसे हुवेम ।                |   |
| तुविश्वत्रामजर्गन्तीमुरुनींसं सुशर्माणमदिनिंसं मुप्रणीतिम् ॥५॥    |   |

- सुत्रामाणं पृथिवीं धामनेहसं सुशर्माणमदिति सुप्रणीतिम् ।  
 दैवीं नावं स्वर्ित्रामनागसमस्त्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये ॥६॥ ६
- सुनावमा रुहेयमस्त्रवन्तीमनागसम् । शतारित्रां स्वस्तये ॥७॥ ७
- आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम् । मध्वा रजांसि सुकृतू ॥८॥ ८
- प्र बाहवांसि ससृतं जीवसे न आ नो गव्यूतिमुक्षतं घृतेन ।  
 आ मा जने श्रवयतं युवाना श्रुतं मे मित्रावरुणा हवमा ॥९॥ ९
- शं नो भवन्तु वाजिनो हवेषु देवताता मितद्रवः स्वर्काः ।  
 जम्भयन्तोऽहिं वृक्षं रक्षांसि सनेम्यस्मद्युयवन्नमीवाः ॥१०॥ १०
- ते नो अर्वन्तो हवनश्रुतो हवं विश्वे शृण्वन्तु वाजिनो मितद्रवः ।  
 सहस्रसा मेघसाता इव त्मना महो ये धनं समिथेषु जग्निरे ॥११॥ ११
- वाजेवाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः ।  
 अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पृथिभिर्देवयानैः ॥१२॥ (१) १२
- समिद्धो अग्निः समिधा सुसमिद्धो वरेण्यः । गायत्री छन्द इन्द्रियं त्र्यविर्गौर्वयो दधुः ॥१॥ १३
- तनूनपाच्छुचित्रतस्तनूपाश्च सरस्वती । उष्णिहा छन्द इन्द्रियं दित्यवाङ् गौर्वयो दधुः ॥२॥ १४
- इळाभिग्निरीड्यः सोमो देवो अमर्त्यः । अनुष्टुप् छन्द इन्द्रियं पञ्चाविर्गौर्वयो दधुः ॥३॥ १५
- सुवर्हिर्अग्निः पृष्वान्तस्तीर्णवर्हिर्मर्त्यः । बृहती छन्द इन्द्रियं त्रिवत्सो गौर्वयो दधुः ॥४॥ १६
- दुरो देवीर्दिशो महीर्ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः ।  
 पङ्क्तिश्छन्द इहेन्द्रियं तुर्यवाङ् गौर्वयो दधुः ॥५॥ १७
- उषे यही सुपेशसा विश्वे देवा अमर्त्याः । त्रिष्टुप् छन्द इहेन्द्रियं पष्ठवाङ् गौर्वयो दधुः ॥५॥ १८
- दैव्या होतांरा भिषजन्द्रेण सयुजा युजा । जगती छन्द इन्द्रियमनुडवान् गौर्वयो दधुः ॥७॥ १९
- तिस्र इळा सरस्वती भारती मरुतो विशः । विराट् छन्द इहेन्द्रियं धेनुर्गौर्न वयो दधुः ॥८॥ २०
- त्वष्टा तुरीपो अद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्धना । द्विपदा छन्द इन्द्रियमुक्षा गौर्न वयो दधुः ॥९॥ २१
- शमिता नो वनस्पतिः सविता प्रमुवन् भगम् ।  
 ऋकुप् छन्द इहेन्द्रियं वशा वेहद्वयो दधुः ॥१०॥ २२
- स्वाहा यज्ञं वरुणः सुक्षत्रो भेषजं कर्त ।  
 अतिच्छन्दा इन्द्रियं बृहदपभो गौर्वयो दधुः ॥११॥ (२) २३ [१३७७]

वसन्तेन ऋतुना देवा वसवस्त्रिष्टुता स्तुताः । रथन्तरेण तेजसा हविरिन्द्रे वयो दधुः ॥१॥ २४  
 ग्रीष्मेण ऋतुना देवा रुद्राः पञ्चदशे स्तुताः । बृहता यशसा बलं हविरिन्द्रे वयो दधुः ॥२॥ २५  
 वर्षाभिर्ऋतुनादित्या स्तोमैः सप्तदशे स्तुताः ।  
 वैरूपेण विशौजसा हविरिन्द्रे वयो दधुः ॥३॥ २६  
 शारदेन ऋतुना देवा एकविंश ऋभवं स्तुताः ॥  
 वैराजेन श्रिया श्रियं हविरिन्द्रे वयो दधुः ॥४॥ २७  
 हेमन्तेन ऋतुना देवास्त्रिणवे मरुतं स्तुताः । बलेन शकरीः महो हविरिन्द्रे वयो दधुः ॥५॥ २८  
 शैशिरेण ऋतुना देवास्त्रयस्त्रिंशोऽमृता स्तुताः ।  
 सत्येन रेवतीः क्षत्रं हविरिन्द्रे वयो दधुः ॥६॥ (३) २९

होता यक्षत्समिधाग्रिमिलस्पदेऽश्विनेन्द्रं सरस्वतीमजो धूम्रो न गोधूमैः कुवलैर्भेषजं मधु ।  
 शष्पैर्न तेज इन्द्रियं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं ॥१॥ ३०  
 होता यक्षत्तनूनपात्सरस्वतीमविर्मेपो न भेषजं पथा मधुमता भरन्नश्विनेन्द्राय वीर्यम् ।  
 बदरैरुपवाकाभिर्भेषजं तोकर्मभिः पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं ॥२॥ ३१  
 होता यक्षन्नराशंसं न नग्रहं पतिं सुरया भेषजं मेषः सरस्वती भिषग्रथो न चन्द्रश्विनोर्विषा इन्द्रस्य  
 वीर्यम् । बदरैरुपवाकाभिर्भेषजं तोकर्मभिः पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं ॥३॥ ३२  
 होता यक्षदिल्लित आजुह्वानः सरस्वतीमिन्द्रं बलेन वर्धयन्नृषभेण गवेन्द्रियमश्विनेन्द्राय भेषजम् ।  
 यवैः कर्कन्धुभिर्मधु लाजैर्न मासरं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं ॥४॥ ३३  
 होता यक्षद्वर्हिर्रूपमदा भिषङ् नासत्या भिषजाश्विनाश्वा शिशुमती भिषग्धेनुः सरस्वती भिषक् ।  
 दुह इन्द्राय भेषजं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं ॥५॥ ३४  
 होता यक्षदुरो दिशः कवष्यो न व्यचस्वतीरश्विभ्यां न दुरो दिश इन्द्रो न रोदसी दुधे दुहे धेनुः  
 सरस्वत्यश्विनेन्द्राय भेषजम् ।

शुक्रं न ज्योतिरिन्द्रियं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं ॥६॥ ३५  
 होता यक्षत्सुपेशतोषे नक्तं दिवाश्विना समञ्जाते सरस्वत्या त्विषिमिन्द्रे न भेषजम् ।  
 श्येनो न रजसा हृदा श्रिया न मासरं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं ॥७॥ ३६  
 होता यक्षद्वैव्या होतारा भिषजाश्विनेन्द्रं न जागृवि दिवा नक्तं न भेषजैः ।  
 शूषं सरस्वती भिषक् सीसेन दुह इन्द्रियं पयः सोमः परिस्रुता  
 घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं ॥८॥ ३७ [१३९१]

होता यक्षत्तिस्रो देवीर्न भेषजं त्रयस्त्रिधातवोऽपसो रूपमिन्द्रे हिरण्यमश्विनेऽन न भारती ।  
वाचा सरस्वती मह इन्द्राय दुह इन्द्रियं पयः सोमः परिस्रुता

घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज ॥९॥

३८

होता यक्षत् सुरेतसमृषभं नयीपसं त्वष्टारमिन्द्रमश्विना भिषजं  
न सरस्वतीमोजो न जूतिरिन्द्रियं वृको न रभसो भिषक् ।

यशः सुरया भेषजं श्रिया न मासरं पयः सोमः

परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज ॥१०॥

३९

होता यक्षद्वनस्पतिं शमितारं शतक्रतुं भीमं न मन्युं राजानं व्याघ्रं नमसाश्विना ।

भामु सरस्वती भिषगिन्द्राय दुह इन्द्रियं पयः सोमः

परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज ॥११॥

४०

होता यक्षदग्निं स्वाहाज्यस्य स्तोकानां स्वाहा मेदसां

पृथक् स्वाहा छागमश्विभ्यां स्वाहा मेषं सरस्वत्यै ।

स्वाहं ऋषभमिन्द्राय सिंहाय सहस इन्द्रियं स्वाहाग्निं न भेषजं स्वाहा सोममिन्द्रियम् ।

स्वाहेन्द्रं सुत्रामाणं सवितारं वरुणं भिषजां पतिं स्वाहा वनस्पतिं प्रियं पाथो न भेषजम् ।

स्वाहा देवा आज्यपा जुषाणो अग्निर्भेषजं पयः सोमः

परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज ॥१२॥ (४)

४१

होता यक्षदश्विनां छागस्य वपाया मेदसो जुषतां हविर्होतर्यज ।

होता यक्षत्सरस्वतीं मेपस्य वपाया मेदसो जुषतां हविर्होतर्यज ।

होता यक्षदिन्द्रमृषभस्य वपाया मेदसो जुषतां हविर्होतर्यज ॥१॥

४२

होता यक्षदश्विनौ सरस्वतीमिन्द्रं सुत्रामाणमिमे सोमाः

सुरामाणश्छागैर्न मेपैर्ऋषभैः सुताः ।

शष्पैर्न तोकमभिराजैर्महस्वन्तो मद्रा मासरेण परिष्कृताः

शुक्राः पर्यस्वन्तोऽमृताः प्रस्थिता वो मधुञ्च्युतस्तानश्विना सरस्वतीन्द्रः

सुत्रामा वृत्रहा जुषन्तां सोम्यं मधु ।

पिबन्तु मर्दन्तु व्यन्तु होतर्यज ॥२॥

४३ [१३९७]

होता यक्षदश्विनौ छागस्य हविष आत्तोमद्य मध्यतो मेद उद्धृतं पुरा द्वेषोभ्यः पुरा पौरुषेभ्यः  
गृभः । यस्तौ नूनं ग्रामे अत्राणां यवमप्रथमानां समत्क्षराणां शतरुद्रियोणामग्निष्वात्तानां

पीवोपवसनानाम् । पार्श्वतः श्रोणितः शितामृत उत्सादुतोऽङ्गादङ्गादवत्तानां करत एवा-  
श्विना जुषेतां हविर्होतर्यज । होता यक्षत्सरस्वती मेघस्य हविष आवयदद्य मध्यतो मेदु  
उद्धृतं पुरा द्वेषोभ्यः पुरा पौरुषेय्या गृभः । घसन्नूनं घासे अज्राणां यवसप्रथमानां  
सुमत्क्षराणां शतरुद्रियाणामग्निष्वात्तानां पीवोपवसनानाम् । पार्श्वतः श्रोणितः शितामृत  
उत्सादुतोऽङ्गादङ्गादवत्तानां करदेवः सरस्वती जुषतां हविर्होतर्यज । होता यक्षदिन्द्रमृष-  
भस्य हविष आवयदद्य मध्यतो मेदु उद्धृतं पुरा द्वेषोभ्यः पुरा पौरुषेय्या गृभः । घसन्नूनं  
घासे अज्राणां यवसप्रथमानां सुमत्क्षराणां शतरुद्रियाणामग्निष्वात्तानां पीवोपवसनानाम् ।  
पार्श्वतः श्रोणितः शितामृत उत्सादुतोऽङ्गादङ्गादवत्तानां करदेवमिन्द्रो जुषतां हविर्होतर्यज

॥३॥ ४४

होता यक्षद्वनस्पतिमभि हि पिष्टतमया रभिष्टया रशनयार्धित ।  
यत्राश्विनोऽल्लागस्य हविषः प्रिया धामानि यत्र सरस्वत्या मेघस्य हविषः  
प्रिया धामानि यत्रेन्द्रस्य ऋषभस्य हविषः प्रिया धामानि ।  
यत्राग्नेः प्रिया धामानि यत्र सोमस्य प्रिया धामानि यत्रेन्द्रस्य सुत्राम्णः प्रिया धामानि ।  
यत्र सवितुः प्रिया धामानि यत्र वरुणस्य प्रिया धामानि यत्र वनस्पतेः प्रिया पार्थांसि ॥  
यत्र देवानामाज्यपानां प्रिया धामानि यत्राग्नेर्होतुः प्रिया धामानि ।  
तत्रैतान्प्रस्तुत्येवोपस्तुत्येवोपावसक्षद्रभीयस इव कृत्वी करदेवं देवो  
वनस्पतिर्जुषतां हविर्होतर्यज ॥४॥

४५

होता यक्षदग्निः स्विष्टकृतमयाऽग्निरश्विनोऽल्लागस्य हविषः प्रिया धामान्ययाट्  
सरस्वत्या मेघस्य हविषः प्रिया धामान्ययाकिन्द्रस्य ऋषभस्य हविषः प्रिया धामानि ।  
अयाऽग्नेः प्रिया धामान्ययाट् सोमस्य प्रिया धामान्ययाकिन्द्रस्य सुत्राम्णः प्रिया धामानि ।  
अयाट् सवितुः प्रिया धामान्ययाट् वरुणस्य प्रिया धामान्ययाट् वनस्पतेः प्रिया पार्थांसि ।  
अयाट् देवानामाज्यपानां प्रिया धामानि यक्षदग्नेर्होतुः प्रिया धामानि । यक्षत्स्वं  
महिमानमायजतामेज्या इषः कृणोतु सो अध्वरा जातवेदा जुषतां हविर्होतर्यज ॥५॥ ४६

देवं बर्हिः सरस्वती सुदेवमिन्द्रे अश्विना ।

तेजो न चक्षुरक्षयोर्बर्हिषा दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ॥१॥

४७

देवीद्वारो अश्विना भिषजेन्द्रे सरस्वती ।

प्राणं न वीर्यं नसि द्वारो दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ॥२॥ ४८ [१४०२]

देवी उपासा अश्विना सुत्रामेन्द्रे सरस्वती ।

बलं न वाचमास्य उपाभ्यां दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ॥३॥ ४९

देवी जोष्टी सरस्वत्यश्विनेन्द्रमवर्धयन् ।

श्रोत्रं न कर्णयोर्यशो जोष्टीभ्यां दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ॥४॥ ५०

देवी ऊर्जाहुती दुधे सुदुधेन्द्रे सरस्वत्यश्विना भिषजावतः ।

शुक्रं न ज्योति स्तनयोराहुती धत्त इन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ॥५॥ ५१

देवा देवानां भिषजा होतारा इन्द्रमश्विना वषट्कारैः सरस्वती त्विषिं न हृदये मतिम् ।

होतृभ्यां दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ॥६॥ ५२

देवीस्तिस्रस्तिस्रो देवीरश्विनेष्वा सरस्वती ।

शूषं न मध्ये नाभ्यामिन्द्राय दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ॥७॥ ५३

देव इन्द्रो नगशस्त्रस्त्रिवरुथः सरस्वत्याश्विभ्यामीयते रथः ।

रेतो न रूपममृतं जनित्रमिन्द्राय त्वष्टा दधदिन्द्रियाणि वसुधेयस्य व्यन्तु यज ॥८॥ ५४

देवो देवैर्वनस्पतिर्हिरण्यपर्णा अश्विभ्यास् सरस्वत्या सुपिप्पल इन्द्राय पच्यते मधु ।

ओजो न जूतिर्ऋषभो न भामं वनस्पतिर्नो दधदिन्द्रियाणि वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ॥९॥ ५५

देवं बर्हिर्वारितीनामध्वरे स्तीर्णमश्विभ्यामूर्णप्रदाः सरस्वत्या स्योनमिन्द्र ते सदैः ।

ईशायै मन्युस् राजानं बर्हिषा दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ॥१०॥ ५६

देवो अग्निः स्विष्टकृदेवान्यक्षद्यथायथस् होतारा इन्द्रमश्विना

वाचा वाचस् सरस्वतीमग्निस् सोमस् स्विष्टकृत् ।

स्विष्ट इन्द्रः सुत्रामा सविता वरुणो भिषगिष्टो देवो वनस्पतिः स्विष्टा देवा आज्यपाः ।

स्विष्टो अग्निरग्निना होता होत्रे स्विष्टकृद्यशो न दधदिन्द्रियमूर्जमपचितिस् स्वधां

वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ॥११॥

५७

अग्निमद्य होतारमवृणीतायं यजमानः पचन् पक्तीः

पचन् पुरोळाशान् बुध्नन्नश्विभ्यां छागस् सरस्वत्यै मेषमिन्द्राय ऋषभम् ।

मुन्वन्नश्विभ्यास् सरस्वत्या इन्द्राय सुत्राम्णो सुरामोमान् ॥१२॥

५८

मुपस्था अद्य देवो वनस्पतिरभवदश्विभ्यां छागेन सरस्वत्यै मेषेणेन्द्राय ऋषभेण ।

अक्षस्तान् मैदुस्तः प्रति पचतागृभीषतावीवृधन्त पुरोळाशैरपुरश्विना सरस्वतीन्द्रः सुत्रामा

सुरामोमान् ॥ १३॥

५९ [१४१३]

त्वामद्य ऋष अर्षेय ऋषीणां नपादवृणीतायं यजमानो बहुभ्य आ संगतेभ्य एष मे देवेषु  
वसु वार्यायक्ष्यत इति ।

ता या देवा देव दानान्यदुस्तान्यस्मा आ च शास्वा च गुरस्वेषितश्च होतरसि भद्रवाच्याय  
प्रेषितो मानुषः सूक्तवाकाय सुक्ता ब्रूहि ॥१४॥ (६) ६० [१४१४]

इमं मे वरुण द्वादश ॥ १२ ॥ समिद्धो अग्निरेकादश ॥ ११ ॥ वसन्तेन षट् ॥ ६ ॥ होता यक्षद्  
द्वादश ॥ १२ ॥ होता यक्षदश्विनौ छागस्य पञ्च ॥ ५ ॥ देवं बर्हिश्चतुर्दश ॥ १४ ॥

॥ षडनुवाकेषु षष्टिः ॥ ६० ॥

॥ इति शुक्लयजुःकाण्वसंहितायां त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

### अथ चतुर्विंशोऽध्यायः ।

तेजोऽसि शुक्रमृतमायुष्पा आयुर्मे पाहि ।

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यामा ददे ॥१॥ १

इमामगृष्णन् रशनामृतस्य पूर्वं आयुषि विदथेषु कव्या ।

सा नो अस्मिन्सुत आ बभूव ऋतस्य सामन्त्सरमारपन्ती ॥२॥ २

अभिधा असि भुवन्मसि यन्तासि धर्ता ।

स त्वमग्निं वैश्वानरं सप्रथसं गच्छ स्वाहाकृतः स्वगा त्वा देवेभ्यः ॥३॥ ३

प्रजापतये ब्रह्मन्नश्च भन्त्स्यामि देवेभ्यः प्रजापतये तेन राध्यासम् ।

तं बंधान देवेभ्यः प्रजापतये तेन राधनुहि ।

प्रजापतये त्वा जुष्टं प्रोक्षामीन्द्राग्निभ्यां त्वा जुष्टं प्रोक्षामि वायवे त्वा जुष्टं प्रोक्षामि

विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं प्रोक्षामि सर्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं प्रोक्षामि ॥४॥ ४

यो अर्वन्तं जिघांसति तमभ्यमीति वरुणः । परो मर्तः परः श्वा ॥५॥ (१) ५

अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहापां मोदाय स्वाहा सवित्रे स्वाहा वायवे स्वाहा विष्णवे स्वाहा ।

इन्द्राय स्वाहा बृहस्पतये स्वाहा मित्राय स्वाहा वरुणाय स्वाहा ॥१॥ (२) ६

हिङ्गाराय स्वाहा हिङ्गुताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहावक्रन्दाय स्वाहा ।

प्रोथते स्वाहा प्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा ॥१॥ ७

निर्विष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा संदिताय स्वाहा वल्गते स्वाहा ।

आसीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा ॥२॥ ८ [१४२२]

कूजेते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृत्ताय स्वाहा ।  
 संहानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहार्यनाय स्वाहा प्रार्यणाय स्वाहा ॥३॥ ९  
 यते स्वाहा धावते स्वाहोद्वावाय स्वाहोद्दुताय स्वाहा ।  
 शूकाराय स्वाहा शूकृताय स्वाहा निषण्णाय स्वाहोत्थिताय स्वाहा ॥४॥ १०  
 जवाय स्वाहा बलाय स्वाहा विवर्तिमानाय स्वाहा विवृत्ताय स्वाहा ।  
 विधून्वानाय स्वाहा विधूताय स्वाहा शुश्रूषमाणाय स्वाहा शृण्वते स्वाहा ॥५॥ ११  
 ईक्षमाणाय स्वाहेक्षिताय स्वाहा वीक्षिताय स्वाहा निमेपाय स्वाहा ।  
 यदत्ति तस्मै स्वाहा यपिबति तस्मै स्वाहा यन्मूत्रं करोति तस्मै स्वाहा  
 कुर्वते स्वाहा कृताय स्वाहा ॥६॥ (३) १२

तत्संवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥१॥ १३  
 हिण्यपाणिमुतयं सवितारमुप ह्वये । स चेत्ता देवता पदम् ॥२॥ १४  
 देवस्य चेततो महीं प्र संवितुर्हवामहे । सुमतिः सत्यराधसम् ॥३॥ १५  
 सुष्टुतिः सुमतीवृधो रतिः संवितुरीमहे । प्र देवाय मतीविदे ॥४॥ १६  
 रतिः सत्पतिं महे सवितारमुप ह्वये । आसवं देववीतये ॥५॥ १७  
 देवस्य सवितुर्मतिमासवं विश्वदैव्यम् । धिया भर्गं मनामहे ॥६॥ १८  
 अग्निः स्तोमेन बोधय समिधानो अमर्त्यम् । हव्या देवेषु नो दधत् ॥७॥ १९  
 स हव्यवाळमर्त्य उशिग्दुतश्चनोहितः । अग्निर्धिया समृण्वति ॥८॥ २०  
 तं त्वा घृतस्र ईमहे चित्रभानो स्वर्विदम् । देवाँर आ वीतये वह ॥९॥ २१  
 अग्निं दूतं पुरा दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे । देवाँर आ सादयादिह ॥१०॥ (४) २२

अजीजनो हि पवमान सूर्यं विधारे शकमना पर्यः । गोजीरया रंहमाणः पुरंध्या ॥१॥ (५) २३

विभूर्मात्रा प्रभूः पित्राश्चोऽसि हयोऽस्यत्योऽसि मयोऽस्यवीसि सप्तिरसि वाज्यसि वृषासि नृमणांसि ।  
 ययुर्नामांसि शिशुर्नामास्यादित्यानां पत्वान्विहि ॥१॥ २४

देवा आशापाला एतं देवेभ्योऽश्वं मेधाय प्रोक्षितः रक्षत ।

इह गन्तिरिह रमतामिह धृतिरिह स्वधृतिः स्वाहा ॥२॥ (६) २५

काय स्वाहा कस्मै स्वाहा कतमस्मै स्वाहा ।

स्वाहाधिमाधीताय स्वाहा मनः प्रजापतये स्वाहा चित्तं विज्ञाताय ॥१॥ २६ [१४४०]



- अदित्यै स्वाहादित्यै महे स्वाहादित्यै सुमृळीकायै स्वाहा ।  
 सरस्वत्यै स्वाहा सरस्वत्यै पावकायै स्वाहा सरस्वत्यै बृहत्यै स्वाहा ॥२॥ २७
- पूष्णे स्वाहा पूष्णे प्रपञ्चयाय स्वाहा पूष्णे नरन्धिषाय स्वाहा ।  
 त्वष्ट्रे स्वाहा त्वष्ट्रे तुरीपाय स्वाहा त्वष्ट्रे पुरुरूपाय स्वाहा ।  
 विष्णवे स्वाहा विष्णवे निभूयपाय स्वाहा विष्णवे शिपिविष्टाय स्वाहा ॥३॥ २८
- विश्वो देवस्य नेतुर्मर्तो वुरीत सख्यम् ।  
 विश्वो राय इषुध्यति द्युम्नं वृणीत पुण्यसे स्वाहा ॥४॥ (७) २९
- आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः ।  
 शूर इष्वर्योऽतिव्याधी महारथो जायताम् ॥१॥ ३०
- दोग्ध्री धेनुर्वोळ्हानड्वानाशुः सप्तिः पुरंधिर्योषा ।  
 जिष्णू रथेष्टाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम् ॥२॥ ३१
- निकामेनिकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम् ।  
 योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥३॥ (८) ३२
- प्राणाय स्वाहापानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा ।  
 चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा ॥१॥ (९) ३३
- प्राच्यै दिशे स्वाहावाच्यै दिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहावाच्यै दिशे स्वाहा ।  
 प्रतीच्यै दिशे स्वाहावाच्यै दिशे स्वाहोदीच्यै दिशे स्वाहावाच्यै दिशे स्वाहा ।  
 ऊर्ध्वायै दिशे स्वाहावाच्यै दिशे स्वाहावाच्यै दिशे स्वाहावाच्यै दिशे स्वाहा ॥१॥ (१०) ३४
- अद्भ्यः स्वाहा वार्ष्यः स्वाहोदकाय स्वाहा तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा  
 सर्वन्तीभ्यः स्वाहा स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा ।  
 कृष्याभ्यः स्वाहा स्रष्टाभ्यः स्वाहा धार्याभ्यः  
 स्वाहार्णवाय स्वाहा समुद्राय स्वाहा सरिराय स्वाहा ॥१॥ (११) ३५
- वाताय स्वाहा धुमाय स्वाहाभ्राय स्वाहा मेघाय स्वाहा विद्योतमानाय स्वाहा स्तनयते स्वाहा ।  
 अवस्फूर्जते स्वाहा वर्षते स्वाहाववर्षते स्वाहोग्रं वर्षते स्वाहा  
 शीघ्रं वर्षते स्वाहोद्रुहते स्वाहोद्रुहीताय स्वाहा ।  
 प्रभ्रते स्वाहा शीकायते स्वाहा प्रुष्वाभ्यः स्वाहा  
 हादुनीभ्यः स्वाहा नीहाराय स्वाहा ॥१॥ (१२) ३६ [१४५०]

अग्रये स्वाहा सोमाय स्वाहेन्द्राय स्वाहा पृथिव्यै स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा ।

दिवे स्वाहा दिग्भ्यः स्वाहाशांभ्यः

स्वाहोर्व्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा ॥१॥ (१३)

३७

नक्षत्रेभ्यः स्वाहा नक्षत्रियेभ्यः स्वाहाहोरात्रेभ्यः स्वाहार्धमासेभ्यः स्वाहा ।

मासेभ्यः स्वाहा ऋतुभ्यः स्वाहार्तवेभ्यः स्वाहा

संवत्सराय स्वाहा द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा ॥१॥

३८

चन्द्राय स्वाहा सूर्याय स्वाहा रश्मिभ्यः स्वाहा वसुभ्यः स्वाहा ।

रुद्रेभ्यः स्वाहादित्येभ्यः स्वाहा मरुद्भ्यः स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ॥२॥ (१४) ३९

मूलेभ्यः स्वाहा शाखाभ्यः स्वाहा वनस्पतिभ्यः स्वाहा ।

पुष्पेभ्यः स्वाहा फलेभ्यः स्वाहौषधीभ्यः स्वाहा ॥१॥ (१५)

४०

पृथिव्यै स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा ।

चन्द्राय स्वाहा नक्षत्रेभ्यः स्वाहाऽऽः स्वाहौषधीभ्यः स्वाहा ।

वनस्पतिभ्यः स्वाहा परिप्लवेभ्यः स्वाहा चराचरेभ्यः स्वाहा सरीसृपेभ्यः स्वाहा ॥१॥ (१६) ४१

असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा ।

गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहाभिभुवे स्वाहाधिपतये स्वाहा ॥१॥

४२

शुषाय स्वाहा सप्तर्षाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा ।

मल्लिमुलाय स्वाहा दिवा पतयते स्वाहा ॥२॥ (१७)

४३

मधवे स्वाहा मार्धवाय स्वाहा शुक्राय स्वाहा शुचये स्वाहा ।

नभसे स्वाहा नभस्याय स्वाहेषाय स्वाहोर्जाय स्वाहा ।

सहसे स्वाहा सहस्याय स्वाहा तपसे स्वाहा तपस्याय स्वाहाऽहसस्पतये स्वाहा ॥१॥ (१८) ४४

वाजाय स्वाहा प्रमवाय स्वाहापिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा ।

स्वः स्वाहा मूर्ध्ने स्वाहा व्यङ्गुविने स्वाहा ।

अन्त्याय स्वाहान्त्यायनाय स्वाहा भौवनाय स्वाहा

भुवनस्य पतये स्वाहाधिपतये स्वाहा प्रजापतये स्वाहा ॥१॥ (१९) ४५ [१४५९]

आयुर्यज्ञेन कल्पता५ स्वाहा प्राणो यज्ञेन कल्पता५ स्वाहापानो यज्ञेन कल्पता५ स्वाहा  
 व्यानो यज्ञेन कल्पता५ स्वाहा ।  
 उदानो यज्ञेन कल्पता५ स्वाहा समानो यज्ञेन कल्पता५ स्वाहा चक्षुर्यज्ञेन कल्पता५ स्वाहा  
 श्रोत्रं यज्ञेन कल्पता५ स्वाहा ।  
 वाग्यज्ञेन कल्पता५ स्वाहा मनो यज्ञेन कल्पता५ स्वाहात्मा यज्ञेन कल्पता५ स्वाहा  
 पृष्ठं यज्ञेन कल्पता५ स्वाहा ।  
 ब्रह्म यज्ञेन कल्पता५ स्वाहा यज्ञो यज्ञेन कल्पता५ स्वाहा ज्योतिर्यज्ञेन कल्पता५ स्वाहा  
 स्वर्यज्ञेन कल्पता५ स्वाहा ॥१॥ (२०)

४६

एकस्मै स्वाहा द्वाभ्या५ स्वाहा शताय स्वाहैकशताय स्वाहा ।

व्युष्ट्यै स्वाहा स्वर्गाय स्वाहा ॥१॥ (२१)

४७ [१४६१]

तेजोऽसि पञ्च ॥५॥ अग्नय एका ॥२॥ हिङ्गाराय षट् ॥६॥ तत्सवितुर्दश ॥१०॥ अजीजनो ह्येका ॥१॥

विभूर्दे ॥२॥ काय चतस्रः ॥४॥ आब्रह्मंस्तिस्रः ॥३॥ प्राणायैका ॥१॥ प्राच्यायैका ॥१॥

अद्भ्य एका ॥१॥ वातायैका ॥१॥ अग्नय इत्येका ॥१॥ नक्षत्रेभ्यो द्वे ॥२॥ मूलेभ्य एका ॥१॥

पृथिव्या इत्येका ॥१॥ असवे द्वे ॥२॥ मधव एका ॥१॥ वाजायैका ॥१॥

आयुर्यज्ञेनैका ॥१॥ एकस्मा इत्येका ॥१॥

॥ एकविंशत्यनुवाकेषु सप्तचत्वारिंशत् ॥४७॥

॥ इति शुक्लयजुःकाण्वसंहितायां चतुर्विंशोऽध्यायः ॥२४॥

अथ पञ्चविंशोऽध्यायः ।

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रं भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।

स दाधार पृथिवीं धामुतेमां कस्यै देवाय हविषा विधेम ॥१॥

१

उपयामर्गुहीतोऽसि प्रजापतये त्वा जुष्टं गृह्णाम्येप ते योनिः सूर्यस्ते महिमा ।

यस्तेऽहन्त्संवत्सरे महिमा संबभूव यस्ते वाया अन्तरिक्षे महिमा संबभूव ।

यस्ते दिवि सूर्ये महिमा संबभूव तस्यै ते महिम्ने प्रजापतये स्वाहा देवेभ्यः ॥२॥ (१) २

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव ।

य ईशे अस्य द्विपदुश्चतुष्पदः कस्यै देवाय हविषा विधेम ॥१॥

३ [१४६४]

उपयामगृहीतोऽसि प्रजापतये त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिश्चन्द्रमास्ते महिमा ।

यस्ते रात्रौ संवत्सरे महिमा संबभूव यस्ते पृथिव्यामग्नौ महिमा संबभूव ।

यस्ते नक्षत्रेषु चन्द्रमासि महिमा संबभूव तस्मै ते महिम्ने प्रजापतये देवेभ्यः स्वाहा ॥२॥ (२) ४

युञ्जन्ति ब्रह्मरूपं चरन्तं परि तस्थुषः । रोचन्ते रोचना दिवि ॥१॥

५

युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे । शोणा धृष्णू नृवाहसा ॥२॥

६

यद्रातौ अपो अगनीगन्त्रियामिन्द्रस्य तन्वम् ।

एतः स्तोतरेन पथा पुनरश्चमावर्तयासि नः ॥३॥

७

वसवस्त्वाञ्जन्तु गायत्रेण छन्दसा रुद्रास्त्वाञ्जन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसा ।

आदित्यास्त्वाञ्जन्तु जागतेन छन्दसा ॥४॥

८

भूर्भुवः स्वर्लाजीञ्छाचीञ्चन्यव्ये गव्ये ।

एतदन्नमत्त देवा एतदन्नमद्वि प्रजापते ॥५॥

९

कः स्विदेकाकी चरति क उ स्विजायते पुनः ।

किञ्च स्विद्धिमस्य भेषजं किम्वावर्पनं महत् ॥६॥

१०

स्यै एकाकी चरति चन्द्रमा जायते पुनः ।

अग्निर्हिमस्य भेषजं भूमिरावर्पनं महत् ॥७॥

११

का स्विदासीत्पूर्वचित्तिः किञ्च स्विदासीद् बृहद्वयः ।

का स्विदासीत्पिलिप्पिला का स्विदासीत्पिशङ्गिला ॥८॥

१२

द्यौरासीत्पूर्वचित्तिरश्च आसीद् बृहद्वयः ।

अर्विरामीत्पिलिप्पिला रात्रिरासीत्पिशङ्गिला ॥९॥ (३)

१३

वायुष्टा पचतैरवत्वासितग्रीवश्छागं । न्यग्रोधश्चमसैः शलमलिवृद्धया ॥१॥

१४

एष स्य राध्यो वृषा पङ्क्तिश्चतुर्भिरेदगन् । ब्रह्मा कृष्णश्च नोऽवतु नमोऽग्नये ॥२॥

१५

सःशितो रश्मिना रथः सःशितो रश्मिना हर्यः ।

सःशितो अप्सर्वप्सुजा ब्रह्मा सोमपुरोगवः ॥३॥

१६

स्वयं वाजिःस्तन्व कल्पयस्व स्वयं यजस्व स्वयं जुषस्व ।

महिमा तेऽन्येन न संनशे ॥४॥

१७

न वा उ एतन्त्रियमे न रिण्यसि देवाँर इदैषि पथिभिः सुगेभिः ।

यत्रासते मुक्तो यत्र ते ययुस्तत्र त्वा देवः सविता दधातु ॥५॥

१८ [ १४७९ ]

अग्निः पशुरासीत्तेनायजन्त स एतं लोकमजयद्यस्मिन्नग्निः ।

स ते लोको भविष्यति तं जेष्यासि पिबैता अपः ।

वायुः पशुरासीत्तेनायजन्त स एतं लोकमजयद्यस्मिन्वायुः ।

स ते लोको भविष्यति तं जेष्यासि पिबैता अपः ।

सूर्यः पशुरासीत्तेनायजन्त स एतं लोकमजयद्यस्मिन्सूर्यः ।

स ते लोको भविष्यति तं जेष्यासि पिबैता अपः ॥६॥ (४)

१९

प्राणाय स्वाहापानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा । अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मां नयति कश्चन ।

ससंस्त्यश्चकः सुमद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥१॥

२०

गुणानां त्वा गुणपतिः हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिः हवामहे ।

निधीनां त्वा निधिपतिः हवामहे वसो मम ॥२॥

२१

आहर्मजानि गर्भधमा त्वमर्ज्यासि गर्भधम् । ता उभौ चतुरः पदः संप्रसारयाव ।

स्वर्गे लोके प्रोर्ण्वाँ वृषां वाजी रेतोधा रेतो दधातु ॥३॥ (५)

२२

उत्सक्थ्या अवं गुदं धेहि समञ्जि चारया वृषन् । य स्त्रीणां जीवभोजनः ॥१॥

२३

यकासकौ शकुन्तिकाहलगिति वञ्चति । आहन्ति गभे पसो निर्गल्गलीति धारका ॥२॥ २४

यकोऽसकौ शकुन्तक आहलगिति वञ्चति ।

विवक्षत इव ते मुखमध्वर्यो मा नस्त्वमभि भाषथाः ॥३॥

२५

माता च ते पिता च तेऽग्रं वृक्षस्य रोहतः ।

प्रतिलामीति ते पिता गभे मुष्टिमतः सयत् ॥४॥

२६

माता च ते पिता च तेऽग्रे वृक्षस्य क्रीलतः ।

विवक्षत इव ते मुखं ब्रह्मन्मा त्वं वदो बहु ॥५॥

२७

ऊर्ध्वमेनामुच्छ्रापय गिरौ भारः हरन्निव ।

अथास्यै मध्यमेधताः शीते वार्ते पुनन्निव ॥६॥

२८

ऊर्ध्वमेनमुच्छ्रयताद्विरौ भारः हरन्निव ।

अथास्यै मध्यमेजतु शीते वार्ते पुनन्निव ॥७॥

२९

यदस्या अहमेधाः कृधु स्थूलमुपातसत् ।

मुष्का इदस्या एजतो गोशफे शकुला इव ॥८॥

३० [ १४९१ ]

|  |    |
|--|----|
| यद्देवासो ललामंगुं प्र विंष्टीमिनमाविषुः ।       |    |
| सक्श्ना देदिश्यते नारीं सत्यस्याक्षिभुवो यथा ॥९॥ | ३१ |
| यद्धरिणो यवमत्ति न पुष्टं पशु मन्यते ।           |    |
| शूद्रा यदर्यजारा न पोषाय धनायति ॥१०॥             | ३२ |
| यद्धरिणो यवमत्ति न पुष्टं बहु मन्यते ।           |    |
| शूद्रो यदर्ययै जारो न पोषमनु मन्यते ॥११॥         | ३३ |
| दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।       |    |
| सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयुषि तारिषत् ॥१२॥ (६)   | ३४ |

|  |    |
|--|----|
| गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्या मह ।              |    |
| बृहत्युष्णिहा ककुप्सूचीभिः शम्यन्तु त्वा ॥१॥               | ३५ |
| द्विपदा याश्चतुष्पदास्त्रिपदा याश्च षट्पदाः ।              |    |
| विच्छन्दा याश्च सच्छन्दाः सूचीभिः शम्यन्तु त्वा ॥२॥        | ३६ |
| महानामन्यो रेवत्यो विश्वा आशाः प्रभूवरीः ।                 |    |
| मैधीर्विद्युतो वाचः सूचीभिः शम्यन्तु त्वा ॥३॥              | ३७ |
| नार्यस्ते पत्न्यो लोम विचिन्वन्तु मनीषया ।                 |    |
| देवानां पत्न्यो दिशः सूचीभिः शम्यन्तु त्वा ॥४॥             | ३८ |
| रजता हरिणीः ससि युजो युज्यन्ते कर्मभिः ।                   |    |
| अश्वस्य वाजिनस्त्वचि मिमाः शम्यन्तु शम्यन्तीः ॥५॥          | ३९ |
| कुविदङ्ग यवमन्तो यवाश्चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं विगूय ।      |    |
| इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये वहिषो नम उक्ति न जग्मुः ॥६॥ (७) | ४० |

|   |           |
|---|-----------|
| कस्त्वा छयति कस्त्वा विशास्ति कस्ते गात्राणि शम्यति । क उ ते शमिता कविः ॥१॥४१ |           |
| ऋतवस्त ऋतुथा पर्वे शमितारो वि शासतु ।   |           |
| संवत्सरस्य तेजसा शमीभिः शम्यन्तु त्वा ॥२॥                                     | ४२        |
| अर्धमासाः परुषि ते मामा आ छयन्तु शम्यन्तः ।                                   |           |
| अहोगात्राणि मरुतो विलिष्टं हृदयन्तु ते ॥३॥                                    | ४३        |
| दैव्या अध्वर्यवस्त्वा छयन्तु वि च शासतु ।                                     |           |
| गात्राणि पर्वशस्ते सिमाः कृण्वन्तु शम्यन्तीः ॥४॥                              | ४४ [१५०५] |

द्यौस्ते पृथिव्यन्तरिक्षं वायुश्छिद्रं पृणातु ते ।  
 सूर्यस्ते नक्षत्रैः सह लोकं कृणोतु साधुया ॥५॥ ४५  
 शं ते परेभ्यो गात्रेभ्यः शमस्त्वरेभ्यः ।  
 शमस्थभ्यो मज्जभ्यः शम्वस्तु तन्वै तव ॥६॥ (८) ४६

कः स्विदेकाकी चरति क उ खिज्जायते पुनः ।  
 कि९ स्विद्धिमस्य भेषजं किम्वावपनं महत् ॥१॥ ४७  
 सूर्य एकाकी चरति चन्द्रमा जायते पुनः ।  
 अग्निर्हिमस्य भेषजं भूमिरावपनं महत् ॥२॥ ४८  
 कि९ स्वित्सूर्यसमं ज्योतिः कि९ समुद्रसमं सरः ।  
 कि९ स्वित्पृथिव्यै वर्षीयः कस्य मात्रा न विद्यते ॥३॥ ४९  
 ब्रह्म सूर्यसमं ज्योतिर्द्यौः समुद्रसमं सरः ।  
 इन्द्रः पृथिव्यै वर्षीयान् गोस्तु मात्रा न विद्यते ॥४॥ ५०  
 पृच्छामि त्वा चितये देवसख यदि त्वमत्र मनसा जगन्थ ।  
 येषु विष्णुस्त्रिषु पदेष्वेष्टेष्टेषु विश्वं भुवनमा विवेशा ॥५॥ ५१  
 अपि तेषु त्रिषु पदेष्वस्मि येषु विश्वं भुवनमा विवेश ।  
 सद्यः पर्येमि पृथिवीमुत द्यामेकेनाङ्गेन दिवो अस्य पृष्ठम् ॥६॥ ५२  
 केष्वन्तः पुरुष आ विवेश कान्यन्तः पुरुषे अर्पितानि ।  
 एतद् ब्रह्मन्नुप वह्नामसि त्वा कि९ स्विन्नः प्रति वोचास्यत्र ॥७॥ ५३  
 पञ्चस्वन्तः पुरुष आ विवेश तान्यन्तः पुरुषे अर्पितानि ।  
 एतच्चात्र प्रतिमन्वानो अस्मि न मायया भवस्युत्तरो मत् ॥८॥ (९) ५४

का स्विदासीत्पूर्वचित्तिः कि९ स्विदासीद् बृहद्वयः ।  
 का स्विदासीत्पिलिप्पिला का स्विदासीत्पिशङ्गिला ॥१॥ ५५  
 द्यौरासीत्पूर्वचित्तिरथ आमीद् बृहद्वयः ।  
 अर्विरासीत्पिलिप्पिला रात्रिरासीत्पिशङ्गिला ॥२॥ ५६  
 का ईमरे पिशङ्गिला का ई कुरु पिशङ्गिला ।  
 क ईमा स्कन्दमर्षति क ई पन्थां वि सर्षति ॥३॥ ५७ [१५१८]

|  |           |
|--|-----------|
| अजारे पिशङ्गिला श्वावित्कुरु पिशङ्गिला ।                       |           |
| शश आस्कन्दमर्षत्यहिः पन्थां वि सर्पति ॥४॥                      | ५८        |
| कत्यस्य विष्टाः कत्यक्षराणि कति होमांसः कतिधा समिद्धः ।        |           |
| यज्ञस्य त्वा विदथा पृच्छमत्र कति होतार ऋतुशो यजन्ति ॥५॥        | ५९        |
| षळस्य विष्टाः शतमक्षराण्यशीतिर्होमाः समिधो ह तिस्रः ।          |           |
| यज्ञस्य ते विदथा प्र ब्रवीमि सप्त होतार ऋतुशो यजन्ति ॥६॥       | ६०        |
| को अस्य वेद भुवनस्य नाभिं को द्यावापृथिवी अन्तरिक्षम् ।        |           |
| कः सूर्यस्य वेद बृहतो जनित्रं को वेद चन्द्रमसं यतोजाः ॥७॥      | ६१        |
| वेदाहमस्य भुवनस्य नाभिं वेद द्यावापृथिवी अन्तरिक्षम् ।         |           |
| वेद सूर्यस्य बृहतो जनित्रमथो वेद चन्द्रमसं यतोजाः ॥८॥          | ६२        |
| पृच्छामि त्वा परमन्तै पृथिव्याः पृच्छामि यत्र भुवनस्य नाभिः ।  |           |
| पृच्छामि त्वा वृष्णो अश्वस्य रेतः पृच्छामि वाचः परमं व्योम ॥९॥ | ६३        |
| इयं वेदिः परो अन्तः पृथिव्या अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः ।         |           |
| अयं सोमो वृष्णो अश्वस्य रेतो ब्रह्मायं वाचः परमं व्योम ॥१०॥    | ६४        |
| मुभूः स्वयम्भूः प्रथमोऽन्तर्महत्यर्णवे ।                       |           |
| दुधे ह गर्भमृत्त्वियं यतो जातः प्रजापतिः ॥११॥                  | ६५        |
| होता यक्षत्प्रजापतिं सोमस्य महिम्नः ।                          |           |
| जुषतां पिबतु सोमं होतर्यज ॥१२॥                                 | ६६        |
| प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव ।          |           |
| यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥१३॥(१०) | ६७ [१५२८] |

हिरण्यगर्भो द्वे ॥ २ ॥ यः प्राणतो द्वे ॥ २ ॥ युजन्ति नव ॥ ९ ॥ वायुष्ट्वा षट् ॥ ६ ॥ प्राणाय तिस्रः ॥ ३ ॥

उत्सक्थ्या द्वादश ॥ १२ ॥ गायत्री षट् ॥ ६ ॥ कत्स्वा षट् ॥ ६ ॥ कः स्विदष्ट ॥ ८ ॥ का स्वित् त्रयोदश ॥ १३ ॥

॥ दशानुवाकेषु सप्तषष्टिः ॥ ६७ ॥

॥ इति शुक्लयजुःकाण्वसंहितायां पञ्चविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥



## अथ षड्विंशोऽध्यायः ।

- अश्वस्तूपरो गौमृगस्ते प्राजापत्याः कृष्णग्रीव आग्नेयो रराटे ।  
 पुरस्तात्सारस्वती मेघधस्ताद्वन्वोः ॥१॥ १
- आश्विना अधोरासौ बाह्वोः सौमापौष्णः श्यामो नाभ्यां सौर्ययामौ ।  
 श्वेतश्च कृष्णश्च पार्श्वयोः ॥२॥ २
- त्वाष्टौ लोमशसक्थौ सक्थ्योर्वीयव्यः श्वेतः पुच्छ इन्द्राय स्वपस्याय वेहद्वैष्णवो वामनः ।  
 रोहितो धूम्रोरोहितः कर्कन्धुरोहितस्ते सौम्या बभ्रुररुणबभ्रुः शुक्रबभ्रुस्ते वारुणाः ॥३॥ ३
- शितिरन्ध्रोऽन्यतः शितिरन्ध्रः समन्तशितिरन्ध्रस्ते सावित्राः शितिवाहुरन्यतः  
 शितिबाहुः समन्तशितिबाहुस्ते बार्हस्पत्याः ।  
 पृषती क्षुद्रपृषती स्थूलपृषती ता मैत्रावरुण्यः ॥४॥ ४
- शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः ।  
 श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामाः ॥५॥ ५
- अवल्लिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः । पृश्निस्तिरश्चीनपृश्निरूर्ध्वपृश्निस्ते मारुताः ॥६॥ ६
- फल्गूलोहितोर्णी पलक्षी ताः सारस्वत्यः ।  
 मीढाकर्णः शुण्ठाकर्णोऽध्यालोहकर्णस्ते त्वाष्टाः ॥७॥ ७
- कृष्णग्रीवः शितिकर्णोऽजिसक्थस्त ऐन्द्राग्राः ।  
 कृष्णाज्जिरल्पाज्जिर्महाज्जिस्त उषस्याः ॥८॥ ८
- शिल्पा वैश्वदेव्यो रोहिण्यस्त्र्यव्यो वाचेऽर्विज्ञाता अदित्यै ।  
 सरूपा धात्रे वत्सतयो देवानां पत्नीभ्यः ॥९॥ (३) ९

- कृष्णग्रीवा आग्नेयाः शितिभ्रजो वध्वनां रोहिता रुद्राणाम् ।  
 श्वेता अवरोकिण आदित्यानां नभोरूपाः पार्जन्याः ॥१॥ १०
- उन्नत ऋषभो वामनस्त ऐन्द्रावैष्णवा उन्नतः शितिबाहुः शितिपृष्ठस्त ऐन्द्राबार्हस्पत्याः ।  
 शुक्ररूपा वाजिनाः कल्माषा आग्निमारुताः श्यामाः पौष्णाः ॥२॥ ११
- एता ऐन्द्राग्रा द्विरूपा अग्नीषोमीया वामना अनड्वाह आग्नावैष्णवाः ।  
 वशा मैत्रावरुण्योऽन्यत अन्यो मैत्र्यः ॥३॥ १२
- कृष्णग्रीवा आग्नेया बभ्रवः सौम्याः श्वेता वायव्या अर्विज्ञाता अदित्यै ।  
 सरूपा धात्रे वत्सतयो देवानां पत्नीभ्यः ॥४॥ १३ [१५४१]

कृष्णा भौमा धूम्रा अन्तरिक्षा बृहन्तो दिव्याः ।

शबला वैद्यताः सिध्मास्तारकाः ॥५॥ (२)

१४

धूम्रान्वसन्तायालभते श्वेतान्ग्रीष्माय कृष्णान्वर्षाभ्योऽरुणाञ्छरदे ।

पृषतो हेमन्ताय पिशङ्गाञ्छिशिराय ॥१॥

१५

ज्यवयो गायत्र्यै पञ्चावयस्त्रिष्टुभे दित्यवाहो जगत्स्यै ।

त्रिवत्सा अनुष्टुभे तुर्यवाह उष्णिहे ॥२॥

१६

पष्ठवाहो विराज उक्षाणो बृहत्या ऋषभाः क्रकुभे ।

अनड्वाहः पङ्क्त्यै धेनवोऽतिच्छन्दसे ॥३॥

१७

कृष्णग्रीवा आग्नेया बभ्रवः सौम्या उपध्वस्ताः सावित्रा वत्सतर्धः सारस्वत्यः इयामाः पौष्णाः ।

पृश्नयो मारुता बहुरूपा वैश्वदेवा वशा द्यावापृथिवीयाः ॥४॥

१८

उक्ताः संचरा एता ऐन्द्राग्नाः ।

कृष्णा वारुणाः पृश्नयो मारुताः कायास्तूपराः ॥५॥ (३)

१९

अग्नयेऽनीकवते प्रथमजानालभते मरुद्भ्यः सान्तपनेभ्यः सवात्यान्मरुद्भ्यो गृहमेधिभ्यो बर्हिहान् ।

मरुद्भ्यः क्रीळिभ्यः ससृष्टान्मरुद्भ्यः स्वतवद्भ्योऽनुसृष्टान् ॥१॥

२०

उक्ताः संचरा एता ऐन्द्राग्नाः । प्राशृङ्गा माहेन्द्रा बहुरूपा वैश्वकर्मणाः ॥२॥

२१

धूम्रा बभ्रुनीकाशाः पितृणां सोमवतां बभ्रवो धूम्रनीकाशाः पितृणां बर्हिषदाम् ।

कृष्णा बभ्रुनीकाशाः पितृणामग्निष्वात्तानां कृष्णाः पृषन्तस्त्रैयम्बकाः ॥३॥

२२

उक्ताः संचरा एताः शुनामीरीयाः । श्वेता वायव्याः श्वेताः सौर्याः ॥४॥

२३

वसन्ताय कपिञ्जलानालभते ग्रीष्माय कलविङ्कान्वर्षाभ्यस्तित्तिरीञ्छरदे वर्तिकाः ।

हेमन्ताय ककराञ्छिशिराय विककरान् ॥५॥ (४)

२४

समुद्राय शिशुमाराणालभते पर्जन्याय मण्डूकानद्भ्यो मत्स्यान् ।

मित्राय कुलीपयान्वरुणाय नाकान् ॥१॥

२५

सोमाय हस्सानालभते वायवे बलाका इन्द्राग्निभ्यां क्रुञ्चान् ।

मित्राय मद्गन्वरुणाय चक्रवाकान् ॥२॥

२६

अग्नये कुटरुणालभते वनस्पतिभ्य उलूकानग्नीषोमाभ्यां चाषान् ।

अश्विभ्यां मयूरांश्मित्रावरुणाभ्यां कपोतान् ॥३॥

२७ [१५५५]

सोमाय लबानालभते त्वष्ट्रे कौलीकान्गोपादीर्देवानां पत्नीभ्यः ।

कुलीका देवजामिभ्योऽग्र्ये गृहपतये पारुष्णान् ॥४॥

२८

अह्ने पारावतानालभते राज्ये सीचापूरहोरात्रयोः संधिभ्यो जतूः ।

मासेभ्यो दात्यौहान्तसैवत्सराय महतः सुपर्णान् ॥५॥ (५)

२९

भूम्यां आखनालभतेऽन्तरिक्षाय पाङ्कत्रान्दिवे कशान् ।

दिग्भ्यो नकुलान्वभृकानवान्तरदिशाभ्यः ॥१॥

वसुभ्य ऋश्यानालभते रुद्रेभ्यो रुरुनादित्येभ्यो न्यङ्गान् ।

विश्वेभ्यो देवेभ्यः पृथतान्तसाध्येभ्यः कुलुङ्गान् ॥२॥

ईशानाय परस्वत आलभते मित्राय गौरान्वरुणाय महिषान् ।

बृहस्पतये गव्यास्त्वष्ट्र उष्ट्रान् ॥३॥

प्रजापतये पुरुषान् हस्तिन आलभते वाचे सुषीन् ।

चक्षुषे मशकाञ्छ्रोत्राय भृङ्गाः ॥४॥

प्रजापतये च वायवे च गोमृगो वरुणायारण्यो मेघो यमाय कृष्णो मनुष्यराजाय मर्कटः ।

शार्दूलाय रोहिदृषभाय गव्या क्षिप्रश्येनाय वर्तिका नीलङ्गोः क्रिमिः समुद्राय

शिशुमारो हिमवते हस्ती ॥५॥ (६)

३४

मयुः प्राजापत्य उलो हालिङ्गो वृषदस्वस्ते धात्रे दिशां कङ्को धुङ्क्षाग्नेयी ।

कलविङ्को लोहितहिः पुष्करसादस्ते त्वाष्ट्रा वाचे क्रुञ्चः ॥१॥

३५

सोमाय कुलुङ्ग आरण्योऽजो नकुलः शक्रा ते पौष्णाः क्रोष्टा मायोरिन्द्रस्य गौरमृगः ।

पिद्रो न्यङ्कुः कक्कटस्तेऽनुमत्यै प्रतिश्रुत्कायै चक्रवाकः ॥२॥

३६

सौरी बलाका शार्गः सृजयः श्याण्डकस्ते मैत्राः सरस्वत्यै शारिः पुरुषवाक् श्वाविङ्गौमी ।

शार्दूलो वृकः पृदाहुस्ते मन्यवे सरस्वते शुक्रः पुरुषवाक् ॥३॥

३७

सुपर्णः पार्जन्य आतिर्वाहसो दर्विदा ते वायवे बृहस्पतये वाचस्पतये पैङ्गराजोऽलज आन्तरिक्षः ।

श्रवो मदगुर्मत्स्यस्ते नदीपतये द्यावापृथिवीर्यः कूर्मः ॥४॥

३८

पुरुषमृगश्चन्द्रमसो गोधा कालका दार्वाघाटस्ते वनस्पतीनां कृकवाकुः सावित्रो हस्वसो वातस्य ।

नाक्रो मर्करः कुलीपयस्तेऽङ्गपारस्य द्वियै शल्यकः ॥५॥ (७)

३९

एण्यह्नौ मण्डको मूर्षिका तित्तिरिस्ते सर्पाणां लोपाश आश्विनः कृष्णो राज्यै ।

ऋक्षो जतूः सुषिलीका त इतरजनानां जहका वैष्णवी ॥१॥

४० [१५६८]

अन्यवापोंऽर्धमासानामृशो मयूरः सुपर्णस्ते गन्धर्वाणामपामुद्रो मासां कश्यपः ।

रोहितकुण्डुणाचीं गोलत्तिका तैऽप्सरसां मृत्युवैऽसितः ॥२॥

४१

वर्षाहूँतूनामाखुः कशो मान्थालस्ते पितृणां बलायाजगरो वधूनां कपिञ्जलः ।

कपोत उल्लूकः शशस्ते निर्ऋत्यै वरुणायाऽण्यो मेषः ॥३॥

४२

श्वित्र आदित्यानामुष्ट्रो घृणीवान्वाध्रीनसस्ते मृत्या अरण्याय सृमरो रुरु रौद्रः ।

कार्यः कुटर्दार्त्यौहस्ते वाजिनां कामाय पिकः ॥४॥

४३

खड्गो वैश्वदेवः श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षस्ते रक्षसामिन्द्राय सूकरः ।

सेहो मारुतः कृकलासः पिर्पका शकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः ॥५॥ (८) ४४ [१५७२]

अश्वस्तूपरो नव ॥ १ ॥ कृष्णग्रीवा पञ्च ॥ ५ ॥ धूम्रान्वसन्ताय पञ्च ॥ ५ ॥ अग्नयेऽनीकवते

पञ्च ॥ ५ ॥ समुद्राय शिशुमारान् पञ्च ॥ ५ ॥ भूम्या आखून् पञ्च ॥ ५ ॥ मयुः

प्राजापत्य पञ्च ॥ ५ ॥ पण्यह इति पञ्च ॥ ५ ॥

॥ अष्टानुवाकेषु चतुश्चत्वारिंशत् ॥ ४४ ॥

॥ इति शुक्लयजुःकाण्वसंहितायां षड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

### अथ सप्तविंशोऽध्यायः ।

॥ दं दद्भिस्वकां दन्तमूलैर्मृदं वस्वैस्तेगान्दष्टाभ्यां सरस्वत्या अग्रजिह्वं जिह्वाया उत्सादम् ।

वक्रन्देन तालु वाजुं हनुभ्यामप आस्येन वृषणमाण्डाभ्याम् ॥१॥

१

आदित्यान् श्मश्रुभिः पन्थानं ध्रुव्यां द्यावापृथिवी वतींभ्यां विद्युतं कनीनकाभ्याम् ।

शुक्लाय स्वाहा कृष्णाय स्वाहा पार्याणि पक्ष्माण्यवार्या इक्ष्वोऽवार्याणि पक्ष्माणि

पार्या इक्ष्वः ॥२॥ (१)

२

वातं प्राणेनापानेन नार्सिके उपयाममधरेणाष्ठेन सदुत्तरेण ।

प्रकाशेनान्तरमनूकाशेन बाह्यं निवेषं मूर्ध्ना स्तनयितुं निर्वाधेनाशनिं मस्तिष्केण विद्युतं

कनीनकाभ्याम् ॥१॥

३

णीभ्यां श्रोत्रं श्रोत्राभ्यां कर्णौ तेदनीमधरकण्ठेनापः शुष्ककण्ठेन चित्तं मन्याभिः ।

॥ दितिः शीर्ष्णा निर्ऋतिं निर्जर्जल्येन शीर्ष्णा मँक्रोशैः प्राणान् रेष्माणं स्तुपेन ॥२॥ (२) ४

मशकान्केऽरिन्द्रं स्वर्पमा वहेन बृहस्पतिं शकुनिसादेन कूर्मान् ।

अफैराक्रमणं स्थराभ्यामश्वलाभिः कपिञ्जलान् ॥१॥

५ [१५७३]

ज्वं जङ्घाभ्यामध्वानं बाहुभ्यां जाम्बीलेनारण्यमग्निमतिरुग्भ्याम् ।

पूषणं दोभ्यामश्विना अ॒साभ्या॑ रु॒द्र॑ रोराभ्याम् ॥२॥ (३)

६

अग्नेः पक्षतिर्वायोनिपक्षतिरिन्द्रस्य तृतीयापां चतुर्थी ।

अदित्यै पञ्चमीन्द्राण्यै षष्ठी मरुता॑ सप्तमी बृहस्पतैरष्टमी ।

अर्यम्णो नवमी धातुर्दशमीन्द्रस्यैकादशी वरुणस्य द्वादशी यमस्य त्रयोदशी ॥१॥ (४) ७

इन्द्राग्नयोः पक्षतिः सरस्वत्यै निपक्षतिर्मित्रस्य तृतीया सोमस्य चतुर्थी ।

निर्ऋत्यै पञ्चम्यग्नीषोमयोः षष्ठी सर्पाणां॑ सप्तमी विष्णोरष्टमी ।

पूष्णो नवमी त्वष्टुर्दशमीन्द्रस्यैकादशी वरुणस्य द्वादशी यम्यै त्रयोदशी ।

द्यावापृथिव्योर्दक्षिणं पार्श्वं विश्वेषां देवानामुत्तरम् ॥१॥ (५)

८

मरुता॑ रु॒द्राणां॑ द्वितीयादित्यानां तृतीया वायोः पुच्छ-  
मग्नीषोमयोर्भासदा॑ । क्रुञ्चौ श्रोणिभ्यामिन्द्राबृहस्पती॑ ऊरुभ्यां मित्रावरुणा॑ अल्गाभ्यामाक्रमणं॑  
स्थूराभ्यां बलं॑ कुष्ठाभ्याम् ॥१॥ (६)

९

पूषणं वनिष्ठुनान्धाहीन्स्थूलगुदयां सर्पान्गुदाभिर्विहुतं॑ आन्त्रैरपो वस्तिना॑ वृषणमाण्डाभ्याम् ।  
वाजिनं॑ शेपेन प्रजा॑ रेतसा॑ चापान्पिचेन॑ प्रदुरान्पायुना॑ कूश्माञ्छकपिण्डैः ॥१॥ (७) १०

इन्द्रस्य क्रोळोऽदित्यै पाजस्य॑ दिशां जत्रवोऽदित्यै भसत् ।

जीमूतान्हृदयौपशेनान्तरिक्षं॑ पुरीततां ॥१॥

११

नभ उदर्येण चक्रवाकौ मतस्नाभ्यां दिवं वृक्षाभ्यां गिरीन्मृगशिभिः ।

उपलान्छीह्वा वल्मीकान्छोमभिर्गलैर्भिर्गुल्मान्हिराभिः॑ स्रवन्तीः ।

हृदान्कुक्षिभ्यां॑ समुद्रमुदरेण वैश्वानरं॑ भस्मना ॥२॥ (८)

१२

विधृतिं नाभ्यां घृतं॑ रसेनापो यूष्णा मरीचीर्विप्रुडभिर्नाहारमूष्मणां॑ शीनं वसया॑ पुष्वा अश्रुभिः ।

हादुनीर्दूषीकाभिरस्ना रक्षा॑सि चित्राण्यङ्गैर्नेक्षत्राणि॑ रूपेण॑ पृथिवीं त्वचा जुम्बकाय॑

स्वाहा ॥१॥ (९)

१३

हिरण्यगर्भः॑ समवर्तताग्रे॑ भूतस्य॑ जातः पतिरेक आसीत् ।

स दाधार॑ पृथिवीं द्यामुतेमां॑ कस्मै॑ देवाय॑ हविषा॑ विधेम ॥१॥

१४

यः प्राणतो॑ निमिषतो॑ महित्वैक इद्राजा॑ जगतो॑ बभूव ।

य ईशे॑ अस्य॑ द्विपदश्चतुष्पदः॑ कस्मै॑ देवाय॑ हविषा॑ विधेम ॥२॥

१५ [१५८७]

- यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रः रसया सहाहुः ।  
 यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥३॥ १६
- य आत्मदा बलदा यस्य विश्वं उपासते प्रशिषं यस्य देवाः ।  
 यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥४॥ (१०) १७
- आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धामो अपरीतास उद्भिदः ।  
 देवा नो यथा सदाभिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ॥१॥ १८
- देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानां रातिरभि नो निर्वर्तताम् ।  
 देवानां सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥२॥ १९
- तान्पूर्वया निविदा हूमे वयं भगं मित्रमदिति दक्षमसिधम् ।  
 अर्यमणं वरुणं सोममश्विना सरस्वती नः मुभगा मयस्करत् ॥३॥ २०
- तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः ।  
 तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिण्या युवम् ॥४॥ २१
- तमीशानं जगतस्तस्थुस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमे वयम् ।  
 पूषा नो यथा वेदसामसदृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥५॥ २२
- स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।  
 स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥६॥ २३
- ष्टपदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानो विदथेपु जग्मयः ।  
 अग्निजिह्वा मनवः सरचक्ष्मो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह ॥७॥ २४
- भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।  
 स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ॥८॥ २५
- शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसे तनूनाम् ।  
 पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ॥९॥ २६
- अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता म पुत्रः ।  
 विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॥१०॥ (११) २७

मा नो मित्रो वरुणो अर्यमायुरिन्द्रं ऋभुक्षा मरुतः परिरुयन् ।

यद्वाजिनो देवजातस्य सप्तैः प्रवक्ष्यामो विदथे वीर्याणि ॥१॥

|  |           |
|--|-----------|
| यन्निर्णिजा रेक्णसा प्रावृतस्य गतिं गृभीतां मुखतो नयन्ति ।         |           |
| सुप्राड्जो मेम्यद्विश्चरूप इन्द्रापूष्णोः प्रियमप्येति पार्थः ॥२॥  | २९        |
| एष च्छागः पुरो अश्वेन वाजिनां पूष्णो भागो नीयते विश्वदैव्यः ।      |           |
| अभिप्रियं यत्पुरोळाशमर्वता त्वष्टेदेनः सौश्रवसाय जिन्वति ॥३॥       | ३०        |
| यद्विष्यमृतुशो देवयानं त्रिर्मानुषाः पर्यश्वं नयन्ति ।             |           |
| अत्रा पूष्णः प्रथमो भाग एति यज्ञं देवेभ्यः प्रतिवेदयन्नजः ॥४॥      | ३१        |
| होताध्वर्युरावया अग्निमिन्धो ग्रावग्राभ उत शःस्ता सुविप्रः ।       |           |
| तेन यज्ञेन स्वरंकृतेन स्विष्टेन वक्षणा आ पृणध्वम् ॥५॥              | ३२        |
| यूपवस्का उत ये यूपवाहाश्चपालं ये अश्वयूपाय तक्षति ।                |           |
| ये चार्वते पचनः संभरन्त्युतो तेषामभिगूर्तिर्न इन्वतु ॥६॥           | ३३        |
| उप प्रागात्सुमन्मेऽधायि मन्म देवानामाशा उप वीतपृष्ठः ।             |           |
| अन्वेनं विग्रा कपयो मदन्ति देवानां पुष्टे चक्रमा सुवन्धुम् ॥७॥     | ३४        |
| यद्वाजिनो दामं संदानमर्वतो या शीर्षिण्या रजना रज्जुरस्य ।          |           |
| यद्वा घास्य प्रभृतमास्ये तृणः सर्वा ता ते अपि देवेष्वस्तु ॥८॥ (१२) | ३५        |
| यदश्वस्य क्रविषा मक्षिकाश यद्वा स्वर्गं स्वधितो रिप्तमस्ति ।       |           |
| यद्वस्तेयोः शमितुर्यन्त्रेषु सर्वा ता ते अपि देवेष्वस्तु ॥९॥       | ३६        |
| यद्वर्धयमदरस्यापवाति य आमस्य क्रविषो गन्धो अस्ति ।                 |           |
| सुकृता तच्छ्रितारः कृण्वन्तु मेधः श्रुतपाकं पचन्तु ॥१०॥            | ३७        |
| यत्ते गात्रादुग्रिनां पच्यमानादुभि शूलं निहतस्यावधारति ।           |           |
| मा तद्धम्यामाश्लिषन्मा तृणेषु देवेभ्यस्तदुशद्भ्यो रातमस्तु ॥११॥    | ३८        |
| ये वाजिनं परिपश्यन्ति पक्वं य ईमाहुः सुरभिर्निर्हरेति ।            |           |
| ये चार्वतो माःसभिक्षामुपासत उतो तेषामभिगूर्तिर्न इन्वतु ॥१२॥       | ३९        |
| यन्नीक्षणं माःस्पचन्या उखाया या पात्राणि यूष्ण असेचनानि ।          |           |
| ऊष्मण्यापिधानां चरूणामङ्गाः सूनाः परि भूषन्त्यश्वम् ॥१५॥           | ४०        |
| मा त्वग्निध्वन्यीद्धमगन्धिर्मोखा भ्राजन्त्यभि विक्त जघ्निः ।       |           |
| इष्टं वीतमभिगूर्तं वर्षत्कृतं तं देवासः प्रति गृभ्णन्त्यश्वम् ॥१६॥ | ४१ [१६१३] |

निक्रमणं निषदंनं विवर्तनं यच्च पङ्क्तिशमर्वतः ।

यच्च पपौ यच्च घ्रासिं जघाम सर्वा ता ते अपि देवेष्वस्तु ॥७॥ (१३)

४२

यदश्वाय वास उपस्तुणन्त्यधीयासं या हिरण्यान्यस्मै ।

संदानमर्वन्तं पङ्क्तिशं प्रिया देवेष्वामयन्ति ॥१॥ (१४)

४३

इमा नु कं भुवना सीषधामेन्द्रश्च विश्वे च देवाः ।

आदित्यैरिन्द्रः सर्गणो मरुद्भिरस्मभ्यं भेषजां कर्तु ।

यज्ञं च नस्तन्वं च प्रजां चादित्यैरिन्द्रः सह सीषधाति ॥१॥

४४

अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता शिवो भवा वरुण्यः ।

वसुभिर्वसुश्रवा अच्छां नक्षि द्युमत्तमं रयिं दाः ।

तं त्वां शोचिष्ठ दीदिवः सुभ्राय नूनमीमहे सखिभ्यः ॥२॥ (१५)

४५ [१६१७]

शाद दद्भिर्हे ॥२॥ वातं प्रागेन हे ॥२॥ मशकान्केशैरिति हे ॥२॥ अग्ने पक्षतिरेका ॥१॥ इन्द्राग्न्योः

पक्षतिरेका ॥१॥ मारुताः स्कन्धा एका ॥१॥ पूषणं वनिष्ठनेत्येका ॥१॥ इन्द्रस्य क्रोळो हे ॥२॥

विधृतिमेका ॥१॥ हिरण्यगर्भश्चतस्रः ॥४॥ आ नो दश ॥१०॥ मा नोऽष्ट ॥८॥

यदश्वस्य सप्त ॥७॥ यदश्वायैका ॥१॥ इमा नु कं हे ॥२॥

पञ्चदशानुवाकेषु पञ्चचत्वारिंशत् ॥४५॥

॥ इति शुक्लयजुःकाण्वसंहितायां सप्तविंशोऽध्यायः ॥२७॥

### अथाष्टाविंशोऽध्यायः ।

अग्निश्च पृथिवी च संनते ते मे सं नमतामदो वायुश्चाऽन्तरिक्षं च संनते ते मे सं नमतामद

आदित्यश्च द्यौश्च संनतु ते मे सं नमतामद आपश्च वरुणश्च संनते ते मे सं नमतामदः ।

सप्त सप्तसदो अष्टमी भूतमाधेनी ॥१॥

१

मकामोऽ अध्वनस्करु संजानमस्तु मेऽमुना ।

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनैभ्यः ॥२॥

२

ब्रह्मराजग्न्याभ्यां शुद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च ।

प्रियो देवानां दक्षिणाय दातुर्गृह भूयाममयं मे कामः समृध्यतामुप मादो नमतु ॥३॥ (१)

३

वृहस्पते अति यदयो अर्हद् द्युमद्भिभाति कर्तुमज्जनेषु ।

यद्दीदयच्छवंम कृतप्रजातु तदस्मामु द्रविणं धेहि चित्रम् ।

उपयामगृहीतोऽमि वृहस्पतये त्वेष ते योनिर्वृहस्पतये त्वा ॥१॥ (२)

४ [१६२१]



- इन्द्र गोमन्निहा याहि पिवा सोमं शतक्रतो । विद्यद्भिर्ग्रावभिः सुतम् ।  
उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा गोमेत एष ते योनिरिन्द्राय त्वा गोमेते ॥१॥ (३) ५
- ऋतावानं वैश्वानरमुतस्य ज्योतिषस्पतिम् । अजस्रं घर्ममीमहे ।  
उपयामगृहीतोऽसि वैश्वानराय त्वैष ते योनिर्वैश्वानराय त्वा ॥१॥ (४) ६
- वैश्वानरं हवामह ऋतस्य ज्योतिषस्पतिम् । अजस्रं घर्ममीमहे ।  
उपयामगृहीतोऽसि वैश्वानराय त्वैष ते योनिर्वैश्वानराय त्वा ॥१॥ (५) ७
- वैश्वानरो न ऊतय आ प्र यातु पगवतः । अग्निरुक्थेन वाहमा ।  
उपयामगृहीतोऽसि वैश्वानराय त्वैष ते योनिर्वैश्वानराय त्वा ॥१॥ (६) ८
- वैश्वानरस्य सुमतौ स्याम राजा हि कं भुवनानामभिथ्रीः ।  
इतो जातो विश्वमिदं वि चष्टे वैश्वानरो यतते सूर्येण ।  
उपयामगृहीतोऽसि वैश्वानराय त्वैष ते योनिर्वैश्वानराय त्वा ॥१॥ (७) ९
- मरुत्वोर इन्द्र वृषभो रणाय पिवा सोममनुवृधं मदाय ।  
आसिश्चस्व जठरे मध्वं ऊर्मि त्वं राजामि प्रतिपत्सुतानाम् ।  
उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा मरुत्वत एष ते योनिरिन्द्राय त्वा मरुत्वते ॥१॥ (८) १०
- महोर इन्द्रो वज्रहस्तः पोळशी शर्म यच्छतु । हन्तुं पाप्मानं योऽस्मान्द्वेष्टि ।  
उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा पोळशिन एष ते योनिरिन्द्राय त्वा पोळशिन ॥१॥ (९) ११
- अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः । तमीमहे महागयम् ॥१॥ (१०) १२
- अनु वीरैरनु पुष्यास्म गोभिरन्वश्चैरनु सर्वेण पुष्टैः ।  
अनु द्विपदानु चतुष्पदा वयं देवा नो यज्ञमृतुथा नयन्तु ॥१॥ (११) १३
- आ नो गोत्रा ददद्दि गोपते गाः समस्मभ्यं सनयो यन्तु वाजाः ।  
दिवक्षा असि वृषभ सत्यशुभोऽस्मभ्यं सुमघवन् वोधि गोदाः ॥१॥ (१२) १४ [१६३१]

अग्निश्च तिस्रः ॥३॥ बृहस्पत एका ॥१॥ इन्द्र गोमघेका ॥१॥ ऋतावानमेका ॥१॥ वैश्वानरमेका ॥१॥  
वैश्वानर एका ॥१॥ वैश्वानरस्य सुमतावेका ॥१॥ मरुत्वोर इन्द्र एका ॥ महोर इन्द्र एका ॥१॥  
अग्निर्ऋषिरेका ॥१॥ अनुवीरैरेका ॥१॥ आ नो गोत्रा इत्येका ॥१॥ द्वादशानुवाकेषु चतुर्दश ॥१४॥

॥ इति शुक्लयजुःकाण्वसंहितायां अष्टाविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥

## अथैकोनत्रिंशोऽध्यायः ।

समास्त्वाग्र ऋतवो वर्धयन्तु संवत्सरा ऋषयो यानि सत्या ।

सं दिव्येन दीदिहि रोचनेन विश्वा आ भाहि ग्रदिश्वतंसः ॥१॥

१

सं चेध्यस्वाग्ने प्र च बोधयैनमुच्च तिष्ठ महते मौभगाय ।

मा च रिषदुपसत्ता ते अग्ने ब्रह्माणस्ते यशसः सन्तु मान्ये ॥२॥

२

त्वामग्ने वृणते ब्राह्मणा इमे शिवो अग्ने संवर्णे भवा नः ।

सपत्नहा नो अभिमातिजिच्च स्वे गये जागृह्यप्रयुच्छन् ॥३॥

३

इहैवाग्ने अर्धं धारया रयिं मा त्वा नि कृन्पूर्वचितो निकारिणः ।

क्षत्रमग्ने सुयममस्तु तुभ्यमुपसत्ता वर्धतां ते अनिष्टृतः ॥४॥

४

क्षत्रेणाग्ने स्वायुः स रभस्व मित्रेणाग्ने मित्रधेये यतस्व ।

सजातानां मध्यमस्था एधि राज्ञामग्ने विहव्यो दीदिहीह ॥५॥

५

अति निहो अति मिधोऽत्यचित्तिमत्यर्गतिमग्ने ।

विश्वा ह्यग्ने दुरिता महस्वाथास्सभ्य रं महवीर रं रयिं दाः ॥६॥

६

अनाधृष्यो जातवेदा अनिष्टृतो विराळग्ने क्षत्रभृदीदिहीह ।

विश्वा आशाः प्रमुञ्चन्मानुषीभिः शिवाभिर्गय परि पाहि नो वृधे ॥७॥

७

वृहस्पते सवितर्बोधयैन रं स रं शितं चिन्संतरा रं म रं शिशाधि ।

वर्धयैनं महते मौभगाय विश्वं एनुमन्तु मदन्तु देवाः ॥८॥

८

अमुत्रभूयादधु यद्यमस्य वृहस्पते अभिशस्तेरमुञ्चः ।

प्रत्योहतामश्विना मन्युमस्माद्देवानामग्ने भिषजा शर्चाभिः ॥९॥

९

उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम् ।

देवं देवत्रा सूर्यमर्गन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥१०॥ (१)

१०

ऊर्ध्वा अस्य समिधो भवन्त्यूर्ध्वा शुक्रा शोची र्यग्नेः ।

द्युमत्तमा सुप्रतीकस्य सूनोः ॥१॥

११

तनुनपादसुरो विश्ववेदा देवो देवेषु देवः । पथो अनक्तु मध्वा घृतेन ॥२॥

१२

मध्वा यज्ञं नक्षसे प्रीणानो नराश र्यो अग्ने । सुकृद्देवः सविता विश्ववागः ॥३॥

१३

अच्छायमेति शर्वसा घृतेनलानो वह्निर्ममा । अग्नि रं स्रुचो अध्वरेषु प्रयत्सु ॥४॥

१४

स यक्षदस्य महिमानमग्नेः स ई मन्त्रा सुप्रयसः । वमुश्चेतिष्ठो वमुधातमश्च ॥५॥ १५ [१६४६]

द्वारो देवीरन्वस्य विश्वे व्रता ददन्ते अग्नेः । उरुव्यचंसो धाम्ना पत्यमानाः ॥६॥ १६  
 ते अस्य योषणे दिव्ये न योना उपासानक्ता । इमं यज्ञमवतामध्वरं नः ॥७॥ १७  
 दैव्या होतारा ऊर्ध्वमध्वरं नोऽप्रेर्जिह्वामभि गृणीतम् । कृणुतं नः स्विष्टिम् ॥८॥ १८  
 तिस्रो देवीर्वहिरेदं सद्दन्तिवळा सरस्वती भारती । मही गृणाना ॥९॥ १९  
 तन्नस्तुरीपमद्भुतं पुरुक्षु त्वष्टा सुवीरम् । रायस्पोषं वि प्र्यतु नाभिमुखे ॥१०॥ २०  
 वनस्पतेस्व सृजा रराणस्तमना देवेषु । अग्निर्हव्यं शमिता स्रदयाति ॥११॥ २१  
 अग्ने स्वाहा कृणुहि जातवेद इन्द्राय हव्यम् ।  
 विश्वे देवा हविरिदं जुषन्ताम् ॥१२॥ (२) २२

पीवो अन्ना रयिवृधः सुमेधाः श्वेतः मिषक्ति नियुतामभिथ्रीः ।  
 ते वायवे समनमो वि तस्थुर्विश्वेन्नरः स्वपत्यानि चक्रुः ॥१॥ २३  
 राये नु यं जज्ञतू रोदसीमे राये देवी धिषणा धाति देवम् ।  
 अथ वायुं नियुतः सश्वत स्वा उत श्वेतं वमुधिति निरेके ॥२॥ २४  
 वायुरग्रेगा यज्ञप्रीः साकं गन्मनसा यज्ञम् ।  
 शिवो नियुद्धिः शिवाभिः ॥३॥ २५  
 प्र याभिर्यासि दाश्वाः समच्छा नियुद्धिर्वाय इष्टये दुरोणे ।  
 नि नो रयिं मुभोजसं युवस्व नि वीरं गव्यमश्व्यं च राधः ॥४॥ २६  
 वायो ये ते सहस्रिणो रथास्तेभिरा गहि । नियुत्वान्तसोमपीतये ॥५॥ २७  
 एकया च दशभिश्च स्वभूते द्वाभ्यामिष्टये विंशती च ।  
 तिसृभिश्च वहंसं त्रिंशतां च नियुद्धिर्वाय इह ता वि मुञ्च ॥६॥ २८  
 नियुत्वान्वाय आ गह्यं शुक्रो अयामि ते । गन्तासि सुन्वतो गृहम् ॥७॥ २९  
 वायो शुक्रो अयामि ते मध्वो अग्रं दिविष्टिषु ।  
 आ याहि सोमपीतये स्पाहो देव नियुत्वता ॥८॥ ३०  
 आ नो नियुद्धिः शतिनीभिरध्वरं सहस्रिणीभिरुप याहि यज्ञम् ।  
 वायो अस्मिन्त्सर्वने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥९॥ ३१  
 तव वाय क्रतस्पते त्वष्टृर्जामातरद्भुत । अवास्या वृणीमहे ॥१०॥ (३) ३२

हिरण्यगर्भ इत्येषः । येन द्यौरग्रा पृथिवी च दृढा येन स्व स्तमितं येन नाकः ।

यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥१॥

|  |           |
|--|-----------|
| यं क्रन्दसी अवसा तस्तमाने अभ्यैक्षेतां मनसा रेजमाने ।                |           |
| यत्राधि सूर उर्दितो विभाति कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥२॥               | ३४        |
| आपो ह यद्धृतीर्विश्वमायन्गर्भं दधाना जनयन्तीरग्निम् ।                |           |
| ततो देवानां समवर्ततासुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥३॥               | ३५        |
| यश्चिदापो महिना पर्यपश्यदक्षं दधाना जनयन्तीर्यज्ञम् ।                |           |
| यो देवेष्वधि देव एक आसीत्कस्मै देवाय हविषा विधेम ।                   |           |
| मा नो हिंसीजनिता यः पृथिव्या यो वा दिवं मत्यधर्मा जजान ।             |           |
| यश्चापश्चन्द्रा बृहतीर्जजान कस्मै देवाय हविषा विधेम ।                |           |
| प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा ज्ञातानि परि ता बभूव ।              |           |
| यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥४॥ (४)        | ३६        |
| अग्न आरूँपि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः । आरे वाधस्व दुच्छुनाम् ॥१॥       | ३७        |
| अग्ने पर्वस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम् । दधद्रयि मयि पोषम् ॥२॥    | ३८        |
| अग्निकृषिः पर्वमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः । तमीमहे महागयम् ॥३॥         | ३९        |
| अभि त्वा शूर नोनुमोऽदग्धा इव धेनवः ।                                 |           |
| ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः ॥४॥                       | ४०        |
| न त्वावोँर अन्यो दिव्यो न पार्थिवो न ज्ञातो न जनिष्यते ।             |           |
| अध्वान्तो मधवन्निन्द्र वाजिनो गव्यन्तस्त्वा हवामहे ॥५॥               | ४१        |
| त्वामिद्धि हवामहे मातौ वाजस्य कागवः ।                                |           |
| त्वां वृत्रेष्विन्द्र मत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्वर्धतः ॥६॥           | ४२        |
| म त्वं नश्चित्र वज्रहस्त धृष्ण्या महः स्तवानो अद्रिवः ।              |           |
| गामश्च रथ्यामिन्द्र मं किं मत्रा वाजं न जिग्युषे ॥७॥                 | ४३        |
| कया नश्चित्र आ भुवदृता मदावृधः सखा । कया शचिष्ठया वृता ॥८॥           | ४४        |
| कस्त्वा मन्यो मदानां मंहिष्ठो मन्मदन्धमः । हृह्वा चिद्वारुजे वसु ॥९॥ | ४५        |
| अभी पु णः सखीनामविता जरितृणाम् । शतं भवास्युतये ॥१०॥                 | ४६        |
| यज्ञायज्ञा वो अग्रये गिरागिरा च दक्षसे ।                             |           |
| प्रप्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शंमिपम् ॥११॥                 | ४७        |
| ऊर्जा नपातं म हिनायमस्मयुर्दाशम हव्यदातये ।                          |           |
| भुवद्वाजेष्वाविता भुवद्बुध उत त्राता तनूनाम् ॥१२॥ (५)                | ४८ [१६७९] |

संवत्सरोऽसि परिवत्सरोऽसीदावत्सरोऽसीद्वत्सरोऽसि वत्सरोऽसि ।

उषस्ते कल्पन्तामहोरास्ते कल्पन्तामर्धमास्ते कल्पन्ता मासास्ते कल्पन्तामृतवस्ते  
कल्पन्ताऽ संवत्सस्ते कल्पताम् ॥१॥

४९

प्रेत्या एतै सं चाश्च प्र च सारय ।

सुपर्णचिदसि तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवः सीद ॥२॥ (६)

५० [१६८१]

समास्त्वा दश ॥ १० ॥ ऊर्ध्वा द्वादश ॥ १२ ॥ पवित्रा अत्रान्दश ॥ १० ॥ हिरण्यगर्भश्चतस्रः ॥ ४ ॥

अग्न आयुः पि द्वादश ॥ १२ ॥ संवत्सरो द्वे ॥ २ ॥ पटनुवांकपु पञ्चाशत् ॥ ५० ॥

॥ इति शुक्लयजुःकाण्वसंहितायां एकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥२९॥

### अथ त्रिंशोऽध्यायः ।

होता यक्षत्समिधेन्द्रमिळस्पदे नाभा पृथिव्या अधि ।

दिवो वर्ष्मन्तसर्मिध्यत् ओजिष्ठश्चर्षणीसहां वेत्वाज्यस्य होतयज ॥१॥

१

होता यक्षत्तनूनपातमूतिभिर्जेताग्मपराजितम् ।

इन्द्रं देवः स्वर्धिदं पथिभिर्मधुमत्तमैर्नराशः सेतु तेजसा वेत्वाज्यस्य होतयज ॥२॥

२

होता यक्षदिकाभिरिन्द्रमीळितमाजुह्वानममर्त्यम् ।

देवो देवैः सर्वार्यो वज्रहस्तः पुरंदुरो वेत्वाज्यस्य होतयज ॥३॥

३

होता यक्षद्वर्हिपीन्द्रं निषद्वरं वृषभं नर्यापसम् ।

वसुभी रुद्रैरादित्यैः सयुग्मिर्वहिरासद्वेत्वाज्यस्य होतयज ॥४॥

४

होता यक्षदोजो न वीर्यं सहो द्वार इन्द्रमवर्धयन् ।

सुप्रायणा अस्मिन्यज्ञे वि श्रयन्तामृतावृधो द्वार इन्द्राय मीळहुषे व्यन्त्वाज्यस्य होतयज ॥५॥

होता यक्षदुषे इन्द्रस्य धेनू सुदुधे मातरा मही ।

सवातरौ न तेजसा वत्समिन्द्रमवर्धतां वीतामाज्यस्य होतयज ॥६॥

६

होता यक्षदैव्या होतारा भिषजा सखाया हविषेन्द्रं भिषज्यतः ।

कवी देवौ प्रचेतसा इन्द्राय धत्त इन्द्रियं वीतामाज्यस्य होतयज ॥७॥

७

होता यक्षत्सिदो देवीर्न भेषजं त्रयस्त्रिधातवोऽपस इळा सरस्वती भारती महीः ।

इन्द्रं पत्नीर्हविष्मतीर्व्यन्त्वाज्यस्य होतयज ॥८॥

८

होता यक्षत्त्वष्टारमिन्द्रं देवं भिषजं सुयजं घृतश्रियम् ।

पुरुषं सुरेतसं मघोनमिन्द्राय त्वष्टा दधदिन्द्रियाणि वेत्वाज्यस्य होतयज ॥९॥ ९[१६९०]

होता यक्षद्वनस्पतिः शमितारः शतक्रतुं धियो जोष्टारभिन्द्रियम् ।

मध्वा सभञ्जन्पथिभिः सुगेभिः स्वदाति यजं मधुना घृतेन वेत्वाज्यस्य होतर्यजं ॥१०॥१०  
होता यक्षदिन्द्रः स्वाहाज्यस्य स्वाहा मेदसः स्वाहा स्तोकानां स्वाहा स्वाहाकृतीनां स्वाहा  
हव्यसूक्तीनाम् । स्वाहा देवा आज्यपा जुपाणा इन्द्र आज्यस्य व्यन्तु होतर्यजं ॥११॥ (१) ११

देवं वहिरिन्द्रः सुदेवं देवैर्वारवत्स्तीर्ण वेद्यामवर्धयत् ।

वस्तोर्वृतं प्राक्तोर्भृतं राया वहिष्मतोऽत्यगादसुवने वसुधेयस्य वेतु यजं ॥१॥ १२  
देवीद्वार इन्द्रः संवाते वीङ्गीर्यामन्नवर्धयन् । आ वत्सेन तरुणेन कुमारेण च मीवतापार्वीणः  
रेणुककाटं नुदन्तां वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यजं ॥२॥ १३

देवी उपासानक्तेन्द्रं यजे प्रयत्यहेताम् ।

दैवीर्विशः प्रायासिष्टाः सुप्रीति सुधिते वसुवने वसुधेयस्य वीतां यजं ॥३॥ १४

देवी जोष्टी वसुधिते देवमिन्द्रमवर्धताम् । अयाव्यन्याद्या द्वेपास्यान्या वक्षद्वम्

वार्याणि यजमानाय शिक्षिते वसुवने वसुधेयस्य वीतां यजं ॥४॥ १५

देवी ऊर्जाहुती दुधे सुदुधे पयमेन्द्रमवर्धताम् ।

इषमूर्जेमन्या वक्षत्सग्धिः मपीतिमन्या नवेन पृथं दयमाने पुराणेन नवमधातामूर्जेमूर्जाहुती

ऊर्जयमाने वसु वार्याणि यजमानाय शिक्षिते वसुवने वसुधेयस्य वीतां यजं ॥५॥ १६

देवा दैव्या होतारा देवमिन्द्रमवर्धताम् ।

हताघ्नः आभाष्टां वसु वार्याणि यजमानाय शिक्षिता वसुवने वसुधेयस्य वीतां यजं ॥६॥ १७

देवीस्तिस्रस्तिस्रो देवीः पतिमिन्द्रमवर्धयन् ।

अस्पृक्षद्भारती दिवं रुद्रेयजं सरस्वतीला वसुमती

गृहान्वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यजं ॥७॥ १८

देव इन्द्रो नराशः सस्त्रिवरुथस्त्रिवन्धुरो देवमिन्द्रमवर्धयत् ।

शतेन शितिपृष्ठानामाहितः महस्त्रेण प्र वर्तते मित्रावरुणेदस्य होत्रमर्हता

वृहस्पति स्तोत्रमश्विनाध्वर्यवं वसुवने वसुधेयस्य वेतु यजं ॥८॥ १९

देवा देवैर्वनस्पतिर्हिरण्यपर्णा मधुशाखः सुपिप्पलो देवमिन्द्रमवर्धयत् ।

दिवमग्रेणास्पृक्षदान्तरिक्षं पृथिवीमदः हीडसुवने वसुधेयस्य वेतु यजं ॥९॥ २०

देवं वहिर्वारिनीनां देवमिन्द्रमवर्धयत् ।

स्वासस्थमिन्द्रेणासन्नमन्या वहीः अप्यभूदसुवने वसुधेयस्य वेतु यजं ॥१०॥ २१ [१००२]

देवो अग्निः स्विष्टकृदेवामिन्द्रमवधयत् ।

स्विष्टं कुर्वन् स्विष्टकृत्स्विष्टमद्य करोतु नो वसुवने वसुधेयस्य वेतु यज ॥११॥ २२

अग्निमद्य होता रमवृणीतायं यजमानः पचन्पक्तीः पचन्पुरोकाशं बध्नन्निन्द्राय च्छागम् ।

सुपस्था अद्य देवो वनस्पतिरभवदिन्द्राय च्छागेन ।

अद्यत्तं मेदुस्तः प्रति पचताग्रभीदवीवृधत्पुरोकाशेन । त्वामद्य ऋष ॥१२॥ (२) २३

होता यक्षत्समिधानं महद्यशः सुसमिद्धं वरेण्यमाग्निमिन्द्रं वयोधसम् ।

गायत्रीं छन्द इन्द्रियं त्र्यविं गां वयो दधद्वेत्वाज्यस्य होतुर्यज ॥१॥ २४

होता यक्षत्तनूनपातमुद्धिदं यं गर्भमदितिर्दधे शुचिमिन्द्रं वयोधसम् ।

उष्णिहं छन्द इन्द्रियं दित्यवाहं गां वयो दधद्वेत्वाज्यस्य होतुर्यज ॥२॥ २५

होता यक्षद्रीकेन्यमीळितं वृत्रहन्तममिकाभिरीडय सहः सोममिन्द्रं वयोधसम् ।

अनुष्टुभं छन्द इन्द्रियं पञ्चाविं गां वयो दधद्वेत्वाज्यस्य होतुर्यज ॥३॥ २६

होता यक्षत्सुबर्हिषं पषण्वन्तममर्त्यं सीदन्तं बर्हिषि प्रियेऽमृतेन्द्रं वयोधसम् ।

बृहतीं छन्द इन्द्रियं त्रिवत्सं गां वयो दधद्वेत्वाज्यस्य होतुर्यज ॥४॥ २७

होता यक्षद्वयचस्वतीः सुप्रायणा ऋतावृधो द्वारो देवीर्हिरण्ययीर्ब्रह्माणमिन्द्रं वयोधसम् ।

पङ्क्तिं छन्द इहेन्द्रियं तुर्यवाहं गां वयो दधद्वयन्त्वाज्यस्य होतुर्यज ॥५॥ २८

होता यक्षत्सुपेशसा सुशिल्ये बृहती उभे नक्तोषामा न दर्शते विश्वमिन्द्रं वयोधसम् ।

त्रिष्टुभं छन्द इहेन्द्रियं पष्टवाहं गां वयो दधद्वीतामाज्यस्य होतुर्यज ॥६॥ २९

होता यक्षत्प्रचैतसा देवानामुत्तमं यशो होता रा दैव्या कवी सयुजेन्द्रं वयोधसम् ।

जगतीं छन्द इन्द्रियमनद्वाहं गां वयो दधद्वीतामाज्यस्य होतुर्यज ॥७॥ ३०

होता यक्षत्पेशस्वतीस्तिस्रो देवीर्हिरण्ययीर्भारतीर्बृहतीर्महीः पतिमिन्द्रं वयोधसम् ।

विराजं छन्द इहेन्द्रियं धेनुं गां न वयो दधद्वयन्त्वाज्यस्य होतुर्यज ॥८॥ ३१

होता यक्षत्सुरेतसं त्वष्टारं पुष्टिर्वधेन रूपाणि बिभ्रतं पृथक् पुष्टिमिन्द्रं वयोधसम् ।

द्विपदं छन्द इन्द्रियमुक्षाणं गां न वयो दधद्वेत्वाज्यस्य होतुर्यज ॥९॥ ३२

होता यक्षद्वनस्पतिं शमितारं शतक्रतुं

हिरण्यपर्णमुक्थिनं रशनां बिभ्रतं वशिं भगमिन्द्रं वयोधसम् ।

कुकुभं छन्द इहेन्द्रियं वशां वेहतं गां वयो दधद्वेत्वाज्यस्य होतुर्यज ॥१०॥ ३३

होता यक्षत्स्वाहाकृतीराग्निं गृहपतिं पृथग्वरुणं भेषजं कविं क्षत्रमिन्द्रं वयोधसम् ।

अतिच्छन्दसं छन्द इन्द्रियं बृहदष्टुभं गां वयो दधद्वयन्त्वाज्यस्य होतुर्यज ११(३)३४ [१७१५]

देवं बर्हिर्वयोधसं देवमिन्द्रमवर्धयत् ।

गायत्र्या छन्दसेन्द्रियं चक्षुमिन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेर्यस्य वेतु यजं ॥१॥ ३५

देवीर्द्वा रौ वयोधसं शुचिमिन्द्रमवर्धयन् ।

उष्णिहा छन्दसेन्द्रियं प्राणमिन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेर्यस्य व्यन्तु यजं ॥२॥ ३६

देवी उपासानक्ता देवमिन्द्रं वयोधसं देवी देवमवर्धताम् ।

अनुष्टुभा छन्दसेन्द्रियं वलमिन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेर्यस्य वीतां यजं ॥३॥ ३७

देवी जोष्टी वसुधिति देवमिन्द्रं वयोधसं देवी देवमवर्धताम् ।

बृहत्या छन्दसेन्द्रियं श्रोत्रमिन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेर्यस्य वीतां यजं ॥४॥ ३८

देवी उर्जाहुती दुर्धं सुदुधे पयसेन्द्रं वयोधसं देवी देवमवर्धताम् ।

पङ्क्त्या छन्दसेन्द्रियं शुक्रमिन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेर्यस्य वीतां यजं ॥५॥ ३९

देवा दैव्या होतारा देवमिन्द्रं वयोधसं देवा देवमवर्धताम् ।

त्रिष्टुभा छन्दसेन्द्रियं त्विषिमिन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेर्यस्य वीतां यजं ॥६॥ ४०

देवीस्तिस्तिस्तिस्ति देवीर्वयोधसं पतिमिन्द्रमवर्धयन् ।

जगत्या छन्दसेन्द्रियं शूपमिन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेर्यस्य व्यन्तु यजं ॥७॥ ४१

देवो नराशंसो देवमिन्द्रं वयोधसं देवो देवमवर्धयत् ।

विराजा छन्दसेन्द्रियं रूपमिन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेर्यस्य वेतु यजं ॥८॥ ४२

देवो वनस्पतिर्देवमिन्द्रं वयोधसं देवो देवमवर्धयत् ।

द्विपदा छन्दसेन्द्रियं भगमिन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेर्यस्य वेतु यजं ॥९॥ ४३

देवं बर्हिर्वारितीनां देवमिन्द्रं वयोधसं देवं देवमवर्धयत् ।

ककुभा छन्दसेन्द्रियं यश इन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेर्यस्य वेतु यजं ॥१०॥ ४४

देवो अग्निः स्विष्टकृदेवमिन्द्रं वयोधसं देवो देवमवर्धयत् ।

अतिच्छन्दमा छन्दसेन्द्रियं क्षत्रमिन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेर्यस्य वेतु यजं ॥११॥ ४५

अग्निमद्य होतारमवृणीतायं यजमानः पचन्पक्तीः पचन्पुरोडाशं बभ्रन्निन्द्राय वयोधसे लागम् ।

सूपस्था अद्य देवो वनस्पतिर्भवदिन्द्राय वयोधमे लागेन ।

अघृतं मेदुस्तः प्रतिपचताग्रभीदवीवृधत्पुरोडाशेन । त्वामद्य ऋणे ॥१२॥ (४) ४६ [१७२७]

होता यक्षदेकादश ॥११॥ देवं बर्हिर्द्वादश ॥१२॥ होता यक्षदेकादश ॥११॥ देवं बर्हिर्द्वादश ॥१२॥

॥ चतुरनुवाकेषु षट्चत्वारिंशत् ॥४६॥

॥ इति शुक्लयजु काण्वसंहितायां त्रिशतितमोऽध्यायः ॥३०॥

॥ इति तृतीयो दशकः ॥



अथ चतुर्थो दशकः ॥

अथैकत्रिंशोऽध्यायः ।

- समिद्धो अञ्जनकृदरं मतीनां घृतमग्रे मधुमत्पिन्वमानः ।  
 वाजी वहन्वाजिनं जातवेदो देवानां वक्षि प्रियमा सधस्थम् ॥१॥ १
- घृतेनाञ्जन्तसं पथो देवयानान्प्रजानन्वाज्यप्येतु देवान् ।  
 अनु त्वा सप्ते प्रदिशः सचन्ताः स्वधामस्मै यजमानाय धेहि ॥२॥ ३
- ईड्यश्चामि वन्द्यश्च वाजिन्नाशुश्चामि मेध्यश्च सप्ते ।  
 अग्निष्ट्वा देवैर्वसुभिः सजोषाः प्रीतिं वह्निं वहतु जातवेदाः ॥३॥ ३
- स्तीर्णं बर्हिः सुष्टीरमा जुषाणोरु पृथु प्रथमानं पृथिव्याम् ।  
 देवेभिर्युक्तमदितिः सजोषाः स्योनं कृष्णानां सुविते दधातु ॥४॥ ४
- एता उ वः सुभगा विश्वरूपा वि पक्षोभिः श्रयमाणा उदातैः ।  
 ऋष्वाः सतीः कवपः शुम्भमाना द्वारां देवीः सुप्रायणा भवन्तु ॥५॥ ५
- अन्तरा मित्रावरुणा चरन्ती मुखं यज्ञानामभि सविदाने ।  
 उपासा वाः सुहिरण्ये सुशिल्पे ऋतस्य योनां इह सादयामि ॥६॥ ६
- प्रथमा वाः सरथिना सुवर्णा देवौ पश्यन्तौ भुवनानि विश्वा ।  
 अपिप्रयं चोदेना वां मिमाना होतारा ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता ॥७॥ ७
- आदित्यैर्नो भारती वष्टु यज्ञं सरस्वती सह रुदेर्न आवीत् ।  
 इळोपहूता वसुभिः सजोषा यज्ञ नो देवीरमृतेषु धत्त ॥८॥ ८
- त्वष्टा वीरं देवकामं जजान त्वष्टुर्वी जायत आशुरश्वः ।  
 त्वष्टेदं विश्वं भुवनं जजान बहोः कर्तारमिह यक्षि होतः ॥९॥ ९
- अश्वो घृतेन तमन्या समक्त उप देवोऽर ऋतुशः पार्थ एतु ।  
 वनस्पतिर्देवलोकं प्रजानन्नग्निना हव्या स्वदितानि वक्षत् ॥१०॥ १०
- प्रजापतेस्तपसा वावृधानः सद्यो जातो दधिपे यज्ञमग्रे ।  
 स्वाहाकृतेन हविषा पुरोगा याहि साध्या हविरदन्तु देवाः ॥११॥ (१) ११
- केतुं कृष्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे । समुषाङ्गिरजायथाः ॥१॥ १२
- जीमूर्तस्येव भवति प्रतीकं यद्वर्मा याति समदामुपस्थे ।  
 अनाविद्वया तन्वा जय त्वं स त्वा वर्मणो महिमा पिपर्तु ॥२॥ १३ [१७४०]

|  |           |
|--|-----------|
| धन्वना गा धन्वनाजि जयेम धन्वना तीव्राः समदो जयेम ।                 |           |
| धनुः शत्रोरपकामं कृणोति धन्वना सर्वाः प्रदिशो जयेम ॥३॥             | १४        |
| ते आचरन्ती समनेव योषा मातेव पुत्रं विभृतामुपस्थे ।                 |           |
| अप शत्रून्विध्यता संविदाने आर्त्ता इमे विष्णुरन्ती अमित्रान् ॥४॥   | १५        |
| वक्ष्यन्तीवेदा गनीगन्ति कर्णं प्रियं सखायं परिपस्वजाना ।           |           |
| योषेव शिङ्क्ते वितताधि धन्वन् ज्या इयं समने पारयन्ती ॥५॥           | १६        |
| अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्यायां हेति परिविधमानः ।               |           |
| हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमांसं परि पातु विश्वतः ॥६॥ | १७        |
| बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्चिश्वा कृणोति समनावगत्य ।             |           |
| इषधिः सङ्काः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनद्धो जयति प्रसृतः ॥७॥       | १८        |
| सुपर्णं वस्ते मृगो अस्या दन्तो गोभिः संनद्धा पतति प्रसृता ।        |           |
| यत्रा नरः सं च वि च द्रवन्ति तत्रासभ्यमिषवः शर्म यंसन् ॥८॥         | १९        |
| वनस्पते वीङ्मङ्गा हि भूया अस्मत्सखा प्रतरणः सुवीरः ।               |           |
| गोभिः संनद्धो असि वीळयस्वास्थाता ते जयतु जेत्वानि ॥९॥              | २०        |
| रथे तिष्ठन्नयति वाजिनः पुरो यत्रयत्र कामयते सुपारथिः ।             |           |
| अभीशूनां महिमानं पनायत मनः पश्चादनु यच्छन्ति रश्मयः ॥१०॥           | २१        |
| आ जङ्घन्ति मान्वेषां जघनोऽरुपं जिघ्रते ।                           |           |
| अश्वाजनि प्रचेतसोऽश्वान्तसमन्तु चोदय ॥११॥                          | २२        |
| उपंश्वासय पृथिवीमुत द्यां पुरुत्रा ते मनुतां विष्टितं जगन् ।       |           |
| स दुन्दुभे सज्जरिन्द्रेण देवैर्दूरादवीयो अपं मेधु शत्रून् ॥१२॥ (२) | २३        |
| यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्तसमुद्रादुत वा पुरीषात् ।            |           |
| श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन् ॥१॥      | २४        |
| यमेनं दत्तं त्रित एनमायुनगिन्द्र एणं प्रथमो अध्यतिष्ठत् ।          |           |
| गन्धर्वो अस्य रश्नामगृष्णात्सुरादश्च वसवो निरतष्ट ॥२॥              | २५        |
| अमि यमो अस्यादित्यो अर्वन्नमि त्रितो गुह्येन व्रतेन ।              |           |
| असि मोमेन समया विपृक्त आहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि ॥३॥            | २६        |
| त्रीणि त आहुर्दिवि बन्धनानि त्रीण्यप्सु त्रीण्यन्तः समुद्रे ।      |           |
| उतेव मे वरुणश्छन्त्यर्वन्यत्रा त आहुः परमं जनित्रम् ॥४॥            | २७ [१७५४] |

|   |           |
|---|-----------|
| इमा ते वाजिभ्रवमार्जनानीमा शफानां सनितुर्निधाना ।                   |           |
| अत्रा ते भद्रा रशना अपश्यमृतस्य या अभिरक्षन्ति गोपाः ॥५॥            | २८        |
| आत्मानं ते मनसारादजानामवो दिवा पतयन्तं पतङ्गम् ।                    |           |
| शिरो अपश्यं पथिभिः सुगेभिररेणुभिर्जेहमानं पतत्रि ॥६॥                | २९        |
| अत्रा ते रूपमुत्तममपश्यं जिगीषमाणमिष आ पदे गोः ।                    |           |
| यदा ते मर्तो अनु भोगमान्छादिद् ग्रसीष्ट ओषधीरजीगः ॥७॥               | ३०        |
| अनु त्वा रथो अनु मर्यो अर्वन्ननु गावोऽनु भगः कनीनाम् ।              |           |
| अनु व्रातासस्तवं सख्यमीयुरनु देवा ममिरे वीर्यं ते ॥८॥               | ३१        |
| हिरण्यशृङ्गोऽयौ अस्य पादा मनोजवा अवर् इन्द्र आसीत् ।                |           |
| देवा इदस्य हविरद्यमायन्यो अर्वन्तं प्रथमो अध्यतिष्ठत् ॥९॥           | ३२        |
| ईर्मान्तासः सिलिकमध्यमासः स शूरणासो दिव्यासो अत्याः ।               |           |
| हंसा इव श्रेणिशो यतन्ते यदाक्षिषुर्दिव्यमज्ममश्वाः ॥१०॥             | ३३        |
| तव शरीरं पतयिष्वर्वन्तव चित्तं वात इव ध्रजीमान् ।                   |           |
| तव शृङ्गाणि विष्टिता पुरुत्रारण्येषु जर्भुराणा चरन्ति ॥११॥          | ३४        |
| उपप्रागाच्छसनं वाज्यर्वा देवद्रीचा मनसा दीध्यानः ।                  |           |
| अजः पुरो नीयते नाभिरस्यानु पश्चात्कवयो यन्ति रेभाः ॥१२॥             | ३५        |
| उप प्रागात्परमं यत्सधस्थमर्वा २ अच्छा पितरं मातरं च ।               |           |
| अद्या देवाञ्जुष्टमो हि गम्या अथा शास्ते द्वाशुषे वार्यणि ॥१३॥ (३)   | ३६        |
| समिद्धो अद्य मनुषो दुरोणे देवो देवान्यजसि जातवेदः ।                 |           |
| आ च वह मित्रमहश्चिकित्वान्तवं दूतः कविरसि प्रचेताः ॥१॥              | ३७        |
| तनूनपात्पथ क्रतस्य यानान्मध्वा समञ्जन्त्स्वदया सुजिह्व ।            |           |
| मन्मानि धीभिरुत यज्ञमुन्धन्देवत्रा च कृणुह्यध्वरं नः ॥२॥            | ३८        |
| नराशंसस्य महिमानमेषामुप स्तोषाम यजतस्य यज्ञैः ।                     |           |
| ये सुक्रतवः शुचयो धियंधाः स्वदन्ति देवा उभयानि हव्या ॥३॥            | ३९        |
| आजुह्वान ईड्यो वन्द्यश्वा याह्ये वसुभिः सजोषाः ।                    |           |
| त्वं देवानामसि यह्य होता स एनान्यक्षीषितो यजीयान् ॥४॥               | ४०        |
| प्राचीनं बर्हिः प्रदिशा पृथिव्या वस्तोरस्या वृज्यते अग्रे अह्वाम् । |           |
| व्यु प्रथते वितरं वरीयो देवेभ्यो अदितये स्योनम् ॥५॥                 | ४१ [१७६८] |

व्यचस्वतीरुर्विया वि श्रयन्तां पतिभ्यो न जनयः शुम्भमानाः ।  
 देवीर्द्वारो बृहतीर्विश्वमिन्वा देवेभ्यो भवत सुप्रायणाः ॥६॥ ४२  
 आ सुष्वयन्ती यजते उपाके उपासानक्ता सदतां नि योनौ ।  
 दिव्ये योषणे बृहती सुरुक्मे अधि श्रियं शुक्रपिशं दधाने ॥७॥ ४३  
 दैव्या होतारा प्रथमा सुवाचा मिमाना यज्ञं मनुषो यजध्वै ।  
 प्रचोदयन्ता विदर्येषु कारू प्राचीनं ज्योतिः प्रदिशां दिशन्तां ॥८॥ ४४  
 आ नो यज्ञं भारती तूर्यमेत्विळा मनुष्वदिह चेतयन्ती ।  
 तिस्रो देवीर्विहिरेदं स्योनं मरस्वती स्वपसः सदन्तु ॥९॥ ४५  
 य इमे द्यावापृथिवी जनित्री रूपैरपिंशज्जुवनानि विश्वा ।  
 तमद्य होतरिपितो यजीयान्देवं त्वष्टारमिह यक्षि विद्वान् ॥१०॥ ४६  
 उपावसृज त्मन्यां समञ्जन्देवानां पार्थ क्रतुथा हवींषि ।  
 वनस्पतिः शमिता देवा अग्निः स्वदन्तु हव्यं मधुना घृतेन ॥११॥ ४७  
 मद्यो जातो व्यमिमीत यज्ञमग्निर्देवानामभवत्पुरोगाः ।  
 अस्य होतुः प्रदिश्यतस्य वाचि स्वाहाकृतं हविरदन्तु देवाः ॥१२॥ (४) ४८

अग्नये गायत्राय त्रिवृते राधन्तरायाष्टाकपाल इन्द्राय त्रैष्टुभाय पञ्चदशाय बार्हितायैकादशकपालो  
 विश्वेभ्यो देवेभ्यो जागतेभ्यः सप्तदशेभ्यो वैरूपेभ्यो द्वादशकपालो मित्रावरुणाभ्यामानुष्टुभा-  
 भ्यामेकविंशाभ्यां वैराजाभ्याम् । पयस्या बृहस्पतये पाङ्क्ताय त्रिणवायं शाकृराय चरुः संवित्र  
 औष्णिहाय त्रयस्त्रिंशाय रैवताय द्वादशकपालः प्राजापत्यश्चरुर्दित्यै विष्णुपत्न्यै चरुमयै  
 वैश्वानराय द्वादशकपालोऽनुमन्या अष्टाकपालः ॥१॥ (५) ४९

आग्नेयः कृष्णग्रीवः सारस्वती मेधी बभ्रुः सौम्यः पौष्णः श्यामः शितिपृष्ठो बार्हिस्पत्यः शिल्पो  
 वैश्वदेवः । ऐन्द्रोऽरुणो मारुतः कल्मषः ऐन्द्राग्नः मंहितोऽधोर्गमः सावित्रो वारुणः कृष्ण  
 एकशितिपान्पेत्वः ॥१॥ (६) ५०

अग्नयेऽनीकवते रोहिताञ्जिरनञ्जानधोर्गमौ सावित्रौ पौष्णौ रजतनाभी वैश्वदेवौ पिशङ्गौ तूपरौ ।  
 मारुतः कल्मषः आग्नेयः कृष्णोऽजः सारस्वती मेधी वारुणः पेत्वः ॥१॥ (७) ५१ [१७७८]  
 समिद्धो अञ्जन्नैकादश ॥११॥ केतुं कृष्णञ्चादश ॥१२॥ यदकन्दस्त्रयोदश ॥१३॥ समिद्धो अद्य द्वादश ॥१४॥  
 अग्नये गायत्रायैका ॥१॥ आग्नेयः कृष्णग्रीव एका ॥१॥ अग्नयेऽनीकवत इत्येका ॥१॥

॥ सप्तानुवाकेष्वेकपञ्चाशत् ॥ ५१ ॥

॥ इति शुक्लयजुःकाण्वमंहितायामेकत्रिंशतितमोऽध्यायः ॥३१॥

## अथ द्वात्रिंशोऽध्यायः ।

|  |           |
|--|-----------|
| अस्याजरासो दुमामरित्रा अर्चद्दूमासो अग्रयः पावकाः ।                    |           |
| श्चितीचयः श्वात्रासो भुरण्यवो वनर्षदो वायवो न सोमाः ॥१॥                | १         |
| हरयो धुमकेतवो वार्तजूता उप धर्वि । यतन्ते वृथगग्रयः ॥२॥                | २         |
| यजा नो मित्रावरुणा यजा देवाँर ऋतं बृहत् । अग्रे यक्षि स्वं दमम् ॥३॥    | ३         |
| युक्ष्वा हि देवहूतमौर अश्वाँर अग्रे रथीरिव । नि होता पुन्यः संदः ॥४॥   | ४         |
| द्वे विरूपे चरतः स्वथे अन्यान्या वृत्समुप धापयेते ।                    |           |
| हरिरन्यस्यां भवति स्वधावाञ्छुक्रो अन्यस्यां ददृशे सुवर्चाः ॥५॥         | ५         |
| अयमिह प्रथमो धायि धातृभिर्होता यजिष्ठो अध्वरेष्वीडयः ।                 |           |
| यमप्रवानो भृगवो विरुरुचुर्वनेषु चित्रं विभ्वं विशेर्विशे ॥६॥           | ६         |
| त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रिंशच्च देवा नवं चासपर्यन् ।          |           |
| औक्षन्धृतैरस्तृणन् बहिरस्मा आदिद्धोतारं न्यसादयन्त ॥७॥                 | ७         |
| मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम् ।                |           |
| ऋविः सम्राजमर्तिर्हि जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ॥८॥              | ८         |
| अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणस्युर्विपन्यया । समिद्धः शुक्र आहुतः ॥९॥ | ९         |
| विश्वेभिः सोम्यं मध्वग्र इन्द्रेण वायुना । पित्रा मित्रस्य धामभिः ॥१०॥ | १०        |
| आ यदिपे नृपतिं तेज आनट् शुचिरेतो निषिक्तं द्यौरभीकै ।                  |           |
| अग्निः शर्धमनवद्यं युवानं स्वाध्यं जनयत्सुदयच्च ॥११॥                   | ११        |
| अग्रे शर्धं महते सौभगाय तव द्युमन्युत्तमानि सन्तु ।                    |           |
| संजास्पत्यः सुयममा कृणुष्व शत्रूयतामभि तिष्ठा महाशसि ॥१२॥              | १२        |
| त्वाः हि मन्द्रतममर्कशोकैर्ववृमहे महि नः श्रोष्यग्रे ।                 |           |
| इन्द्रं न त्वा शर्वसा देवता वायुं पृणन्ति राधसा नृतमाः ॥१३॥            | १३        |
| त्वे अग्रे स्वाहुत प्रियासः सन्तु सूरयः ।                              |           |
| यन्ताग्रे ये मघवानो जनानामूर्वान्दयन्त गोनाम् ॥१४॥                     | १४        |
| श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभिर्देवैरग्रे सयावभिः ।                         |           |
| आसीदन्तु बर्हिषि मित्रो अर्यमा प्रातर्यावाणो अध्वरम् ॥१५॥              | १५        |
| विश्वेषामर्दितिर्यज्ञियानां विश्वेषामर्तिथिर्मानुषाणाम् ।              |           |
| अग्निर्देवानामव आवृणानः समृच्छीको भवतु जातवेदाः ॥१६॥                   | १६ [१७९४] |

|  |           |
|--|-----------|
| महो अग्नेः समिधानस्य शर्मण्यनागा मित्रे वरुणे स्वस्तये ।<br>श्रेष्ठे स्याम सवितुः सवीमनि तदेवानामवो अद्या वृणीमहे ॥१७॥ (१)       | १७        |
| आपश्चित्पिप्यु स्तुर्यो न गावो नक्षत्रतं जरितारस्त इन्द्र ।<br>याहि वायुर्न नियुतो नो अच्छा त्व५ हि धीभिर्दयसे वि वाजान् ॥१८॥    | १८        |
| गाव उपावतावतं मही यज्ञस्य रणसुदा । उभा कर्णी हिरण्यया ॥२॥  | १९        |
| यद्य सूर उदितेऽनागा मित्रो अर्यमा । सुवार्ति सविता भगः ॥३॥   | २०        |
| आ सुते सिञ्चत श्रिय५ रोदस्योरभिश्चिरम् ।<br>रसा दधीत वृषभम् । तं प्रत्नथायं वेनश्चौदयत् ॥४॥                                      | २१        |
| आतिष्ठन्तं परि विश्वे अभूषञ्छ्रियो वसानश्चरति स्वरोचिः ।<br>महत्तद्वृष्णो असुरस्य नामा विश्वरूपो अमृतानि तस्थौ ॥५॥               | २२        |
| प्र वो महे मन्दमानायान्धसोऽर्ची विश्वानराय विश्वाभुवे ।<br>इन्द्रस्य यस्य सुमख५ सहो महि श्रवो नृम्णं च रोदसी सपर्यतः ॥६॥         | २३        |
| बृहन्निदिधम एषां भूरि शस्तं पृथुः स्वरुः । येषामिन्द्रो युवा सखा ॥७॥   | २४        |
| इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः । महार अभिष्टिरोजसा ॥८॥   | २५        |
| इन्द्रो वृत्रमवृणोच्छर्धनीतिः प्र मायिनाममिनाद्वर्षणीतिः ।<br>अहन्व्य५ समुशधग्वनेष्वाविधेना अकृणोद्राम्याणाम् ॥९॥                | २६        |
| कुतस्त्वमिन्द्र माहिनः सन्नेको यासि सत्पते किं त इत्था ।<br>सं पृच्छसे समराणः शुभानैवोचिस्तन्नो हरिवो यत्तं अस्मे ।              |           |
| महार इन्द्रो य ओजसा कदा चन स्तरीरमि कदा चन प्रयुच्छसि ॥१०॥   | २७        |
| आ तत्त इन्द्राय वः पनन्ताभि य ऊर्व गोमन्तं तितृत्सान् ।<br>सकृत्स्वं ये पुरुपुत्रां मही५ महसंधारां बृहतीं दुदुक्षन् ॥११॥         | २८        |
| इमां ते धियं प्र भरे महो महीमस्य स्तोत्रे धिपणा यत्तं आनजे ।<br>तमुत्सवे च प्रसवे च सासहिमिन्द्रं देवासः शर्वसामदुन्ननु ॥१२॥ (२) | २९        |
| विभ्राड् बृहत्पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपता अविहृतम् ।<br>वातं जतो यो अभिरक्षति त्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा वि रोजति ॥१॥       | ३०        |
| उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥२॥   | ३१        |
| येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाँर अनु । त्वं वरुण पश्यसि ॥३॥   | ३२ [१८१०] |

- दैव्या अध्वर्यू आ गंतुं रथेन सूर्यत्वचा । मध्वा यज्ञं समञ्जाथे ।  
 तं प्रलथायं वेनश्चोदयच्चित्रं देवानाम् ॥४॥ ३३
- आ न इळाभिर्विदथे सुशस्ति विश्वानरः सविता देव एतु ।  
 अपि यथा युवानो मत्सथा नो विश्वं जगदभिषित्वे मनीषा ॥५॥ ३४
- यदद्य कचं वृत्रहन्नुदगां अभि सूर्य । सर्वं तदिन्द्र ते वशे ॥६॥ ३५
- तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य । विश्वमा भासि रोचनम् ॥७॥ ३६
- तत्सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्तोर्विततं सं जभार ।  
 युदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै ॥८॥ ३७
- तन्मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे सूर्यो रूपं कृणुते द्यौरुपस्थे ।  
 अनन्तमन्यद्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्रुरितः सं भेरन्ति ॥९॥ ३८
- वण्महोँर असि सूर्य वळादित्य महोँर असि ।  
 महस्ते सतो महिमा पनस्यतेऽद्वा देव महोँर असि ॥१०॥ ३९
- वट् सूर्य श्रवसा महोँर असि सत्रा देव महोँर असि ।  
 मृहा देवानामसुर्यः पुरोहितो विभु ज्योतिरदाभ्यम् ॥११॥ ४०
- श्रायन्त इव सूर्य विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत ।  
 वसूनि जाते जनमान ओजसा प्रति भागं न दीधिम् ॥१२॥ ४१
- अद्या देवा उदित्ता सूर्यस्य निरहंसः पिपृता निरवद्यात् ।  
 तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥१३॥ ४२
- आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ।  
 हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥१४॥ (३) ४३
- प्र वावृजे सुप्रया बर्हिरेषामा विश्वपतीं वीरिंट इयाते ।  
 विशामक्तोरुषसः पूर्वहृतौ वायुः पूषा स्वस्तये नियुत्वान् ॥१॥ ४४
- इन्द्रवायू बृहस्पतिं मित्राग्निं पूषणं भगम् । आदित्यान्मारुतं गणम् ॥२॥ ४५
- वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभिरुतिभिः । करतां नः सुरार्धसः ॥३॥ ४६
- अधि न इन्द्रैषां विष्णो सजात्यानाम् । इता मरुतो अश्विना ।  
 तं प्रलथायं वेनश्चोदयथे देवास आ न इळाभिर्विश्वेभिः सोम्यं मध्वोमासश्चर्षणीधृतः ॥४॥ ४७
- अग्न इन्द्र वरुण मित्र देवाः शर्धः प्र यन्त मारुतो विष्णो ।  
 उभा नासत्या रुद्रो अध्र याः पूषा भगः सरस्वती जुषन्त ॥५॥ ४८ [१८२६]

- इन्द्राग्नी मित्रावरुणादिति॑ स्वः पृथिवीं द्यां मरुतः पर्वताँर अपः ।  
हुवे विष्णुं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं भगं नु शंसं॑ सवितारमुतये ॥६॥ ४९
- अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः ।  
यः शंसते स्तुवते धारिं पञ्च इन्द्रज्येष्ठा अस्माँर अवन्तु देवाः ॥७॥ ५०
- अर्वाञ्चो अद्या भवता यजत्रा आ वो हार्दि भयमानो व्ययेयम् ।  
त्राध्वं नो देवा निजुरो वृकस्य त्राध्वं कर्तादवपदो यजत्राः ॥८॥ ५१
- विश्वे अद्य मरुतो विश्वे ऊती विश्वे भवन्त्वग्रयः समिद्राः ।  
विश्वे नो देवा अवसा गमन्तु विश्वमस्तु द्रविणं वाजो अस्मे ॥९॥ ५२
- विश्वे देवाः शृणुतेम॑ हवं मे ये अन्तरिक्षे य उप द्यवि षु ।  
ये अग्निजिह्वा उत वा यजत्रा आसद्यास्मिन्वर्हिषि मादयध्वम् ॥१०॥ ५३
- देवेभ्यो हि प्रथमं यजियेभ्योऽमृतत्वं सुवसि भागमुत्तमम् ।  
आदिहामानं॑ सवितर्व्युण्णेषेऽनूचीना जीविता मानुषेभ्यः ॥११॥ (४) ५४
- प्र वायुमच्छा वृहती मनीषा वृहद्रयि विश्ववारं॑ गृथप्राम् ।  
द्युतद्यामा नियुतः पत्यमानः कविः कविर्मियक्षसि प्रयज्यो ॥१॥ ५५
- इन्द्रवायु इमे सुता उप प्रयोभिरा गतम् । इन्द्रो वा मुशन्ति हि ॥२॥ ५६
- मित्रं॑ हवे पृतदक्षं वरुणं च रिशादसम् । धियै घृताचीं॑ सार्धन्ता ॥३॥ ५७
- दत्ता युवाकवः सुता नामन्या वृक्तवर्हिषः । आ यातं॑ रुद्रवर्तनी ।  
तं प्रत्नथायं वेनश्चौदयन् ॥४॥ ५८
- विदद्यदीं सरमा रुग्णमद्रमहि पार्थः पूष्यं॑ सध्र्यकः ।  
अग्रं नयत्सुपद्यक्षराणामच्छा रवं प्रथमा जानती गात् ॥५॥ ५९
- नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्रैश्चानुरात्पुंर एतान्मयेः ।  
एमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानुरं क्षैत्रजिन्याय देवाः ॥६॥ ६०
- उग्रा विघनिना मृधे इन्द्राग्नी हवामहे । ता नो मृळत इदृशे ॥७॥ ६१
- उपास्मं गायता नरः पर्वमानायेन्दवे । अभि देवाँर इयक्षते ॥८॥ ६२
- ये त्वाहिहत्ये मधवन्नवर्धन्ये शाम्वरे हरिवो ये ग इष्टा ।  
ये त्वा नूनमनुमदन्ति विप्राः पिबेन्द्र सोमं॑ सगणो मरुद्भिः ॥९॥ ६३
- जनिष्ठा उग्रः सहसे तुराय मन्द्र ओजिष्ठो बहुलाभिमानः ।  
अवर्धन्निन्द्रं मरुतश्चिदत्र माता यद्वीरं दुधनद्धनिष्ठा ॥१०॥ ६४ [१८४२]



आ तू न इन्द्र वृत्रहन्नुस्माकमर्धमा गहि । महान्महीभिस्सूतिभिः ॥११॥ ६५  
 त्वमिन्द्र प्रतृतिष्वभि विश्वा अमि स्पृधः ।  
 अशस्तिहा जनिता विश्वतूरसि त्वं तूर्य तरुष्यतः ॥१२॥ ६६  
 अनु ते शुष्मं तुरयन्तमीयतुः क्षोणी शिशुं न मातरा ।  
 विश्वास्ते स्पृधः श्रथयन्त मन्यवै वृत्रं यदिन्द्र त्वमि ॥१३॥ ६७  
 यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्रमादित्यासो भवता मृळयन्तः ।  
 आ वोऽर्वाचीं सुमतिर्विवृत्यादुहोश्चिद्या वीरवोवित्तरासन्त ॥१४॥ ६८  
 अदब्धेभिः सवितः पायुभिर्द्वयं शिवेभिर्द्वयं परि पाहि नो गयम् ।  
 हिरण्यजिह्वः सुविताय नव्यसे रक्षा मार्किनो अघशंस इत्यत ॥१५॥ (५) ६९

प्र वीरया शुचयो दद्विर वामध्वर्युभिर्मधुमन्तः सुतासः ।  
 वह वायो नियुतो याह्यच्छा पित्रा सुतस्यान्ध्रमो मदाय ॥१॥ ७०  
 गाव उपावतावन्त मही यज्ञस्य रघमुदा । उभा कर्णा हिरण्यया ॥२॥ ७१  
 काव्ययोरानेपु कृत्वा दक्षस्य दुरोणे । रिशादसा सधस्थ आ ॥३॥ ७२  
 दैव्या अध्वर्यु आ गतु रथेन सूर्यत्वचा ।  
 मध्वा यज्ञ र समञ्जाथ । तं प्रत्नथायं वेनश्चोदयत् ॥४॥ ७३  
 तिरश्चीनो विततो रश्मिरेषामधः स्विदामी३दुपरि स्विदामी३न् ।  
 रेतोधा आसन्महिमान आसन्स्वधा अवस्तात्प्रयतिः परस्तात् ॥५॥ ७४  
 आ रोदसी अपृणदा स्वर्महज्जातं यदेनमपमो अधारयन् ।  
 सो अध्वराय परि णीयते कविरत्यो न वाजसातये चनोहितः ॥६॥ ७५  
 उक्थेभिर्वृत्रहन्तेमा या मन्दाना चिदा गिरा । आङ्गपैराविवासतः ॥७॥ ७६  
 उप नः सूनवो गिरः शृण्वन्त्वमृतस्य ये । सुमृळीका भवन्तु नः ॥८॥ ७७  
 ब्रह्माणि मे मतयः शं सुतासः शुष्म इयति प्रभृतो मे अद्रिः ।  
 आ शासते प्रति हर्यन्त्युक्थेमा हरी बहतस्ता नो अच्छ ॥९॥ ७८  
 अनुत्तमा तै मघवन्नकिनु न त्वावाँर अस्ति देवता विदानः ।  
 न जायमानो नशते न जातो यानि करिष्या कृणुहि प्रवृद्ध ॥१०॥ ७९  
 तदिदास भुवनेषु ज्येष्ठं यतो जज्ञ उग्रस्त्वेषनृम्णः ।  
 सद्यो जज्ञानो नि रिणाति शत्रून्नु यं विश्वे मदन्त्यूमाः ॥११॥ ८० [६८५८]

इमा उ त्वा पुरुवसो गिरों वर्धन्तु या मम ।  
 पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितोऽभि स्तोमैरनूषत ॥१२॥ ८१  
 यस्यायं विश्व आयो दासः शेवधिपा अरिः ।  
 तिरश्चिदये रुशमे पवीरवि तुभ्येत्सो अज्यते रयिः ॥१३॥ ८२  
 अयं सहस्रमृषिभिः सहस्रकृतः समुद्र इव पप्रथे ।  
 मृत्यः सो अस्य महिमा गृणे शवो यज्ञेषु विप्रराज्ये ॥१४॥ ८३  
 अदब्धेभिः सवितः पायुभिष्ट्वं शिवेभिर्द्य परि पाहि नो गर्यम् ।  
 हिरण्यजिह्वः सुविताय नव्यसे रक्षा मार्किनो अघशंस ईशत ॥१५॥ (६) ८४ [१८६२]

अस्याजरासः सप्तदश ॥१७॥ आपश्चिद् द्वादश ॥१८॥ विभ्राद् चतुर्वश ॥१४॥ प्रवावृज एकादश ॥११॥  
 प्रवायुं पञ्चदश ॥१५॥ प्रवीरयेति च पञ्चदश ॥१५॥ पडनुवाकेषु चतुरशीतिः ॥८४॥  
 ॥ इति शुक्लयजुःकाण्यसंहितायां द्वात्रिंशोऽध्यायः ॥३२॥

### अथ त्रयन्त्रिंशोऽध्यायः ।

यज्ञाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु मुमस्य तथैवेति ।  
 दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥१॥ १  
 पितुं नु स्तौषं महो धर्माणं तविषीम् । यस्य त्रितो व्योजसा वृत्रं विपर्वमर्दयत् ॥२॥ २  
 अन्विदनुमते त्वं मन्यामै शं च नस्कृधि ।  
 कृत्वे दक्षाय नो हिनु प्र ण आयूँषि तारिषः ॥३॥ ३  
 सिर्नावालि पृथुष्टुके या देवानाममि स्वमा । जुपस्व हव्यमाहुतं प्रजां देवि दिदिङ्कि नः ॥४॥ ४  
 पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः । सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित् ॥५॥ ५  
 त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरा ऋषिर्देवो देवानामभवः शिवः सर्वा ।  
 तव व्रते कवयो विद्वन्नापसोऽजायन्त मरुतो भ्राजदृष्टयः ॥६॥ ६  
 त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघानो रक्ष तन्वश्च वन्द्य ।  
 त्राता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेषं रक्षमाणस्तव व्रते ॥७॥ ७  
 उत्तानायामव भरा चिकित्वान्तसद्यः प्रवीता वृषणं जजान ।  
 अरुपस्तूपो रुशदस्य पाज इळायास्पुत्रो वयुर्नैजनिष्ट ॥८॥ ८  
 इळायास्त्वा पदे वयं नाभां पृथिव्या अधि ।  
 जातवेदो निधीमहमे हव्याय वोळ्हेवे ॥९॥ ९ [१८७६]

- प्र मन्महे शवसानाय शृपमाङ्गुपं गिर्वेणसे अङ्गिरस्वत् ।  
 सुवृत्तिभिः स्तुवत ऋग्मियायार्चामार्कं नरे विश्रुताय ॥१०॥ १०
- प्र वो महे महि नमो भग्ध्वमाङ्गुप्यं शवसानाय सामं ।  
 येना नः पूर्वे पितरः पदज्ञा अर्चन्तो अङ्गिरसो गा अविन्दन् ॥११॥ ११
- इच्छन्ति त्वा सोम्यासः सखायः सुन्वन्ति सोमं दधति प्रयांसि ।  
 तितिक्षन्ते अभिशस्ति जनानामिन्द्र त्वदा कश्चन हि प्रकेतः ॥१२॥ १२
- न ते दूरे परमा चिद्रजास्या तु प्र याहि हरिवो हरिभ्याम् ।  
 स्थिराय वृष्णे सर्वना कृतेमा युक्ता ग्रावाणः समिधाने अग्रौ ॥१३॥ १३
- अपाङ्गं युत्सु पृतनाम् पप्रिः स्वर्षामृषां वृजनस्य गोषाम् ।  
 भरेषुजाः सुक्षितिः सुश्रवसं जयन्तं त्वामनु मदेम सोम ॥१४॥ १४
- सोमो धेनुः सोमो अर्वन्तमाशुः सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति ।  
 सादन्यं विदुष्यः सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै ॥१५॥ १५
- त्वमिमा ओषधीः सोम विश्वास्त्वमपो अजनयस्त्वं गाः ।  
 त्वमा तंतन्थोर्वन्तरिक्षं त्वं ज्योतिषा वि तमो ववर्थ ॥१६॥ १६
- देवेन नो मनसा देव सोम रायो भागः सहसावन्नभि युध्य ।  
 मा त्वा तनदीशिषे वीर्यस्योभयेभ्यः प्रचिकित्सा ग ईष्टौ ॥१७॥ १७
- अष्टौ व्यग्यत्कुकुभः पृथिव्यास्त्री धन्व योजना सप्त सिन्धून् ।  
 हिरण्याक्षः सविता देव आगाहधद्रत्ना दाशुषे वार्याणि ॥१८॥ १८
- हिरण्यपाणिः सविता विचर्षणिरुभे द्यावापृथिवी अन्तरीयते ।  
 अपामीवां बाधते वेति सूर्यमभि कृष्णेन रजसा द्यामृणोति ॥१९॥ १९
- हिरण्यहस्तो असुरः सुनीथः सुमृळीकः स्ववा यात्वर्वाङ् ।  
 अपसेधन्नक्षसो यातुधानानस्थादेवः प्रतिदोषं गृणानः ॥२०॥ २०
- ये ते पन्थाः सवितः पूर्व्यासोऽरेणवः सुकृता अन्तरिक्षे ।  
 तेभिर्नो अद्य पथिभिः सुगेभी रक्षा च नो अधि च ब्रूहि देव ॥२१॥ २१
- उभा पिबतमश्विनोभा नः शर्म यच्छतम् । अविद्रियाभिरूतिभिः ॥२२॥ २२
- अम्रस्वतीमश्विना वाचमस्मे कृतं नो दत्ता वृषणा मनीषाम् ।  
 अद्युत्येज्वमे निह्वये वां वृधे च नो भवतं वाजमातौ ॥२३॥ २३ [ १८८५ ]

|  |           |
|--|-----------|
| द्युभिर्ऋतुभिः परि पातमस्मानरिष्टेभिरश्विना सौभगेभिः ।<br>तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥२४॥     | २४        |
| आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ।<br>हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥२५॥(१)                  | २५        |
| आ रात्रि पार्थिवꣳ रजः पितुरप्रायि धामभिः ।<br>दिवः सदाꣳमि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेपं वर्तते तमः ॥२६॥                           | २६        |
| उपस्तच्चित्रमा भगस्मभ्यं वाजिनीवति । येन तोकं च तनयं च धामहे ॥२७॥  | २७        |
| प्रातर्जितं भगमुग्रꣳ हवेम वयं पुत्रमदितेयो विधत्ता ।<br>आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं मक्षीत्याहं ॥२८॥      | २८        |
| पूषन्तव व्रते वयं न रिष्येम कदा चन । स्तोतारंस्त इहस्मसि ॥२९॥  | २९        |
| पथस्पथः परिपति वचस्या कामेन कृतो अभ्यानळकम् ।<br>म नो गसच्छुरुधश्चन्द्राग्रा धियैधियꣳ सीषधाति प्र पूषा ॥३०॥                  | ३०        |
| त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः । अतो धर्माणि धारयन् ॥३१॥  | ३१        |
| तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवाꣳसः समिन्धते । विष्णोर्यत्परमं पदम् ॥३२॥  | ३२        |
| घृतवती भुवनानामभिथियोर्वी पृथ्वी मधुदुधे मुपेशमा ।<br>द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मेणा विष्कभिते अजरे भूरिरेतमा ॥३३॥             | ३३        |
| ये नः सपत्ना अप ते भवन्त्विन्द्राग्निभ्यामव वाधामहे तान् ।<br>वसवो रुद्रा आदित्या उपरिस्पृशं मोग्रं चेचारमधिराजमकन् ॥३४॥     | ३४        |
| आ नामत्या त्रिभिरेकादशैरिह देवेभिर्यातं मधुपयमश्विना ।<br>प्रायुस्तारिष्टं नी र्पाꣳमि मृक्षतꣳ मेधतं द्वेपो भवतꣳ सचाभुवा ॥३५॥ | ३५        |
| एष व स्तोमो मरुत इयं गीर्मान्दार्पस्य मान्यस्य कारोः ।<br>एषा यामीष्ट तन्वे वयां विद्यामेषं वृजनं जीर्दानुम् ॥३६॥            | ३६        |
| महस्तोमाः महल्लन्दम आवृतः महप्रमा कपयः सप्त देव्याः ।<br>पूर्वां पन्थामनुदृश्य धीरो अन्वालेभिरे रथ्यो न गम्भीन ॥३७॥          | ३७        |
| आयुष्यं वर्चस्यꣳ रायम्पोषमौद्धिदम् ।<br>इदꣳ हिरण्यं वर्चस्वज्ञैत्रागाविशनाद् माम ॥३८॥  | ३८ [१९००] |

न तद्रक्षां॑सि न पिशाचास्तरन्ति देवानामाजः प्रथमजं॑ ह्येतत् ।

यो बिभर्ति॑ दाक्षायणं॑ हिरण्यं॑ स देवेषु॑ कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु॑ कृणुते दीर्घमायुः ॥१४॥ ३९

यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यं॑ शतानी॑काय सुमनस्यमानाः ।

तन्म आ बध्नामि॑ शतशार्दूयायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम् ॥१५॥

४०

उत नोऽहिर्बुध्न्यः॑ शृणोत्वज एकपात्पृथिवी संमुद्रः ।

विश्वे देवा क्रतावृधो॑ हुवाना मृता मन्त्राः कविश्रस्ता अवन्तु ॥१६॥

४१

इमा गिर आदित्येभ्यो॑ घृतस्नूः सनाद्राजभ्यो जुह्वा जुहोमि ।

शृणोतु मित्रो अर्यमा भगो नस्तुविजातो वरुणो दक्षो अंशः ॥१७॥

४२

सप्त ऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्त रक्षन्ति सदमप्रमादम् ।

सप्तापः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र जागृतो अस्वप्नजौ सत्रसदा च देवा ॥१८॥

४३

उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे ।

उप प्र यन्तु मरुतः सुदानव इन्द्रं प्राशर्भवा मचा ॥१९॥

४४

प्र नूनं ब्रह्मणस्पतिर्मत्रं वदत्युक्थ्यम् ।

यस्मिन्निन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा देवा ओकांसि चक्रिरे ॥२०॥

४५

ब्रह्मणस्पते त्वमस्य यन्ता सूक्तस्य बोधि तनयं च जिव ।

विश्वं तद्भद्रं यदवन्ति देवा बृहद्वंदम विदथे सुवीराः ।

य इमा विश्वा विश्वकर्मा यो नः पितामहपतेऽन्नस्य नो देहि ॥२१॥ (२) ४६ [१९०८]

यज्ञाग्रतः पञ्चविंशतिः ॥ २५ ॥ आग्राग्रेकविंशतिः ॥ २६ ॥ द्वयोरनुवाकयोः षट्चत्वारिंशत् ॥४६॥

॥ इति शुक्लयजुःकाण्वसंहितायां त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३३ ॥

### अथ चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ।

देवं सवितुः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय ।

दिव्यो गन्धर्वः केतूपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ॥१॥

१

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥२॥

२

विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परा सुव । यद्भद्रं तन्न आ सुव ॥३॥

३

विभक्तारं॑ हवामहे वसोश्चित्रस्य राधसः । सवितारं॑ नृचक्षसम् ॥४॥

४ [१९१२]

ब्रह्मणे ब्राह्मणं क्षत्राय राजन्यं मरुद्भ्यो वैश्यं तपसे शुद्रं तमसे तस्करं नारकाय  
 वीरहर्णम् । पाप्मने ह्रीवमाक्रयाया अयोगं कामाय पुंश्चलमतिकृष्टाय मागधम् ॥५॥ ५  
 नृत्ताय सूतं गीताय शैलुपं धर्माय सभाचरं नरिष्ठायै भीमलम् । नर्माय रेभं हसाय  
 कारिमानन्दाय स्त्रीषुखं प्रमदे कुमारीपुत्रं मेधायै रथकारं धैर्याय तक्षोणम् ॥६॥ ६  
 तपसे कौलालं मायायै कर्मारं रूपाय मणिकारं शुभे वपं शरव्याया इषुकारं  
 हेत्यै धनुष्कारम् । कर्मणे ज्याकारं दिष्टाय रज्जुसर्ज मृत्युवै मृगयुमन्तकाय श्वनिनम् ॥७॥७  
 नदीभ्यः पौञ्जिष्टमृक्षीकाभ्यो नैपादं पुरुषव्याघ्राय दुर्मदं गन्धर्वाप्सरोभ्यो वात्यम् ।  
 प्रयुग्भ्य उन्मत्तं सर्पदेवजनेभ्योऽप्रतिपदमयेभ्यः कितवमर्यताया अकितवं  
 पिशाचेभ्यो बिदलकारी यातुधानेभ्यः कण्टकीकारीम् ॥८॥ (१) ८

संधये जारं गेहायोपपतिमार्त्यं परिवित्तं निर्ऋत्यै परिविविदानमराध्या एदिधिषुःपतिं  
 निष्कृत्यै पेशस्कारीं संज्ञानाय स्मरकारीम् । प्रकामोद्यायोपमदं वर्णीयानुरुधं  
 बलायोपदाम् ॥१॥ ९

उत्सादेभ्यः कुञ्जं प्रमुदे वामनं द्वाभ्यः स्नामं स्वप्नायान्धमधर्माय बधिरं पवित्राय  
 भिषजम् । प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्शमाशिक्षायै प्रश्निनमुपशिक्षाया अभिप्रश्निनं मर्यादायै  
 प्रश्नविवाकम् ॥२॥ १०

अर्मेभ्यो हस्तिपं जवायाश्चपं पुष्ट्यै गोपालं वीर्यायाविपालं तेजसेऽजपालमिरायै कीनाशम् ।  
 कीलालाय सुराकारं भद्राय गृहपं श्रेयसे वित्तधमाध्यक्षायानुक्षत्तारम् ॥३॥ ११

भार्यै दार्वह्वारं प्रभाया अग्न्येधं ब्रध्नस्य विष्टपायाभिपेत्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारम् ।  
 देवलोकाय पेशितारं मनुष्यलोकाय प्रकरितारं सर्वेभ्यो लोकेभ्य उपसेत्तारमव ऋत्यै  
 वधायोपमन्थितारं मेधाय वासःपलपूर्णां प्रकामाय रजयित्रीम् ॥४॥ १२

ऋतये स्तेनहृदयं वैरहत्याय पिशुनं विविक्त्यै क्षत्तारमापद्रष्टायायानुक्षत्तारं  
 बलायानुचरं भृशे परिष्कन्दम् । प्रियाय प्रियवादिनमरिष्टया अश्वसादं स्वर्गाय  
 लोकाय भागदुधं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारम् ॥५॥ (२) १३

मन्यवैऽयस्तापं क्रोधाय निसरं योगाय योक्तां शोकायाभिसर्तारं क्षेमाय विमोक्तारं-  
 मुत्कूलनिकुलेभ्यस्त्रिणिनम् । वपुषे मानस्कृतं शीलायाञ्जनीकारीं निर्ऋत्यै कोशकारीं  
 यमायासम् ॥१॥ १४ [१९२२]

यमाय यमस्रमर्थवभ्योऽवतोकाः संवत्सराय पर्यायिणीं परिवत्सरायाविजातामिदावत्सराया-  
तीत्वरीमिद्वत्सरायातिष्कद्वरीम् । वत्सराय विजर्जराः संवत्सराय पलिक्रीमृभुभ्योऽजिनसन्धः  
साध्येभ्यश्चर्ममम् ॥२॥ १५

सरोभ्यो धैवस्सुपस्थावराभ्यो दाशं वैशन्ताभ्यो वैन्दं नड्वलाभ्यः शौक्लम् ।  
पाराय मार्गारमवाराय केवर्त तीर्थेभ्य आनन्दं विपमेभ्यो मैनालम् ।  
स्वनेभ्यः पर्णकं गुहाभ्यः किरातः सानुभ्यो जम्भकं पर्वतेभ्यः किपूरुपम् ॥३॥ १६

बीभत्सायै पौलकसं वर्णीय हिरण्यकारं तुलायै वाणिजं पश्चादोपायं ग्लाविनं विश्वेभ्यो  
भूतेभ्यः सिध्मलम् । भूतैर्जागरणमभूतैस्वपनमार्तैर्जनवादिनं व्यृद्ध्या अपगल्भः  
संशराय प्रच्छिदम् ॥४॥ १७

अक्षराजाय कितवं कृतायादिनवदश त्रेतायै कल्पिनं द्वापरायाधिकल्पिनमास्कन्दाय  
समास्थाणुं मृत्यवे गोव्यच्छमन्तकाय गोघातम् । क्षुधे यो गां विकृन्तन्तं भिक्षमाण  
उपतिष्ठति दुष्कृताय चरकाचार्यं पाप्मने सैलगम् ॥५॥ (३) १८

प्रतिश्रुत्काया अर्तनं घोषाय भपमन्ताय बहुवादिनमनुन्ताय मूकः शब्दायालम्बरा-  
घातम् । महसे वीणावादं क्रोशाय तूणवध्ममवरस्पराय शङ्खध्मं वनाय वनपमन्य-  
तोऽरण्याय दावपम् ॥१॥ १९

नर्माय पुंश्चलः हसाय कारिं यादसे शाबल्यां ग्रामण्यं गणकमभिक्रोशकं तान्महसे ।  
वीणावादं पाणिघ्नं तूणवध्मं तान्नुत्तायानन्दाय तलवम् ॥२॥ २०

अग्नये पीवानं पृथिव्यै पीठसर्पिणं वायवे चाण्डालमन्तरिक्षाय वःशनुर्तिनं दिवे  
खलतिः सूर्याय हर्यक्षम् । नक्षत्रेभ्यः किर्मिरं चन्द्रमसे किलासमहं शुक्लं पिङ्गाक्षं  
रात्र्यै कृष्णं पिङ्गाक्षम् ॥ ३ ॥ २१

अथैतानष्टौ विरूपाना लभतेऽतिशुक्लं चातिकृष्णं चातिदीर्घं चातिह्रस्वं च ।  
अतिस्थूलं चातिकृशं चातिकूलं चातिलोमशं चाशूद्रा अब्राह्मणास्ते प्राजापत्याः ।  
मागधः पुंश्चली क्लीबः कितवोऽशूद्रा अब्राह्मणास्ते प्राजापत्याः ॥४॥ (४) २२ [१९३०]

देव सवितरष्ट ॥ ८ ॥ संधये जारं पञ्च ॥ ५ ॥ मन्यवे पञ्च ॥ ५ ॥ प्रतिश्रुत्कायै चतस्रः ॥ ४ ॥

चतुरनुवाकेषु द्वाविंशतिः ॥२१॥ इति शुक्लयजुःकाण्वसोहतायां चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥३४॥

## अथ पञ्चत्रिंशोऽध्यायः ।

|  |           |
|--|-----------|
| सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।              |           |
| स भूर्मिः सर्वतः स्पृत्वात्यतिष्ठदशाङ्गुलम् ॥१॥        | १         |
| पुरुष एवेदः सर्वं यद्धृतं यच्च भव्यम् ।                |           |
| उतामृतत्वस्येशानो यदन्नैनातिरोहति ॥२॥                  | २         |
| एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः ।                  |           |
| पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥३॥        | ३         |
| त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहामवत्पुनः ।        |           |
| ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥४॥                | ४         |
| ततो विराळजायत विराजो अधि पूरुषः ।                      |           |
| स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥५॥              | ५         |
| तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम् ।             |           |
| पृश्नस्तान्श्चक्रे वायव्यानाग्न्या ग्राम्याश्च ये ॥६॥  | ६         |
| तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे ।            |           |
| छन्दाँमि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥७॥            | ७         |
| तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः ।                    |           |
| गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥८॥           | ८         |
| तं यज्ञं ब्रहिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः ॥           |           |
| तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥९॥                   | ९         |
| यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।                   |           |
| मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरु पादा उच्येने ॥१०॥      | १०        |
| ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्वाहू राजन्यः कृतः ।             |           |
| ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पश्चाँ शूद्रो अजायत ॥ ११ ॥         | ११        |
| चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।               |           |
| श्रोत्रोद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥१२॥         | १२        |
| नाभ्यां आमीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।         |           |
| पश्चाँ भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकौऽर अकल्पयन् ॥ १३ ॥ | १३ [१९४३] |



यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।

वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्भविः ॥१४॥

१४

सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।

देवा यद्यज्ञं तन्वाना अवध्नन्पुरुषं पशुम् ॥१५॥

१५

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्मीणि प्रथमान्यामन् ।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वं साध्याः सन्ति देवाः ॥१६॥ (१)

१६

अज्यः संभृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्तताग्रे ।

तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे ॥१॥

१७

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ।

तमेव विदित्वार्ति मृत्युमेति नान्यः पन्थां विद्यतेऽयनाय ॥२॥

१८

प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरजायमानो बहुधा वि जायते ।

तस्य योनिं परि पश्यन्ति धीरास्तस्मिन्ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा ॥३॥

१९

यो देवेभ्य आतपति यो देवानां पुरोहितः ।

पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये ॥४॥

२०

रुचं ब्राह्मं जनयन्तो देवा अग्रे तदब्रुवन् ।

यस्तैव ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवा अमन्वशे ॥५॥

२१

श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या अहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनो व्यात्तम् ।

इष्णन्निषाणामुं मे इषाण सर्वलोकं मे इषाण ॥६॥ (२)

२२

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः ।

तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म तदापः तत्प्रजापतिः ॥१॥

२३

सर्वे निमेषा जज्ञिरे विद्युतः पुरुषादधि ।

नैनमुर्ध्वं न तिर्यश्चं न मध्ये परि जग्रभत् ॥२॥

२४

न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यशः ।

हिरण्यगर्भ इत्येषः ॥३॥

२५

एषो ह देवः प्रदिशोऽनु सर्वाः पूर्वा ह जातः स उ गर्भे अन्तः ।

स एव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ् जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः ।

यस्मान्न जात इत्येषः ॥४॥

२६ [ १९५६ ]

- वेनस्तत्पश्यन्निहितं गुहा सद्यत्र विश्वं भवत्येकनीलम् ।  
 तस्मिन्निदं सं च वि चैति सर्वं स ओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु ॥५॥ २७
- प्र तद्वोचेदमृतं नु विद्वान्गन्धर्वो धाम विभृतं गुहा सत् ।  
 त्रीणि पदानि निहिता गुहास्य यस्तानि वेद स पितुः पितासत् ॥६॥ २८
- स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।  
 यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्वरयन्त ॥७॥ २९
- परीत्य भूतानि परीत्य लोकान्परीत्य सर्वाः प्रदिशो दिशश्च ।  
 उपस्थाय प्रथमजामृतस्यात्मनात्मानमभि सं विवेश ॥८॥ ३०
- परि द्यावापृथिवी सद्य इत्वा परि लोकान्परि दिशः परि स्वः ।  
 क्रतस्य तन्तुं विततं विचृत्य तदपश्यत्तदभवत्तदासीत् ॥९॥ ३१
- सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् । सनि मेधामयासिषं स्वाहा ॥१०॥ ३२
- यां मेधां देवगुणाः पितरश्चोपासते । तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥११॥ ३३
- इदं मे ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रियमश्नुताम् ।  
 मयि देवा दधतु श्रियमुत्तमां तस्यै ते स्वाहा ॥१२॥ (३) ३४
- अपेतो यन्तु पणयोऽसुम्ना देवपीयवः । अस्य लोकः सुतावतः ॥१॥ ३५
- द्युभिरहोभिरक्तुभिर्व्यक्तं यमो ददात्ववसानमस्मै ।  
 सविता ते शरीरेभ्यः पृथिव्यां लोकमिच्छतु । तस्मै युज्यन्तामुस्त्रियाः ॥२॥ ३६
- वायुः पुनातु सविता पुनान्वग्नेभ्राजसा सूर्यस्य वर्चसा । वि मुच्यन्तामुस्त्रियाः ॥३॥ ३७
- अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता । गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम् ॥४॥ ३८
- सविता ते शरीराणि मातुरुपस्थ आ वपतु । तस्मै पृथिवि शं भव ।  
 प्रजापतां त्वा देवतायामुपोदके लोके नि दधाम्यसौ ॥५॥ ३९
- परं मृत्यो अनु परं हि पन्थो यस्ते अन्य इतरो देवयानात्  
 चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजा रीरियो मोत वीरान् ॥६॥ ४०
- शं वातः शं हि ते घृणिः शं ते भवन्त्वष्टकाः ।  
 शं ते भवन्त्वग्नयः पार्थिवासो मा त्वाभि शूशुचन् ॥ ७ ॥ ४१
- कल्पन्तां ते दिशस्तुभ्यमापः शिवतमास्तुभ्यं भवन्तु सिन्धवः ।  
 अन्तरिक्षं शिवं तुभ्यं कल्पन्तां ते दिशः सर्वाः ॥८॥ ४२ [१९७९]

|   |             |
|---|-------------|
| अश्मन्वती रीयते सः रश्मध्वमुत्तिष्ठतु प्र तंरता सखायः ।                 |             |
| अत्रा जहीमोऽशिवा ये असञ्जिवान्वयमुत्तरेमाभि वाजान् ॥९॥                  | ४३          |
| अपाघमप किल्विषमप कृत्यामपो रपः ।  |             |
| अपामार्ग त्वमस्मदप दुःष्वप्यः सुव ॥१०॥                                  | ४४          |
| सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु ।                 |             |
| योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः ॥११॥                                | ४५          |
| अनङ्गाहमन्वारभामहे स्वस्तये ।   |             |
| स न इन्द्र इव देवेभ्यो वह्निः संतारणो भव ॥१२॥                           | ४६          |
| उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम् ।                                  |             |
| देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥१३॥                             | ४७          |
| अग्न आयुःपि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः ।                                    |             |
| आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥१४॥  | ४८          |
| आयुष्मानग्ने हविषा वृधानो घृतप्रतीको घृतयोनिरेधि ।                      |             |
| घृतं पीत्वा मधु चारु गव्यं पितेव पुत्रमभि रक्षतादिमान्त्स्वाहा ॥१५॥     | ४९          |
| इमं जीवेभ्यः परिधि दधामि मैषां नु गादपरो अर्थमेतम् ।                    |             |
| शतं जीवन्तु शरदः पुरुचीरन्तर्मृत्युं दधतां पर्वतेन ॥१६॥                 | ५०          |
| परीमे गामनेषत पर्यग्निमहृषत । देवेष्वक्रत श्रवः क इमाँर आ दधर्षति ॥१७॥  | ५१          |
| क्रव्यादमग्निं प्र हिणोमि दूरं यमराज्यं गच्छतु रिप्रवाहः ।              |             |
| इहैवायमितरो जातवेदा देवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन् ॥१८॥                   | ५२          |
| वह वषां जातवेदः पितृभ्यो यत्रैतान्वेत्थ निहितान्पराके ।                 |             |
| मेदसः कुल्या उप तान्तस्त्रवन्तु सत्या एषामाशिषः सन्तु कामाः स्वाहा ॥१९॥ | ५३          |
| स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी ।                                   |             |
| यच्छा नः शर्म सप्रथाः । अप नः शोशुचदुधम् ॥२०॥                           | ५४          |
| अस्माच्चमधि जातोऽसि त्वदयं जायतां पुनः । असौ स्वर्गाय लोकाय स्वाहा ।    |             |
| अप नः शोशुचदुधम् ॥ २१ ॥ (४)   | ५५ [ १९८५ ] |

सहस्रशीर्षा षोडश ॥१६॥ अद्भ्यः संभृतः षट् ॥६॥ तदेवाग्निर्द्वादश ॥१२॥

अपेतो यन्वेकविंशतिः ॥२१॥ चतुरनुवाकेषु पञ्चपञ्चाशत् ॥ ५५ ॥

॥ इति शुक्लयजुःकाण्वसंहितायां पञ्चत्रिंशोऽध्यायः ॥३५॥

## अथ षट्त्रिंशोऽध्यायः ।

ऋचं वाचं प्र पद्ये मनो यजुः प्र पद्ये सामं ग्राणं प्र पद्ये चक्षुः श्रोत्रं प्र पद्ये ।

वागोज्ञः सहोज्ञो मयि प्राणापानौ ॥१॥

१

यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वार्तितृणं बृहस्पतिर्मे तदधातु ।

शं नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः ॥२॥

२

भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥३॥

३

कया नश्चित्र आ भुवदूती मदावृधः सखा । कया शचिष्ठया वृता ॥४॥

४

कस्त्वा मन्यो मदानां मंहिष्ठो मत्सदन्धसः । हृह्वा चिदारुजे वसु ॥५॥

५

अभी पु णः मग्नीनामविता जरितृणाम् । शतं भवास्पृतिभिः ॥६॥

६

कया त्वं न उत्याभि प्र मन्दसे वृपन् । कया स्तोतृभ्य आ भर ॥७॥

७

इन्द्रो विश्वस्य राजति । शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥८॥

८

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वयमा । शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुक्कमः ॥९॥

९

शं नो वार्तः पवताः शं नस्तपतु सूर्यः । शं नः कर्निकदहेवः पर्जन्यो अमि वर्षतु ॥१०॥

१०

अहानि शं भवन्तु नः शं रात्रीः प्रति धीयताम् ।

शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या ।

शं न इन्द्रापृषणा वाजसातो शमिन्द्रागोमा सुविताय शं योः ॥११॥

११

शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शं योरभि सवन्तु नः ॥१२॥

१२

स्योना पृथिवि नो भवानृक्षग निवेशनी । यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥१३॥

१३

आपो हि ष्ठा मन्योभुवस्ता न ऊर्जे दधातन । महे रणाय चक्षमे ॥१४॥

१४

यो वः शिवतमो रमस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव मानरः ॥१५॥

१५

तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ॥१६॥

१६

द्यौः शान्तिरन्तर्िक्षः शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोपधयः शान्तिः ।

वनस्पतयः शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः ॥१७॥

१७

दृते दृहं मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् ।

मित्रम्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥१८॥

१८

दृते दृहं मा । ज्योक्ते सदृशि जीव्यासं ज्योक्ते सदृशि जीव्यासम् ॥१९॥

१९

नमस्ते हरमे शोचिपे नमस्ते अस्त्वर्चिषे ।

अन्यास्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यं शिवो भव ॥२०॥

२० [१००५]

नमस्ते अस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्तवे ।

नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्वः समीहसे ॥२१॥

२१

यतोयतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु ।

शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥२२॥

२२

सुमित्रिया न आप ओर्पधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु ।

योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः ॥२३॥

२३

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् ।

पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतम् ॥२४॥ (१) [२००९] २४

ऋचं वाचमित्येकानुवाकं चतुर्विंशतिः ॥२४॥

॥ इति शुक्लयजुःकाण्वसंहितायां पट्त्रिंशोऽध्यायः ॥३६॥

### अथ सप्तत्रिंशोऽध्यायः ।

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्ब्राह्मण्यो पूष्णो हस्ताभ्याम् । आ ददे नारिरसि ॥१॥ १

युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः ।

वि होत्रा दधे वयुनाविदेक इन्मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः ॥२॥

२

देवीं द्यावापृथिवी मुखस्य वामद्य शिरो राध्यासं देवयजने पृथिव्याः ।

मुखाय त्वा मुखस्य त्वा शीर्ष्णे ॥३॥

३

देव्यो वम्रियो भूतस्य प्रथमजा मुखस्य वोऽद्य शिरो राध्यासं देवयजने पृथिव्याः ।

मुखाय त्वा मुखस्य त्वा शीर्ष्णे ॥४॥

४

इत्यग्रं आसीर्मखस्य तेऽद्य शिरो राध्यासं देवयजने पृथिव्याः ।

मुखाय त्वा मुखस्य त्वा शीर्ष्णे ॥५॥

५

इन्द्रस्यौज स्थ मुखस्य वोऽद्य शिरो राध्यासं देवयजने पृथिव्याः ।

मुखाय त्वा मुखस्य त्वा शीर्ष्णे । मुखाय त्वा मुखस्य त्वा शीर्ष्णे ।

मुखाय त्वा मुखस्य त्वा शीर्ष्णे ॥६॥

६

प्रेतु ब्रह्मणस्पतिः प्र देव्येतु सूनृता । अच्छा वीरं नर्यं पङ्क्तिराधसं देवा यज्ञं नयन्तु नः ।

मुखाय त्वा मुखस्य त्वा शीर्ष्णे । मुखाय त्वा मुखस्य त्वा शीर्ष्णे ।

मुखाय त्वा मुखस्य त्वा शीर्ष्णे ॥७॥

७ [२०१६]

म॒खस्य॑ शिरोऽसि । म॒खाय॑ त्वा म॒खस्य॑ त्वा शी॒र्ष्णे । म॒खस्य॑ शिरोऽसि ।  
 म॒खाय॑ त्वा म॒खस्य॑ त्वा शी॒र्ष्णे । म॒खस्य॑ शिरोऽसि । म॒खाय॑ त्वा म॒खस्य॑ त्वा शी॒र्ष्णे ।  
 म॒खाय॑ त्वा म॒खस्य॑ त्वा शी॒र्ष्णे । म॒खाय॑ त्वा म॒खस्य॑ त्वा शी॒र्ष्णे ।  
 म॒खाय॑ त्वा म॒खस्य॑ त्वा शी॒र्ष्णे ॥८॥

८

अ॒श्वस्य॑ त्वा वृ॒ष्णः श॒क्रा धू॒पयामि॑ दे॒वय॑जने पृथि॒व्याः । म॒खाय॑ त्वा म॒खस्य॑ त्वा शी॒र्ष्णे ।  
 अ॒श्वस्य॑ त्वा वृ॒ष्णः श॒क्रा धू॒पयामि॑ दे॒वय॑जने पृथि॒व्याः । म॒खाय॑ त्वा म॒खस्य॑ त्वा शी॒र्ष्णे ।  
 अ॒श्वस्य॑ त्वा वृ॒ष्णः श॒क्रा धू॒पयामि॑ दे॒वय॑जने पृथि॒व्याः । म॒खाय॑ त्वा म॒खस्य॑ त्वा शी॒र्ष्णे ।  
 म॒खाय॑ त्वा म॒खस्य॑ त्वा शी॒र्ष्णे । म॒खाय॑ त्वा म॒खस्य॑ त्वा शी॒र्ष्णे  
 म॒खाय॑ त्वा म॒खस्य॑ त्वा शी॒र्ष्णे ॥९॥

९

ऋ॒जवे॑ त्वा सा॒धवे॑ त्वा सु॒क्षित्यै॑ त्वा । म॒खाय॑ त्वा म॒खस्य॑ त्वा शी॒र्ष्णे ।  
 म॒खाय॑ त्वा म॒खस्य॑ त्वा शी॒र्ष्णे ।  
 म॒खाय॑ त्वा म॒खस्य॑ त्वा शी॒र्ष्णे ॥१०॥ (१)

१०

य॒माय॑ त्वा म॒खाय॑ त्वा सूर्य॑स्य त्वा त॒र्पसे॑ ।  
 दे॒वस्त्वा॑ स॒विता॑ म॒ध्वान॑क्तु पृथि॒व्याः स॒ꣳ स्पृश॑स्पाहि ।  
 अ॒र्चिर॑सि शोचि॒रसि॑ तपोऽसि ॥१॥

११

अना॑धृष्टा पुरस्ता॑दुग्रे॒राधि॑पत्य॒ आयु॑र्मे दाः पु॒त्रव॑ती दक्षि॒णत॑ इन्द्र॒स्याधि॑पत्ये प्र॒जां मे॑ दाः ।  
 सु॒पदा॑ प॒श्चाद्दे॒वस्य॑ स॒वितु॑राधि॒पत्ये॑ चक्षु॒र्मे दा॑ आश्रुतिरुत्त॒रतो॑ धा॒तुराधि॑पत्ये रा॒यस्पोष॑ मे दाः ।  
 वि॒धृतिरु॑परि॒ष्टाद् वृ॒हस्प॑ते॒राधि॑पत्य॒ ओजो॑ मे दा विश्वा॑भ्यो मा ना॒ष्टाभ्य॑स्पाहि म॒नोर॑श्वासि ॥१२॥ १२  
 स्वाहा॑ म॒रुद्भिः॑ परि॑ श्रीयस्व दि॒वः स॒ꣳ स्पृश॑स्पाहि । मधु॑ मधु॑ मधु॑ ॥३॥ (२)

१३

ग॒र्भो दे॒वानां॑ पि॒ता म॑तीनां पतिः प्र॒जाना॑म् ।

सं दे॒वो दे॒वेन॑ स॒वित्रा॑ ग॒तु स॒ꣳ सूर्ये॑ण रोचते ॥१॥

१४

सम॒ग्निर॒ग्निना॑ ग॒तु सं दै॒व्येन॑ स॒वित्रा॑ स॒ꣳ सूर्ये॑णारोचिष्ट ।

स्वाहा॑ सम॒ग्निर॒स्तर्प॑सा ग॒तु सं दै॒व्येन॑ स॒वित्रा॑ स॒ꣳ सूर्ये॑णारुरुचत ॥२॥

१५

ध॒र्ता दि॒वो वि॒ भाति॑ त॒र्पम॑स्पृथि॒व्यां ध॒र्ता दे॒वो दे॒वाना॑मम॒र्त्यस्त॑पोजाः ।

वाच॑म॒स्मे नि य॑च्छ दे॒वायु॑र्वम् ॥३॥

१६

अ॒र्प॒श्यं गो॒पाम॑निपद्यमान॒मा च॒ परा॑ च पृथि॒भिश्चर॑न्तम् ।

स स॒ध्रीचीः॑ स वि॒षूची॑र्वसान् आ व॑रीवर्ति भु॒वने॑ष्वन्तः ॥४॥

१७ [१०२६]

विश्वासां भुवां पते विश्वस्य मनसस्पते विश्वस्य वचसस्पते सर्वस्य वचसस्पते ।

देवश्रुत्वं देव धर्म देवो देवान्पाह्यत्र प्रावीरन्तु वां देववीतये ।

मधु माध्वीभ्यां मधु माधूचीभ्याम् ।

हृदे त्वा मनसे त्वा दिवे त्वा सूर्याय त्वा । ऊर्ध्वो अर्ध्वरं दिवि देवेषु धेहि ॥५॥ १८

पिता नोऽसि पिता नो धोधि नमस्ते अस्तु मा मा हिंसीः ।

त्वष्टमन्तस्त्वा सपेम पुत्रान्पशून्मरिष्ये धेह्यरिष्टाहः सह पत्या भूयासम् ॥६॥ १९

अहः केतुना जुषताः सुज्योतिर्ज्योतिषा स्वाहा ।

रात्रिः केतुना जुषताः सुज्योतिर्ज्योतिषा स्वाहा ॥७॥ (३) २० [२०२९]

देवस्य त्वा दश ॥१०॥ यमाय तिस्रः ॥३॥ गर्भो देवानां सप्त ॥७॥ इत्यनुवाकेषु विशन्ति ॥२०॥

॥ इति शुक्लयजुःकाण्वसंहितायां सप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥३७॥

### अथाष्टत्रिंशोऽध्यायः ।

देवस्य त्वा सवितुः प्रमवेऽश्विनोर्वाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।

आ दुदेऽदित्यै रास्नासि ॥१॥ १

इल एहदित एहि सरस्वत्येहि । अमावेद्यमावेद्यमावेहि ॥२॥ २

अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या उष्णीषः । पूषासि घर्माय दीप्व ॥३॥ ३

अश्विभ्यां पिन्वस्व सरस्वत्यै पिन्वस्वेन्द्राय पिन्वस्व । स्वाहेन्द्रवत्स्वाहेन्द्रवत्स्वाहेन्द्रवत् ॥४॥ ४

यस्ते स्तनः शशयो यो मयोभूर्यो रत्नधा वसुविद्यः सुदत्रः ।

येन विश्वा पुष्यसि वार्याणि सरस्वति तमिह धातवेऽकः । उर्वन्तारिक्षमन्वैमि ॥५॥ ५

गायत्रं छन्दोऽमि त्रैष्टुभं छन्दोऽमि द्यावापृथिवीभ्यां त्वा परि गृह्णाम्यन्तरिक्षेणोप यच्छामि ।

इन्द्राश्विना मधुनः सारधस्य धर्म पात वसवो यजत वाट् ।

स्वाहा सूर्यस्य रश्मये वृष्टिवनये ॥६॥ (१) ६

समुद्राय त्वा वाताय स्वाहा सरिराय त्वा वाताय स्वाहा ।

अनाधृष्याय त्वा वाताय स्वाहाप्रतिधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा ॥

अवस्ये त्वा वाताय स्वाहाशिमिदाय त्वा वाताय स्वाहा ॥१॥ ७

इन्द्राय त्वा वसुमते रुद्रवते स्वाहेन्द्राय त्वादित्यवते स्वाहा ।

इन्द्राय त्वाभिमातिघ्ने स्वाहा सवित्रे त्व ऋभुमते विभुमते वाजवते स्वाहा बृहस्पतये त्वा

विश्वदेव्यावते स्वाहा ॥२॥

८ [२०३७]

यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ॥३॥ ९

विश्वा आशा दक्षिणसत्सर्वान्देवानयाळिह ।

स्वाहाकृतस्य घर्मस्य मर्धोः पितृमत्स्विना ॥४॥ १०

दिवि धा इमं यज्ञमिमं यज्ञं दिवि धाः । स्वाहाग्रये यज्ञियाय शं यजुर्भ्यः ॥५॥ ११

अश्विना घर्म पातुः हार्द्वीनुमहर्दिवाभिर्रुतिभिः ।

तन्त्रायिणे नमो द्यावापृथिवीभ्याम् ॥६॥ १२

अपातामश्विना घर्ममनु द्यावापृथिवी अमसाताम् । इहैव रातयः सन्तु ॥७॥ १३

इपे पिन्वस्वोर्जे पिन्वस्व ब्रह्मणे पिन्वस्व क्षत्राय पिन्वस्व द्यावापृथिवीभ्यां पिन्वस्व ।

धर्मासि सुधर्मामेन्यस्मे नृम्णानि धारय ब्रह्म धारय क्षत्रं धारय विश्वं धारय ॥८॥ (२) १४

स्वाहा पूष्णे शरमे स्वाहा ग्रावभ्यः स्वाहा प्रतिरवेभ्यः ।

स्वाहा पितृभ्य ऊर्ध्ववर्हिभ्यो घर्मपावभ्यः स्वाहा

द्यावापृथिवीभ्याः स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः ॥९॥ १५

स्वाहा रुद्राय रुद्रहूतये स्वाहा सं ज्योतिषा ज्योतिः ।

अहः केतुना जुपताः सुज्योतिर्ज्योतिषा स्वाहा रात्रिः केतुना जुपताः सुज्योतिर्ज्योतिषा स्वाहा ।

मथु हुतमिन्द्रतमे अग्रा अग्र्याम ते देव घर्म नमस्ते अस्तु मा मां हिंसीः ॥१०॥ (३) १६

अभीमं महिमा दिवं विप्रो बभूव सप्रथाः ।

उत श्रवसा पृथिवीः स मीदस्व महार अमि रोचस्व देववीतमः ।

वि धूममग्रे अरुपं मियेध्य मुज प्रशस्त दर्शतम् ॥११॥ (४) १७

या ते घर्म दिव्या शुग्या गायत्र्याः हविर्धानं । सा त आ प्यायतां निष्ठायायतां तस्यै ते स्वाहा ।

या ते घर्मन्तर्गिश्ने शुग्या त्रिष्टुब्भ्याग्नीत्रे । सा त आ प्यायतां निष्ठायायतां तस्यै ते स्वाहा ।

या ते घर्म पृथिव्याः शुग्या जगत्याः सदस्या ।

सा त आ प्यायतां निष्ठायायतां तस्यै ते स्वाहा ॥१२॥ १८

क्षत्रस्य न्वा परस्पाय ब्रह्मणस्तन्वै पाहि ।

विशस्त्वा धर्मणा वयमनु कामाम सुविताय नव्यमे ॥१३॥ १९

चतुःसक्तिर्नाभिर्कृतस्य सप्रथाः स नो विश्वायुः सप्रथाः स नः सर्वायुः सप्रथाः ।

अप द्वेपो अप ह्वरोऽन्यव्रतस्य सशिम ॥१४॥



- धर्मेतत्ते पुरीषं तेन वर्धस्व चा चं प्यायस्व ।  
 वर्धिषीमहि च वयमा चं प्यासिषीमहि ॥४॥ २१
- अचिक्रददृषा हरिर्महान्मित्रो न दर्शतः । सः स्वयेण दिद्युतदुदधिर्निधिः ॥५॥ २२
- सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु ।  
 योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः ॥६॥ २३
- उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम् । देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ।  
 एधोऽस्येधिषीमहि सामिदमि तेजोऽमि तेजो मयि धेहि ॥७॥ (५) २४
- यावती द्यावापृथिवी यावच्च सप्त सिन्धवो वितस्थिरे ।  
 तावन्तमिन्द्र ते ग्रहमूर्जा गृह्णाम्यक्षितं मयि गृह्णाम्यक्षितम् ॥१॥ २५
- मयि त्यदिन्द्रियं ब्रह्ममयि दक्षो मयि क्रतुः ।  
 धर्मस्त्रिशुग्वि राजति विराजा ज्योतिषा सह ब्रह्मणा तेजमा सह ॥  
 पर्यसो रेते आभूतं तस्य दोहमशीमद्बुत्तरामुत्तराः ममाम् ॥२॥ (६) २६
- त्विषः संवृक् क्रत्वे दक्षस्य ते सुपुम्णस्य ते सुपुम्णाग्रिहुतः ।  
 इन्द्रपीतस्य प्रजापतिभक्षितस्य मधुमत उपहूत उपहूतस्य भक्षयामि ॥१॥ (७) २७ [२०५६]
- देवस्य त्वा पट् ॥६॥ समुद्राय त्वाष्ट ॥८॥ स्वाहा पूष्णे द्वे ॥२॥ अभीममेका ॥१॥ या ते सप्त ॥७॥  
 यावती द्वे ॥२॥ त्विषःसंवृगेका ॥१॥ सप्तानुवाकेषु सप्तविंशति ॥२७॥  
 इति शुक्यजुःकाण्वसंहितायां अष्टत्रिंशोऽध्यायः ॥३८॥

### अथैकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ।

- स्वाहा प्राणेभ्यः सार्धिपतिकेभ्यः पृथिव्यै स्वाहाग्नये स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा वायवे स्वाहा  
 दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा । दिग्भ्यः स्वाहा चन्द्राय स्वाहा नक्षत्रेभ्यः स्वाहाद्भ्यः  
 स्वाहा वरुणाय स्वाहा । नाभ्यै स्वाहा पूताय स्वाहा ॥१॥ (१) १
- वाचे स्वाहा प्राणाय स्वाहा प्राणाय स्वाहा ।  
 चक्षुषे स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा ॥१॥ २
- मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय ।  
 पशुनाः रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा ॥२॥ (२) ३ [२०५९]

प्रजापतिः संभ्रियमाणः सम्राट् संभृतो वैश्वदेवः संसन्नो घर्मः प्रवृक्तस्तेज उद्यत आश्विनः  
पर्यस्यानीयमाने पूषा विष्यन्दमाने मारुतः कथन् ।

मैत्रः शरसि संताप्यमाने वायव्यो ह्रियमाण आग्नेयो हूयमानो वाग्धुतः ॥१॥ (३) ४

सविता प्रथमेऽहन्नग्निर्द्वितीये वायुस्तृतीय आदित्यश्चतुर्थे

चन्द्रमाः पञ्चम ऋतुः षष्ठे मरुतः सप्तमे बृहस्पतिरष्टमे ।

मित्रो नवमे वरुणो दशम इन्द्र एकादशे विश्वे देवा द्वादशे ॥१॥ (४) ५

उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च । सासह्वाश्चाभियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा ॥१॥ (५) ६

अग्निः हृदयेनाशनिः हृदयाग्रेण पशुपतिं कृत्स्नहृदयेन भवं यक्रा ।

शर्वं मतस्त्राभ्यामीशानं मन्युना महादेवमन्तःपर्शव्येनोग्रं

देवं वनिष्ठुना वसिष्ठुहनुः शिङ्गीनि कोश्याभ्याम् ॥१॥ (६) ७

उग्रं लोहितेन मित्रं सौव्रत्येन रुद्रं दौव्रत्येनेन्द्रं प्रकीर्त्तेन मरुतो वलेन साध्यान्प्रमुदा ।

भवस्य कण्ठश्च रुद्रस्यान्तःपार्श्वं महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत् ॥१॥ (७) ८

लोमभ्यः स्वाहा लोमभ्यः स्वाहा त्वचे स्वाहा त्वचे स्वाहा लोहिताय

स्वाहा लोहिताय स्वाहा मेदसे स्वाहा मेदसे स्वाहा ।

मासेभ्यः स्वाहा मासेभ्यः स्वाहा स्नावभ्यः स्वाहा

स्नावभ्यः स्वाहास्थभ्यः स्वाहास्थभ्यः स्वाहा मज्जभ्यः स्वाहा मज्जभ्यः स्वाहा ।

रेतसे स्वाहा पायवे स्वाहा ॥१॥ (८) ९

आयासाय स्वाहा प्रायामाय स्वाहा मंयामाय स्वाहा वियासाय स्वाहाद्यासाय स्वाहा ।

शुचे स्वाहा शोचते स्वाहा शोकाय स्वाहा ॥१॥ १०

तपसे स्वाहा तप्यमानाय स्वाहा तप्ताय स्वाहा ।

निष्कृन्त्यै स्वाहा प्रायश्चित्यै स्वाहा भेषजाय स्वाहा ॥२॥ ११

यमाय स्वाहान्तकाय स्वाहा मृत्यवे स्वाहा ।

ब्रह्महत्याय स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा ॥३॥ (९) १२ [२०६८]

स्वाहाप्राणेभ्य एका ॥१॥ वाचे द्वे ॥२॥ प्रजापतिः संभ्रियमाण एका ॥१॥ सविता प्रथम एका ॥१॥

उग्रश्चेका ॥१॥ अग्निः हृदयेनेका ॥१॥ उग्रलोहितेनेका ॥१॥ लोमभ्यः स्वाहा चेत्येका ॥१॥

आयासाय तिस्रः ॥३॥ नवानुवाकेषु द्वादश ॥१२॥

इति शुक्लयजु काण्वसंहितायां एकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ॥३९॥

## अथ चत्वारिंशोऽध्यायः ।

- ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किं च जगत्यां जगत् ।  
 तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृध्रः कस्यैस्विद्धनम् ॥१॥ १
- कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतः समाः ।  
 एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरैः ॥२॥ २
- असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः ॥  
 तांस्ते प्रेत्याभिर्गच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः ॥३॥ ३
- अनेजदेकं मनसो जयीयो नैनद्देवा आप्नुवन्पूर्वमर्षत् ।  
 तद्वावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति ॥४॥ ४
- तदेजति तन्नेजति तद्ग्रे तद्गन्तिके ।  
 तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः ॥५॥ ५
- यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुपश्यति ।  
 सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न वि जुगुप्सते ॥६॥ ६
- यस्मिन्त्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः ।  
 तत्र को मोहः कः शोकः एकत्वमनुपश्यतः ॥७॥ ७
- स पर्यगाच्छुक्रमक्रायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम् ।  
 कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूरीथातथ्यतोऽर्थान्व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समीभ्यः ॥८॥ ८
- अन्धं तमः प्र विंशन्ति येऽविद्यामुपासते ।  
 ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायां रताः ॥९॥ ९
- अन्यदेवाहुर्विद्ययान्यदाहुरविद्यया ।  
 इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे ॥१०॥ १०
- विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह ।  
 अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृत्तमश्नुते ॥११॥ ११
- अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽसंभूतिमुपासते ।  
 ततो भूय इव ते तमो य उ संभूत्या रताः ॥१२॥ १२
- अन्यदेवाहुः संभवादुन्यदाहुरसंभवात् ।  
 इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे ॥१३॥ १३

|   |           |
|---|-----------|
| संभूतिं च विनाशं च यस्तद्वेदोभयं सह ।<br>विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्यामृतमश्नुते ॥१४॥  | १४        |
| हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् ।<br>तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये ॥१५॥  | १५        |
| पूषन्नेक ऋषे यम सूर्यं प्राजापत्यं व्यूह रश्मीन्तसमूहं<br>तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि ।<br>योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि ॥१६॥ | १६        |
| वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तं शरीरम् ।<br>ॐ३ क्रतो स्मरं कृतं स्मरं क्रतो स्मरं कृतं स्मरं ॥१७॥   | १७        |
| अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।<br>युयोध्यस्मर्जुहुराणमेनो भूर्यिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ॥१८॥ (१)         | १८ [२०८६] |

॥ ईशावास्यमित्येकानुवाके अष्टादश ॥१८॥

॥ इति शुक्रयजुःकाण्वसंहितायां चत्वारिंशोऽध्यायः ॥४०॥

॥ इति शुक्रयजुःकाण्वसंहिता समाप्ता ।

# शुक्ल-यजुर्वेद-मन्त्र-सूची ।

( वाजसनेयीसंहितायाः काण्वसंहितायाश्च )

| मन्त्राः                   | वाजसनेयीयजुर्वेदे<br>अध्यायः, मंत्र | काण्वयजुर्वेदे<br>अध्यायः, मंत्र | मन्त्राः                 | वाजसनेयीयजुर्वेदे<br>अध्यायः, मंत्र | काण्वयजुर्वेदे<br>अध्यायः, मंत्र |
|----------------------------|-------------------------------------|----------------------------------|--------------------------|-------------------------------------|----------------------------------|
| अ-शुना ते                  | २०, २७                              | २२, १२                           | अग्निं दत्तं पुरो दधे    | २२, १७                              | २४, २२                           |
| अ-शुर-शुष्टे देव           | ५, ७                                | ५, ९                             | अग्निं युनज्मि शवसा      | १८, ५१                              | २०, २१                           |
| अ-शुश्च मे रश्मिश्च        | १८, १९                              | १९, ३१                           | अग्नि-स्तोमेन बोधय       | २२, १५                              | २४, १९                           |
| अकन्कर्म कर्मकृत           | ३, ४७                               | ३, ५५                            | अग्नि-हृदयेनाशानि        | ३९, ८                               | ३९, ७                            |
| अकन्ददग्निं स्तनयन         | १२, ६                               | १३, ७                            | अग्निं होतारं मन्ये      | १५, ४७                              | १६, ६९                           |
|                            | १२, २१                              | १३, २२                           | अग्निः पशुरासीत्         | २३, १७                              | २५, १९                           |
|                            | १२, ३३                              | १३, ३४                           | अग्निं प्रथुर्धर्मणस्पति | १०, २९                              | ११, ४१                           |
| अक्षन्नमीमदन्त             | ३, ५१                               | ३, ५९                            | अग्निः प्रियेषु धामसु    | १२, ११७                             | १३, ११६                          |
| अक्षन्पितरोऽमा             | १९, ३६                              | २१, ३७                           | अग्निमय होतारम्          | २१, ५९                              | २३, ५८                           |
| अक्षरपञ्चकिदृच्छन्दः       | १५, ५                               | १६, ६                            |                          | २८, २३                              | ३०, २३                           |
| अक्षराजाय कितवं            | ३०, १८                              | ३४, १८                           |                          | २८, ४६                              | ३०, ४६                           |
| अगन्म ज्योतिरमुता          | ८, ५२                               | ९, ३५                            | अग्निरग्निं जन्मना       | १८, ६६                              |                                  |
| अम आयू षि                  | १९, ३८                              | ८, १९                            | अग्निरामीध्न इन्द्रो     | ८, ५६                               | ९, ४१                            |
|                            | ३५, १६                              | २१, ४०                           | अग्निरेकाक्षरेण          | ९, ३१                               | १०, ४०                           |
|                            |                                     | २९, ३७                           | अग्निर्ऋषि पवमान         | २६, ९                               | २८, १२                           |
|                            |                                     | ३५, ४८                           |                          |                                     | २९, ३९                           |
| अम इन्द्र वरुण             | ३३, ४८                              | ३२, ४८                           | अग्निज्योतिर्ज्योतिरग्नि | ३, ९                                |                                  |
| अमये कव्यवाहनाय            | २, २९                               | २, ५४                            | अग्निज्योतिषं त्वा वायु  |                                     | ३, ९                             |
| अमये कुटुम्बनालभते         | २४, २३                              | २६, २७                           |                          |                                     | ३, १०                            |
| अमये गायत्राय              | २९, ६०                              | ३१, ४९                           | अग्निज्योतिषा ज्योतिमान् | १३, ४०                              | १४, ४२                           |
| अमये गृहपतये               | १०, २३                              | ११, ३३                           | अग्निर्देवता वातो        | १४, २०                              | १५, २२                           |
| अमये जुष्टं गृह्णामि       | १, १०                               | १, १४                            | अग्निर्मर्धा दिव         | ३, १२                               | ३, १८                            |
| अमये त्वा मघां             | ७, ४७                               | ९, १२                            |                          | १३, १४                              | १६, ४१                           |
| अमयेऽनीकवते                | २४, १६                              | २६, २०                           |                          | १५, २०                              |                                  |
|                            | २९, ५९                              | ३१, ५१                           | अग्निर्व्याणि जटघनद      | ३३, ९                               | ३२, ९                            |
| अमये पीवानम                | ३०, २१                              | ३४, २१                           | अग्निश्च पृथिवी च        | २६, १                               | २८, १                            |
| अमये संवेशपतये             | २, २०                               | २, ३७                            | अग्निश्च म आपश्च         | १८, १४                              | १९, २६                           |
| अमये स्वाहा सोमाय          | २२, ६                               | २४, ६                            | अग्निश्च म इन्द्रश्च     | १८, १६                              | १९, २८                           |
|                            | २२, २७                              | २४, ३७                           | अग्निश्च मे घर्मश्च      | १८, २२                              | १९, ३४                           |
| अमा३४ पर्त्नावन्सजुर्वेदेन | ८, १०                               | ८, १०                            | अग्निष्वात्ना पितर       | १९, ५९                              | २१, ५८                           |
| अमाव ( अ ) मिश्ररति        | ५, ४                                | ५, ४                             | अग्निष्वात्नानृतुमतो     | १९, ६१                              | २१, ६१                           |
| अमि तं मन्ये               | १५, ४१                              | १६, ६३                           | अग्निष्टे त्वचं मा       | १, २२                               | १, ३८                            |
|                            |                                     |                                  | अग्निस्तिग्मेन शोचिषा    | १७, १६                              | १८, १६                           |

|                            |         |         |
|----------------------------|---------|---------|
| अर्घ्याय मयोऽभिहितम्       | २, १५   | २, ३०   |
| अग्ने अन्ध्रावदेह न.       | ९, २८   | १०, ३५  |
| अग्ने अद्भि शतं ते         | १२, ८   | १३, ९   |
| अग्ने गृहपतेऽभि            | ३, ३९   | ३, ४८   |
| अग्ने गृहपते मृगह          | २, २७   | २, ४९   |
| अग्ने जातान्प्रणुदा न      | १५, १   | १६, १   |
| अग्ने तमश्याश्वं न स्तेमैः | १५, ४४  | १६, ६६  |
|                            | १७, ७७  | १८, ७७  |
| अग्ने तव श्रवो वयो         | १२, १०६ | १३, १०५ |
| अग्ने त्व नो अन्तम         | ३, २५   | ३, ३३   |
|                            | १५, ४८  | १६, ७०  |
|                            | २५, ४७  | २७, ४५  |
| अग्ने त्व पुर्यायो         | १२, ५९  | १३, ६०  |
| अग्ने त्व सु जागृहि        | ४, १४   | ४, १९   |
| अग्नेऽदब्धायोऽर्घातम       | २, २०   | २, ३६   |
| अग्ने दिवो अर्णमन्ध्रा     | १२, ४९  | १३, ५०  |
| अग्ने नय स्पृथा            | ५, ३६   | ५, ४५   |
|                            | ७, ४३   | ९, ८    |
|                            | ४०, १६  | ४०, १८  |
| अग्ने पत्नीरिहा वह         | २६, २०  |         |
| अग्ने पवस्व स्वपा          | ८, ३८   | ८, २०   |
|                            |         | २९, ३८  |
| अग्ने पावक रोचिपा          | १७, ८   | १८, ९   |
| अग्ने प्रेहि प्रयमो        | १७, ६९  | १८, ६९  |
| अग्ने व्रथ गृन्णीव         | १, १८   | १, २९   |
| अग्नेऽभ्यावर्त्तमानि       | १०, ७   | १३, ८   |
| अग्ने यने दिवि वचं         | १२, ४८  | १३, ४९  |
| अग्ने यने शुक्र            | १२, १०४ | १३, १०३ |
| अग्ने यन्मे तन्वा          | ३, १७   | ३, २४   |
| अग्ने युधवा हि ये          | १३, ३६  | १४, ३८  |
| अग्नेर्नाक्रम              | ८, २४   | ९, २४   |
| अग्नेर्जनित्रमसि           | ५, २    | ५, २    |
| अग्नेर्जिह्वाभि            | १, ३०   | १, ४८   |
| अग्नेर्भागोऽभि दीक्षाया    | १४, २४  | १५, २७  |
| अग्नेर्वोऽपन्नगृहस्य       | ६, २४   | ६, ३४   |
| अग्ने वाक्पनि              | ८, १०   | ८, १०   |
| अग्ने वाज्रिवाज्र त्वा     | २, ७    | २, १०   |
| अग्ने वाज्रस्य गोमन        | १५, ३५  | १६, ५७  |
| अग्ने वेद्विं च वेद्व्यम   | २, ९    | २, १३   |
| अग्ने व्रतपते व्रतं        | १, ५    | १, ८    |

|                           |        |        |
|---------------------------|--------|--------|
| अग्ने व्रतपते व्रतम       | २, २८  | २, ५३  |
| अग्ने व्रतपास्त्वे व्रतपा | ५, ६४० | ५, ७   |
| अग्ने अर्घ्य महते         | ३३, १२ | ३२, १२ |
| अग्नेष्टवा तेजसा          | १३, १३ | १४, १४ |
| अग्ने समाळाभि दयुष्मभि    | ३, ३८  | ३, ४७  |
| अग्ने सहस्रव पृतना        | ९, ३७  | ११, ३  |
| अग्ने सहस्राक्ष यान       | १७, ७१ | १८, ७१ |
| अग्नेस्तनगरि नाचो         | १, १५  | १, २२  |
| अग्नेस्तनरभि विणवे        | ५, १   | ५, १   |
| अग्ने स्वादा कृणुहि       | २७, २२ | २९, २२ |
| अग्ने पश्चातिर्वायो       | २५, ४  | २७, ७  |
| अग्ने पुरीषमश्यागो        | १५, ३  | १६, ३  |
| अग्ने बहन्नुषसा           | १२, १३ | १३, १४ |
| अग्नेर्णारिगि स्वावेज     | ६, २   | ६, २   |
| अज्ञान्यान्मन्मिपजा       | १९, ९३ | २१, ९० |
| अद्भिगो न पितरे           | १९, ५० |        |
| अचिक्रददवृषा हरि          | ३८, २२ | ३८, २० |
| अच्छायमेनि शवसा           | २७, १४ | २९, १४ |
| अच्छिन्नस्य ते देव        | ७, १४  | ७, १३  |
|                           |        | ७, १८  |
| अजगमिन्द्रमग्ने           | १३, ४३ | १४, ४५ |
| अजोर पिशाङ्गा             | २३, ५६ | २४, ५८ |
| अजोऽजनेो हि पत्रमान       | २२, १८ | २४, २३ |
| अजो अग्नेर्जनिष्ट         | १३, ५१ | १४, ५३ |
| अग्ने गन्धमपगेष           | ५, ५   | २, ७   |
| अग्नि निरो अग्नि पिबो     | २७, ६  | २९, ६  |
| अग्नि विश्वा परिषा        | १२, ८४ | १३, ८५ |
| अग्न्या २ अगान            | ५, ४२  | ५, ५२  |
| अत्र पितरे मादयन्व        | २, ३१  | २, १५  |
|                           |        | २, ५६  |
| अत्रा ते रूपमन्तमग्न      | २९, १८ | ३१, ३० |
| अयेतानष्टो विरूपा         | ३०, २२ | ३४, २२ |
| अथो अन्नस्य कीलात्        | ३, ४३  | ३, ५१  |
| अदग्नेभिः गवित            | ३३, ६९ | ३२, ६२ |
|                           | ३३, ८४ | ३२, ८४ |
| अर्धितयोरर्धित            | २५, २३ | २७, २७ |
| अर्धितप्रवा देवी          | ११, ६१ | १२, ६२ |
| अर्धितेर्भागोऽभि          | १४, २५ | १५, ३० |
| अर्धित्याग्वग्यदिन्य      | ४, ३०  | ४, ४२  |
| अर्धित्याग्ववा पृष्ठे     | १४, ५  | १५, ५  |

|                            |           |           |
|----------------------------|-----------|-----------|
| अदित्यास्त्वा मर्द्दन्ना   | ४, २२     | ४, २९     |
| अदित्यै व्युन्दनममि        | २, २      | २, २      |
| अदित्यै रास्नासि विण्णो    | १, ३०     | १, ४७     |
| अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या | ३८, ३     | ३८, ३     |
| अदित्यै रास्नासीन्द्राण्ये | १, ३०     | १, ४७     |
| अदित्यै रारनास्यदित्तिष्ठे | ११, ५९    | १२, ५९    |
| अदित्यै रवाहादित्यै        | २०, २०    | २४, २७    |
| अदृशमस्य केतवो             | ८, ४०     | ८, २२     |
| अद्वयः क्षारं व्यपिबत      | १९, ७३    | २१, ७३    |
| अद्वय सम्भृत पृथिव्य       | ३१, १७    | ३५, १७    |
| अद्वयः स्वाहा वास्य        | २०, २५    | २४, ३५    |
| अद्या देवा उदिता           | ३३, ४२    | ३२, ४०    |
| अद्रिरमि वानरपन्यो         | १, १५     | १, २१     |
| अद्या यथा नः पितर          | १९, ६९    | २१, ६९    |
| अद्या ताम्रे कृतोर्मग्रय   | १५, ४५    | १६, ६७    |
| अवि न इन्द्रैषा विण्णो     | ३३, ४७    | ३०, ४७    |
| अविपल्ययि ब्रह्मती         | १५, १४    | १६, २८    |
| अ यवोचदधिवक्ता             | १६, ५     | १७, ५     |
| अ यवो अद्रिमि युत          | २०, ३१    | २२, १६    |
| अनन्वान्वय पंक्तिः छन्दो   | १४, १०    | १५, १०    |
| अनन्वाहमन्वारभामहे         | ३५, ४३    | ३५, ४६    |
| अनामित्रं मे               | १८, ६     | ३, १४     |
| अनाग्रमस्यना               | ५, ५      | ५, ६      |
| अनाग्र्या पुरस्तात्        | ३७, १०    | ३७, १०    |
| अनाग्र्यो जातवेदा          | २७, ७     | २९, ७     |
| अनु ते शुभं तुरय           | ३३, ६७    | ३२, ६७    |
| अनुत्तमा ते मघवन           | ३३, ७९    | ३०, ७९    |
| अनु त्वा माता              | ४, २०     | ४, २६     |
| अनु त्वा रथा अन            | २९, १९    | ३१, ३१    |
| अनु नोऽयानमार्थज           | ३४, ९     |           |
| अनु वीरं नु पुरायाम्       | २६, १९    | २८, १३    |
| अनुष्टुभ ऐलमैकान           | १३, ५७    | १४, ६३    |
| अनेजदेकं मनमो              | ४०, ४     | ४०, ४     |
| अन्तरमै रुचा               | १२, १६    | १३, १७    |
| अन्तरा मित्रावरुणा         | २९, ६     | ३१, ६     |
| अन्तश्चरति रोचनास्य        | ३, ७      | ३, ७      |
| अन्तस्ते यावापृथिवी        | ७, ५      | ७, ५      |
| अन्धन्तम प्रविशन्ति        | ४०, ९, १२ | ४०, ९, १२ |
| अन्ध स्थान्धो वो भर्क्षाय  | ३, २०     | ३, २७     |
| अन्नपतेऽन्नस्य नो          | ११, ८३    | १२, ८४    |

|                                 |        |        |
|---------------------------------|--------|--------|
| अन्नात्परिभुतो रमं              | १९, ७५ | २१, ७३ |
| अन्यदेवाहु सम्भवाद              | ४०, १० | ४०, १३ |
| अन्यदेवाहुर्विद्याया (विद्याया) | ४०, १३ | ४०, १० |
| अन्यवापोऽर्धमायानाम             | २४, ३७ | २६, ४१ |
| अन्या वो अन्या                  | १०, ८८ | १३, ८९ |
| अन्वमिरुपसा                     | ११, १७ | १२, १७ |
| अन्विदनुमते त्वं                | ३४, ८  | ३३, ३  |
| अपदयं गोपामनि                   | ३७, १७ | ३७, १७ |
| अपहन रक्षो                      | १, १६  | १, २६  |
| अप पिन्वापृथीजिन्न              | १४, ८  | १५, ८  |
| अपा रगमुद्रयग                   | ९, ३   | १०, ४  |
| अपा सम्भन्मोद                   | १३, ३० | १४, ३० |
| अपा त्वेम्मादयाम                | १३, ५३ | १४, ५५ |
| अपा प्रष्टममि योनि              | ११, २९ | १२, २९ |
|                                 | १३, २  | १४, २  |
| अपा पेरुस्यापो र्ना             | ६, १०  | ६, ११  |
| अपा फेनेन नमुने                 | १९, ७१ | २१, ७१ |
| अपाधमप किन्वप                   | ३५, ११ | ३५, ४४ |
| अपातामदिवना                     | ३८, १३ | ३८, १३ |
| अपाधमदमिश्रना                   | ३३, ९५ |        |
| अपासिद न्ययन                    | १७, ७  | १८, ८  |
| अपागमं ( वय्यामं ) पृथन्ये      | १, २६  | १, ४३  |
| अपि नेपु त्रिपु पदे             | २३, ५० | २५, ५२ |
| अपेन वात वि च                   | १२, ४५ | १३, ४६ |
| अपेनो यन्तु पणयो                | ३५, १  | ३५, ३५ |
| अपो अगान्वचारिष                 | २०, २० | २०, ७  |
| अपो देवा मनुमता                 | १०, १  | ११, ५  |
| अपो देवारुपसज                   | ११, ३८ | १२, ३८ |
| अप्रस्वर्तामदिवना               | ३४, २९ | ३३, २३ |
| अस्वन्ते गधिष्टव                | १२, ३६ | १३, ३७ |
| अस्वन्तरमृतमग                   | ९, ६   | १०, ९  |
| असुपदे त्वा                     | ९, २   | १०, ३  |
| अबोन्धमि समिधा                  | १५, २४ | १६, ४५ |
| अभि गोत्राणि महमा               | १७, ३९ | १८, ३९ |
| अभि त्यं देव सविता              | ४, २५  | ४, ३४  |
| अभि त्वा शर नानुमो              | २७, ३५ | २९, ४० |
| अभिधा अभि भुव                   | २२, ३  | २४, ३  |
| अभिपवन्त समनेव                  | १७, ९६ | १९, ९  |
| अभिभर (स्येतास्ते) स्यथानाम     | १०, २८ | ११, ३८ |
| अभि यज्ञं गृणीहि                | २६, २१ |        |

|                       |         |         |
|-----------------------|---------|---------|
| अभीमं महिमा दिवं      | ३८, १७  | ३८, १७  |
| अभी पु ण मस्तीना      | २७, ४१  | २९, ४६  |
|                       | ३६, ६   | ३६, ६   |
| अभ्यर्पित सुपुति      | १७, ९८  | १९, ११  |
| अभ्या दधामि गमिन्     | २०, २४  | २२, ९   |
| अभ्यवर्तस्व पृथिवि    | १२, १०३ | १३, १०२ |
| अभिगसि नार्यसि        | ११, १०  | १२, १०  |
| अमं पा निचं पति       | १७, ४४  | १८, ४४  |
| अमुवभयादव             | २७, ९   | २९, ९   |
| अमर्या उप मये         | ६, २४   | ६, ३५   |
| अमेव न. सुहवा         | २६, २४  |         |
| अयं वा मित्रावरुणा    | ७, ९    | ७, ८    |
| अय वेनश्रोदयत         | ७, १६   | ७, १५   |
| अय महस्वमुपिभि.       | ३३, ८३  | ३०, ८३  |
| अय यो अग्नि           | १०, ४७  | १३, ४८  |
| अय हि द्वा            | ५, ४३   | ५, ५५   |
| अयमग्नि. पुराये       | ३, ४०   |         |
| अयमग्नि सहस्रिगो      | १५, २१  | १६, ४०  |
| अयमग्निर्गृहपात       | ३, ३९   | ३, ४७   |
| अयमग्निश्चागतमो       | १५, ५०  | १६, ७४  |
| अयामह परमो            | ३, १५   | ३, २१   |
|                       | १५, २६  | १६, ४७  |
|                       | ३३, ६   | ३०, ६   |
| अभ्युत्तग सय          | १५, १८  | १६, ३७  |
| अभ्युत्थयान्वस        | १५, १९  | १६, ३९  |
| अभ्यो यन्निर्द्धा यय  | ३, १४   | ३, २०   |
|                       | १०, ५०  | १३, ५३  |
|                       | १५, ५६  | १६, ७८  |
| अय दान्यानां त्रि उमा | १३, ५५  | १४, ५८  |
|                       | १५, १६  | १६, ३३  |
| अय नो अभ्यवर्गिव      | ५, ३७   | ५, ४६   |
|                       | ७, ४४   | ९, ९    |
| अय पशवद्विभ्यं यना    | १३, ५६  | १४, ६०  |
|                       | १५, १७  | १६, ३५  |
| अय पशो भुवत्तस्य      | १३, ५४  | १४, ५६  |
| अय पशो हरिकश          | १५, १५  | १६, ३१  |
| अथत स्य सपदा          | १०, ३   | ११, ७   |
| अथ क्रवैर्यथाता       | १९, २५  | २१, २५  |
| अथमासा पूर पिते       | २३, ४१  | २५, ४३  |
| अर्तुद च न्यर्तुद च   | १७, २   | १८, ३   |

|                             |        |        |
|-----------------------------|--------|--------|
| अमैभ्यो हस्तिपं जवा         | ३०, ११ | ३४, ११ |
| अर्यमण बृहस्पति             | ९, २७  | १०, ३८ |
| अर्ताभो अथा भवता            | ३३, ५१ | ३२, ५१ |
| अवतस्य धनुष्टव              | १६, १३ | १७, १३ |
| अवपतन्तीरिवदन               | १२, ९१ | १३, ९२ |
| अवगृथ निचुम्पुण             | ३, ४८  | ३, ५६  |
|                             | ८, २७  |        |
| अवयती समवदन्त               | १२, ९१ | १३, ९२ |
| अव रुद्रमर्दमश्व            | ३, ५८  | ३, ६६  |
| अवलिमा रौद्रा नभो           | २४, ३  | २६, ६  |
| अवसृष्टा परापत              | १७, ४५ | १८, ४५ |
| अविर्न मेघो नामि            | १९, ९० | २१, ८७ |
| अवेष्टा त्वन्दशका.          | १०, १० | ११, १८ |
| अवोचाम कवये                 | १५, २५ | १६, ४६ |
| अश्मन्नर्ज पर्वत            | १७, १  | १८, १  |
| अश्मन्वती रीयते             | ३५, १० | ३५, ४३ |
| अश्मा च मे मुत्तिका         | १८, १३ | १९, २५ |
| अश्माम तं काममग्ने          | १८, ७४ | २०, ४३ |
| अश्वत्थे वो निषदन           | १२, ७९ | १३, ८० |
|                             | ३५, ४  | ३५, ३८ |
| अश्वस्तपशो गोमगग्ने         | २४, १  | २६, १  |
| अश्वस्य द्वा त्राण          | ३७, ९  | ३७, ९  |
| अश्ववती गोमावती             | १२, ८१ | १३, ८२ |
| अश्ववतीगोमतीर्न             | ३४, ४० |        |
| अश्विनकनस्य ते              | २०, ३५ | २०, २० |
| अश्विना गोभिर्गन्धियम       | २०, ७३ | २०, ५८ |
| अश्विना घर्म पात            | ३८, १० | ३८, १० |
| अश्विना तेजसा चक्षु         | २०, ८० | २२, ६५ |
| अश्विना नमुच्यं गुत         | २०, ५९ | २२, ४४ |
| अश्विना पिबता मय            | २०, ९० | २२, ७५ |
| अश्विना भेषजं मय            | २०, ६४ | २०, ४९ |
| अश्विना हविर्गन्धिय         | २०, ६७ | २२, ५२ |
| अश्विनोभपज्येन              | २०, ३  | २१, ९४ |
| अश्विभ्या चक्षुस्मते        | १९, ८९ | २१, ८६ |
| अश्विभ्या पन्यम्ब           | १०, ३१ | ११, ४४ |
| अश्विभ्या पिन्वस्व          | ३८, ४  | ३८, ४  |
| अश्विभ्या प्रात सवनम        | १९, २६ | २१, २६ |
| अथो घृतेन त्मन्या           | २९, १० | ३१, १० |
| अपातं (अपाळ्हं) यन्मु पृतना | ३४, २० | ३३, १४ |
| अपाडा (ऊहा) मि महमाना       | १३, २६ | १४, २७ |



|                            |        |        |
|----------------------------|--------|--------|
| अष्टौ व्यग्यत्ककुम्भः      | ३४, २४ | ३३, १८ |
| असंग्याता महत्वाणि         | १६, ५४ | १७, ५४ |
| असवे स्वाहा वसवे           | २२, ३० | २४, ४२ |
| अग्नि यमो अरूयादिन्यो      | २९, १४ | ३१, २६ |
| अमुन्वन्तमयजमान            | १२, ६० | १३, ६३ |
| अमुर्या नाम ते लोका        | ४०, ३  | ४०, ३  |
| असौ यस्ताधो अरुण           | १६, ६  | १७, ६  |
| असौ या मेना मरुत           | १७, ४७ | १८, ४७ |
| असौ योऽवमर्षति             | १६, ७  | १६, ७  |
| अग्नमय देवेभ्य             | २, ८   | २, ११  |
| अस्ताव्यभिर्नरा            | १२, २९ | १३, ३० |
| अश्वरि णो गार्धप           | ०, २७  | ०, ५०  |
| अस्मद्राता देवत्रा         | ७, ४६  | ९, १०  |
| अस्माकमिन्द्र समृतेषु      | १७, ४३ | १८, ४३ |
| अस्मात्त्वमग्नि जानासि     | ३५, २० | ३५, ३५ |
| अस्मादन्नादस्यै            | २, २५  | ०, ४७  |
| अस्मिन्महत्पणवे            | १६, ५५ | १७, ५५ |
| अस्मै ब्रह्मणे पवतेऽस्मै   | ७, २१  | ७, २३  |
| अस्मे वो अस्मिन्त्रियमग्ने | ९, २२  | १०, ३० |
| अस्मे रमस्वास्मे ते        | ४, २२  | ४, ३०  |
| अस्मे रुद्रा मेहना         | ३३, ५० | ३२, ५० |
| अस्य प्रन्नामनु दयुत       | ३, १६  | ३, २०  |
| अस्यारासो                  | ३३, १  | ३२, १  |
| अस्येदिन्द्रो वात्रधे      | ३३, ९७ |        |
| अहं परस्तादहमवस्ताद        | ८, ९   | ८, ९   |
| अहं केतुना जुषता           | ३७, २१ | ३७, २० |
| अहरहरप्रयावं               | ११, ७५ | १२, ७३ |
| अहानि शं भवन्तु न          | ३६, ११ | ३६, ११ |
| अहाव्यग्ने हविगम्ये        | २०, ७९ | २२, ६४ |
| अहिरिव भोगै                | २९, ५१ | ३१, १७ |
| अहो पारावतानालभते          | २४, २५ | २६, २९ |
| अद्वतमसि हविर्धान          | १, ९   | १, १२  |
| आकृतिमग्नि                 | ११, ६६ | १२, ६७ |
| आकृत्यै प्रयुजेऽग्नये      | ४, ७   | ४, ८   |
| आ कृणोत रजसा               | ३३, ४३ | ३२, ४३ |
|                            | ३४, ३१ | ३३, २५ |
| आ क्रन्दय बलभोजो           | २९, ५६ |        |
| आत्रमोऽस्याकमाय            | १५, ९  | १६, १५ |
| आकृत्य वाजिपृथिवीम         | ११, १९ | १२, १९ |
| आगत्य पात्र्य वान          | ११, १८ | १०, १८ |

|                       |         |         |
|-----------------------|---------|---------|
| आगम्य विश्ववेदम       | ३, ३८   | ३, ४६   |
| आग्नेय कृष्णप्राव     | २९, ५८  | ३१, ५०  |
| आप्रयणश्च मे          | १८, २०  | १९, ३०  |
| आ घा ये अग्निमिन्यते  | ७, ३२   | ७, ३२   |
| आन्या जानु दक्षिणतो   | १९, ६०  | २१, ६२  |
| आच्छच्छन्द पच्छच्छन्द | १५, ५   | १६, ६   |
| आ जटघ्नित मान्वेषा    | २९, ५०  | ३१, २०  |
| आजिप्र कलश            | ८, ४२   | ९, ३२   |
| आनुद्धान ईड्यो        | २९, २८  | ३१, ४०  |
| आनुद्धान सुप्रतीक     | १७, ७३  | १८, ७३  |
| आनुद्धाना सरम्बती     | २०, ५८  | २२, ४३  |
| आ त मत्र मोयवये       | १२, २७  | १३, २८  |
| आ तन उन्द्रायव        | ३३, २८  | ३२, २८  |
| आति यस्म मासर         | १९, १४  | २१, १४  |
| आतिष्ठन्त परि विधे    | ३३, २२  | ३२, २२  |
| आतिष्ठ वृत्रहन्त्रय   | ८, ३३   | ८, १५   |
| आ त न इन्द्र          | ३३, ६५  | ३२, ६५  |
| आ ते वसो मनो          | १२, ११५ | १३, ११४ |
| आत्मने मे वचोदा       | ७, २८   | ९, ३    |
| आत्मन्नुपस्थे न वृकम् | १९, ९२  | २१, ८९  |
| आत्मने ते मनसा        | २९, १७  | ३१, २९  |
| आ त्वा त्रिधर्म मनसा  | ११, २३  | १२, २३  |
| आ त्वाहर्षमन्तरम      | १२, ११  | १३, १२  |
| आददेऽमोष्ठवाग्धेन     | २, ११   | २, २३   |
| आदित्यै गर्भ पयसा     | १३, ४१  | १४, ४३  |
| आदित्यान इमद्युभि     | २५, १   | २७, २   |
| आदित्यै नो भारती      | २९, ८   | २१, ८   |
| आवन पितरं गर्भे       | २, ३३   | ०, ५९   |
| आ न इडा (ळो) मि विदये | ३३, ३४  | ३२, ३४  |
| आ न इन्द्रा दरादा     | २०, ४८  | २२, ३३  |
| आ न उन्द्रो हरिभि     | २०, ४९  | २२, ३४  |
| आ न एतु मन            | ३, ५४   | ३, ६२   |
| आ नामन्या त्रिभिरेका  | ३४, ४७  | ३३, ३५  |
| आ नो गोत्रा दर्शित    |         | २८, १४  |
| आ नो नियुजिः          | २७, २८  | २९, ३१  |
| आ नो मद्राः क्रतवो    | २५, १४  | २७, १८  |
| आ नो मित्रावरुणा      | २१, ८   | २३, ८   |
| आ नो यज्ञ दिवस्पृशम्  | ३३, ८५  |         |
| आ नो यज्ञ भारती       | २९, ३३  | ३१, ४५  |
| आन साणि स्यातीमं तु   | १९, ८६  | २१, ८३  |

|                               |         |         |
|-------------------------------|---------|---------|
| आपतये त्वा (गृह्णामि) परिपतये | ५, ५    | ५, ५    |
| आपये स्वाहा                   | ९, २०   | १०, २७  |
| आपवस्व हिग्यवदश्ववा           | ८ ६३    |         |
| आपश्चित्रिपयु स्तये           | ३३, १८  | ३३, १८  |
| आपो अस्मान्मातरः              | ४, २    | ४, २    |
| आपो देवा प्रतिगृष्णीत         | १२, ३५  | १३, ३६  |
| आपो ह यद बृहती                | २७, २५  | २९, ३५  |
| आपो हि प्रा भवा भुवा          | ११, ५०  | १२, ५१  |
|                               | ३६, १४  | ३६, १४  |
| आयाययास्मान                   | ५, ११   | ५, १०   |
| आयायश्वमध्या उन्नाय           | १, १    | १, २    |
| आयायस्व मदन्तम                | १२, ११४ | १३, ११३ |
| आयायस्व ममेतु ते              | १२, ११२ | १३, १११ |
| आ ब्रह्मन्वाद्यो              | २२, २२  | २४, ३०  |
| आ मन्द्रगिन्द्र हरिभिया       | २०, ५३  | २०, ३८  |
| आ मा वाजग्य पसवो              | ९, १९   | १०, २५  |
| आमरज प्रथावर्त                | २९, ५७  |         |
| आय गोः प्रक्षिप्रमा           | ३, ६    | ३, ६    |
| आ यदिपे नृपति                 | ३३, ११  | ३२, ११  |
| आ यन्तु न पितर                | १९, ५८  | २१, ५९  |
| आ यातमय भपत                   |         | ३३, ८८  |
| आ यात्विन्द्रोऽवम (न्द्रोवम)  | २०, ४७  | २०, ३०  |
| आयामाय स्वाहा                 | ३९, ११  | ३९, १०  |
| आयुमे पाति पाण मे             | १४, १७  | १५, १७  |
| आयुर्यजेन कृपता               | ९, २६   | १०, २८  |
|                               | १८, २९  | १९, ४२  |
| आयुर्यजेन कृपता               | २०, ३३  | २४, ४६  |
| आयुर्दात्र पति भया            | ७ ४७    | ९, १३   |
| आयुमानमे हविषा                | ३५, १७  | ३५, ४९  |
| आयुय वर्चमय गय                | ३४, ५०  | ३३, ३८  |
| आयोएवा सदने                   | १५, ६३  | १६, ८४  |
| आ रात्रि पाथिव                | ३४, ३०  | ३३, २६  |
| आ रोदसी अपृणदा                | ३३, ७५  | ३२, ७५  |
| आ वायो मयमस्मद                | १५, ५१  | १६, ७३  |
| आ वायो मय शुनिपा              | ७, ७    | ७, ६    |
| आविर्मयो आविर्नो              | १०, ९   | ११, १७  |
| आ विरवत प्रय रं               | ११, २४  | १२, २४  |
| आ वो देवास उमर                | ४, ५    | ४, ६    |
| आयु शिशानो वृपगो              | १७, ३६  | १८, ३३  |
| आशुभिर्बुधनाः                 | १४, ४३  | १५, ४५  |

|                              |        |        |
|------------------------------|--------|--------|
| आश्विना अधोरामौ              | २४, १  | २६, २  |
| आश्रावयेति स्तोत्रिया        | १९, २४ | २१, २४ |
| आसन्दी ह्य राजा              | १९, १६ | २१, १६ |
| आसीनामो अरुणीनाम्            | १९, ६३ | २१, ६३ |
| आ मृते सिञ्चत ध्रिय          | ३३, २१ | ३२, २१ |
| आ मृवयन्ती यजते              | २९, ३१ | ३१, ४३ |
| आम्माकोऽसि शुक्रमते          | ४, २४  | ४, ३३  |
| आहं पितृन्मृविदत्रा          | १९, ५६ | २१, ५७ |
| आत्मजानि गर्भयमा             | २३, १९ | २५, २२ |
| इन्द्रोऽन्ति त्वा सोम्याम    | ३४, १८ | ३३, १२ |
| इद (ळ) एधादिन एहि            | ३, २७  | ३, ३५  |
|                              | ३८, २  | ३८, २  |
| इडा (ळा) भिरग्निरा           | २१, १४ | २३, १५ |
| इडा (ळा) भिरभक्षानामोति      | १९, २९ | २१, २९ |
| इडा (ळा) ममे पुरुद स         | १२, ५१ | १३, ५२ |
| इडा (ळा) यास्वा पदे वय       | ३४, १५ | ३३, ९  |
| इडे (ळ) रन्ते हव्ये काम्ये   | ८, ४३  | ९, ३६  |
| इद विणुर्विचक्रमे            | ५, १५  | ५, २०  |
| इद हवि प्रजनन                | १९, ४८ | २१, ५० |
| इदे पितृभ्यो नमो             | १९, ६८ | २१, ६७ |
| इदमह रक्षोऽर्माति            | ६, १६  | ६, २१  |
| इदमहोर्दममर्षा               | १, २०  | १, ३७  |
| इदमह त वरुग                  | ५ २३   | ५, २९  |
| इदमह तप                      | ५ ११   | ५, १६  |
| इदमह मनुयास्मह               | ५, ३९  | ५, ४९  |
| इदमाप प्रवहतावथ              | ६, १७  | ६, ३२  |
| इदमन्तरास्वस्मय              | १३, ५७ | १४, ६२ |
| इदे मे कमेद वीर्ये           |        | २, ५३  |
| इद मे ब्रह्म च क्षत्र        | ३०, १६ | ३५, ३४ |
| इन्द्रोऽक्ष इयेन क्रतावा     | १८, ५३ | २०, २३ |
| इन्द्र आमा नेता              | १७, ४० | १८, ४० |
| इन्द्र दुग् कवायो            | २०, ४० | २०, २५ |
| इन्द्र देवाविथो मरुतो        | १७, ८६ | १८, ८६ |
| इन्द्र पित्रा अवीवृणन        | १२, ५६ | १३, ५७ |
|                              | १५, ६१ | १६, ८२ |
|                              | १७, ६१ | १८, ६१ |
| इन्द्र पश्चादिन्द्र पुरस्तात |        | ३, १५  |
| इन्द्र मुत्रामा हृदयेन       | १९, ८५ | २१, ८२ |
| इन्द्र मुत्रामा गवा          | २०, ५१ | २०, ३६ |
| इन्द्र गोमर्जदा वादि         | ४६, ४  | ४८, ५  |

|                                  |        |        |
|----------------------------------|--------|--------|
| इन्द्रघोषस्त्वा वसुभि            | ५, ११  | ५, १५  |
| इन्द्र मरुत्व उह पाहि            | ७, ३५  | ७, ३५  |
| इन्द्रमिदरी बहते                 | ८, ३५  | ८, १६  |
| इन्द्र वाजं जयेन्द्राय           | ९, ११  | १०, १६ |
| इन्द्रवायु उमे मुता              | ७, ८   | ७, ७   |
|                                  | ३३, ५६ | ३२, ५६ |
| इन्द्रवायु बृहस्पति              | ३३, ४५ | ३२, ४५ |
| इन्द्रवायु सुसन्दिशा             | ३३, ८६ |        |
| इन्द्रश्च मरुतश्च                | ८, ५५  | ९, ३९  |
| इन्द्रश्च सप्ता उवस्मणश्च        | ८, ३७  | ८, १८  |
| इन्द्रस्य कौटो (ळो) ऽ दित्य      | ४५, ८  | ४७, ११ |
| इन्द्रस्य त्वा जहो               |        | २, २५  |
| इन्द्रस्य वज्रोऽसि               | ९, ५   | १०, ७  |
|                                  | १०, २१ | ११, ३१ |
| इन्द्रस्य वज्रो मरुता            | २९, ५४ |        |
| इन्द्रस्य वृषो वरुणस्य           | १७, ४१ | १८, ४१ |
| इन्द्रस्य रूपमुपभो               | १९, ९१ | २१, ८८ |
| इन्द्रस्य स्यूरसान्द्रस्य        | ५, ३०  | ५, ३८  |
| इन्द्रस्यैज स्थ मयस्य            | ३७, ६  | ३७, ६  |
| इन्द्राग्नी अपादित्यं            | ३३, ९३ |        |
| इन्द्राग्नी अव्यथमाना            | १४, ११ | १५, १४ |
| इन्द्राग्नी आगत मुनिं            | ७, ३१  | ७, ३१  |
| इन्द्राग्नी मित्रावरुणा          | ३३, ४९ | ३२, ४९ |
| इन्द्राग्न्यो (अग्न्योः) पश्चाति | ४५, ५  | ४७, ८  |
| इन्द्राय त्वा वसुमते             | ६, ३२  | ३८, ८  |
| इन्द्राय स्वाहा शाय              | १०, ५  | ११, १३ |
| इन्द्रा याहि चित्रमानो           | ४०, ८७ | २२, ७२ |
| इन्द्रा याहि तृतुजान             | ४०, ८९ | २२, ७४ |
| इन्द्रा याहि धियेषिता            | ४०, ८८ | ४०, ६३ |
| इन्द्रा याहि वृत्रहनन            | २६, ५  |        |
| इन्द्रायेन्द्र- सरस्वता          | ४०, ५७ | २२, ४२ |
| इन्द्रम प्रतरा नय                | १७, ५१ | १८, ५१ |
| इन्द्रेहि मत्स्यगन्धो            | ३३, २५ | ३२, २५ |
| इन्द्रो विश्वस्य राजात           | ३६, ८  | ३६, ८  |
| इन्द्रो वृत्रमवृणो               | ३३, २६ | ३२, २६ |
| इन्द्रानास्त्वा शत हिमा          | ३, १८  | ३, २४  |
| इमं जीवस्य परिधि                 | ३५, १५ | ३५, ५० |
| इमं देवा असपत्न                  | ९, ४०  | ११, १० |
|                                  | १०, १८ | ११, २६ |
| इमं गो देव सपित                  | ११, ८  | १५, ८  |

|                            |         |         |
|----------------------------|---------|---------|
| इमं मा हि- सीद्विपादं      | १३, ४७  | १४, ४९  |
| इम मा हि सीरेकशकं          | १३, ४८  | १४, ५०  |
| इमं मे वरुण वृषी           | २१, १   | २३, १   |
| इम- साहस्य शतधा            | १३, ४९  | १४, ५१  |
| इम- स्तनमर्जग्वन्तं        | १७, ८७  | १९, १   |
| इममर्णाय वरुणस्य           | १३, ५०  | १४, ५२  |
| इमा आप शमु मे              | ४, १    | ४, २    |
| इमा उ त्वा पुरुवभो         | ३३, ८१  | ३२, ८१  |
| इमा गिर आदित्येभ्यो        | ३४, ५४  | ३३, ४७  |
| इमा ते धियं प्र गे         | ३३, २९  | ३२, २९  |
| इमा ते वाजिजत्र            | २९, १६  | ३१, २८  |
| इमा नु कं भुवना            | २५, ४६  | २७, ४४  |
| इमामगृन्पन                 | २७, २   | २४, ७   |
| इमा मे अग्न इष्टया         | १७, २   | १८, २   |
| इमा रुद्राय तवसे           | १६, ४८  | १७, ४८  |
| इमो ते पक्षावजरो           | १८, ५२  | २०, २२  |
| इयं वेदिः परो अन्न         | २३, ६२  | २५, ६४  |
| इयं ते यजिज्ञा तनु         | ४, १३   | ४, १८   |
| इयं ते राष्मिन्नाय         | १८, २८  | १९, ४१  |
| इयत्यग्र आर्गन्म (मं) गम्य | ३७, ५   | ३७, ५   |
| इयदस्यायुग्म्यायुमे        | १०, २५  | ११, ३५  |
| इयमुपरि मतिस्मस्यै         | १३, ५८  | १४, ६४  |
| इरज्यजमे प्रथयस्व          | १२, १०९ | १३, १०८ |
| इरावती धेनुमती             | ५, १६   | ५, २१   |
| इषमर्जमहमित                | १२, १०५ | १३, १०४ |
| इषशोर्जश्च शारदा           | १४, १६  | १५, १६  |
| इषिरो विश्वव्यचा           | १८, ४१  | २०, ११  |
| इषे त्वोर्जे त्वा          | १, १    | १, १    |
| इषे पिन्वस्वोर्जे          | ३८, १४  | ३८, १४  |
| इषे राये रमस्व             | १३, ३५  | १४, ३७  |
| इकर्तारमन्वरस्य            | १२, ११० | १३, १०९ |
| इकर्तानाम वो               | १२, ८३  | १३, ८४  |
| इष्टो अग्निराहुत           | १८, ५७  | २०, २७  |
| इष्टो यज्ञो मृगुभिरा       | १८, ५६  | २०, २६  |
| इह पुष्टिं पुष्टिर्पति     |         | ३, १३   |
| इह रतिरिह रम वं            | ८, ५१   | ९, ३४   |
| इहैव (स्तेतो) स्त मापगात   | ३, २१   | ३, २९   |
| इहैवाग्ने अवि धारया        | २७, ४   | २९, ४   |
| ईक्षमाणाय स्वाहेक्षिताय    | २२, ८   | २४, १७  |
| ईडि ( डि ) तो देवैर्गिरवा  | २० ३८   | २०, २३  |

|                          |        |        |
|--------------------------|--------|--------|
| ईश्वरासि वन्यश्च         | २९, ३  | ३१, ३  |
| ईदक्षास एतादक्षास        | १७, ८४ | १८, ८४ |
| ईदृष्ट चान्यादृष्ट च     | १७, ८१ | १८, ८१ |
| ईदमन्तासः शि ( गि ) लिङ् | २९, २१ | ३१, ३३ |
| ईशानाय परस्वत            | २४, २८ | २६, ३२ |
| ईशा वारयमिद गर्व         | ४०, १  | ४०, १  |
| उक्ता सनरा पत्ता         | २४, १५ | २६, १९ |
|                          | २४, १७ | २६, २१ |
|                          | २४, १९ | २६, २३ |
| उक्थेभिर्वृत्रहन्तमा     | ३३, ७६ | ३२, ७६ |
| उक्षा समुद्रो अरुण       | १७, ६० | १८, ६० |
| उभ्या कृणोतु शक्या       | ११, ५७ | १२, ५८ |
| उग्रश्रोहिणेन मित्र      | ३९, ९  | ३९, ८  |
| उग्रश्च भीमश्च वान्तश्च  | ३९, ७  | ३९, ६  |
| उग्रा विघनिना मय         | ३३, ६१ | ३२, ६१ |
| उचा ते जातमन्थसे         | २६, १६ |        |
| उच्छ्रामा आपर्वाता       | १२, ८२ | १३, ८३ |
| उच्छ्रयस्व वनस्पत        | ४, १०  | ४, १३  |
| उत नोऽहिर्नु न्य         | ३४, ५३ | ३३, ४१ |
| उत स्माम्य द्रवतस्तु     | ९, १५  | १०, २१ |
| उत्तानायामव मरा          | ३४, १४ | ३३, ८  |
| उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते    | ३४, ५६ | ३३, ४४ |
| उत्तिष्ठोत्तमा मह        | ८ ३९   | ८, २१  |
| उत्तेदानी भगवन्त         | ३४, ३७ |        |
| उत्ताम महते सौमगाय       | ११, २१ | १२, २१ |
| उत्थाय वृहता             | ११, ६४ | १२, ६६ |
| उ प्रुषो विप्रुष म       |        | २, ३८  |
| उत्सक्या अव गृह          | २३, २१ | २५, २३ |
| उत्सदेभ्य कुञ्ज          | ३० १०  | ३४, १० |
| उदकर्मोदद्रविणोदा        | ११, २० | १२, २२ |
| उदग्ने तिष्ठ प्रत्या     | १३, १० | १४, १० |
| उदयुषा स्वायुषो          | ४, २८  | २, ५८  |
| उद्वस्व स्तमानान्तर्गिह  | ५, २७  |        |
| उदीचीमारोह               | १०, १३ | ११, २१ |
| उदारतामवर                | १९, ४९ | २१, ५१ |
| उद तिष्ठ स्व वरावा       | ११, ४१ | १२, ४१ |
| उदुलम वर्षण पाश          | १२, १२ | १३, १३ |
| उदु न्य जातवेदम          | ७, ४१  | ८, २३  |
|                          | ८, ४१  | ९, ६   |
|                          | ३३ ३१  | ३२, ३१ |

|                          |        |        |
|--------------------------|--------|--------|
| उदु न्वा विन्ध देवा      | १२, ३१ | १३, ३२ |
|                          | १७, ५३ | १८, ५३ |
| उदेनमुत्तरा नथामे        | १७, ५० | १८, ५० |
| उदेथा बाहू               | ११, ८२ | १२, ८३ |
| उद्गाभं च निष्ठागं न     | १७, ६४ | १८, ६४ |
| उद्धर्षय मघवन            | १७, ४२ | १८, ४२ |
| उदबुध्यस्वामे प्रीत      | १५, ५४ | १६, ७६ |
|                          | १८, ६१ | २०, ३१ |
| उद्धयन्तमसम्पार          | २०, २१ | २२, ६  |
|                          | २७, १० | २९, १० |
|                          | ३५, १४ | ३५, ४७ |
|                          | ३८, २४ | ३८, २४ |
| उन्नत ऋषभो               | २४, ७  | २६, ११ |
| उप जमन्नुप वेतसे         | १७, ६  | १८, ७  |
| उप त्वाग्ने दिवोदिवे     | ३, २२  | ३, ३०  |
| उप त्वाग्ने हविर्मती     | ३, ४   | ३, ४   |
| उप न सूनवो गिर           | ३३, ७७ | ३२, ७७ |
| उपप्रयन्तो अन्वर         | ३, ११  | ३, १७  |
| उप प्रागाच्छशनं          | २९, २३ | ३१, ३५ |
| उप प्रागात्परम           | २९, २४ | ३१, ३६ |
| उप प्रागात्सुमन्मे       | २५, ३० | २७, ३४ |
| उपयामगृहीतोऽसि स्फवो     | ७, २५  | ७, २७  |
| उपयामगृहीतोऽसि प्रजापतये | २३, २  | २५, २  |
|                          | २३, ४  | २५, ४  |
| उपयामगृहीतोऽसि बृहस्पति  | ८, ९   | ८, ८   |
| उपयामगृहीतोऽसि मयवे      | ७, ३०  | ७, ३०  |
| उपयामगृहीतोऽसि मरुता     | ७, ३६  | ७, ३७  |
| उपयामगृहीतोऽसि सावित्रो- | ८, ७   | ८, ६   |
| उपयामगृहीतोऽसि सान्द्राय | ७, २२  | ७, २४  |
| उपयामगृहीतोऽसि सुशर्मा   | ८, ८   | ८, ७   |
| उपयामगृहीतोऽस्यमये       | ८, ४७  | ८, २९  |
| उपयामगृहीतोऽस्यन्त       | ७, ४   | ७, ४   |
| उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्या  | २०, ३३ | २२, १८ |
| उपयामगृहीतोऽस्याग्र      | ७, २०  | ७, २१  |
| उपयामगृहीतोऽस्यादित्ये   | ८, १   | ३, ५०  |
| उपयामगृहीतोऽस्याश्विनं   | १९, ८  | २१, ७  |
| उपयामगृहीतोऽसि हरिर्मसि  | ८, ११  | ८, १२  |
| उप श्वासय पृथिवी         | २९, ५५ | ३१, २३ |
| उपहृता उह गाव            | ३, ४३  | ३, ५०  |
| उपहृता पितरः             | १९, ५७ | २१, ५६ |

|                                |         |         |
|--------------------------------|---------|---------|
| उपहृता पृथिवी                  | २, १०   | २, १६   |
| उपहृतो द्यौर्पितो              | २, ११   | २, १७   |
| उपह्वर गिरीणा                  | २६, १५  |         |
| उपा शोर्वीयेण                  | ९, ३८   | ११, ४   |
| उपावग्ग त्मन्या                | २९, ३५  | ३१, ४७  |
| उपावीररयुष देवान               | ६, ७    | ६, ८    |
| उपास्मै गायता नरः              | ३३, ६२  | ३२, ६२  |
| उभा पिबतमश्विनो                | ३४, २८  | ३३, २२  |
| उभाभ्या देव सवितः              | १९, ४३  | २१, ४५  |
| उभा वामिन्द्राग्नी             | ३, १३   | ३, १९   |
| उभे सुधन्व सपिपे               | १५, ४३  | १६, ६५  |
| उरु विष्णो विक्रमस्यो          | ५, ३८   | २, ५१   |
|                                | ५, ४१   | ५, ४७   |
|                                |         | ५, ५१   |
| उरोगन्तरिक्षाभ्यजु             | ६, ११   | ६, १४   |
| उशन्तस्त्वा नि धीर्माह         | १९, ७०  | २१, ७०  |
| उशिरुत्वे देव सोमाग्रे         | ८, ५०   | ८, ३०   |
| उशिरुपावको अगति.               | १२, २४  | १३, २५  |
| उशिराग्नि कविरुषा              | ५, ३०   | ५, ४०   |
| उशिरा नसुभ्यो                  | १५, ६   | १६, ११  |
| उषस्तभिन्नमा                   | ३४, ३३  | ३३, २७  |
| उषामानक्तमश्विना               | २०, ६१  | २२, ४६  |
| उषामानक्ता बृहती               | २०, ४१  | २२, २६  |
| उषे यहा सुषेजगा                | २१, १७  | २३, १८  |
| उषावेतं (एतं) धर्षा (धर्वा) हौ | ४, ३३   | ४, ४५   |
| ऊर्क च मे सुवृता               | १८, ९   | १९, २१  |
| ऊर्गम्याद्विरस्यूर्ण           | ४, १०   | ४, ११   |
| ऊर्ज विश्रदः गुमना.            | ३, ४१   | ३, ४९   |
| ऊर्ज वहन्तीरगृहं               | ०, ३४   | २, ६०   |
| ऊर्ज श्योर्ज तौ                | ३, २०   | ३, २८   |
| ऊजो नपाज्जानवेद                | १२, १०८ | १३, १०७ |
| ऊजो नपात स                     | २७, ४४  | २९, ४८  |
| ऊर्ण म्रदसं त्वा स्तृणाभि      | २, २    | २, ७    |
| ऊर्व ऊषु ण ऊतये                | ११, ४२  | १२, ४२  |
| ऊर्वमेनमुच्छ्रयता              | २३, २७  | २५, २९  |
| ऊर्वा अस्य सपिधा               | २७, ११  | २९, ११  |
| ऊर्वामारोह                     | १०, १४  | ११, २२  |
| ऊर्वामिनामुल्लापय              | २३, २६  | २५, २८  |
| ऊर्वा भव प्रतिविद्या           | १३, १३  | १४, १३  |
| ऊरुसामयो. शिल्पे रथस्ते        | ४, ९    | ४, १०   |

|                                    |         |         |
|------------------------------------|---------|---------|
| ऋचं वाचं प्र पथे                   | ३६, १   | ३६, १   |
| ऋचे त्वा रुचे त्वा                 | १३, ३९  | १४, ४१  |
| ऋचो नामास्मि                       | १८, ६७  |         |
| ऋजवे त्वा गाववे त्वा               | ३७, १०  | ३७, १०  |
| ऋजाने परि वृद्धि                   | २९, ४९  |         |
| ऋत च मेऽमृतं                       | १८, ६   | १९, २०  |
| ऋत सत्यमृत                         | ११, ४७  | १२, ४७  |
| ऋताजिच्च गत्याजिच्च                | १७, ८३  | १८, ८२  |
| ऋतधामामि स्वर्ज्योनि.              | ५, ३२   | ५, ४१   |
| ऋतये स्तेनहृदयं                    | ३०, १३  | ३४, १३  |
| ऋतवस्त ऋतुथा                       | २३, ४०  | २५, ४२  |
| ऋतवस्ते यज्ञं                      | २६, १४  |         |
| ऋतव स्थ ऋतावृध                     | १७, ३   | १८, ४   |
| ऋतश्च सत्यश्च                      | १७, ८२  | १८, ८३  |
| ऋतावानं महिष                       | १२, १११ | १३, ११० |
| ऋतावानं वैश्वानर                   | २६, ६   | २८, ६   |
| ऋतापावृ(ळ)तवामाग्नि                | १८, ३८  | २०, ८   |
| ऋतुधेन्द्रो वनस्पति.               | २०, ६५  | २२, ५०  |
| ऋद्रा कर्मण्या                     |         | २, ४३   |
| ऋधगिन्था स मर्त्य                  | ३३, ८७  |         |
| ऋषयगन्वा प्रथमजा                   | १५, १०  | १६, १८  |
|                                    | १५, ११  | १६, २१  |
|                                    | १५, १२  | १६, २४  |
|                                    | १५, १३  | १६, २७  |
|                                    | १५, १४  | १६, ३०  |
| एकया च दशभिर्वा                    | २७, ३३  | २९, २८  |
| एकयारतुवत पजा                      | १४, २८  | १५, ३२  |
| एकवि अस्त्वा स्तोम                 | १५, १३  | १६, २६  |
| एकस्त्वरघुरस्या                    | २५, ४०  |         |
| एकस्मै स्याहा द्वाभ्या             | २२, ३४  | २४, ४७  |
| एका च मे तिस्रश्च                  | १८, २४  | १९, ३६  |
| एजतु दशमाग्नो                      | ८, २८   | ९, २७   |
| एण्यहो मण्डवा                      | २४, ३६  | २६, ४०  |
| एत सधम्य परि                       | १८, ५९  | २०, २९  |
| एतत्ते (एतेन) रुद्रावसं (वसेन) तेन | ३, ६१   | ३, ७०   |
| एता अर्षन्ति ह्य्यात्              | १७, ९३  | १९, ७   |
| एता उ वः सुभगा                     | २९, ५   | ३१, ५   |
| एता ऐन्द्राग्ना द्विरूपा           | २४, ८   | २६, १२  |
| एतावदृषं यज्ञस्य                   | १९, ३१  | २१, ३१  |
| एतावानस्य महिमा                    | ३१, ३   | ३५, ३   |

|                                |        |        |
|--------------------------------|--------|--------|
| त म्हावनेन                     | ३, ६१  | ३, ७०  |
| त जानाथ परमे                   | १८, ६० | २०, ३० |
| त ( एता ) ते देव सावतर्ज       | २, १२  | २, २८  |
| तमगन्म देवयजनं                 | ४, १   | ४, १   |
| तेश्चैतर्पिमाहि २०, २३, ३८, २५ |        | २२, ७  |
| त विश्वान्यर्य आ               | २६, १८ | १६, ५१ |
| त वो अग्नि नमसा                | १५, ३२ | १६, ५४ |
| तेनोऽअर्कमेवा नो               | १५, ४६ | १६, ६८ |
| तच्छन्दो वर्ग्वदछन्द           | १५, ४  | १६, ४  |
| तच्छन्दो वर्ग्वदछन्दो          | १५, ५  | १६, ८  |
| तिदन्द्रं वषण                  | २०, ५४ | २२, ३९ |
| त छाग पुरो अश्वेन              | २५, २६ | २७, ३० |
| त ते गायत्रो भाग               | ४, २४  | ४, ३०  |
| त ते निर्ऋते                   | ९, ३५  | ११, १  |
| त ते योनि प्रजा                | ७, १७  | ७, १७  |
| त ते योनिवारता                 | ७, १०  | ७, १०  |
| त ते म्हा भाग                  | ३, ५७  | ३, ६५  |
| त व ग्तोमो मन्त्र              | ३४, ४८ | ३३, ३६ |
| त व कुरवो                      | १०, १८ | ११, ११ |
|                                | ९, ४०  | ११, २७ |
| त म्य वाजा द्वापणि             | ९, १४  | १०, २० |
| त म्य रायो वृषा                | २३, १३ | २५, १५ |
| त ते अग्ने गमिन्त्या           | २, १४  | २, २७  |
| त ते शुक्र तन                  | ४, १७  | ४, २३  |
| त व सा मन्वा                   | ९, १०  | १०, १७ |
| त दृक् प्रदशो                  | ३०, ४  | ३५, २६ |
| त गाय प्रेष मगाय               | ५, ७   | ५, ११  |
| तृ पु प्रवर्णि ते              | २६, १३ |        |
| त ( क ) नापयाभरणवाः            | १५, ७  | १६, १० |
| त प्राणो अग्ने                 | ६, २०  | ६, २६  |
| त ज्य मे मथ                    | १८, ३  | १९, १५ |
| मास्यर्षणीयता                  | ७, ३३  | ७, ३३  |
| पथयः प्रतिगृह्णात              | ११, ४८ | १२, ४९ |
| पथय गम ( म ) वदन्त ( न्ते )    | १२, ९६ | १३, ९८ |
| पथा र्पत ( गृह्णात ) मोदन्तं   | १२, ७७ | १३, ७८ |
| प र्पति मातर                   | १२, ७८ | १३, ७९ |
| पथे त्रायस्व                   | ४, १   | ४, १   |
|                                | ५, ४०  | ५, ५४  |
|                                | ६, १५  | ६, २०  |
| कुम ( ह ) रूप गपमस्य           | ८, ४९  | ८, ३१  |

|                          |        |        |
|--------------------------|--------|--------|
| कल्यस्य विष्टा           | २३, ५७ | २५, ५९ |
| कदा चन प्रयुच्छस्युमे    | ८, ३   | ८, २   |
| कदा चन स्तगिरसि          | ३, ३४  | ३, ४२  |
|                          | ८, २   | ८, १   |
| कन्या इव वहनुमे          | १७, ९७ | १९, १० |
| कया त्वं ऊर्वाभि         | ३६, ७  | ३६, ७  |
| कया नधित्र आ             | २७, ३९ | २९, ४४ |
|                          | ३६, ४  | ३६, ४  |
| कर्णाभ्या - श्रोत्र      | २५, २  | २७, ४  |
| कल्पन्ता ते दिशस्तुभ्य   | ३५, ९  | ३५, ४२ |
| कवायो न व्यनम्वती        | २०, ६० | २२, ४५ |
| क रिक्वेकाकी चर्गत       | २३, ९  | २५, १० |
|                          | २३, ४५ | २५, ४७ |
| कश्यपस्य पञ्चायुष        | ३, ६२  | ३, ७४  |
| कस्त्वा छयति कस्त्वा     | २३, ३९ | २५, ४१ |
| कस्त्वा युनक्ति          | १, ६   | १, ९   |
| कस्त्वा विमुञ्चति        | २, २३  | २, ४१  |
| कस्त्वा स-यो मदाना       | २७, ४० | २९, ४५ |
|                          | ३६, ५  | ३६, ५  |
| का र्दमे पिशादिला        | २३, ५५ | २५, ५७ |
| काण्डाकाण्डात्प्ररोहन्ता | १३, २० | १४, २० |
| कामं कामदुष्टे पुनव      | १०, ७० | १३, ७३ |
| काय स्वाहा कर्मे स्वाहा  | २०, २० | २४, २६ |
| कापिगमि समुद्रस्य त्वा   | ६, २८  | ६, ४१  |
| काच्ययो राजानेषु         | ३३, ७० | ३२, ७० |
| का स्विदार्मात           | २३, ११ | २५, १० |
|                          | २३, ५३ | २५, ५५ |
| कि स्विन्मर्यमम न्यात    | २३, ४७ | २५, ४९ |
| कि स्विदार्माधिष्ठान     | १७, १८ | १८, १८ |
| कि स्विदने क             | १७, २० | १८, २० |
| कुक्कुटोऽग्नि मधुजिह्व   | १, १६  | १, २४  |
| कुत्स्वमिन्द्र मारिह     | ३३, २७ | ३२, २७ |
| कुम्भो वनिष्टृर्जनिता    | १९, ८७ | २१, ८४ |
| कुर्वन्नेवह कर्माणि      | ४०, २  | ४०, २  |
| कुलायिनी घृतवती          | १४, २  | १५, २  |
| कुर्वदन्न यवमन्तो        | १०, ३२ | ११, ४५ |
|                          | १९, ६  | २०, ५  |
|                          | २३, ३८ | २५, ४० |
| कृजने स्वाहा             | २२, ७  | २४, ९  |
| कृणुव पात्र प्रसिति      | १३, ९  | १४, ९  |

|                              |        |        |
|------------------------------|--------|--------|
| कृत्वाय सा महामुखा           | ११, ५९ | १२, ६० |
| कृष्णाय शितिकक्षो            | २४, ४  | २६, ८  |
| कृष्णाय आमेया                | २४, ६  | २६, १० |
|                              | २४, ९  | २६, १३ |
|                              | २४, १४ | २६, १८ |
| कृष्णा भौमा भुम्भा           | २४, १० | २६, १४ |
| कृष्णोऽस्यास्वर्गोऽस्ये      | २, १   | २, १   |
| केतुं कृष्णकेतवे             | २९, ३७ | ३१, २२ |
| केवन्त परम आ                 | २३, ५१ | २५, ५३ |
| को अस्य वेद                  | २३, ५९ | २५, ६१ |
| कोऽदाक्स्मा अदान             | ७, ४८  | ९, १४  |
| कोऽग्नि कतमोऽग्नि            | ७, २९  | ९, ४   |
|                              | २०, ४  | २१, ९५ |
| कतृदक्षाभ्या मे              | ७, २७  | ९, २   |
| कम वमग्निना नाक              | १७, ६५ | १८, ६५ |
| कव्यादमग्नि प्र हिणोमि       | ३५, १९ | ३५, ५० |
| क्षत्रस्य त्वा परस्पाय       | ३८, १९ | ३८, १९ |
| क्षत्रस्य योनिग्नि (नाभिगमे) | २०, १  | २१, ९३ |
| क्षत्रस्योन्वमग्नि           | १०, ८  | ११, १५ |
| क्षत्रेणामे स्वायु म         | २७, ५  | २९, ५  |
| क्षपो राजन्तु                | १५, ३७ | १६, ५९ |
| खट्वो वैश्वदेवः              | २४, ४० | २६, ४४ |
| गणाना त्वा गणपति             | २३, १९ | २५, २१ |
| गन्धर्वस्त्वा विश्वावसु      | २, ३   | २, ३   |
| गर्भा पर्वति श               | १४, २३ | १५, २६ |
| गर्भो अस्यापधाना             | १०, ३७ | १३, ३८ |
| गर्भो देवाना पिता            | ३७, १४ | ३७, १४ |
| गायत्री त्रिष्टुब्जगत्य      | २३, ३३ | २५, ३५ |
| गायत्रेण त्वा छन्दसा         | १, २७  | १, ४४  |
| गायत्र्यै गायत्र             | १३, ५४ | १४, ५७ |
| गायत्रं छन्दोऽग्नि           | ३८, ६  | ३८, ६  |
| गाव उपावतावन्तं              | ३३, १९ | ३२, १९ |
|                              | ३३, ७१ | ३२, ७१ |
| गृहानुपह्वपामहे              | ३, ४२  | ३, ५०  |
| गृहा मा विभक्त मा            | ३, ४१  | ३, ४८  |
| गोत्रभिदं गोविदं             | १७, ३८ | १८, ३८ |
| गोभिर्न सोममग्निना           | २०, ६६ | २२, ५१ |
| गोमद पु णामन्या              | २०, ८१ | २२, ६६ |
| ग्रहा ऊर्जाहुतयो             | ९, ४   | १०, ५  |
| ग्रीष्मेण ऋतुना              | २१, २४ | २३, २५ |

|                              |        |         |
|------------------------------|--------|---------|
| घर्मैतने पुरीषं तेन          | ३८, २१ | ३८, २१  |
| घृत घृतपावान                 | ६, १९  | ६, २५   |
| घृतं मिमिक्षे                | १७, ८८ | १९, २   |
| घृतवर्ता भुवनानामभि          | ३४, ४५ | ३३, ३३  |
| घताची ग्यो भुयै              | २, १९  | २, ३५   |
| घृतान्यग्नि जुहोन्मना        | २, ६   | २, ८    |
| घृतेन यावापृथिवी             | ५, २८  | ६, २२   |
| घृतेन गीता मनुना             | १२, ७० | १३, ७१  |
| घृतेनाक्तौ पञ्चब्राह्मणा     | ६, ११  | ६, १३   |
| घृतेनात्स्मं पथो             | २९, २  | ३१, २   |
| चक्षुषः पिता मनसा            | १७, २५ | १८, २५  |
| चक्षुषा अभि                  | २, १६  | २, ३३   |
| चक्षुषश्च मेऽष्टौ च मे       | १८, २५ | १९, ३७  |
| चक्षुः सक्तिर्नाभि.          | ३८, २० | ३८, २०  |
| चक्षुश्च शतन्तवा             | ८, ६१  |         |
| चक्षुश्च शतजिने              | २५, ४१ |         |
| चत्वारि शृङ्गा त्रयो         | १७, ९१ | १९, ५   |
| चन्द्रं त्वा चन्द्रेण        | ४, २६  | ४, ३६   |
| चन्द्रमा अग्वन्तग            | ३३, ९० |         |
| चन्द्रमा मनसो                | ३१, १० | ३५, १०  |
| चन्द्राय स्वाहा सूर्याय      | २०, २८ | २४, ३९  |
| चिनि जुहोमि मनसा             | १७, ७८ | १८, ७८  |
| चिन्पतिर्मा पुनातु           | ४, ४   | ४, ५    |
| चित्रं देवानामु              | ७, ४२  | ८, २४   |
|                              |        | ९, ७    |
|                              | १३, ४६ | १४, ४८  |
| चित्रावयो स्वास्ति मे        | ३, १८  | ३, २६   |
| चिदग्नि तथा देवतया           | १०, ५३ | १३, ५४  |
| चिदग्नि मनसि धीराय           | ४, १९  | ४, २५   |
| चोदयित्री सृष्टताना          | २०, ८५ | २२, ७०  |
| जगत्या ऋक्गमसृक्गमा          | १३, ५६ | १४, ६१  |
| जग्माभ्या पद्व्या धर्मोऽस्मि | २०, ९  | २१, १०१ |
| जवं जलघाभ्यामन्वानं          | २५, ३  | २७, ६   |
| जनयत्यै त्वा सूर्याग्नि      | १, २२  | १, ३६   |
| जनस्य गोपा अजनिष्ट           | १५, २७ | १६, ४८  |
| जनिण उग्र सहमे               | ३३, ६४ | ३२, ६४  |
| जवाय स्वाहा बलाय             | २२, ८  | २४, ११  |
| जवो यस्ते वाजिन              | ९, ९   | १०, १२  |
| जाय एहि स्वे                 |        | १०, २९  |
| जिह्वा मे भद्रं              | २०, ६  | २१, ९७  |

|                         |        |        |
|-------------------------|--------|--------|
| जगत्तमेव भूति           | २९, ३८ | ३१, १३ |
| उप गो वृहद्विवाज        | २०, ३९ | २२, २४ |
| ज्यैष्ठ्यं च म अविपत्ता | १८, ४  | १९, १६ |
| ज्योतिरग्नि विद्युत्प   | ५, ३५  | ५, ४४  |
| तं यज वृद्धि            | ३१, ९  | ३५, ९  |
| तं वो दम्भमु पीपहं      | २६, ११ |        |
| त आयजन्त इविण           | १७, २८ | १८, २८ |
| तव मेवित                | ३३, २४ | ३३, २४ |
| ततो विगड (ळ) जायत       | ३१, ५  | ३५, ५  |
| ततो ऽग्नि तनु सुस्त     |        | २, ५२  |
| तत्वा याम ब्रह्मणा      | १८, ४९ | २०, १९ |
|                         | २१, २  | २३, २  |
| त साय सुविण             | ३, ३५  | ३, ४३  |
|                         | २०, ९  | २४, १३ |
|                         | ३०, २  | ३४, २  |
| तभ्यस्मा देवा व         | ३३, ३७ | ३२, ३७ |
| तव्यन्त भिपत्ता         | १९, ८२ | २१, ७९ |
| तस्मा स्तमस्त           | १९, ८१ | २१, ७८ |
| तस्मा स्तमस्त           | ३३, ८० | ३२, ८० |
| तस्मा स्तमस्त           | ४०, ५  | ४०, ५  |
| तस्मा स्तमस्त           | ३२, १  | ३५, २३ |
| तस्मा स्तमस्त           | ३४, ४४ | ३३, ३० |
| तस्मा स्तमस्त           | ३, ५   | ३, ३   |
| तस्मा स्तमस्त           | २१, १३ | २३, १४ |
| तस्मा स्तमस्त           | २९, २६ | ३१, ३८ |
| तस्मा स्तमस्त           | २७, १२ | २९, १२ |
| तस्मा स्तमस्त           | ३, १७  | ३, २३  |
| तस्मा स्तमस्त           | २०, ५३ | २०, ४१ |
| तस्मा स्तमस्त           | २, १७  | २, ३४  |
| तस्मा स्तमस्त           | १५, ७  | १६, ११ |
| तस्मा स्तमस्त           |        | २४, २१ |
| तस्मा स्तमस्त           | ५, ४०  | ५, ५३  |
| तस्मा स्तमस्त           | ३, २६  | ३, ३४  |
| तस्मा स्तमस्त           | ३, ३   | ३, ३   |
| तस्मा स्तमस्त           | ३, २७  | ३, ४०  |
| तस्मा स्तमस्त           | २७, २० | २९, २० |
| तस्मा स्तमस्त           | २५, १७ | २७, २१ |
| तस्मा स्तमस्त           | ३३, ३८ | ३२, ३८ |
| तस्मा स्तमस्त           | १५, ५७ | १६, ७९ |
| तस्मा स्तमस्त           | ४, २६  | ४, ३७  |

|                         |         |         |
|-------------------------|---------|---------|
| तपगे कौललं              | ३०, ७   | ३४, ७   |
| तपगे स्वाहा वायमा       | ३९, १२  | ३९, ११  |
| तप्तायनी मेऽग्नि        | ५, ९    | ५, १३   |
| तमिदमं पयमं             | १७, ३०  | १८, ३०  |
| तमिदं पशव गचा           | २०, ६९  | २२, ५४  |
| तमीश न जगतमग्नु         | २५, १८  | २७, २२  |
| तमु त्वा द यद्वृषिः     | १६, ३३  | १२, ३३  |
| तमु त्वा पा यो तृषा     | ११, ३४  | १२, ३४  |
| तं प नमिन्नमन्त्रे      | १५, ५०  | १६, ७२  |
| तं सन्त्या पूर्वथा      | ७, १२   | ७, ११   |
| तर्णविश्वदर्शतो         | ३३, ३६  | ३२, ३६  |
| तव नमाग आग्नुया         | १३, १०  | १४, १०  |
| तव वायव्य (क्व) तस्ते   | २७, ३४  | २९, ३०  |
| तव शरीरं पतयिष्य        | २०, २०  | ३१, ३४  |
| तवाय मे म               | २६, २३  |         |
| तस्मा ऽअर गमाग          | ११, ५०  | १२, ५३  |
|                         | ३६, १६  | ३६, १६  |
| तस्मा दग्ना अजायन्त     | ३१, ८   | ३५, ८   |
| तस्मा दग्ना अजायन्त     | ३१, ७   | ३५, ७   |
| तस्मा दग्ना अजायन्त     | ३१, ६   | ३५, ६   |
| तस्मा दग्ना अजायन्त     | २०, ५०  | २०, ३७  |
| तस्यामे सत्यगवरा        | ४, १८   | ४, २४   |
| ता गवितु र्वेव्यय       | १७, ७४  | १८, ७४  |
| ता अग्र मुददोत्स        | १२, ५५  | १३, ५६  |
|                         | १५, ६०  | १६, ८१  |
| त उमौ चतुर पद           | २३, २०  | २५, २०  |
| त न आ ओ इ (वृह) मग्निना | २०, ८३  | २०, ६८  |
| ता नाय ता सुपेशमा       | २०, ७४  | २२, ५९  |
| तन्मयैवा निविदा         | २५, १६  | २७, २०  |
| ता भिपत्ता सुर्मणा      | २०, ७५  | २०, ६०  |
| तस्या नो विततो          | ३३, ७४  | ३२, ७४  |
| तस्य उता (ळा) सग्मन्ता  | २१, १९  | २३, २०  |
| तस्यैवा सग्मन्ता        | २०, ६३  | २०, ४८  |
| तस्यैवा देवैर्विदे      | २७, १९  | २९, १९  |
| तस्यैवा देवैर्विदे      | २०, ४३  | २०, २८  |
| तावाधोपान्कृष्वेत       | २९, ४४  |         |
| तुभ्य ता अद्विस्तम      | १२, ११६ | १३, ११५ |
| ते अस्थ योषण दिव्ये     | २७, १७  | २९, १७  |
| ते आचरन्ती समनेव        | २९, ४१  | ३१, १५  |
| तेजः पशुना              | १९, ९५  | २१, ९२  |



|                          |           |          |
|--------------------------|-----------|----------|
| तेजोऽसि तेजो मयि         | १९, ९     | २१, ८    |
| तेजोऽसि शुक्रमस्रत       | २२, १     | २४, १    |
| तेजोऽसि शुक्रमस्य        | १, ३१     | १, ४९    |
| ते नो अवर्तता हवन        | ९, १७     | १०, २३   |
|                          |           | २३, ११   |
| ते यो नमो अस्तु          | १५, १५-१९ | १६, ३२   |
|                          | १६, ६४-६६ | " ३४     |
|                          |           | " ३६     |
|                          |           | " ३८     |
|                          |           | " ४०     |
|                          |           | १७, ६४   |
| ते हि पुत्रागो अदिते     | ३, ३३     | ३, ४१    |
| त्रया देवा ऋग्विद्य      | २०, ११    | २१, १०३  |
| त्रातारमिन्द्रमविता      | २०, ५०    | २२, ३५   |
| त्रि अद्राम विराजति      | ३, ८      | ३, ८     |
| त्रिणवत्रयश्चि औ         | १५, १४    | १६, २९   |
| त्रि सा हितं पणिभिः      | १७, ९०    | १९, ६    |
| त्रिपादोऽय उदैत्युस्य    | ३१, ४     | ३५, ४    |
| त्रिस्तवा स्तोम          | १५, १०    | १६, १७   |
| त्रिवृगि त्रिवृते त्वा   | १५, ९     | १६, १४   |
| त्रिष्टुभः स्तार रवारः   | १३, ५५    | १४, ५९   |
| त्रीणि त आनुदिति         | २९, १५    | ३१, २७   |
| त्रीणि पदा वि चक्ष्मे    | ३४, ४३    | ३३, ३१   |
| त्रीणि यता त्री सहत्वा   | ३३, ७     | ३२, ७    |
| त्रीन्मुद्रास्त्रमस्युपा | १३, ३१    | १४, ३३   |
| यन्त्रक यजमने            | ३, ६०     | ३, ८८ ६९ |
| यवयो गायत्र्यै           | २४, १२    | २६, १६   |
| यवविद्य मे व्यवी न गो    | १८, २६    | १९, ३८   |
| य्यागुप जमग्ने           | ३, ६२     | ३, ७४    |
| त्वं यावष्ट दागुपो       | १३, ५२    | १४, ५४   |
|                          | १८, ७७    | २०, ४३   |
| त्व गेस पित्रभि          | १९, ५४    | २१, ५४   |
| त्व गेस प्रचिकितो        | १९, ५२    | २१, ५२   |
| त्वमग्न ईदित (लि) त      | १९, ६६    | २१, ६६   |
| त्वमग्ने दग्मिस्त्वमाशु  | ११, २७    | १२, २७   |
| त्वमग्ने पयमो            | ३४, १२    | ३३, ६    |
| त्वमग्ने व्रतपा अग्नि    | ४, १६     | ४, २१    |
| त्वमग्ने पश भियो         | ६, ३७     | ६, ५०    |
| त्वमिन्द्र पतर्निवाभ     | ३३, ६६    | ३२, ६६   |
| त्वमिमा ओषधी गेम         | ३४, २२    | ३३, १६   |
| त्वमुत्तमाश्वोपयो        | १२, १०१   | १३, १००  |

|                          |         |        |
|--------------------------|---------|--------|
| त्व नो अग्ने तव देव      | ३४, १३  | ३३, ७  |
| त्वं नो अग्ने वरुणस्य    | २१, ३   | २३, ३  |
| त्वया दिन पितर           | १९, ५३  | २१, ५३ |
| त्वष्टा तुरीपो अद्यमुत   | २१, २०  | २३, २१ |
| त्वष्टा दधन्तुमभिन्नाय   | २०, ४४  | २२, २९ |
| त्वष्टा वीर देवसमं       | २९, ९   | ३१, ९  |
| त्वा हि मन्द्रतममर्क     | ३३, १३  | ३२, १३ |
| त्वा गन्तवा अगन्तवा      | १२, ९८  | १३, ९९ |
| त्वा चित्रश्रवणम         | १५, ३१  | १६, ५३ |
| त्वमग्नेऽअतिरगो          | १५, २८  | १६, ४९ |
| त्वमग्ने पुकराद य        | ११, ३०  | १२, ३२ |
|                          | १५, २०  | १६, ४३ |
| त्वामग्ने यजमाना         | १२, २८  | १३, २९ |
| त्वामग्ने उणत प्राग्गणा  | २७, ३   | २९, ३  |
| त्वामग्ने त्वमग्नेतो     |         | १६, ५२ |
| त्वामय ऋषि भर्षेय        | २१, ६१  | २३, ६० |
| त्वमिदि त्वमग्ने         | २७, ३७  | २९, ४२ |
| त्वामो ले मयस्यव्यो      | २४, १   | २६, ३  |
| त्वमि सत्क कवे           | ३८, २८  | ३८, २७ |
| त्वे अग्ने स्वातुत       | ३३, १४  | ३२, १४ |
| दृष्ट्या मलिम मय         | ११, ७८  | १२, ७४ |
| दक्षिणामागेत             | १०, ११  | ११, १९ |
| दक्षिणो अमरिप            | २३, ३०  | २५, ३४ |
| दक्ष युवास्व सता         | ३३, ५८  | ३२, ५८ |
| दक्षिणो रवत सता          | ३९, २   | ३९, १  |
| दक्ष ते यमो गन्तत        | ३, २१   | ६, २९  |
| द्विः प्रियव्या पर्योज   | २९, ५३  |        |
| द्विः पर्योज परम जेज     | १२, १८  | १३, १९ |
| द्विः वा दम यज           | ३८, ११  | ३८, १० |
| द्विः पुष्टो अनेकता      | ३३, ९२  |        |
| द्विः विष्णुर्व्यक्त स्त | २, २५   | २, ४६  |
| द्विः सर्वोमि पृथिव्या   | १८, ५४  | २०, २४ |
| द्विः वा विष्णु उत       | ५, १९   | ५, २५  |
| द्विः पदिश आदिशो         | ६, १९   | ६, २६  |
| दक्ष ये रूप य पणि        | १९, १३  | २१, १३ |
| दाधोयुक्ताय बलाय         |         | ३, ७६  |
| दाधोयुक्त अपो            | १२, १०० |        |
| दुरो देवर्दिशो           | २१, १६  | २३, १७ |
| दुरो देवर्दिशो           | १, ११   | १, १५  |
| दुरो देवर्दिशो           | ११, ६९  | १२, ७० |

|                        |         |          |
|------------------------|---------|----------|
| देते व ह मा भित्रस्य   | ३६, १८  | ३६, १८   |
|                        | ३६, १९  | ३६, १९   |
| ह हम्ब मा हामा ते      | १, २, ९ | १, ५, १२ |
| ह्यानो रमडउव्या        | १२, १   | १३, १    |
|                        | १२, २५  | १३, २६   |
| हृष्टवा परिस्तुतो रस   | १९, ७९  | २१, ७६   |
| हृष्टवा रमे व्याकरणे   | १९, ७७  | २१, ७५   |
| देव उन्ने नराश         | २१, ५५  | २३, ५४   |
|                        | २८, १९  | ३०, १९   |
| देव-देवे वाऽवमे        | ३३, ९१  |          |
| देव बर्हि सरस्वती      | २१, ४८  | २३, ४७   |
| देव बर्हिरन्द्र        | २८, १०  | ३०, १०   |
| देव बर्हिर्योधस        | २८, ३५  | ३०, ३५   |
| देव बर्हिवारिर्गता     | २१, ५७  | २३, ५६   |
|                        | २८, २१  | ३०, २१   |
|                        | २८, ४४  | ३०, ४४   |
| देव त्वष्टार ते        | ६, २०   | ६, २७    |
| देवतृत्तस्यनोऽव        | ८, १३   |          |
| देवश्रुतो देवे वा      | ५, १७   | ५, २०    |
| देव सवित, पशुव         | ९, १    | १०, १    |
|                        | ११, ७   | १२, ७    |
|                        | ३०, १   | ३४, १    |
| देव सवितरे वा          |         | २, १९    |
| देव सवितरेप ते         | ५, ३९   | ५, ४८    |
| देवस्त्वा सविता पुनातु | १, ३    | १, ६     |
| देवस्त्वा सविनोऽपतु    | ११, ३३  | १२, ३५   |
| देवस्य येनो मही        | २०, ११  | २४, १५   |
| देवस्य या सवितु        | १, १०   | १, १३    |
|                        | १, २१   | १, २३    |
|                        | १, २४   | १, ४०    |
|                        | ७, ११   | ७, २०    |
|                        | ५, २०   | ५, २८    |
|                        | ५, २६   | ५, ३३    |
|                        | ६, १    | ६, १     |
|                        | ६, ९    | ६, १०    |
|                        | ६, ३०   | ६, ४३    |
|                        | ९, ३०   | १०, ३९   |
|                        | ९, ३८   | ११, ४    |
|                        | ११, ९   | १२, ९    |
|                        | ११, २८  | १२, २८   |

|                                  |        |        |
|----------------------------------|--------|--------|
| देवस्य त्वा सवितु                | १८, ३७ | २०, ७  |
|                                  | २०, ३  | २१, ९३ |
|                                  | ३७, १  | ३७, १  |
|                                  | ३८, १  | ३८, १  |
| देवस्य सवितुर्मति                | २२, १४ | २४, १८ |
| देवस्या (स्य वय ) ह सवितु. ९, १० | ९, १३  | १०, १४ |
|                                  | ९, १३  | १०, १८ |
| देवहृथज आ च                      | १७, ६२ | १८, ६२ |
| देवा आशापात्रा पत्न              | २२, १९ | २४, २५ |
| देवा गातु विदो गातु              | २, २१  | २, ३९  |
|                                  | ८, २१  | ९, २१  |
| देवा देवाना मिथ जा               | २१, ५३ | २३, ५२ |
| देवा ईद्व्या होताग               | २८, १७ | ३०, १७ |
|                                  | २८, ४० | ३०, ४० |
| देवाना त्वा                      | ११, ६१ | १२, ६३ |
| देवानामसि सस्तिनवम               | १, ८   | १, १२  |
| देवाना मद्रा सुमान               | २५, १५ | २७, १९ |
| देवान्दिवमगन्धज                  | ८, ६०  | ९, ४६  |
| देवा यजमतन्वत                    | १९, १२ | २१, १२ |
| देवासो हि मा मगवे                | ३३, ९४ |        |
| देवा उपमानका                     | २८, ३७ | ३०, ३७ |
| देवा उपमानकैन्द्र                | २८, १४ | ३०, १४ |
| देवा उपमाव ( अ ) श्रिणा          | २१, ५० | २३, ४९ |
| देवा ऊजोहृती दुध                 | २१, ५० | २३, ५१ |
|                                  | २८, १६ | ३०, १६ |
|                                  | २८, ३९ | ३०, ३९ |
| देवा ऊष्टा मग्गति                | २१, ५१ | २३, ५० |
|                                  | २८, १५ | ३०, ३८ |
|                                  | २८, ३८ | ३०, १५ |
| देवा यावाप्र्यावी                | ३७, ३  | ३७, ३  |
| देवागप पय वो                     | ८, २६  | ९, २६  |
| देवागप शुद्धा योऽव               | ६, १३  | ६, १७  |
| देवागपो अग्नेगुपो                | १, १२  | १, १७  |
| देवागपो अपा नपापो                | ६, २७  | ६, ३९  |
|                                  |        | १०, ८  |
| देवागप उन्ने मेषाने              | २८, १३ | ३०, १३ |
| देवडागे अग्निना                  | २१, ४९ | २३, ४८ |
| देवडागे वयो रय                   | २८, ३६ | ३०, ३६ |
| देवास्तिर्गाम्यो                 | २१, ५४ | २३, ५३ |
|                                  | २८, १८ | ३०, १८ |
|                                  | २८, ४१ | ३०, ४१ |

|  |        |        |
|--|--------|--------|
| देवेन नो मनसा देव                            | ३४, २३ | ३३, १७ |
| देवेभ्यस्त्वा देवाव्यं (युवं) गृह्णामि ७, २२ |        | ७, २५  |
| देवेभ्यो हि पथमं                             | ३३, ५४ | ३२, ५४ |
| देवो अग्निः श्विष्टकृद                       | २१, ५८ | २३, ५७ |
|  | २८, २२ | ३०, २२ |
|  | २८, ४५ | ३०, ४५ |
| देवो देवैर्व्यनस्पति                         | २१, ५६ | २३, ५५ |
|  | २८, २० | ३०, २० |
| देवो नराद्या सो देव                          | २८, ४२ | ३०, ४२ |
| देवो वनस्पतिर्देव                            | २८, ४३ | ३०, ४३ |
| देव्या वस्त्रयो (वस्त्रियो) मतस्य ३७, ४      |        | ३७, ४  |
| देहि मे ददामि ते                             | ३, ५०  | ३, ५८  |
| देवा धिय मनामहे                              | ४, ११  | ४, १५  |
| देव्या अ वयवस्त्वा                           | २३, ४२ | २५, ४४ |
| देव्या मिमाना मनुष                           | २०, ४२ | २२, २७ |
| देव्याय कर्मणे                               | १, १३  | १, १९  |
| देव्याय यत्रं जोष्टे                         | १७, ५६ | १८, ५६ |
| देव्याय (अ) वयं आ गत                         | ३३, ३३ | ३२, ३३ |
|  | ३३, ७३ | ३२, ७३ |
| देव्या होतारा ऊर्व                           | २७, १८ | २९, १८ |
| देव्या होतारा पयसा                           | २९, ३२ | ३१, ४४ |
| देव्या होतारा मिषजे                          | २१, १८ | २३, १९ |
| दोग्ध्रा धेनुर्गोटा (वृहा)                   | २२, २२ | २४, ३१ |
| द्या (दिव) मा स्मरिगन्तारिदं                 | ५, ४३  | ५, ५४  |
| दनुतानमवा मास्तो                             | ५, २७  | ५, ३५  |
| दधुभिर्कनुभि परिर                            | ३४, ३० | ३३, २४ |
| दधुभिर्गहोभिर्कनुभि                          | ३५, १  | ३५, ३६ |
| यौ शान्तिगन्तारिध                            | ३६, १७ | ३६, १७ |
| योरग्निं पुत्रिव्यसि                         | १, २   | १, ४   |
| यौरामं त्वर्यं चितारद                        | २३, १२ | २५, १३ |
|  | २३, ५४ | २५, ५६ |
| यौमे पुत्रिव्यन्तारिध                        | २३, ४३ | २५, ४५ |
| यौमे पुष्टं पुत्रिवी                         | ११, २० | १२, २० |
| होरो देवीगन्वस्य                             | २७, १६ | २९, १६ |
| द्विपदा याश्चतुष्पदा                         | २३, ३४ | २५, ३६ |
| द्वे विरूपे चरत                              | ३३, ५  | ३२, ५  |
| द्वे मर्त्या अशृणव                           | १९, ४७ | २१, ४९ |
| द्वजः सर्पिर्गमुनि                           | ११, ७० | १२, ७१ |
| द्रासपाम्यः प्रीथवी                          | १३, ५  | १४, ५  |

|                              |        |        |
|------------------------------|--------|--------|
| द्रविणोदा पिर्षाषति          | २६, २२ |        |
| द्राप्ते अन्वसस्पते          | १६, ४७ | १७, ४७ |
| द्रुपदादिव मुमुचान           | २०, २० | २२, ५  |
| धन्वना गा धन्वनाजि           | २९, ३९ | ३१, १४ |
| वर्ता दिवो वि गाति           | ३७, १६ | ३७, १६ |
| वाता राति रावितेदं           | ८, १७  | ९, १७  |
| वानाः कर्मम सक्तव            | १९, २१ | २१, २१ |
| वानाना रूपं कुवलं            | १९, २२ | २१, २२ |
| वानावन्तं कर्मभिणं           | २०, २९ | २२, १४ |
| वान्यमग्निं विनुहि           | १, २०  | १, ३३  |
| वामरुष्टदग्निरिन्द्रो        | १८, ७६ | २०, ४५ |
| वामं ते विध                  | १७, ९९ | १९, १२ |
| विपणासि पर्वता               | १, १९  | १, ३२  |
| ध्रुमान्वगन्ताथालमते         | २४, ११ | २६, १५ |
| वृक्षा वस्मर्त्तकाशा         | २४, १८ | २६, २२ |
| वृगसि त्वं त्वन्त            | १, ८   | १, ११  |
| वष्टिरस्पष्टो                | १, १७  | १, २७  |
| स्वर्द्धति र्वयोान           | १४, १  | १५, १  |
| स्वगत त्वा नुपद              | ९, २   | १०, २  |
| स्व स्वेण मनसा               | ७, २५  | ७, २८  |
| स्वमसि पुत्रिवी वृह          | १, १७  | १, २८  |
| स्वा अगदन्वृत्तस्य           | २, ६   | २, ९   |
| स्वा अस्मिन् गोपतो           | १, १   | १, ३   |
| स्वासि धरुणास्तुता           | १३, १६ | १४, १६ |
| स्वाभि वरुणतो                | १३, ३४ | १४, ३६ |
| स्वाभि स्वोऽयं (ऽस्मिन्)     | ५, २८  | ५, ३६  |
| स्वोऽसि पुत्रिवी             | ५, १३  | ५, १८  |
| नक्षत्रेभ्य स्वाहा           | २२, २८ | २४, ३८ |
| नक्तोपसा समनसा               | १२, २  | १३, २  |
|                              | १७, ७० | १८, ७० |
| न तं विदाथ य इमा             | १७, ३१ | १८, ३१ |
| न तद्रक्षा सि न पिशाचा       | ३४, ५१ | ३३, ३९ |
| न तस्य प्रतिमा अस्ति         | ३२, ३  | ३५, २५ |
| न ते वरे परमा                | ३४, १९ | ३३, १३ |
| न त्वावा- अन्यो दिव्यो       | ३७, ३६ | २९, ४१ |
| नदीभ्य पौष्टि (७) मूर्ध्वाका | ३०, ८  | ३४, ८  |
| नम उदयेण                     | २५, ८  | २७, ११ |
| नमश्च नमस्तथ                 | १४, १५ | १५, १६ |
| नम आशवे चाजिगाय              | १६, ३१ | १७, ३१ |
| नम अर्णापणे                  | १६, २२ | १७, २२ |

|                          |        |        |
|--------------------------|--------|--------|
| नम कर्पादिने             | १६, २९ | १७, २९ |
| नम कृपायाय               | १६, ३८ | १७, ३८ |
| नम कृष्णायाय             | १६, २० | १७, २० |
| नमः पर्णीय च             | १६, ४६ | १७, ४६ |
| नम पर्णीयचा वाणीय        | १६, ४२ | १७, ४२ |
| नमः शङ्खे                | १६, ४० | १७, ४० |
| नम शम्भ ( वे ) वाय       | १६, ४१ | १७, ४१ |
| नमः शुक्रयाय             | १६, ४५ | १७, ४५ |
| नमः श्वभ्य श्वपतिभ्यश्च  | १६, २८ | १७, २८ |
| नम समान्य-               | १६, २४ | १७, २४ |
| नम सिद्ध्याय             | १६, ४७ | १७, ४३ |
| नमः सु ते निर्ऋते        | १२, ३३ | १३, ६४ |
| नम सेनाभ्य-              | १६, २६ | १७, २६ |
| नम मोभ्याय               | १६, ३३ | १७, ३३ |
| नम स्व वाय               | १६, ३७ | १७, ३७ |
| नमस्त अतान नर्वा         | ६, १०  | ६, १६  |
| नमस्त आयुवायाना          | १६, १४ | १७, १४ |
| नमस्तक्षत्र्यो           | १६, २७ | १७, २७ |
| नमस्ते अमृतु विष्णवे     | ३६, २१ | ३६, २१ |
| नमस्ते रुद्र भ्यो        | १६, १  | १७, १  |
| नमस्ते दग्धे शोभिने      | १७, ११ | १८, १० |
|                          | ३६, २० | ३६, २० |
| नमो गणेश्यो              | १६, २५ | १७, २५ |
| नमो कुण्डाय              | १६, ३० | १७, ३० |
| नमो कुण्डे               | १६, ३६ | १७, ३६ |
| नमो वसन्तु (भ) आन (य)    | १६, १८ | १७, १८ |
| नमो विष्मन्              | १६, ३५ | १७, ३५ |
| नमो मात्रे प्रियन्था     | ९, २०  | १०, ३१ |
| नमो मित्राय प्रणम्य      | ४, ३५  | ४, ४७  |
| नमो व पितर शोफ (शुभ्र) य | २, ३०  | २, ५७  |
| नमो व पितरो रम्य         | २, ३०  | २, ५७  |
| नमो वनते पर्य            | १६, २१ | १७, २१ |
| नमो नम्याय               | १६, ३४ | १७, ३४ |
| नमो वायवाय               | १६, ३९ | १७, ३९ |
| नमो विष्णु भ्यो          | १६, २३ | १७, २३ |
| नमो वसन्तो               | १६, १७ | १७, १७ |
|                          | १६, ४० | १७, ४१ |
| नमो नम्याय               | १६, ४४ | १७, ४४ |
| नमो रेतिनाय              | १६, १९ | १७, १९ |
| नमोऽस्तु नालधाय          | १६, ८  | १७, ८  |

|                         |        |         |
|-------------------------|--------|---------|
| नमोऽस्तु स्त्रेभ्यो ये  | १६, ६४ | १७, ६४  |
|                         | १६, ६५ |         |
|                         | १६, ६६ |         |
| नमोऽस्तु सर्पेभ्यो      | १३, ६  | १४, ६   |
| नमो हिरण्यबाहवे         | १६, १७ | १७, १७  |
| नमो हस्वाय              | १६, ३० | १७, ३०  |
| न यत्परो नान्तर्ग       | २०, ८२ | २२, ६७  |
| नराश सः पति शरो         | २०, ३७ | २२, २२  |
| नराश रय मर्हिमा         | २९, २७ | ३१, ३९  |
| नमोय पुत्रा             | ३०, २० | ३४, २०  |
| नर्य पत्रा मे पाहि      | ३, ३७  | ३, ४६   |
| नवदशभिस्तुवत            | १४, ३० | १५, ३४  |
| नवभिस्तुवत पितरो        | १४, २९ | १५, ३३  |
| नववि शय्यास्तुवत        | १४, ३१ | १५, ३५  |
| न ता उ एतन्मित्रे       | २३, १६ | २५, १८  |
|                         | २५, ४४ |         |
| नहि तेपममा चन           | ३, ३२  | ३, ४०   |
| नहि स्पशमविदन           | ३३, ६० | ३२, ६०  |
| नाना हि वा देवहत        | १९, ७  | २१, ६   |
| नाभा प्रियव्या गमिमाने  | ११, ७६ | १२, ७७  |
| नाभिर्मे चित्तं विज्ञान | २०, ९  | २६, १०० |
| नाभ्या अस्मिन्मित्र     | ३१, १३ | ३५, १३  |
| नार्यस्ते फन्धो लेम     | २३, ३६ | २५, ३८  |
| नारायित्री बल नर ग      | १२, ९७ | १३, ९६  |
| निकामे निकमे न          | २२, २० | २४, ३२  |
| निकमणे निषदन            | २५, ३८ | २७, ४०  |
| नियुन्वावायवा           | २७, २९ | २९, २९  |
| नालधायो धिर्न हठा       | १६, ५६ | १७, ५६  |
|                         | १६, ५७ | १७, ५७  |
| निधिप्राय स्वातो        | २२, ७  | २४, ८   |
| निवेशन सप्तमो           | १२, ६६ | १३, ६७  |
| निषनाद अतन्ते           | १०, २७ | ११, ३७  |
|                         | २०, २  | २१, ९३  |
| नि दाना नेतुपदेन        | ११, ३६ | १२, ३६  |
| नृक्षया मागेऽभि         | १४, २४ | १५, २८  |
| नृनाय यत्तं गीताय       | ३०, ६  | ३४, ६   |
| नृपदे वेऽ (ऊ) नृपदे वेऽ | १७, १० | १८, १२  |
| पदभ्ये नियन्वन्         | १३, ५८ | १४, ६५  |
| पदश वा मोम              | १५, ११ | १६, २०  |
| पदिशो दधीरज्ञ           | १७, ५४ | १८, ५४  |

|                           |         |         |
|---------------------------|---------|---------|
| पञ्च नय सरस्वती           | ३४, ११  | ३३, ५   |
| पञ्चरवन्त पुरुष आ         | २३, ५२  | २५, ५४  |
| पञ्चावि शय्यास्तुवता      | १४, ३०  | १५, ३५  |
| पञ्चाविर्वयो गायत्री      | १४, १०  | १५, १३  |
| पथस्पथ. परिपति            | ३४, ४२  | ३३, ३०  |
| पथ प्रथिव्या पथ           | १८, ३६  | २०, ७   |
| पथगा युक्रमसुतं           | १९, ८४  | २१, ८१  |
| पथसो रूप यथावा            | १९, २३  | २१, २३  |
| पथसो गेन आभूतं            | ३८, २८  | ३८, २६  |
| परं मन्थो अनु परेति       | ३५, ७   | ३५, ४०  |
| परमस्या परावतो            | ११, ७२  | १२, ७३  |
| परमेष्ठा त्वा सादयतु      | १५, ५८  | १५, ६४  |
| परमेष्ठवभिर्भीत           | ८, ५४   | ९, ३८   |
| परम्या अवि सवतो           | ११, ७१  | १२, ७२  |
| परि ते वृत् (ळ) सो रथो    | ३, ३६   | ३, ४४   |
| परि ते वन्वतो             | १६, १२  | १७, ११  |
| परि त्वा गिर्विशो         | ५, २९   | ५, ३७   |
| परि त्वांस परं वय         | ११, २३  | १२, २६  |
| परि याताप्रतिवा           | ३२, १०  | ३५, ३१  |
| परि नो (णो देवी) रुद्रस्य | १६, ५०  | १७, ५०  |
| परि मासे दुर्वारिताद      | ४, २८   | ४, ४०   |
| परि वाजपति                | ११, २५  | १२, २५  |
| परिवारसि परि त्वा         | ६, ६    | ६, ७    |
| परितो पिजता गुत           | १९, २   | २१, २   |
| परितो भूतानि परित्य       | ३२, ११  | ३५, ३०  |
| परमे रामनेपत              | ३५, १८  | ३५, ५१  |
| परो दिवः पर एतः           | १७, २९  | १८, २९  |
| पवमानः सो अथ न            | १९, ४२  | २१, ४४  |
| पवित्रेण पुनर्हि मा       | १९, ४०  | २१, ४२  |
| पवित्रे रथो वण्णव्यो      | १, १२   | १, १६   |
|                           | १, ३१   | १, ४८   |
|                           | ४, ४    | ४, ५    |
|                           | १०, ६   | ११, १३  |
| पशुभिः पशूनाप्रानि        | १९, २०  | २१, २०  |
| पश्वान् च मे पशूना        | १८, २७  | १९, ३९  |
| पश्वानो विराज             | २४, १३  | २६, १७  |
| पात नो अश्विना दिवा       | २०, ६२  | २२, ४७  |
| पावकया यश्चितयन्त्या      | १७, १०  | १८, ११  |
| पावकवर्चा शुक्रवर्चा      | १२, १०७ | १३, १०६ |
| पावका न सरस्वती           | २०, ८४  | २२, ६९  |

|                             |        |        |
|-----------------------------|--------|--------|
| पाहि नो अग्न एकया           | २७, ४३ |        |
| पिता नोऽसि पिता नो          | ३७, २० | ३७, १९ |
| पितु नु स्तोप महो           | ३४, ७  | ३३, २  |
| पितृभ्य स्वधागिभ्य          | १९, ३६ | २१, ३६ |
| पीवो अन्ना रथिवध            | २७, २३ | २९, २३ |
| पुत्रमिव पितरावश्विनो       | १०, ३४ | ११, ४७ |
|                             | २०, ७७ | २२, ६० |
| पुनन्तु मा देवजना           | १९, ३९ | २१, ४१ |
| पुनन्तु मा पितरः            | १९, ३७ | २१, ३८ |
| पुनन्तु मा पितामहाः         | १९, ३७ | २१, ३९ |
| पुनरास्य सदनमपथ             | १२, ३९ | १३, ४० |
| पुनरर्जा निवर्तस्य          | १२, ९  | १३, १० |
|                             | १२, ४० | १३, १४ |
| पुनर्न पितरो मने            | ३, ५५  | ३, ६३  |
| पुनर्मनः पुनरागुर्म         | ४, १५  | ४, २०  |
| पुनर्मन्वादिभ्या रुद्रा     | १०, ४४ | १२, ८५ |
|                             |        | १३, ४५ |
| पुनानि ते परिस्तुत          | १९, ४  | २१, ४  |
| पुगा क्रम्य विगुषो          | १, २८  | १, ४५  |
| पुगायारो अग्नयः             | १२, ५० | १३, ५१ |
| पुगायोऽसि विप्रमगा          | ११, ३२ | १२, ३१ |
| पुष्टदसो विपुरुष            | ८, ३०  | ९, २९  |
| पुरुष एवेत सर्व             | ३१, २  | ३५, २  |
| पुरुषसुमाश्रन्मसो           | २४, ३५ | २६, ३९ |
| पुर्णा दधि परा पत           | ३, ४९  | ३, ५७  |
| प्रपण वनिष्ठान              | २५, ७  | २७, १० |
| प्रपन्तव त्रते वयं          | ३४, ४१ | ३३, २९ |
| प्रपञ्चके यम मृत्य          |        | ४०, १६ |
| प्रपा पनाक्षणेण             | ९, ३२  | १०, ४१ |
| प्रुणे रवाहा प्रुणे         | २२, २० | २४, २८ |
| प्रुच्छामि त्वा चितये       | २३, ४९ | २५, ५१ |
| प्रुच्छामि त्वा परमन्तं     | २३, ६१ | २५, ६३ |
| प्रुथिवि देवयजन्यो          | १, २५  | १, ४१  |
| प्रुथिवी च म इन्द्राय       | १८, १८ | १९, ३० |
| प्रुथिवी छन्दोऽन्तरिक्षं    | १४, १९ | १५, २० |
| प्रुथिव्या अहमुदन्तरिक्ष    | १७, ६७ | १८, ६७ |
| प्रुथिव्या पुरीषस्यारसो     | १४, ४  | १५, ४  |
| प्रुथिव्याः सवम्यादमि       | ११, १६ | १२, १६ |
| प्रुथिव्यै वर्मासि प्रुथिवि | १, २५  | १, ४१  |
| प्रुथिव्यै स्वाहान्तरिक्षाय | २२, २९ | २४, ४१ |

|                              |        |         |
|------------------------------|--------|---------|
| पृथिविस्त्रिधीनपृथिवि        | २४, ४  | २६, ६   |
| पृथदश्वा मरुत                | २५, २० | २७, २४  |
| पृष्टो दिवि पृष्टो           | १८, ७३ | २०, ४२  |
| पृष्टीमे राष्ट्रमुदरम मा     | २०, ८  | २१, ९९  |
| पृथामिनो हवामहे              | ३, ४४  | ३, ५२   |
| प्रजापतये च वायवे            | २४, ३० | २६, ३४  |
| प्रजापतये त्वा जुष्टे        | २२, ५  | २४, ४   |
| प्रजापतये पुरुषान            | २४, २९ | २६, ३३  |
| प्रजापतये ब्रह्मन्           | २२, ४  | २४, ४   |
| प्रजापतिं सम्प्रियमाणः       | ३९, ५  | ३९, ४   |
| प्रजापतिं विष्णुमि           | १८, ४३ | २०, १३  |
| प्रजापतिं विष्णुमि           | ८, १०  | ८, ११   |
| प्रजापतिश्चरति गमे           | ३१, १९ | ३५, १९  |
| प्रजापतिष्टवा सादयन्तु       | १३, १७ | १४, १७  |
| प्रजापते न त्वदेता           | १०, २० | ११, २९  |
|                              | २३, ६५ | २५, ६७  |
| प्रजापतेस्तपसा               | २९, ११ | ३१, ११  |
| प्रजापते त्वा देवता          | ३५, ६  | ३५, ३९  |
| प्रजाभ्यस्त्वा प्रजाभ्यन्तु  | ४, २५  | ४, ३५   |
| प्र तद्विष्णुस्तवते          | ५, २०  | ५, २६   |
| प्र तदोचेदयन्ते              | ३२, ९  | ३५, २८  |
| प्रति क्षत्रे प्रति तिष्ठामि | २०, १० | २१, १०१ |
| प्रतिपदामि प्रतिपदे          | १५, ८  | १६, १३  |
| प्रति पन्थामपद्महि           | ४, २९  | ४, ४१   |
| प्रतिश्रुत्या अर्तने         | ३०, १९ | ३४, १९  |
| प्रति स्पर्शो विरुज          | १३, ११ | १४, ११  |
| प्रतिविना पृथिव्या           | १५, ६  | १६, १०  |
| प्रतीचीमारोह                 | १०, १२ | ११, २०  |
| प्रतर्ज वाजिन्नाश्व          | ११, १२ | १२, १२  |
| प्रतवसेवावकाम                | ११, १५ | १२, १५  |
| प्रत्यक्षेण प्रति            | २०, १० | २१, १०२ |
| प्रत्युष्ट रक्ष              | १, ७   | १, १०   |
|                              | १, २९  | १, ४६   |
| प्रथमा दिताय                 | २०, १२ | २१, १०४ |
| प्रथमा वा सर्गयिना           | २९, ७  | ३१, ७   |
| प्र नने ब्रह्मणस्पति         | ३४, ५७ | ३३, ४५  |
| प्र नो यच्छ्रुत्वर्षमा       | ९, २९  | १०, ३७  |
| प्र पयस्वय वृषभस्य           | १०, १९ | ११, २८  |
| प्र-प्रायमभिर्भग्नस्य        | १२, ३४ | १३, ३५  |
| प्र बाहवा मिमन्ते            | २१, ९  | २३, ९   |

|                            |        |        |
|----------------------------|--------|--------|
| प्र मन्महे शतगा            | ३४, १६ | ३३, १० |
| प्रमुन घन्वनरत्व           | १६, ९  | १७, ९  |
| प्र याभिर्यामि दाश्वा      | २७, २७ | २९, २६ |
| प्र व इन्द्राय ब्रह्मते    | ३३, ९६ |        |
| प्र वायुमन्त्रा ब्रह्मती   | ३३, ५५ | ३२, ५५ |
| प्र वाग्जे सुप्रया         | ३३, ४४ | ३२, ४४ |
| प्र वीर्या युचयो           | ३३, ७० | ३२, ७० |
| प्र वो महे मन्दमानाय       | ३३, २३ | ३२, २३ |
| प्र वो महे महि नमो         | ३४, १७ | ३३, ११ |
| प्रगप भग्मना योनिमपथ       | १२, ३८ | १३, ३९ |
| प्रस्तरेण परिविना          | १८, ६३ | २०, ३३ |
| प्रागपागुदमभराक            | ६, ३६  | ६, ४९  |
| प्राचीने बहिर् पदिशा       | २९, २९ | ३१, ४१ |
| प्राचीमनु पदिशे प्रेहि     | १७, ६६ | १८, ६६ |
| प्राच्ये दिशे स्वाहावाच्य  | २२, २४ | २४, ३४ |
| पाण मे पाशपान मे           | १४, ८  | १५, ७  |
| पाणदा अपानदा               | १७, १५ | १८, १५ |
| पाणपा मे अपानपा            | २०, ३४ | २२, १९ |
| प्राणश्च मेऽपानश्च         | १८, २  | १९, १४ |
| पाणापनो मे पाति            |        | २, २६  |
| प्राणाय त्वादानाय          | १, २०  | १, ३४  |
| पाणाय मे वचोदा             | ७, २७  | ९, १   |
| पाणाय स्वाहापानाय          | २२, २३ | २४, ३३ |
|                            | २३, १८ | २५, २० |
| पातरग्निं पातरिन्द्र       | ३४, ३४ |        |
| पातार्जने मरुमुष्ट         | ३४, ३५ | ३३, २८ |
| प्रियंकर [वहृकार] प्रियंकर | १०, २८ | ११, ४० |
| पेता जयता नर इन्द्रो       | १७, ४६ | १८, ४६ |
| पत्या पत्ये मे चान         | २७, ४५ | २९, ५० |
| प्रेदमे ज्योतिमान          | १२, ३२ | १३, ३३ |
| प्रेदो अग्ने दादिहि        | १७, ७६ | १८, ७६ |
| प्रेतु ब्रह्मणस्पतिः       | ३३, ८९ | ३७, ७  |
|                            | ३७, ७  |        |
| प्रेतु वाजीकनिकदन          | ११, ४६ | १२, ४६ |
| प्रेषेभि प्रैषानाप्रोति    | १९, १९ | २१, १९ |
| प्रोयदश्वा न यवेमे         | १५, ६२ | १६, ८३ |
| प्रोथमाण सोम आगतो          | ८, ५६  | ९, ४०  |
| फल्गुल्लोहितोणा पलक्षी     | २४, ४  | २६, ७  |
| वट सूर्य श्रवगा            | ३३, ४० | ३२, ४० |
| वणमहा अग्नि                | ३३, ३९ | ३२, ३९ |

|                             |        |        |
|-----------------------------|--------|--------|
| बर्हिषद पितर                | १९, ५५ | २१, ५५ |
| बलविज्ञाय स्थविर            | १७, ३७ | १८, ३७ |
| बल्लिना पिता                | २९, ४२ | ३१, १८ |
| बभ्रो वयो विवर्लं           | १४, ९  | १५, १० |
| बाहू मे बलमिन्द्रिय         | २०, ७  | २१, ९८ |
| बीभत्सायै पौल्वसं           | ३०, १७ | ३४, १७ |
| बृहच्छन्दो रथन्तरं          | १५, ५  | १६, ७  |
| बृहती छन्दोऽनुष्टुप छन्दो   | १४, १८ | १५, १९ |
| बृहदिन्द्राय गायत           | २०, ३० | २२, १५ |
| बृहन्प्रावाणि वानस्पत्यः    | १, १५  | १, २३  |
| बृहन्निदिभ्य एषा            | ३३, २४ | ३२, २४ |
| बृहस्पतिर्देवाना            |        | २, २१  |
| बृहस्पतिना ब्रह्मणा         | १०, ३० | ११, ४३ |
| बृहस्पते अति यदयो           | २६, ३  | २८, ४  |
| बृहस्पते परिर्त्तया         | १७, ३६ | १८, ३६ |
| बृहस्पते वाजंजय             | ९, ११  | १०, १५ |
| बृहस्पते सवितर्बोध          | २७, ८  | २९, ८  |
| बोधो मे अस्य वचगो           | १२, ४२ | १३, ४३ |
| ब्रह्म क्षत्रं पवने         | १९, ५  | २१, ५  |
| ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं       | १३, ३  | १४, ३  |
| ब्रह्मणस्पते त्वमस्य        | ३४, ५८ | ३३, ४६ |
| ब्रह्मणे ब्राह्मणं क्षत्राय | ३०, ५  | ३४, ५  |
| ब्रह्म ऋ ह क्षत्रं ऋ ह      | ५, २७  | ५, ३६  |
|                             | ६, ३   | ६, ४   |
| ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय  | २६, २  | २८, ३  |
| ब्रह्मवनि न्वा क्षत्रवनि    | ५, २७  | ५, ३५  |
|                             | ६, ३   | ६, ४   |
| ब्रह्म सूर्यसमं ज्योति      | २३, ४८ | २५, ५० |
| ब्रह्मणि मे मर्त्यः         | ३३, ७८ | ३२, ७८ |
| ब्राह्मणमस्य विदेय          | ७, ४६  | ९, ११  |
| ब्राह्मणासः पितर            | २९, ४७ |        |
| ब्राह्मणोऽस्य मुखमामाद      | ३१, ११ | ३५, ११ |
| भग एव भगवा                  | ३४, ३८ |        |
| भग प्रणेतर्भग               | ३४, ३६ |        |
| भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम      | २५, २१ | २७, २५ |
| भद्राऽउत प्रशस्तयो          | १५, ३९ | १६, ६१ |
| भद्रो नोऽभिमिराहुतो         | १५, ३८ | १६, ६० |
| भद्रो मेऽसि प्रच्यवस्व      | ४, ३४  | ४, ४६  |

|                              |        |        |
|------------------------------|--------|--------|
| भवतं नः समनसो                | ५, ३   | ५, ३   |
|                              | १२, ६० | १३, ६१ |
| भायै दार्वारहानं             | ३०, १२ | ३४, १२ |
| भुज्यु सुपर्णो यज्ञो         | १८, ४२ | २०, १२ |
| भुवो यज्ञस्य रजसश्च          | १३, १५ | १४, १५ |
|                              | १५, २३ | १६, ४४ |
| भुताय त्वा नारातये           | १, ११  | १, १४  |
| भु [भुव] पतये स्वाहा         | २, २   | २, ३   |
| भूम्या आशूनालभते             | २४, २६ | २६, ३० |
| भूमिर्भूमिरस्यमिति           | १३, १८ | १४, १८ |
| भूर्भुवः स्व तस्मवितु        | ३६, ३  | ३६, ३  |
| भूर्भुवः स्व सुप्रजा         | ३, ३७  | ३, ४५  |
|                              | ७, २९  | ९, ५   |
|                              | ८, ५३  | ९, ३७  |
| भूर्भुवः स्वर्गोऽग्नौ भग्ना  | ३, ५   | ३, ५   |
| भूर्भुवः स्वर्लोकाः ऋषीणां   | २३, ८  | २५, ९  |
| भेषजमसि भेषजं                | ३, ५९  | ३, ६७  |
| मखम्य शिरोऽसि                | ११, ५७ | १२, ५९ |
|                              | ३७, ८  | ३७, ८  |
| मयवे स्वाहा माधवाय           | २२, ३१ | २४, ४४ |
| मधु नक्तमुतोषसो              | १३, २८ | १४, ३० |
| मधुमर्तान् इषस्कृधि          | ७, २   | ७, १   |
| मधुमाज्ञो वनस्पतिः           | १३, २९ | १४, ३१ |
| मधु वाता ऋतायते              | १३, २७ | १४, २९ |
| मधुश्च माधवश्च               | १३, २५ | १४, २६ |
| मन्वा यज्ञ नक्षत्रे          | २७, १३ | २९, १३ |
| मनःछन्द कृषिश्छन्दो          | १४, १९ | १५, २१ |
|                              | १५, ४  | १६, ४  |
| मनस काममाकृति                | ३९, ४  | ३९, ३  |
| मनस्त आयायता                 | ६, १५  | ६, १९  |
| मनस्वापु स्वाहा              | ७, ६   | ७, ३   |
| मनो गायत्र्यै                |        | २, २०  |
| मनो जृतिर्जुषतामाज्यस्य      | २, १३  | २, २९  |
| मनो न येषु हवनेषु            | ७, १७  | ७, १६  |
| मनो न्वाह्वाहो               | ३, ५३  | ३, ६१  |
| मनो मे तर्पयत                | ६, ३१  | ६, ४४  |
| मन्यवेऽयस्तापं               | ३०, १४ | ३४, १४ |
| मयि गृह्णाम्यग्रे (मे) अग्नि | १३, १  | १४, १  |
| मयि लोदिन्द्रियं             | ३८, २७ | ३८, २६ |

|                          |         |         |
|--------------------------|---------|---------|
| मयीदमिन्द्र इन्द्रिय     | २, १०   | २, १८   |
| मयु प्राजापत्य उलो       | २४, ३१  | २६, ३५  |
| मयता रक्ताविशेषा         | २५, ६   | २७, ९   |
| मयतो प्रत्य हि क्षये     | ८, ३१   | ९, ३०   |
| मयवन्तं वृषभ             | ७, ३६   | ७, ३६   |
| मयवः २५ इन्द्र वृषभो     | ७, ३८   | २८, १०  |
| मर्मणि ते वर्मणा         | १७, ४९  | १८, ४९  |
| मशरन्ध्रैर्गन्ध          | २५, ३   | २७, ५   |
| महा २५ इन्द्रा नवदा      | ७, ३९   | ७, ३९   |
| महा २५ इन्द्रा य ओ जया   | ७, ४०   | ७, ४०   |
| महा २५ इन्द्रो वज्रहस्ता | २६, १०  | २८, ११  |
| महा नम्यो रेव ये         | २३, ३५  | २५, ३७  |
| महि वृणाभयोऽस्तु         | ३, ३१   | ३, ३९   |
| महि नोः प्रविधा च न      | ८, ३०   | ९, ३१   |
|                          | १३, ३०  | १४, ३४  |
| महाना परोऽभि             | ४, ३    | ४, ४    |
| महीमा पु मत्त            | २१, ५   | २३, ५   |
| महो यमो यमि मत्त         | ३३, १७  | ३०, १७  |
| महो यो नम्यता            | २०, ८६  | २०, ७१  |
| म छत्र पमा छन्द          | १४, १८  | १५, १८  |
| मा म इन्द्रा वृषभ        | १०, २०  | ११, २०  |
| मत्त न ते पय नो          | २३, २४  | २५, २६  |
|                          | २३, २५  | २५, २७  |
| मोतर पुत्र प्रविधा       | १०, ६१  | १३, ६०  |
| मा त्व मि वन्त           | २५, ३७  | २७, ४१  |
| मा त्व तपस्विय           | २५, ४३  |         |
| मा न ज यो अम्यो          | ३, ३०   | ३, ३८   |
| मा न म्यो नम्ये          | १६, १६  | १७, १६  |
| मा नो महान्तमन्त         | १६, १५  | १७, १५  |
| मा नो मित्रो वृष्णो      | २५, २४  | २७, २८  |
| मा पो मापर्वीत् यायाम्ना | ६, २०   | ६, ३०   |
| मा भर्मा य वृष्या        | १, २३   | १, ३९   |
|                          | ६, ३५   | ६, ४८   |
| मा मा हि मोजिना          | १०, १०० | १३, १०१ |
| मा त्व गयम्पेय           | ४, २२   | ४, ३१   |
| मा वो रिपय               | १०, ९५  | १३, ९७  |
| मा सु मित्रा             | ११, ६८  | १२, ६९  |
| माहिर्भर्मा पुत्रा       | ६, १०   | ६, १५   |
|                          | ८, २३   | ९, २३   |
| मि र इव पतन्ध            | ३३, ५७  | ३०, ५७  |

|                          |        |        |
|--------------------------|--------|--------|
| मित्रः स रज पृथिवी       | ११, ५३ | १२, ५४ |
| मित्रध म इन्द्रध         | १८, १७ | १९, २९ |
| मित्रस्त्वा यदि बलीता    | ४, १९  | ४, २६  |
| मित्रस्य चर्पणीश्रुतो    | ११, ६२ | १२, ६४ |
| मित्रस्य त्वा चक्षुषा    |        | २, २२  |
| मित्रस्य मा चक्षुषे      | ५, ३४  | ५, ४३  |
| मित्रावरुणाभ्या त्वा     | ७, २३  | ७, २५  |
| मित्रो न एहि गुमत्रध     | ४, २७  | ४, ३८  |
| मित्रो नवाधरेण           | ९, ३३  | १०, ४२ |
| मीदु ( वहु ) एम शिवतम    | १६, ५१ | १७, ५१ |
| मुत्त सदस्य शिग डा       | १९, ८८ | २१, ८५ |
| मुत्तन्तु मा शपय्या      | १२, ९० | १३, ९१ |
| मूर्धानं दिवो अरति       | ७, २४  | ७, २६  |
|                          | ३३, ८  | ३२, ८  |
| मूर्धा त्वय प्रजापति     | १४, ९  | १५, ९  |
| मूर्धामि राड स्वायि      | १४, २१ | १५, २३ |
| मलेभ्यः स्वाहा श्वाभ्यः  | २२, २८ | २४, ४० |
| मृगो न भीमः कुचरे        | १८, ७१ | २०, ४० |
| मेवा मे वरुणो            | ३२, १५ |        |
| मो प ण इन्द्रात्र प्रम्य | ३, ४६  | ३, ५४  |
| य आत्मदा बलरा            | २५, १३ | २७, १७ |
| य इन्द्र इन्द्रिय दनु    | २०, ७० | २२, ५५ |
| य इमा विद्या भुवनानि     | १७, १७ | १८, १७ |
| य इमे यावापयिवा          | २९, ३४ | ३१, ४६ |
| य एतवन्तध                | १६, ६३ | १७, ६३ |
| य इन्द्रमी अवसा          | ३२, ७  | २९, ३४ |
| यः प्राणतो निमिपतो       | २३, ३  | २५, ३  |
|                          | २५, ११ | २७, १५ |
| यकागको शकुन्तिका         | २३, २२ | २५, २४ |
| यकोऽगको शकुन्तक          | २३, २३ | २५, २५ |
| यजमानस्य परिधि           | २, ३   | २, ४   |
| यजा नो मित्रावरुणा       | ३३, ३  | ३२, ३  |
| यजुभिर्गायन्ते घ्राहा    | १९, २८ | २१, २८ |
| यज्जग्यतो दग्मुदैति      | ३४, १  | ३३, १  |
| यज यजं गच्छ              | ८, २२  | ९, २०  |
| यज नमश्च (अं च) त उप     | २, १९  | २, ४५  |
| यजस्य दोहो वितत          | ८, ६०  |        |
| यजा यजा वो अम्ये         | २७, ४० | २९, ४७ |
| यजेन यजमयजन्त            | ३१, १६ | ३५, १६ |
| यजो देवाना प्रयेति       | ८, ४   | ८, ३   |
|                          | ३३, ६८ | ३२, ६८ |



|                        |        |        |
|------------------------|--------|--------|
| यते स्वाहा धावते       | २२, ८  | २४, १० |
| यतो- यत समीहसे         | ३६, २२ | ३६, २२ |
| यत्ते गात्रादग्निना    | २५, ३४ | २७, ३८ |
| यत्ते पवित्रमर्चिष्यमे | १९, ४१ | २६, ४३ |
| यत्ते सादे महता        | २५, ४० |        |
| यत्ते सोम दिवि ज्योति  | ६, ३३  | ६, ४६  |
| यत्ते सोमा दाम्यं नाम  | ७, २   | ७, २   |
|                        | ८, ४९  | ८, ३१  |
| यत्पुरुषं व्यदधुः      | ३१, १० | ३५, १० |
| यत्पुरुषेण हविषा       | ३१, १४ | ३५, १४ |
| यदप्रज्ञानमुत चेतो     | ३४, ३  |        |
| यत्र धारा अनपेता       | १८, ६५ | २०, ३५ |
| यत्र बाणाः सम्पतन्ति   | १७, ४८ | १८, ४८ |
| यत्र ब्रह्म च क्षत्रं  | २०, २५ | २२, १० |
| यत्रेन्द्रश्च वायुश्च  | २०, २६ | २२, ११ |
| यत्रोषधीः समरमत        | १२, ८० | १३, ८१ |
| यथेमा वाचं कत्याणी     | २६, २  | २८, २३ |
| यदकन्द प्रथम           | २९, १२ | ३१, २४ |
| यदमे कानि कानि         | ११, ७३ | १२, ७४ |
| यदत्तयुपर्जिह्मका      | ११, ७४ | १२, ७५ |
| यदत्र रिप्त-रसिनः      | १९, ३५ | २१, ३५ |
| यदथ कच्च वृत्रदेव      | ३३, ३५ | ३२, ३५ |
| यदथ सूर उदिते          | ३३, २० | ३२, २० |
| यदश्वस्य कविषो         | २५, ३२ | २७, ३६ |
| यदश्वाय वास उप         | २५, ३९ | २७, ४३ |
| यदस्या अ-हृभेया        | २३, २८ | २५, ३० |
| यदाकृतात्मसमृत्ते      | १८, ५८ | २०, २८ |
| यदापिपेष भतर           | १९, ११ | २१, १० |
| यदापो आन्या इति        | २०, १८ | २२, ४  |
| यदाबभ्रन्दाक्षायणा     | ३४, ५२ | ३३, ४० |
| यदि जाग्रद्यदि स्वप्न  | २०, १६ | २२, ३  |
| यदि दिवा यदि नक्तम्    | २०, १५ | २२, २  |
| यदिमा वाजयन            | १२, ८५ | १३, ८६ |
| यदवधमदरस्य             | २५, ३३ | २७, ३७ |
| यद्गामे यदरण्यं        | ३, ४५  | ३, ५३  |
|                        | २०, १७ | २२, ४  |
| यदृतं यत्परादानं       | १८, ६४ | २०, ३४ |
| यद्देवा देवहेड (ळ) नं  | २०, १४ | २२, १  |
| यद्देवासे ललामगुं      | २३, २९ | २५, ३१ |
| यद्वाजिनो दाम          | २५, ३१ | २७, ३५ |

|                              |        |        |
|------------------------------|--------|--------|
| यद्वातो अपो अगनी             | २३, ७  | २५, ७  |
| यदाहिष्ठं तदभये              | २६, १२ |        |
| यद्वर्णिषो यवमान             | २३, ३० | २५, ३२ |
|                              | २३, ३१ | २५, ३३ |
| यद्विवा यमनुशो               | २५, २७ | २७, ३१ |
| यन्ता च मे वर्ता             | १८, ७  | १९, १९ |
| यं ते देवा निरुति            | १२, ६५ | १३, ६६ |
| यन्त्रा राउ यन्त्रयमि        | १४, २० | १५, २४ |
| यन्निणिजा रेवणमा             | २५, २५ | २७, २९ |
| यन्नाक्षणे मारुपचन्या        | २५, ३६ | २७, ४० |
| यन्मे छिद्रे चक्षुषो         | ३६, २  | ३६, २  |
| यमग्ने कव्यवाहन              | १९, ६४ | २१, ६४ |
| यमग्ने पुंसु मर्यमवा         | ६, २९  | ६, ४०  |
| यमश्विना नमचेरा              | १९, ३४ | २१, ३४ |
| यमश्विना सरस्यर्ता           | २०, ६८ | २२, ५३ |
| यमाय स्वाहिरस्यते            | ३८, ९  | ३८, ९  |
| यमाय त्वा मखाय त्वा          | ३७, ११ | ३७, ११ |
| यमाय यमममयवर्भयो             | ३०, १५ | ३४, १५ |
| यमाय स्वाहोन्तसाय            | ३९, १३ | ३९, १० |
| यमेन दत्त त्रित              | २९, १३ | ३१, २५ |
| य परिधि पर्यधथा              | २, १७  | २, ३३  |
| यथोराजसा रुरुमिता            | ८, ५९  | ९, ४५  |
| यवाना भ गोऽग्नि              | १४, २६ | १५, ३१ |
| यश्चिदापो महिना              | २७, २६ | २९, ३६ |
| यस्तु सर्वाणि भूतान्या       | ४०, ६  | ४०, ६  |
| यस्ते अय कृणवद्भद्र          | १२, २६ | १३, २७ |
| यस्ते (देव सं मा) अयमानिमेधो | ८, १२  | ८, १३  |
| यस्ते राम रुद्रन्दि          | ७, २६  | ७, २९  |
| यस्ते प्राण पशुषु            |        | १, ५०  |
| यस्ते रम सम्भृत              | १९, ३३ | २१, ३३ |
| यस्ते रत्न. शशयो             | ३८, ५  | ३८, ५  |
| यस्माज्जात न पुरा            | ३२, ५  | ३५, २६ |
| यस्माच्च जत पुरा             | ८, ३६  | ८, १७  |
| यस्मिन्सर्वाणि भूतानि        | ४०, ७  | ४०, ७  |
| यस्मिन्लथास कृष्णमास         | २०, ७८ | २२, ६३ |
| यस्मिन्नुच सम                | ३४, ५  |        |
| यस्य तुर्मो गृह              | १७, ५० | १८, ५२ |
| यस्य प्रयाणमन्वय             | १६, ३  | १२, ६  |
| यस्याय विश्व आर्यो           | ३३, ८२ | ३२, ८० |
| यस्यास्ते घोर आमान           | १२, ६४ | १३, ६५ |

|                          |        |        |
|--------------------------|--------|--------|
| यस्येमे हिमवन्तो         | २५, १२ | २७, १६ |
| यस्यै ते यजिष्ये         | ८, २९  | ९, २८  |
| यस्यैषवी प्रसवर्ष        | १२, ८६ | १३, ८७ |
| या इषवो यातुभाना         | १३, ७  | १४, ७  |
| या ओषवीः पूर्वा जाता     | १२, ७५ | १३, ७६ |
| या ओषवी संमराजी          | १२, ९२ | १३, ९३ |
|                          | १२, ९३ | १३, ९४ |
| याऽऽवाह उग्रतो           | ८, १९  | ९, १९  |
| या मेधा देवगणा           | ३२, १४ | ३५, ३३ |
| या फलिनीर्या अफला        | १२, ८९ | १३, ९० |
| याः सेना अर्मात्वरि      | ११, ७७ | १२, ७८ |
| या तव तनरिय              | ५, ६   | ५, ८   |
| या तव तनर्मध्यमदेषा      | ५, ४०  | ५, ५०  |
| या ते अग्नेयः शया        | ५, ८   | ५, १२  |
| या ते धर्म दिव्या शुभ्या | ३८, १८ | ३८, १८ |
| या ते धामानि परमाणि      | १७, २१ | १८, २१ |
| या ते धामानि हविषा       | ४, ३७  | ४, ४९  |
| या ते धामान्युदमसि       | ६, ३   | ६, ३   |
| या ते इन्द्र शिवा तनः    | १६, २  | १७, २  |
|                          | १६, ४९ | १७, ४९ |
| या ते हेतेमादृ (ऋ) धम    | १६, ११ | १७, १२ |
| यामिषु गिरिगन्त हस्ते    | १६, ३  | १७, ३  |
| यावता यावापृथिवी         | ३८, २६ | ३८, २५ |
| या वा कशा मनुम्ययश्चिना  | ७, ११  | ७, १०  |
| या वो देवा मर्ये रचो     | १३, २३ | १४, २३ |
|                          | १८, ४७ | २०, १७ |
| या व्याप्र विप्रचिकेभे   | १९, १० | २१, ९  |
| या शतेन प्रतनोपि         | १३, २१ | १४, २१ |
| याश्चेदमुपयजन्ति         | १२, ९४ | १३, ९५ |
| यामेते अग्ने मर्ये रचो   | १३, २० | १४, २२ |
|                          | १८, ४६ | २०, १६ |
| युक्तेन मनसा             | ११, २  | १२, २  |
| युक्त्वाय सविता          | ११, ३  | १२, ३  |
| युःवा हि केशिना          | ८, ३४  | ८, १४  |
| युःवा हि देवहृतमा        | १३, ३७ | १४, ३९ |
|                          | ३३, ४  | ३२, ४  |
| युने या ब्रह्म पृथ्यै    | ११, ५  | १२, ५  |
| युत मन उत                | ५, १४  | ५, १९  |
|                          | ११, ४  | १२, ४  |
|                          | ३७, २  | ३७, २  |

|                          |        |        |
|--------------------------|--------|--------|
| युजन्ति ब्रह्मरुषं       | २३, ५  | २५, ५  |
| युजन्त्यस्य काम्या हरी   | २३, ६  | २५, ६  |
| युजाथाः रासमं            | ११, १३ | १२, १३ |
| युजान प्रथमं             | ११, १  | १२, १  |
| युनक्त सीरा वि युगा      | १२, ६८ | १३, ६९ |
| युवं तमिन्द्रावर्षता     | ८, ५३  | ९, ३६  |
| युवः मुराममाश्विना       | १०, ३३ | ११, ४६ |
|                          | २०, ७६ | २२, ६१ |
| युष्मा इन्द्रोऽवृणीत     | १, १३  | १, १८  |
| यूपवस्का उत ये           | २५, २९ | २७, ३३ |
| ये अग्रय पावजन्त्या      | १८, ६७ | २०, ३६ |
| ये अग्निवाचा             | १९, ६० | २१, ६० |
| ये चेह पितरो             | १९, ६७ | २१, ६८ |
| ये जनेषु मलिम्लव         | ११, ७९ | १२, ८० |
| ये तीर्थानि प्रचरन्ति    | १६, ६१ | १७, ६१ |
| ये ते पन्थाः सवितः       | ३४, २७ | ३३, २१ |
| ये त्वाहिहन्त्ये मधवन    | ३३, ६३ | ३०, ६३ |
| ये देवा अग्नेत्रा        | ९, ३६  | ११, २  |
| ये देवा देवना यज्ञिया    | १७, १३ | १८, १३ |
| ये देवा देववाधि          | १७, १४ | १८, १४ |
| ये देवसो दिव्येकादश      | ७, १९  | ७, २०  |
| ये देवा मनोजाता          | ४, ११  | ४, १६  |
| येनऽऽपयस्तपसा            | १५, ४९ | १६, ७१ |
| ये नः पूर्वे पितर        | १९, ५१ |        |
| ये न सपत्ना अप           | ३४, ४६ | ३३, ३४ |
| येन धाता बृहस्पते        |        | ३, ७५  |
| येन कर्माण्यपमो          | ३४, २  |        |
| येन याम्ना पृथिवी        | ३२, ६  | २९, ३३ |
| येन वहसि महर्षं          | १५, ५५ | १६, ७७ |
|                          | १८, ६२ | २०, ३२ |
| येना पावकः चक्षमा        | ३३, ३२ | ३२, ३२ |
| येना समम्सु सासहो        | १५, ४० | १६, ६२ |
| येनेद भर्तं भुवनं        | ३४, ४  |        |
| येऽज्ञेषु विविशन्ति      | १६, ६२ | १७, ६२ |
| ये पथा पथिरक्षय (क्षिण)  | १६, ६० | १७, ६० |
| ये मतानामथिपतयो          | १६, ५९ | १७, ५९ |
| ये रूपाणि प्रतिमुत्तमाना | २, ३०  | २, ५५  |
| ये वाजिनं परिपश्यन्ति    | २५, ३५ | २७, ३९ |
| ये वार्मा रौचने दिवो     | १३, ८  | १४, ८  |
| ये वृक्षेषु शपिपत्ररा    | १६, ५८ | १७, ५८ |

|                              |        |        |
|------------------------------|--------|--------|
| येषामयेति प्रवसन्त्येषु      | ३, ४२  | ३, ४९  |
| ये समाना समनस                | १९, ४५ | २१, ४७ |
| ये समानाः समनसो              | १९, ४६ | २१, ४८ |
| यो अग्निः कव्यवाहन           | १९, ६५ | २१, ६५ |
| यो अग्निरग्नेरय              | १३, ४५ | १४, ४७ |
| यो अवेन्तं जिघांसति          | २२, ५  | २४, ५  |
| यो अस्मभ्यमराती              | ११, ८० | १२, ८१ |
| योगे योगे तवस्तं             | ११, १४ | १२, १४ |
| यो देवेभ्य आतपति             | ३१, २० | ३५, २० |
| यो न पिता जनिता              | १७, २७ | १८, २७ |
| यो भूतानामधिपति              | २०, ३२ | २२, १७ |
| यो रेवान्यो अमीवहा           | ३, २९  | ३, ३७  |
| यो व शिवतमो                  | ११, ५१ | १२, ५२ |
|                              | ३६, १५ | ३६, १५ |
| रक्षसा भागोऽसि               | २, २३  | २, ४१  |
|                              | ६, १६  | ६, २०  |
| रक्षोहणं वलगहनं              | ५, २३  | ५, २८  |
| रक्षोहणो वो वलगहन            | ५, २५  | ५, ३१  |
| रक्षोहणो वलगहना              | ५, २५  | ५, ३२  |
| रक्षोहा विष्वचर्षणिः         | २६, २६ |        |
| रजता हरिणी सोमा              | २३, ३७ | २५, ३९ |
| रथवाहन हविर्मय               | २९, ४५ |        |
| रथे तिष्ठन्नयति              | २९, ४३ | ३१, २१ |
| रथिश्च मे रायश्च             | १८, १० | १९, २३ |
| रदिमना मयाय मयं              | १५, ६  | १६, ९  |
| राजन्तमवगणा                  | ३, २३  | ३, ३१  |
| राज्यमि प्राचीदिग            | १४, १३ | १५, १६ |
|                              | १५, १० | १६, १६ |
| राति सत्पति महे              | २२, १३ | २४, १७ |
| राया वयं ससवा सो             | ७, १०  | ७, ९   |
| राये नु यं जज्ञत्            | २७, २४ | २९, २४ |
| रास्वयत्सोमा भयो             | ४, १६  | ४, २२  |
| रुचं नो र्धाह ब्राह्मणेभु    | १८, ४८ | २०, १८ |
| रुचं ब्राह्मं जनयन्तो        | ३१, २१ | ३५, २१ |
| रुजासि दवासि ( द्रुवासि )    | १०, ८  | ११, १६ |
| रुद्र यत्ते किवि ( कवि ) परं | १०, २० | ११, ३० |
| रुद्राः स- मृज्य पृथिवी      | ११, ५४ | १२, ५५ |
| रुद्रो ह्यमानो               | ८, ५८  | ९, ४४  |
| रूपेण वो रूप मयागा           | ७, ४५  | ९, १०  |
| रेतो मूर्धं वि जहाति         | १९, ७६ | २१, ७४ |

|                              |        |         |
|------------------------------|--------|---------|
| रेवती रमभ्वमस्मन             | ३, २१  | ३, २८   |
| रेवती रमभवं बृहस्पते         | ६, ८   | ६, ९    |
| रोहितो भृशरोहितः             | २४, २  | २६, ३   |
| रुद्राक्षं पविरवत्सुपेव      | १२, ७१ | १३, ७२  |
| लेक पृण छिद्रं ( छिद्र )     | १२, ५४ | १३, ५५  |
|                              | १५, ५९ | १६, ८०  |
| लैमन्य स्वाहा                | ३९, १० | ३९, ९   |
| लोमानि प्रयतिर्मम            | २०, १३ | २१, १०६ |
| वस्यन्तीवेदा गर्नागन्ति      | २९, ४० | ३१, १६  |
| वनस्पतिरवमृष्टो              | २०, ४५ | २२, ३०  |
| वनस्पतेऽ व मृजा              | २७, २१ | २९, २१  |
| वनस्पते वीडवद्वा             | २९, ५२ | ३१, २०  |
| वनेषु व्यन्तारिक्ष ततान      | ४, ३१  | ४, ४३   |
| वय ते अय ररिमा               | १८, ७५ | २०, ४४  |
| वय नाम प्रत्रवामा            | १७, ९० | १९, ४   |
| वय सोम व्रते तव              | ३, ५६  | ३, ६४   |
| वयस्वन्तो वयस्कृत            | ३, १८  | ३, २५   |
| वय हि त्वा प्रयति            | ८, २०  | ९, २०   |
| वरुण क्षत्रमिन्द्रियं        | २०, ७२ | २२, ५७  |
| वरुणः प्रावितोभुव            | ३३, ४६ | ३२, ४६  |
| वरुणस्योत्तममनमग्नि          | ४, ३६  | ४, ४८   |
| वस्त्रा त्वष्टुर्वरुणस्य     | १३, ४४ | १४, ४६  |
| वर्षावृद्धमग्निं प्रति त्वा  | १, १६  | १, २५   |
| वर्षाभिर्कृतुनादिन्या        | २१, २५ | २३, २६  |
| वर्षाहृक्कृतुनामायु          | २४, ३८ | २६, ४२  |
| वर्षो वर्षीयसि यज्ञे         | ६, ११  | ६, १५   |
| वसन्ताय कर्पवला              | २४, २० | २६, २४  |
| वसन्तेन ऋतुना                | २१, २३ | २३, २४  |
| वसवस्त्वयोदशाक्षरेण          | ९, ३४  | १०, ४३  |
| वसवस्त्वा कृण्वन्तु          | ११, ५८ | १२, ५९  |
| वसवस्त्याहृन्दन्तु           | ११, ६५ | १२, ६६  |
| वसवस्त्वाभ्रन्तु             | २३, ८  | २५, ८   |
| वसवस्त्वा भृष्यन्तु          | ११, ६० | १२, ६१  |
| वसु च मे वसतिश्च             | १८, १५ | १९, २७  |
| वसुभ्य ऋक्षानालभते           | २४, २७ | २६, ३१  |
| वसुभ्यस्त्वा रुद्रेभ्यस्त्वा | २, १६  | २, ३१   |
| वसुमतीमग्ने ते               | २, ८   | २, १२   |
| वसूना भागोऽसि                | १४, २५ | १५, २९  |
| वसोः पवित्रमसि योरसि         | १, २   | १, ३४   |
| वसोः पवित्रमसि शतधार         | १, ३   | १, ५६   |

|                                |        |        |
|--------------------------------|--------|--------|
| वस्यस्यदितिरस्या               | ४, २१  | ४, २८  |
| वह वया जातवेदः                 | ३५, २० | ३५, ५३ |
| वाचं ते शुन्धामि               | ६, १४  | ६, १८  |
| वाचस्पतये पवम्ब                | ७, १   | ७, १   |
| वाचस्पति विश्वकर्माण           | ८, ४५  | ८, २६  |
|                                | १७, २३ | १८, २२ |
| वाचं स्वाहा प्राणाय            | ३९, ३  | ३९, २  |
| वाज पुरस्तादुत                 | १८, ३४ | २०, ५  |
| वाजश्च मे प्रसवश्च             | १८, १  | १९, १३ |
| वाजस्य नु ( वाजस्येदं ) प्रसवः | २५, २५ | १०, ३३ |
| वाजस्य नु प्रसवे               | ९, ५   | १०, ७  |
|                                | १८, ३० | २०, १  |
| वाजस्य मा प्रसव                | १७, ६३ | १८, ६३ |
| वाजस्येभं प्रसवः               | ९, २३  | १०, ३२ |
| वाजस्येमा प्रसव                | ९, २४  | १०, ३४ |
| वाजाय स्वाहा प्रसवाय           | १८, २८ | १९, ४० |
|                                | २०, ३२ | २४, ४५ |
| वाजिना वाजोऽवतु                |        | ३, ७१  |
| वाजिनो वाजिजितो ( वाजं )       | ९, १३  | १०, १९ |
| वाजिनो वाजाजितो वाज            | ९, ९   | १०, १३ |
|                                | ९, १९  | १०, २६ |
| वाजे वाजोऽवत वाजिनो            | ९, १८  | १०, २४ |
|                                | २१, ११ | २३, १२ |
| वाजो न मय प्रदिश               | १८, ३० | २०, ३  |
| वाजो नो अथ प्रमुवाति           | १८, ३३ | २०, ४  |
| वाजो न वाजिनस्योपहत            |        | ३, ७२  |
| वात प्राणेनापनेन               | २५, ०  | २७, ३  |
| वातर हा भव वाचन                | ९, ८   | १०, ११ |
| वातस्य जति चक्षुष्य            | १३, ४० | १४, ४४ |
| वातस्य त्वा प्राज्य प्राणे     | ६, १८  | ६, २४  |
| वाताय स्वाहा वृमाय             | २०, २६ | २४, ३६ |
| वातो वा ( वां ) मनो वा         | ९, ७   | १०, १० |
| वाममय सवितर्वाममु              | ८, ६   | ८, ५   |
| वायव्यवायव्यान्यप्राणि         | १९, २७ | २१, २७ |
| वायु पुनानु सविता              | ३५, ३  | ३५, ३७ |
| वायुप्रेगा यजप्रा              | २७, ३१ | २९, २५ |
| वायुनिलममृतम्                  | ४०, १५ | ४०, १७ |
| वायुप्रवा पचतग्व               | २३, १३ | २५, १४ |
| वायो पतः पवित्रेण              | १९, ३  | २१, ३  |
| वायो ये ते सप्तसिणो            | २७, ३० | २९, २७ |

|                               |        |        |
|-------------------------------|--------|--------|
| वायो शुक्रो अयामि             | २७, ३० | २९, ३० |
| वात्रहत्याय शवसे              | १८, ६८ | २०, ३७ |
| विकिरिद्र विलोहित             | १६, ५२ | १७, ५२ |
| विज्यं धनु कपर्दिनो           | १६, १० | १७, १० |
| वित्तं च मे वेयं              | १८, ११ | १९, १८ |
| विदग्धा सरमा                  | ३३, ५९ | ३२, ५९ |
| विदेदग्नेर्नभो नामाग्ने       | ५, ९   | ५, १४  |
| विज्ञा ते अग्ने त्रेधा        | १२, १९ | १३, २० |
| विद्या चाविद्या च यस्त        | ४०, १४ | ४०, ११ |
| विश्रुति नाम्या घृत           | २५, ९  | २७, १३ |
| विश्वेभ ते परमे               | १७, ७५ | १८, ७५ |
| वि न इन्द्र मृगो              | ८, ४४  | ८, २५  |
|                               | १८, ७० | २०, ३९ |
| वि पाजसा प्रधुना              | ११, ४९ | १२, ५० |
| विमक्तार हवामहे               | ३०, ४  | ३४, ४  |
| विमर्गमि प्रवाहणो             | ५, ३१  | ५, ३९  |
| विमर्मात्रा प्रग              | २२, १९ | २४, २४ |
| विम्राट् बृहन्पिबतु           | ३३, ३० | ३२, ३० |
| विमान ण्व द्विवो              | १७, ५९ | १८, ५९ |
| विमृच्य वमध्या                | १२, ७३ | १३, ७४ |
| विगट ( ल ) सि दाक्षणा         | १५, ११ | १६, १९ |
| विगडज्योतिरधार                | १३, २४ | १४, २४ |
| विवस्व (स्वः) आदित्येप ते     | ८, ५   | ८, ३   |
| विश्व हि मित्रं प्रवर्द्धन्ति | ४, २   | ४, ३   |
| विश्वकर्मान हविषा वर्षनेन     | ८, ४६  | ८, २८  |
|                               | १७, २४ | १८, २४ |
| विश्वर्मान हविषा वाग्धान      |        | ८, २७  |
|                               | १७, २२ | १८, २३ |
| विश्वकर्मा त्वा सादयतु        | १४, १२ | १५, १५ |
|                               | १४, १४ | १५, १६ |
| विश्वकर्मा विमना              | १७, २६ | १८, २६ |
| विश्वकर्मा व्यर्जानध          | १७, ३२ | १८, ३२ |
| विश्वतश्शुम्भ                 | १७, १९ | १८, १९ |
| विश्वस्मै प्राणायानाय         | १३, २४ | १४, २५ |
|                               | १४, १४ | १५, १६ |
|                               | १५, ५८ | १६, ७९ |
|                               | १३, १९ | १४, १९ |
|                               | १४, १२ | १५, १५ |
|                               | १५, ६४ | १६, ८४ |
| विश्वस्य केतुर्गुणस्य         | १२, २३ | १३, २४ |

|                              |        |        |
|------------------------------|--------|--------|
| विश्वरय द्रुतममृतं           | १५, ३३ | १६, ५५ |
| विश्वस्य मूर्धन्नाधि तिष्ठसि | १८, ५५ | २०, २५ |
| विश्वा आशा दक्षिण            | ३८, १० | ३८, १० |
| विश्वानि देव सवितर           | ३०, ३  | ३४, ३  |
| विश्वाभ्यस्त्वाशाभ्य         | १, १८  | १, ३०  |
| विश्वा रूपाणि प्रति          | १२, ३  | १३, ३  |
| विश्वासा भुवा पते            | ३७, १८ | ३७, १८ |
| विश्वे अय मरुतो              | १८, ३१ | २०, २  |
|                              | ३३, ५० | ३२, ५२ |
| विश्वे देवा अ शुपु           | ८, ५५  | ९, ४१  |
| विश्वे देवाः शुण्तेम         | ३३, ५३ | ३२, ५३ |
| विश्वे देवाश्मसेप्रज्ञातो    | ८, ५८  | ९, ४३  |
| विश्वे देवाय आगत             | ७, ३४  | ७, ३४  |
| विश्वेभि मोक्ष्यंमन्वम       | ३३, १० | ३२, १० |
| विश्वेषामदिति                | ३३, १६ | ३२, १६ |
| विश्वो देवस्य नेतुर्मतो      | ४, ८   | ४, ९   |
|                              | ११, ६७ | १२, ६८ |
|                              | २२, २१ | २४, २९ |
| विष्णुः शिपिविष्ट ऊग         | ८, ५५  | ९, ४०  |
| विष्णुराप्रानपा              | ८, ५७  | ९, ४२  |
| विष्णुस्त्वा कमतामुह         | १, ९   | १, १३  |
| विष्णुस्त्वामिन्द्रियेण      | ७, २०  | ७, २२  |
| विष्णोः कर्माणि पश्यत        | ६, ४   | ६, ५   |
|                              | १३, ३३ | १४, ३५ |
| विष्णोः कर्मोऽसि मपानहा      | १२, ५  | १३, ६  |
| विष्णो रराटर्मास             | ५, २१  | ५, २७  |
| विष्णोर्नृकं वार्याणि        | ५, १८  | ५, २४  |
| वि स्व पश्यव्यन्तारक्ष       | ७, ४५  | ९, ११  |
| वीत हविः शमित                | १७, ५७ | १८, ५७ |
| वीतिहोत्रं त्वा कवे          | २, ४   | २, ५   |
| गण ऊर्मरसि                   | १०, २  | ११, ६  |
| तृषामि गृषणं                 | ११, ४६ | १२, ४७ |
| वेदाहमरय भुवनरय              | २३, ६० | २५, ६२ |
| वेदाहमेतं पुरुषं             | ३१, १८ | ३५, १८ |
| वेदेन रूपे व्यपिबन्          | १९, ७८ | २१, ७६ |
| वेदोऽसि ( वेद ) येन त्वं     | २, २१  | १, ३५  |
| वेद्या वेदि समायते           | १९, १७ | २१, १७ |
| वेनस्तत्पश्यन्नहितं          | ३२, ८  | ३५, २७ |
| वेषोऽस्युपवेषो द्विपतो       |        | २, ४२  |
| वैश्वदेवी पुनती देव्या       | १९, ४४ | २१, ४६ |

|                                     |           |           |
|-------------------------------------|-----------|-----------|
| वैश्वानर हवामह                      |           | २८, ७     |
| वैश्वानरय सुमर्तो                   | २६, ७     | २८, ९     |
| वैश्वानरो न ऊतय                     | १८, ७२    | २०, ४१    |
|                                     | २६, ८     | २८, ८     |
| व्यचस्वतीमर्षिया                    | २९, ३०    | ३१, ४२    |
| व्यन्तु वयोक्त ( गिषो )             | २, १६     | २, ३०     |
| व्रजं गच्छ गोष्ठानं                 | १, २५, २६ | १, ४२, ४३ |
| व्रतं कृणुत वरं                     | ४, ११     | ४, १४     |
| व्रतं च म ऋतवध                      | १८, २३    | १९, ३५    |
| व्रतेन वीक्षामाप्नोति               | १९, ३०    | २१, ३०    |
| व्रीहयश्च मे यवाध                   | १८, १०    | १९, २४    |
| व्रेणीना त्वा पत्नजा                | ८, ४८     | ८, ३०     |
| शं च मे मयश्च                       | १८, ८     | १९, २०    |
| शं ते परेभ्यो गात्रेभ्यः            | २३, ४४    | २५, ४६    |
| श नो देवीरमिष्टय                    | ३६, १२    | ३६, १२    |
| शं नो भवन्तु वारिजो                 | ९, १६     | १०, २२    |
|                                     | २१, १०    | २३, १०    |
| शं नो मित्रं शं वष्ण                | ३६, ९     | ३६, ९     |
| शं नो वात पवता                      | ३६, १०    | ३६, १०    |
| शं वात श हि ते                      | ३५, ८     | ३५, ४१    |
| अत वो अम्ब धामानि                   | १२, ७६    | १३, ७७    |
| अतमिन्नु शरदो अन्ति                 | २५, २२    | २७, २६    |
| शमिता नो वनरपति                     | २१, २१    | २३, २२    |
| शर्म च रथो वर्म                     | ११, ३०    | १२, ३०    |
| शर्मामि शर्म मे यच्छ                | ४, ९      | ४, ११     |
| शर्मस्यवधूत रथो                     | १, १४     | १, २०     |
|                                     | १, १९     | १, ३१     |
| शादं दद्विरवका                      | २५, १     | २७, १     |
| शारदेन ऋतना                         | २१, २६    | २३, २७    |
| शितिरन्ध्रोऽन्यत शित                | २४, २     | २६, ४     |
| शिरो मे श्रीर्यशो मे                | २०, ५     | २१, ९६    |
| शित्पा वैश्वदेव्यो                  | २४, ५     | २६, ९     |
| शिवेन वचसा त्वा                     | १६, ४     | १६, ४     |
| शिवो नामासि स्वविति                 | ३, ६३     |           |
| शिवो भव प्रजाभ्यो                   | ११, ४५    | १२, ४५    |
| शिवो भूत्वा मयाममे                  | १२, १७    | १३, १८    |
| शुकं ( चन्द्रं ) शुकेण ( चन्द्रेण ) | ४, २६     | ४, ३६     |
| शुक क्षीरध्रीर्मन्थी                | ८, ५७     | ९, ४३     |
| शुकज्योतिश्च चित्र                  | १७, ८०    | १८, ८०    |
| शुकश्च शुचिश्च                      | १४, ६     | १५, ५     |

|                             |        |           |
|-----------------------------|--------|-----------|
| शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो     | २४, ३  | २६, ५     |
| गन सु फाला विकृषन्तु        | १२, ६९ | १३, ७०    |
| शुन्धन्तोऽलोकाः पितृषदना    | ६, १   | ५, ३४     |
| शषाय स्वाहा स गर्पाय        | २२, ३० | २४, ४३    |
| शणोत्वग्निः समिधा           | ६, २६  | ६, ३८     |
| शोशिरण ऋतुना                | २१, २८ | २३, २९    |
| शदरमं नरो वचमे              | ८, ५   | ८, ४      |
| श्रायन्त इव सूर्ये          | ३३, ४१ | ३२, ४१    |
| श्रीणामुदारो धर्मो          | १२, २२ | १३, २३    |
| श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पन्था | ३१, २० | ३५, २२    |
| श्रुधि धुक्कणं वृत्तिभि     | ३३, १५ | ३२, १५    |
| श्रात्रा स्थ वृत्ततुरंगे    | ६, ३४  | ६, ४७     |
| श्रात्राः पाता भवत          | ४, १२  | ४, १७     |
| शिवत्र आदिभ्यान् मुष्टे     | २४, ३९ | २६, ४३    |
| षड ( ळ ) स्य विष्टाः शतम्   | २३, ५८ | २५, ६०    |
| षोड ( ञ ) जी स्तोमऽ ओजो     | १५, ३  | १६, २     |
| स्वन्-सरोऽसि परि            | २७, ४५ | २९, ४९    |
| सं वर्चसा पयसा              | २, २४  | २, ४४     |
|                             | ८, १४  | ९, १६     |
|                             | ८, १६  |           |
| सतस्य ॥ स्वविदा             | ११, ३१ | १२, ३१    |
| स वा मना मि                 | १०, ५८ | १३, ५९    |
| स जिते मे                   | ११, ८१ | १०, ८०    |
| स जिते रश्मिना स्य          | २३, १४ | २५, १६    |
| स समिदयुवमे                 | १५, ३० | १६, ५१    |
| स सौदम्ब महाऽऽभि            | ११, ३७ | १०, ३७    |
| स सुष्टा वसुभा              | ११, ५५ | १०, ५६    |
| स स्वभागा गृथेया            | २, १८  | २, ३५     |
| स हितामि विश्वस्युजा        | ३, २०  | ३, २९     |
| स हितो विश्वसामा            | १८, ३९ | २०, ९     |
| सऽ इयानो वसुर्कावि          | १५, ३६ | १६, ५८    |
| स इषुहस्ते सनिपं            | १७, ३५ | १८, ३५    |
| सकामा २ अश्वनरकुरु          | २६, १  | २८, २     |
| संकन्दनेनानिमिषण            | १७, ३४ | १८, ३४    |
| सन्वायः सं वः               | १५, २९ | १६, ५०    |
| स जातो गभोऽ अभि             | ११, ४३ | १२, ४३    |
| सज्ररुदो अयवोभि             | १२, ७४ | १३, ७५    |
| सज्ररुतुभिः सज्रविधाभि      | १४, ७  | १५, ६     |
| सज्रदेवेन सवित्रा           | ३, १०  | ३, ११, १२ |
| सजोषा इन्द्र सगणा           | ७, ३७  | ७, ३८     |

|                         |         |          |
|-------------------------|---------|----------|
| सं चैत्यस्वामे          | २७, २   | २९, २    |
| संज्ञ नमसि कामधरणं      | १२, ४६  | १३, ४७   |
| सत्यं च मे श्रद्धा      | १८, ५   | १९, १७   |
| स त्वं नश्चित्र वज्रहरत | २७, ३८  | २९, ४३   |
| स त्वं नो अग्ने ऽवमो    | २१, ४   | २३, ४    |
| सत्ररय ऋदिरस्यगन्म      | ८, ५२   | ९, ३५    |
| सदस्यगर्पितमद्भुतं      | ३२, १३  | ३५, ३२   |
| स दुद्रवस्वहुत          | १५, ३४  | १६, ५६   |
| सगो जातो व्यमिमात       | २९, ३६  | ३१, ४८   |
| सयमादो द्युमिनीराप      | १०, ७   | ११, १४   |
| स न इन्द्राय यज्यते     | २६, १७  |          |
| स न पावक दीदितो         | १७, ९   | १८, १०   |
| स नः पिनेव सूनवेऽग्ने   | ३, २४   | ३, ३२    |
| सज ( सिन्धुरवसुथ )      | ८, ५९   | ९, ४४    |
| स नो बन्धुर्जनिता       | ३२, १०  | ३५, २९   |
| स नो भुवनस्य पते        | १८, ४४  | २०, १४   |
| सं ते पया सि            | १२, ११३ | १३, ११२  |
| स ते पाणो वातेन         | ६, १०   | ६, १२    |
| सं ते मनो मनसा          | ६, १८   | ६, २३    |
| स ते वायुर्मातार्वा     | ११, ३९  | १२, ३९   |
| सं त्वमग्ने सूर्यस्य    | ३, १९   | ३, २६    |
| सन्वये जार गेहाय        | ३०, ९   | ३४, ९    |
| स पर्यगान्द्रुकमका      | ४०, ८   | ४०, ८    |
| सग ऋषय प्रतिहिता        | ३४, ५५  | ३३, ४३   |
| सग ते अग्ने समिध        | १७, ७९  | १८, ७९   |
| सगदशभिर्गनुवत           | १४, २९  | १५, ३४   |
| सगददशस्त्वा स्तेऽस्र    | १५, १२  | १६, २३   |
| सगाम्यामर्णाग्धय        | ३१, १५  | ३५, १५   |
| स पथमो बृहस्पति         | ७, १५   | ७, १४ १९ |
| स बोधि सूरिर्मधवा       | १२, ४३  | १३, ४४   |
| समन्वये देव्या धिया     | ४, २३   | ४, ३१    |
| समिदिरग्निना गत         | ३७, १५  | ३७, १५   |
| समन्वरायोपमो            | ३४, ३९  |          |
| समाववति प्रथिवी         | २०, २३  | २२, ८    |
| समास्त्वाम्न ऋतवो       | २७, १   | २९, १    |
| समित संकल्पेथा          | १२, ५७  | १३, ५८   |
| समिदसि समिद्धो          |         | ३, १६    |
| समिदसि सूर्यस्त्वा      | २, ५    | २, ६     |
| समिद्ध इन्द्र उपमा      | २०, ३६  | २२, २१   |
| समिद्धे अमाव ( अ ) धि   | १७, ५५  | १८, ५५   |

|                           |        |        |
|---------------------------|--------|--------|
| समिद्धो अग्निः समिधा      | २१, १२ | २३, १३ |
| समिद्धो अग्निर्वायना      | २०, ५५ | २२, ४० |
| समिद्धो अन्नं क्रुदरं     | २९, १  | ३१, १  |
| समिद्धो अयं मनुषो         | २९, २५ | ३६, ३७ |
| समिधामि दुवर्गयत          | ३, १   | ३, १   |
|                           | १२, ३० | १३, ३१ |
| समिन्द्र णो मनसा          | ८, १५  | ९, १५  |
| समुद्रं गच्छ स्वाहा       | ६, २१  | ६, २८  |
| समुद्रस्य स्वावकयाग्रे    | १७, ४  | १८, ५  |
| समुद्रादूर्मिर्मधुमां     | १७, ८९ | १९, ३  |
| समुद्राय त्वा वाताय       | ३८, ७  | ३८, ७  |
| समुद्राय विष्णुमारान      | २४, २१ | २६, २५ |
| समुद्रे ते हृदयमास्वन्न   | ८, २५  | ९, २५  |
|                           | २०, १९ | २२, ४  |
| समुद्रे त्वा नमणा         | १२, २० | १३, २१ |
| समुद्रोऽसि नभस्वाना       | १८, ४५ | २०, १५ |
| समुद्रोऽसि विश्ववचना      | ५, ३३  | ५, ४१  |
| समवोऽसि विश्ववेदा         |        | ५, ४३  |
| सं पृच म्थ सं मा          | ९, ४   | १०, ६  |
|                           | १९, ११ | २१, ११ |
| सं प्रनयन्वमुप            | १५, ५३ | १६, ७५ |
| स पिथेण वाय्रा            | ३, १९  | ३, २७  |
| सर्वाहरुक्ता हविषा        | २, २०  | २, ४०  |
| संभति च विनाशं            | ४०, ११ | ४०, १४ |
| सं समुमर्तामर्मुमर्ताभिः  | १, २१  | १, ३६  |
|                           | १०, ४  | ११, ८  |
| सं मा सृजामि पयसा         | १८, ३५ | २०, ६  |
| सम्यक्स्ववन्ति सरितो      | १३, ३८ | १४, ४० |
|                           | १७, ९४ | १९, ७  |
| सम्राड ( ल ) मि कृशानु    | ५, ३२  | ५, ४२  |
| सम्राड ( ल ) मि प्रतीक्षा | १५, १२ | १६, २२ |
| स यक्षदस्य महिमा          | २७, १५ | २९, १५ |
| सरस्वती मनसा              | १९, ८३ | २१, ८० |
| सरस्वती योन्या            | १९, ९४ | २१, ९१ |
| सरोभ्यां धैवरम            | ३०, १६ | ३४, १६ |
| सर्वे निमेषा जज्ञिरे      | ३२, २  | ३५, २४ |
| सविता ते शरीराणि          | ३५, ५  | ३५, ३९ |
| सविता ते शरीरेभ्यः        | ३५, २  | ३५, ३६ |
| सविता त्वा ( प्र ) सवाना  | ९, ३९  | ११, ९  |
| सविता प्रथमेऽहन           | ३९, ६  | ३९, ५  |

|                             |        |         |
|-----------------------------|--------|---------|
| सविता वरुणा दधद             | २०, ७१ | २२, ५६  |
| सवितारिं सत्यप्रमवो         | १०, २८ | ११, ३९  |
| सविनुगत्वा प्रसव            | १, ३१  | १, ४८   |
| सवित्रा प्रमवित्रा          | १०, ३० | ११, ४२  |
| सवित्रा प्रसता दैव्य        |        | ३, ७३   |
| सहदानं पुरुहन्त             | १८, ६९ | २०, ३८  |
| सह रम्या निवर्तस्वाधे       | १२, १० | १३, ११  |
|                             | १२, ४१ | १३, ४२  |
| स हव्यवाड ( ल ) मर्त्ये     | २२, १६ | २४, २०  |
| सहस्य सहसध                  | १४, २७ | १५, ३१  |
| सहसा ज्ञातान्प्रणुदा न      | १५, २  | १६, २   |
| सहस्रोमा सहच्छन्दस          | ३४, ४९ | ३३, ३७  |
| सहस्यशीर्षा पुष्प           | ३१, १  | ३५, १   |
| सहस्यस्य प्रमार्गि          | १५, ६५ | १६, ८५  |
| सहस्राणि सहस्यशो            | १६, ५३ | १७, ५३  |
| सहस्व मे (स्वेमा) अग        | १२, ९९ | १४, २८  |
| सहस्वार्गाती                | १३, २६ | १४, २७  |
| साक यश्म प्र पत             | १२, ८७ | १३, ८८  |
| सा देवि देवमन्त्रेहान्द्राय | ४, २०  | ४, २७   |
| सामान्यमिभर्कच              | २०, १२ | २१, १०५ |
| सा विश्वायु सा विश्वकर्मा   | १, ४   | १, ७    |
| सि हो वयस्त्रिदिविद्वन्द    | १४, ९  | १५, ११  |
| सि ऋषि व्रक्षवनि            | ५, १२  | ५, १७   |
| सि ऋषि सपन्नगाहा            | ५, १०  | ५, १४   |
| सि ऋषि स्वाहा               | ५, १२  | ५, १६   |
| सिञ्चन्ति परिपिञ्चन्ति      | २०, २८ | २२, १३  |
| सिन्धोवालि पृथुदुके         | ३४, १० | ३३, ४   |
| सिन्धोवाली मुकपर्दा         | ११, ५६ | १२, ५७  |
| सिन्धुच्छन्दः समुद्रच्छन्दः | १५, ४  | १६, ५   |
| सिन्धोरिव प्रावने           | १७, ९५ | १९, ८   |
| सीद त्वं मानुरस्या          | १२, १५ | १३, १६  |
| सीद होतः स्व उ लोके         | ११, ३५ | १२, ३५  |
| सीरा युग्जन्ति कवयो         | १२, ६७ | १३, ६८  |
| सीमेन तन्त्रं मनसा          | १९, ८० | २१, ७७  |
| सुमर्त्य नो वाजी            | २५, ४५ |         |
| सुगा वो देवा सदाना          | ८, १८  | ९, १८   |
| सुजातो ज्योतिषा सह          | ११, ४० | १२, ४०  |
| सुत्रामाणं पृथिवी           | २१, ६  | २३, ६   |
| सुनावमा रुहेयम्             | २१, ७  | २३, ७   |
| सुपर्ण पार्जन्य आति         | २४, ३४ | २६, ३८  |

|                          |        |        |                          |        |        |
|--------------------------|--------|--------|--------------------------|--------|--------|
| गुपर्णं वरुते मृगो       | २९, ४८ | ३१, १९ | सोमो राजामृतं सुत        | १९, ७२ | २१, ७२ |
| गुपणोऽग्निं गच्छमान      | १२, ४  | १३, ४  | सौरी बलाका शार्गः        | २४, ३३ | २६, ३७ |
|                          | १७, ७२ | १८, ७२ | स्तर्णं बर्हिः गुष्टरीमा | २९, ४  | ३१, ४  |
| गुप्रजाः पजाः पजनयन      | ७, १८  | ७, १७  | रतोकानामिन्दुं प्रति     | २०, ४६ | २२, ३१ |
| गुयर्हिराग्ने पृषणा      | २१, १५ | २३, १६ | रतोम आत्मा छन्दा         | १२, ४  | १३, ५  |
| गुभः स्वयम्भ पथमो        | २३, ६३ | २५, ६५ | स्तोमश्च यजुश्च          | १८, २९ | १९, ४३ |
| गुमित्रिया न आप          | ६, २२  | ६, ३१  | मिथीरो भव वाडवत्त        | ११, ४४ | १२, ४४ |
|                          | २०, १९ | २०, ४  | स्योना पृथिवि नो         | ३५, २१ | ३५, ५४ |
|                          | ३५, १० | ३५, ४५ |                          | ३६, १३ | ३६, १३ |
|                          | ३६, २३ | ३६, २३ | ग्योनासि गुपदासि         | १०, २६ | ११, ३६ |
|                          | ३८, २३ | ३८, २३ | युचश्च मे चमसाश्च        | १८, २१ | १९, ३३ |
| गुगन्धन्त बर्हिपद        | १९, ३२ | २१, ३२ | स्वं गोप्रमावदत्तं देवी  | ५, १७  | ५, २३  |
| गुर्वीरो वीरान्न         | ७, १३  | ७, १०  | रवगा त्वा देवेभ्य        | २२, ४  | २४, ३  |
| गुपयिग्नश्चानि           | ३४, ६  |        | स्वतवाश्च प्रघामा        | १७, ८५ | १८, ८५ |
| गुपुष्णं सयगर्दिमन्नुमा  | १८, ४० | २०, १० | स्वयं वाजिगन्तव          | २३, १५ | २५, १७ |
| गुप्रति गुमतावधो         | २०, १० | २४, १६ | स्वयंभरमि श्रेष्ठो       | २, २६  | २, ४८  |
| गुगदशं त्वा वय           | ३, ५०  | ३, ६०  | स्वराड ( ळ ) मि सपन्तहा  | ५, २४  | ५, ३०  |
| गुगमिद्राय शोचिषे        | ३, २   | ३, ०   | स्वराड ( ळ ) स्यदाचा     | १५, १३ | १६, २५ |
| गुपम्य अय देवो           | २१, ६० | २३, ५९ | स्वर्णे घम स्वाहा        | १८, ५० | २०, २० |
| गुपे पृथ्वी चरात         | २३, १० | २५, ११ | स्वयन्तो नापक्षन्त       | १७, ६८ | १८, ६८ |
|                          | २३, ४६ | २५, ४८ | स्वामि न इन्द्रो         | २५, १९ | २७, २३ |
|                          |        | ३, १०  | स्वाडकृतोऽमि             | ७, ३६  | ७, २५  |
| गुयं उद्योतिष त्वा       |        |        | स्वादिष्टया मदिष्टया     | २६, २५ |        |
| गुयं चक्षुष्यं च पृथ     | १०, ४  | ११, ७  | स्वादुष गद पितरो         | २९, ४६ |        |
| गुयं चर्मरिषश्च          | १७, ५८ | १८, ५८ | स्वादी त्वा स्वादुना     | १९, १  | २१, १  |
| गुयं च चक्षुष्यं च       | ४, ३०  | ४, ४४  | स्वान ध्राज ह्यग्ने      | ४, २७  | ४, ३९  |
| गो अमिया वयुर्गणे        | १५, ४० | १६, ६४ | स्वाहाकृत जठरमिन्द्राय   |        | ०, २४  |
| गोम राज नमवस             | ९, २६  | १०, ३६ | स्वाहा प्राणे अग्ने      | ३८, १५ | ३८, १५ |
| गोम पवने                 | ७, २१  | ७, २०  | स्वाहा प्राणेभ्यः सानि   | ३९, १  | ३९, १  |
| गोममद्रो व्यपियन्तलन्दगा | १९, ७४ | २१, ७३ | स्वाहा मरुद्वा पारिथी    | ३७, १३ | ३७, १३ |
| गोम रावन्विश्वामा        | ६, २६  | ६, ३७  | स्वाहा यज मनस            | ४, ६   | ४, ७   |
| गोमस्य त्वा द्युस्तेनाभि | १०, १७ | ११, २५ | स्वाहा यजं वरुण          | २१, २० | २३, २३ |
| गोमस्य त्विपरिमि         | १०, ५  | ११, १० | स्वाहा रुद्राय रुद्रहृतय | ३८, १६ | ३८, १६ |
|                          | १०, १५ | ११, २३ | स्विष्टकृदेवेभ्य उन्द्र  | २, ९   | २, १४  |
| गोमस्य नीविगमि           | ४, १०  | ४, १०  | स्वेदक्षेदेक्षपितेह      | १४, ३  | १५, ३  |
| गोमस्य रूप कीर्तय        | १९, १५ | २१, १५ | ह स शुचिपद               | १०, २४ | ११, ३४ |
| गोमान स्वर्णं कृणुति     | ३, २८  | ३, ३६  |                          | १२, १४ | १३, १५ |
| गोमाय कुलुह आग्ण्या      | २४, ३२ | २६, ३६ | हरयो धूमकेतवो            | ३३, २  | ३२, २  |
| गोमाय त्वनालभने          | २४, २४ | २६, २८ | हविर्धानं यददितनामाध्रं  | १९, १८ | २१, १८ |
| गोमाय ह मानालभने         | २४, २० | २६, २६ | हविष्मतीरिमा आपो         | ६, २३  | ६, ३३  |
| गोमो वेनु गोमो           | ३४, २१ | ३३, १५ |                          |        |        |



|                            |        |        |
|----------------------------|--------|--------|
| हव्ये काम्ये [ इळे रन्ते ] | ८, ४३  | ९, ३३  |
| हस्त आधाय सविता            | ११, ११ | १२, ११ |
| हिङ्गाराय स्वाहा           | २२, ७  | २४, ७  |
| हिमस्य त्वा जरायुषामे      | १७, ५  | १८, ६  |
| हिरण्ययेन पात्रेण          | ४०, १७ | ४०, १५ |
| हिरण्यगर्भ इत्येषः         | ३२, ३  | २९, ३३ |
| हिरण्यगर्भ समवर्ततामे      | १३, ४  | १४, ४  |
|                            | २३, १  | २५, १  |
|                            | २५, १० | २७, १४ |
| हिरण्यपाणि सविता           | ३४, २५ | ३३, १९ |
| हिरण्यपाणिमतये             | २२, १० | २४, १४ |
| हिरण्यरूपा उपमो            | १०, १६ | ११, २४ |
| हिरण्यशृङ्गोऽयो अस्य       | २९, २० | ३१, ३२ |
| हिरण्यहस्तो अग्निर         | ३४, २६ | ३३, २० |
| हृदे त्वा मनसे त्वा        | ६, २५  | ६, ३६  |
|                            | ३७, १९ | ३७, १८ |
| हेमन्तेन ऋतुना             | २१, २७ | २३, २८ |
| होता वयुर्युवावया          | २५, २८ | २७, ३२ |
| होता यक्षन्तनपात           | २१, ३० | २३, ३१ |
|                            | २८, २  | ३०, २  |
|                            | २८, २५ | ३०, २५ |
| होता यक्षात्तस्यो देवी     | २१, ३७ | २३, ३८ |
|                            | २८, ८  | ३०, ८  |
| होता यक्षत्पेशस्वती        | २८, ३१ | ३०, ३१ |
| होता यक्षत्प्रेतमा         | २८, ३० | ३०, ३० |
| होता यक्षत्प्रजापति        | २३, ६४ | २५, ६३ |
| होता यक्षत्प्रथारमिन्द्र   | २८, ९  | ३०, ९  |
| होता यक्षत्समिधार्मि       | २१, २९ | २३, ३० |
| होता यक्षत्समिधानं         | २८, २४ | ३०, २४ |
| होता यक्षत्समिधेन्द्रम्    | २८, १  | ३०, १  |

|                               |        |        |
|-------------------------------|--------|--------|
| होता यक्षत्सरस्वती            | २१, ४४ | २३, ४४ |
| होता यक्षत्सुपेशमा            | २१, ३५ | २३, ३६ |
|                               | २८, २० | ३०, २९ |
| होता यक्षत्सुवर्हिषं          | २८, २७ | ३०, २७ |
| होता यक्षत्सुपेशमं            | २१, ३८ | २३, ३९ |
|                               | २८, ३२ | ३०, ३२ |
| होता यक्षत्स्वाहाऋणी          | २८, ३४ | ३०, ३४ |
| होता यक्षदग्नि स्मादा         | २१, ४० | २३, ४१ |
|                               | २१, ४७ | २३, ४६ |
| होता यक्षदक्षिणो              | २१, ४१ | २३, ४२ |
|                               | २१, ४२ | २३, ४३ |
|                               | २१, ४३ | २३, ४४ |
| होता यक्षदिडा (ळ) भिरिन्द्रम् | २८, ३  | ३०, ३  |
| होता यक्षदिडेडि (ळिळि) त      | २१, ३२ | २३, ३३ |
| होता यक्षादिन्द्रमृषमस्य      | २१, ४५ | २३, ४४ |
| होता यक्षादिन्द्र स्वाहा      | २८, ११ | ३०, ११ |
| होता यक्षादिडे (ळे) न्यम      | २८, २६ | ३०, २६ |
| होता यक्षदुषे इन्द्रम्य       | २८, ६  | ३०, ६  |
| होता यक्षदोजो न वार्य-        | २८, ५  | ३०, ५  |
| होता यक्षदुरो दिशः            | २१, ३४ | २३, ३५ |
| होता यक्षहव्य होताग           | २१, ३६ | २३, ३७ |
|                               | २८, ७  | ३०, ७  |
| होता यक्षदुर्हिरुणं           | २१, ३३ | २३, ३४ |
| होता यक्षदुर्हिषीन्द्रं       | २८, ४  | ३०, ४  |
| होता यक्षउनम्पति              | २१, ३९ | २३, ४० |
|                               | २१, ४६ | २३, ४५ |
|                               | २८, १० | ३०, १० |
|                               | २८, ३३ | ३०, ३३ |
| होता यक्ष यचरवतीः             | २८, २८ | ३०, २८ |
| होता यक्षजराश ग               | २१, ३६ | २३, ३७ |

# शुक्रयजुर्वेदान्तर्गतानामृग्वेदमन्त्राणां मण्डलानुक्रमेण

## सूची ।

### प्रथमं मण्डलम् ।

| सूक्ते<br>मन्त्रः | मन्त्र             | वाजसनेया           |                         |           | सूक्ते<br>मन्त्रः | मन्त्र              | वाजसनेया           |                         |          |
|-------------------|--------------------|--------------------|-------------------------|-----------|-------------------|---------------------|--------------------|-------------------------|----------|
|                   |                    | यजुर्वेदे<br>अ० म० | काण्वयजुर्वेदे<br>अ० म० | ऋषि       |                   |                     | यजुर्वेदे<br>अ० म० | काण्वयजुर्वेदे<br>अ० म० | ऋषि      |
| १। ७              | उप त्वमे देवे      | ३, २०              | ३, ३०                   | मृगश्रिणा | १८। १             | योमानं गवर्ण        | ३, २८              | ३, ३६                   | मेवातिथि |
| ८                 | राजन्तम            | २३                 | ३१                      |           | २                 | यो रेवान्यो         | २९                 | ३७                      |          |
| ९                 | म नः पितेव         | २४                 | ३२                      |           | ३                 | मा नः श्रेयो        | ३०                 | ३८                      |          |
| २। ४              | उन्त्रवाय          | ७, ८               | ७, ७                    |           | ६                 | सदमर्षति            | ३२, १३             | ३५, ३२                  |          |
|                   |                    | ३३, ५६             | ३२, ५६                  |           | २२। ३             | या वा वया           | ७, ११              | ७, १०                   |          |
| ७                 | मित्र हवे          | ५७                 | ५७                      |           | ५                 | हिरण्यपाणिमतये      | २२, १०             | २४, १४                  |          |
| ३। ३              | दद्या युवा         | ५८                 | ५८                      |           | ७                 | विभक्तां            | ३०, ४              | ३४, ४                   |          |
|                   |                    |                    |                         |           | ९                 | अग्ने पर्ना         | २६, २०             | X                       |          |
|                   |                    |                    |                         |           | १३                | मरी गो              | ८, ३२              | ९, ३१                   |          |
|                   |                    |                    |                         |           |                   |                     | १३, ३०             | १४, ३४                  |          |
|                   |                    |                    |                         |           | १५                | गयोना पुशिव         | ३५, २१             | ३५, ५४                  |          |
|                   |                    |                    |                         |           |                   |                     | ३६, १३             | ३६, १३                  |          |
|                   |                    |                    |                         |           | १७                | उदं विष्णु          | ५, १५              | ५, २०                   |          |
|                   |                    |                    |                         |           | १८                | त्राणि पदा          | ३४, ४३             | ३३, ३१                  |          |
|                   |                    |                    |                         |           | १९                | विष्णो वसाणि        | ६, ४               | ६, ५                    |          |
|                   |                    |                    |                         |           |                   |                     | १३, ३३             | १४, ३५                  |          |
|                   |                    |                    |                         |           | २०                | तीक्ष्णो परम        | ६, ५               | ६, ६                    |          |
|                   |                    |                    |                         |           | २१                | तीक्ष्णामो          | ३४, ४४             | ३३, ३०                  |          |
|                   |                    |                    |                         |           | २३। ६             | वरुण प्राविता       | ३३, ४६             | ३०, ४६                  |          |
|                   |                    |                    |                         |           | १७                | अमर्या उप           | ६, २४              | ६, ३५                   |          |
|                   |                    |                    |                         |           | १९                | अस्वन्तर            | ९, ६               | १०, ९                   |          |
|                   |                    |                    |                         |           | २१                | ज्योत्स्व मर्य द्यो | ३, ५४              | ३, ६२                   |          |
|                   |                    |                    |                         |           | २२                | उदमाप               | ६, १७              | ६, ३२                   |          |
|                   |                    |                    |                         |           | २३                | आपो अया             | २०, २२             | २०, ७                   |          |
| २२। १०            | म नः पावक          | १७, ९              | १८, १०                  | मेवातिथि  | २४। ८             | उदं हि रात्रा       | ८, २३ (पा २।३)     | ९, २३                   | अन शेष   |
| १४। ३             | उन्त्रवाय नदमर्षति | ३३, ४५             | ३०, ४५                  |           | ११                | तन्वा यामि          | १८, ४९             | २०, १९                  |          |
|                   |                    | १०                 | १०                      |           |                   |                     | २१, २              | २३, २                   |          |
| १५। ३             | अभि यज             | २६, २१             | X                       |           | १५                | उदुत्तम             | १०, १०             | १३, १३                  |          |
|                   |                    | २२                 | X                       |           |                   |                     |                    |                         |          |

| सू० सं० | मन्त्रः          | वा० य०         | का० य० | ऋषिः ।      | सू० सं० | मन्त्रः           | वा० य०          | का० य०  | ऋषिः |
|---------|------------------|----------------|--------|-------------|---------|-------------------|-----------------|---------|------|
| २५।१०   | नि धसाद          | १०, २७         | ११, ३७ | शुनः शेषः   | ७४। १   | उपप्रयन्तो        | ३, ११           | ३, १७   | गीतम |
|         |                  | २०, २          | २१, ९३ |             | ७५। ५   | यजा नो मित्रा     | ३३, ३           | ३२, ३   |      |
| १२      | प्र ण आर्युभि    | २२, ३२ (पा. ४) | २५, ३४ |             | ७६। ४   | अग्ने वाजस्य      | १५, ३५          | १६, ५७  |      |
| १९      | इमं मे वरुण      | २१, १          | २३, १  |             | ५       | स इधानो           | ३६              | ५८      |      |
| २७। ७   | यमग्ने पृत्यु    | ६, २९          | ६, ४२  |             | ६       | क्षपो राजन        | ३७              | ५९      |      |
| ३०। ७   | योगेयोगे         | ११, १४         | १२, १४ |             | ८२। २   | अक्षजमी           | ३, ५१           | ३, ५९   |      |
| ३१। १   | त्वमग्ने प्रथमो  | ३४, १०         | ३३, ६  | हिरण्यस्तुप | ३       | सुमंदश            | ५२              | ६०      |      |
| १२      | त्वं नो अग्ने    | १३             | ७      |             | ८४। २   | इन्द्रमिदरी       | ८, ३५           | ८, १६   |      |
| ३४। ११  | आ नामत्या        | ४७             | ३५     |             | ३       | आ तिष्ठ उग्र      | ३३              | १५      |      |
| ३५। २   | आ हृणेत          | ३३, ४३         | ३२, ४३ |             | १९      | त्वमज्ञ प्र       | ६, ३७           | ६, ५०   |      |
|         |                  | ३४, ३१         | ३३, २५ |             | ८६। १   | महतो यस्य         | ८, ३१           | ९, ३०   |      |
| ८       | अष्टो व्यस्यता   | २४             | १८     |             | ८९। १   | आ नो भद्राः       | २५, १४          | २७, १८  |      |
| ९       | हिरण्यपाणिः      | २५             | १९     |             | २       | देवाना भद्रा      | १५              | १९      |      |
| १०      | हिरण्यहस्तो      | २६             | २०     |             | ३       | तान्प्रवथा        | १६              | २०      |      |
| ११      | ये ते पन्था      | २७             | २१     |             | ४       | तन्नो वानो        | १७              | २१      |      |
| ३६। ९   | सं सीदस्व        | ११, ३७         | १२, ३७ | कण्व        | ५       | तर्माज्ञान        | १८              | २२      |      |
| १३      | ऊर्व ऊ पु        | ४०             | ४२     |             | ६       | स्वस्ति न इंद्रो  | १९              | २३      |      |
| ४०। १   | उत्तिष्ठ व्रद्ध  | ३४, ५६         | ३३, ४४ |             | ७       | पृषदश्वा          | २०              | २४      |      |
| ३       | प्रतु व्रद्धा    | ३३, ८९         |        |             | ८       | भद्रं कर्णेभि     | २१              | २५      |      |
|         |                  | ३७, ७          | ३७, ७  |             | ९       | शतमिन्नु          | २२              | २६      |      |
| ५       | प्र ननं व्रद्ध   | ३४, ५७         | ३३, ४५ |             | १०      | अदितिर्यो         | २३              | २७      |      |
| ४४। १३  | श्रुति युक्कर्ण  | ३३, १५         | ३२, १५ | परऋण्व      | ९०। ३   | मयु वाता          | १३, २७          | १४, २९  |      |
| ४५। ६   | त्वा चित्रध्रुव  | १५, ३१         | १६, ५३ |             | ७       | मयुनक्त           | २८              | ३०      |      |
| ४६। १५  | उभा पिबत         | ३४, २८         | ३३, २० |             | ८       | मयुमात्रो         | २९              | ३१      |      |
| ४७। १   | सुतः सोम ऋताग्नि | ७, ९           | ७, ८   |             | ९       | श नो मित्र        | ३६, ९           | ३६, ९   |      |
| ५०। १   | उदु त्वं जाल     | ७, ४१          | ८, २३  |             | ९१। १   | त्वं सोम प्र      | १९, ५२          | २१, ५२  |      |
|         |                  | ८, ४१          | ९, ६   |             | १६      | आ ग्यायस्व        | १२, ११२         | १३, १११ |      |
|         |                  | ३३, ३१         | ३२, ३१ |             | १७      | आ ग्यायस्व मदि    | ११४             | ११३     |      |
| ३       | अष्टमस्य         | ८, ४०          | ८, २२  |             | १८      | सं ते पयासि       | ११३             | ११२     |      |
| ४       | तर्णिर्विश्व     | ३३, ३६         | ३२, ३६ |             | १९      | या ते धामानि त्वि | ४, ३७           | ४, ४९   |      |
| ६       | येना पावत        | ३२             | ३२     |             | २०      | सोमो धेनुं        | ३४, २१          | ३३, १५  |      |
| १०      | उदयं तमस         | २०, २१         | २२, ६  |             | २१      | अषाढहं युन्मु     | २०              | १४      |      |
|         |                  | २७, १०         | २९, १० |             | २२      | त्वमिमा           | २२              | १६      |      |
|         |                  | ३५, १४         | ३५, ४७ |             | २३      | देवेन नो          | २३              | १७      |      |
|         |                  | ३८, २४         | ३८, २४ |             | ९२। ६   | तमसस्पारमस्य      | १२, ७३          | १३, ७४  |      |
| ६२। १   | प्र मन्महे       | ३४, १६         | ३३, १० | नोधा        | १३      | उपस्तुचित्र       | ३४, ३३          | ३३, २७  |      |
| २       | प्र वो महे       | १७             | ११     |             | ९४। १६  | तन्नो मित्रो      | ३४, ३० (पा. ३४) | ३३, २४  | कुस. |
| ७१। ८   | आ यदिवे          | ३३, ११         | ३२, ११ | पराशर       |         |                   | ३३, ४२ ( , , )  | ३२, ४२  |      |

| सू० मं० | मन्त्र                            | वा० य०    | का० य०    | ऋषिः      | सू० मं० | मन्त्रः             | वा० य० | का० य० | ऋषिः     |
|---------|-----------------------------------|-----------|-----------|-----------|---------|---------------------|--------|--------|----------|
| ९५। १   | टे विरूषे                         | ३३, ५     | ३२, ५     | कुरु      | १२      | ये वाजिनं           | २५, ३५ | २७, ३९ | दीर्घतमा |
| ९६। ५   | नक्तेश्याया                       | १२, २     | १३, २     |           | १३      | यन्नीक्षणं          | ३६     | ४०     |          |
|         |                                   | १७, ७०    | १८, ७०    |           | १४      | निकर्मणं            | ३८     | ४२     |          |
| ९७। १   | अप न ओद्युचः                      | ३५, ६, २१ | ३५, ५४    |           | १५      | मा त्वामि           | ३७     | ४१     |          |
| ९८। १   | वैश्वानरस्य                       | २६, ७     | २८, ९     |           | १६      | यदश्वाय             | ३९     | ४३     |          |
|         | २ पृष्टो दिवि                     | १८, ७३    | २०, ४२    |           | १७      | यने सादे            | ४०     | ×      |          |
| ९८। ३   | अस्मानायो                         | २, १०     | २, १८     |           | १८      | चतुश्चिदा           | ४१     | ×      |          |
| १०२। १  | इमा ते धियं                       | ३३, २९    | ३२, २९    |           | १९      | एकस्त्वष्टु         | ४२     | ×      |          |
| १०५। १  | चन्द्रमा आश्व                     | ९०        | ×         | जित वा    | २०      | मा त्वा तपत         | ४३     | ×      |          |
| १०७। १  | यज्ञो देवाना                      | ८, ४      | ८, ३      | कुरु      | २१      | न वा उ एत           | २३, १६ | २५, १८ |          |
|         |                                   | ३३, ६८    | ३२, ६८    |           |         |                     | २५, ४४ | ×      |          |
| ११२। २४ | अप्रम्वती                         | ३४, २९    | ३३, २३    |           | २२      | मुगव्यं नो          | २५, ४५ | ×      |          |
|         | २५ द्युमिग्वक्तुर्भि              | ३४, ३०    | ३३, २४    |           | १८३। १  | यदकन्द              | २९, १२ | ३६, २४ |          |
| ११४। १  | इमा म्नाय                         | १६, ४८    | १७, ४८    |           | २       | यमेन दत्त           | १३     | २५     |          |
|         | ७ मा नो महान्त                    | १५        | १५        |           | ३       | असि यमो             | १४     | २६     |          |
|         | ८ मा नरतोरे                       | १६        | १६        |           | ४       | त्रीणि त आटु        | १५     | २७     |          |
| ११५। १  | चित्रं देवाना                     | ७, ४२     | ८, २४ ९ ७ |           | ५       | इमा ते वाजि         | १६     | २८     |          |
|         |                                   | १३, ४६    | १४, ४८    |           | ६       | आत्मानं ते          | १७     | २९     |          |
|         | ४ तम्यस्य                         | ३३, ३७    | ३२, ३७    |           | ७       | अत्रा ते रूप        | १८     | ३०     |          |
|         | ५ तन्मित्रस्य                     | ३८        | ३८        |           | ८       | अनु त्वा ग्यो       | १९     | ३१     |          |
|         | ६ अया देवा                        | ४२        | ४२        |           | ९       | हिरण्यशृङ्गो        | २०     | ३२     |          |
| १२७। १  | अग्नि देवता                       | १५, ४७    | १६, ६९    | परस्त्रेय | १०      | ईर्मान्तासः         | २१     | ३३     |          |
| १३२। ६  | दे चत्ताय                         | ८, ५३     | ९, ३६     |           | ११      | तव दार्शरं          | २२     | ३४     |          |
| १४२। १० | तन्नस्तुर्ग                       | २७, २०    | २९, २०    | दीर्घतमा  | १२      | उप प्रागाच्छसनं     | २३     | ३५     |          |
| १४७। २  | बोवा मे अग्य                      | १२, ४२    | १३, ४३    |           | १३      | उप प्रागात् परमं    | २४     | ३६     |          |
| १५४। १  | विष्णोर्नु कं                     | ५, १८     | ५, २४     |           | १३४। ३१ | अपश्यं गोषा         | ३७, १७ | ३७, १७ |          |
|         | २ प्र तद्विष्णु                   | २०        | २६        |           | ३४      | प्रच्छामि त्वा परमं | २३, ६१ | २५, ६३ |          |
|         | ३ ता वा वास्तु (या ते वामा) दे, ३ | ६, ३      | ६, ३      |           | ३५      | इयं वेदि            | ६२     | ६४     |          |
| १६०। १  | मा नो मित्रो                      | २५, २४    | २७, २८    |           | ४१      | एकपदी द्विपदी       | ८, ३०  | ९, २९  |          |
|         | २ यज्ञिणिजा                       | २५        | २९        |           | ४९      | यस्ते स्तन          | ३८, ५  | ३८, ५  |          |
|         | ३ अप च्छाय                        | २६        | ३०        |           | ५०      | यजेन यज             | ३१, १६ | ३५, १६ |          |
|         | ४ यद्विषाय                        | २७        | ३१        |           | १६५। ३  | कुतस्त्वमिन्द्र     | ३३, २७ | ३२, २७ | मरुतः    |
|         | ५ देता वयं                        | २८        | ३२        |           | ४       | ब्रह्माणि मे        | ७८     | ७८     | इन्द्र   |
|         | ६ युपवर्का                        | २९        | ३३        |           | ९       | अनुत्तमा            | ७९     | ७९     | मरुतः    |
|         | ७ उप प्रागात् समन्ते              | ३०        | ३४        |           | १५      | एष वः स्तोमो        | ३४, ४८ | ३३, ३६ | अगस्त्य  |
|         | ८ यद्विजिनो                       | ३१        | ३५        |           | १७३। १२ | मो ष ण इन्द्र       | ३, ४६  | ३, ५४  |          |
|         | ९ यद्विष्य                        | ३२        | ३६        |           | १८६। १  | आ न इळा             | ३३, ३४ | ३२, ३४ |          |
| १०      | यद्विष्य                          | ३३        | ३७        |           | १८७। १  | पितुं नु स्तोमं     | ३४, ७  | ३३, ४  |          |
| ११      | यतो गा तद                         | ३४        | ३८        |           |         |                     |        |        |          |

| सू० मं० मन्त्रः | वा० य० | का० य०       | ऋषि । सू० मं० मन्त्रः      | वा० य० | का० य०        | ऋषि |
|-----------------|--------|--------------|----------------------------|--------|---------------|-----|
| १८९।१ अग्ने नय  | ५,३६   | ५,४५ अगस्त्य | १८९।१ अग्ने नय             | ४०,१६  | ४०,१८ अगस्त्य |     |
|                 | ७,४३   | ९, ८         | १९१।८ सर्वात्रम्भयन्तसर्वा | १६, ५  | १७, ५         |     |

## द्वितीयं मण्डलम् ।

|                     |       |                 |                   |       |                 |
|---------------------|-------|-----------------|-------------------|-------|-----------------|
| १। १ त्वमग्ने दयाम  | ११,२७ | १२,२७ गृत्समदः  | २७। १ इमा गिर     | ३४,५४ | ३३,४२ कुर्मो वा |
| ३।११ घृतं मिमिक्षे  | १७,८८ | १९, २           | २९। ६ अर्वाभो अथा | ३३,५१ | ३२,५१ गृत्समदः  |
| ६। ४ म बोधि सरि     | १२,४३ | १३,४४ सोमाहुतिः | ३२। ६ गिनीवालि    | ३४,१० | ३३, ४           |
| ७। ६ द्रवन्नः सर्पि | ११,७० | १२,७१           | ३३।१४ परि णो हेता | १६,५० | १७,५०           |
| ९। १ नि होता होतृ   | ३६    | ३६ गृत्समद      | ४१। १ वायो ये ते  | २७,३२ | २९,२७           |
| ३ विधेम ते          | १७,७५ | १८,७५           | २ नियुत्वा        | २९    | २९              |
| १०। ४ त्रिषम्यग्नि  | ११,२३ | १२,२३           | ४ अयं वा          | ७, ९  | ७, ८            |
| ५ आ विश्वत          | २४    | २४              | ७ गोमद् पु        | २०,८१ | २२,६६           |
| २३। १ गणाना त्वा    | २३,१९ | २५,२१           | ८ न यम्परो        | ८२    | ६७              |
| १५ नृहरपते अति      | २६, ३ | २८, ४           | ९ ता न आ वांजह    | ८३    | ६८              |
| १९ ब्रह्मणस्पते     | ३४,५८ | ३३,४६           | १३ विधे देवाम     | ७,३४  | ७,३४            |

## तृतीयं मण्डलम् ।

|                     |       |                   |                        |       |                   |
|---------------------|-------|-------------------|------------------------|-------|-------------------|
| ७। ७ आ मेऽग्ना      | ३३,७५ | ३२,७५ विश्वामित्र | २९। ८ रीद हात          | ११,३५ | १२,३५ विश्वामित्र |
| ५।११ इळामग्ने       | १२,५१ | १३,५२             | १० अयं ते यानि         | ३,१४  | ३,२०              |
| ३।११                |       |                   |                        | १२,५२ | १३,५३             |
| ७।११                |       |                   |                        | १५,५६ | १६,७८             |
| ९। ९ ज्ञाणि शना     | ३३, ७ | ३२, ७             | ३०। १ इच्छन्ति त्वा    | ३४,१८ | ३३,१२             |
| १०। ९ विषा विपन्यवो | ३४,४४ | ३३,३२             | २ न ते दरे             | १९    | १३                |
| ११। २ म इव्यवाल     | २२,१६ | २४,२०             | ८ महद्गानुं            | १८,६९ | २०,३८             |
| १२। १ इन्द्रार्मा आ | ७,३१  | ७,३१              | ९ अस्तन्नादद्यात्      | ४,३०  | ४,४२              |
| १४। ५ नयं ते अय     | १८,७५ | २०,४४             | ३१। ६ विदद्यदी         | ३३,५९ | ३२,५९             |
| १५। १ नि पाजसा      | ११,४९ | १२,५०             | ३४। ३ इन्द्रो वृत्रम   | २६    | २६                |
| २०। १ अयं सो अग्नि  | १२,४७ | १३,४८             | ३५। ६ तवार्यं सोम      | २६,२३ | X                 |
| २ अग्ने यने दिवि    | ४८    | ४९                | ३७। १ वार्त्रहृत्वाय   | १८,६८ | २०,३७             |
| ३ अग्ने दिवो        | ४९    | ५०                | ३८। ४ आतिप्रन्तं       | ३३,२२ | ३२,२२             |
| ४ पुरीण्यासो        | ५०    | ५१                | ४१। १ आ मन्द्रैरिन्द्र | २०,५३ | २२,३८             |
| ५ इळामग्ने          | ५१    | ५२                | ४७। १ मरुतो इन्द्र     | ७,३८  | २८,१०             |
| २४। १ अग्ने सहस्व   | ९,३७  | ११, ३             | २ सजोषा इन्द्र         | ७,३७  | ७,३८              |
| २६। ७ अग्निरस्मि    | १८,६६ | X                 | ४ ये त्वाहिहृत्ये      | ३३,६३ | ३२,६३             |
| २९। ३ उत्तानाया     | ३४,१४ | ३३, ८             | ५ मरुत्वन्तं           | ७,३६  | ७,३६              |
| ४ इळायास्त्वा       | १५    | ९                 | ५१। ७ इन्द्र मरुव      | ३५    | ३५                |

| सू० मं० मन्त्र        | वा० य० | का० य० | ऋषिः । सू० मं० मन्त्र | वा० य०          | का० य० | ऋषिः              |
|-----------------------|--------|--------|-----------------------|-----------------|--------|-------------------|
| ५२। १ धानावन्तं       | २०, २९ | २२, १४ | विश्वामित्र           | ६२। १० तत्सवितु | ३०, २  | ३४, २ विश्वामित्र |
| ५९। ६ मित्रस्य चर्षणी | ११, ६२ | १२, ६४ |                       |                 | ३६, ३  | ३६, ३             |
| ६२। १० तत्सवितु       | ३, ३५  | ३, ४३  | १६ आ नो मित्रा        |                 | २१, ८  | २३, ८ जमदग्निर्वा |
|                       | २२, ९  | २४, १३ |                       |                 |        |                   |

## चतुर्थ मण्डलम् ।

|                          |        |        |        |                          |        |        |            |
|--------------------------|--------|--------|--------|--------------------------|--------|--------|------------|
| १। ४ त्वं नो अग्ने वरुण  | २१, ३  | २३, ३  | वामदेव | ३१। ३ अर्भा पु ण         | २७, ४१ | २९, ४६ | वामदेव     |
| ५ स त्वं नो अग्ने        | ४      | ४      |        |                          | ३६, ६  | ३६, ६  |            |
| २० विश्वेषाम             | ३३, १६ | ३२, १६ |        | ३२। १ आ त न              | ३३, ६५ | ३२, ६५ |            |
| २। १६ अधा यथा नः         | १९, ६९ | २१, ६९ |        | ३९। ६ दधिकारुणो          | २३, ३२ | २५, ३४ |            |
| ४। १ कृणुष्व पाजः        | १३, ९  | १४, ९  |        | ४०। ३ उत स्मारय          | ९, १५  | १०, २१ |            |
| २ तव भ्रमाम              | १०     | १०     |        | ४ उत स्य वार्जा          | १४     | २०     |            |
| ३ प्रति रूपशो            | ११     | ११     |        | ५ हंगः शुचिपद            | १०, २४ | ११, ३४ |            |
| ४ उदग्ने तिष्ठ           | १२     | १२     |        |                          | १२, १४ | १३, १५ |            |
| ५ ऊ वो भव                | १३     | १३     |        | ४२। १० गया वयं           | ७, १०  | ७, ९   | त्रयदस्युः |
| ७। १ अयमिह               | ३, १५  | ३, २१  |        | ४७। १ वायो शुक्रो        | २७, ३० | २९, ३० | वामदेव     |
|                          | १५, २६ | १६, ४७ |        | ५०। ६ वयं ग्याम ( पा ४ ) | २३, ६५ |        |            |
|                          | ३३, ६  | ३२, ६  |        | ५४। २ देवभ्यो हि         | ३३, ५४ | ३२, ५४ |            |
| ९। ८ पर्ग ते दलभो        | ३, ३६  | ३, ४४  |        | ५७। ८ जुनं नः फाला       | १२, ६९ | १३, ७० |            |
| १०। १ अमे तमया           | १५, ४४ | १६, ६६ |        | ५८। १ गमुद्रादमि         | १७, ८९ | १९, ३  |            |
|                          | १७, ७७ | १८, ७७ |        | २ वयं नाम                | ९०     | ४      |            |
| २ अधा ह्यग्ने            | १५, ४५ | १६, ६७ |        | ३ चन्वागि शुक्ला         | ९१     | ५      |            |
| ३ एभिर्नो अकं            | ४६     | ६८     |        | ४ त्रिवा हित             | ९२     | ३      |            |
| १५। ३ पर्ग वाजपति.       | ११, २५ | १२, २५ |        | ५ एता अर्षन्ति           | ९३     | ७      |            |
| २०। १ आ न इन्द्रो दृगादा | २०, ४८ | २२, ३३ |        | ६ गभ्यकम्बवन्ति          | १३, ३८ | १४, ४० |            |
| २ आ न इन्द्रो हरिभि      | ४९     | ३४     |        |                          | १७, ९४ | १९, ७  |            |
| २१। १ आ यान्विन्द्रो     | ४७     | ३०     |        | ७ गिन्धोरिव              | ९५     | ८      |            |
| ३१। १ कया नश्चित्र       | २७, २९ | २९, ४४ |        | ८ अग्नि प्रवन्त          | ९६     | ९      |            |
|                          | ३६, ४  | ३६, ४  |        | ९ कन्या डव               | ९७     | १०     |            |
| २ कम्वा मत्यो            | २७, ४० | २९, ४५ |        | १० अभ्यर्षत              | ९८     | ११     |            |
|                          | ३६, ५  | ३६, ५  |        | ११ धामन्ते विश्व         | ९९     | १२     |            |

## पंचमं मण्डलम् ।

|                     |        |        |              |                       |        |        |         |
|---------------------|--------|--------|--------------|-----------------------|--------|--------|---------|
| १। १ अवोयमि         | १५, २४ | १६, ४५ | वृधगविष्टिरो | ६। ९ उभे सुश्रन्द्र   | १५, ४३ | १६, ६५ | वसुधुत  |
| १२ अवोचाम           | २५     | ४६     |              | ७। १ मखायः सं वः      | २९     | ५०     | डष      |
| ५। १ सुममिद्राय     | ३, २   | ३, २   | वसुधुत       | ११। १ जनस्य गोपा      | २७     | ४८     | सुतंभरः |
| ६। १ अग्नि तं मय्ये | १५, ४१ | १६, ६३ |              | ६ त्वामग्ने अक्षिग्ये | २८     | ४९     |         |
| २ सो अग्निर्गो      | ४०     | ६४     |              | १४। १ अग्नि स्तोमेन   | २२, १५ | २४, १९ |         |

| सू० मं० मन्त्रः     | वा० य० | का० य० | ऋषिः ।        | सू० मं० मन्त्र           | वा० य० | का० य० | ऋषिः      |
|---------------------|--------|--------|---------------|--------------------------|--------|--------|-----------|
| २०। १ यममे वाज      | १९, ६४ | २१, ६४ | प्रयस्वन्त    | ४२। ४ समिन्द्र णो मनसा   | ८, १५  | ९, १५  | अत्रिः    |
| २४। १ अग्ने त्वं नो | ३, २५  | ३, ३३  | बन्धु सुबन्धु | ४४। १ तं प्रन्था पर्व    | ७, १२  | ७, ११  | अवन्सारः  |
|                     | १५, ४८ | १६, ७० |               | ४६। २ अग्न इन्द्र वरुण   | ३३, ४८ | ३२, ४८ | प्रतिध्वज |
|                     | २५, ४७ | २७, ४५ |               | ३ इन्द्राग्नी मित्रा     | ४९     | ४६     |           |
| २ वसुगमि            | ३, २५  | ३, ३३  |               | ४७। ३ उक्षा समुद्रो      | १७, ६० | १८, ६० | प्रतिरथ   |
|                     | १५, ४८ | १६, ७० |               | ५०। १ विश्वो देवस्य      | ४, ८   | ४, ९   | स्वस्मितः |
|                     | २५, ४७ | २७, ४५ |               |                          | ११, ६७ | १२, ६८ |           |
| ३ स नो बोधि         | ३, २६  | ३, ३४  |               |                          | २२, २१ | २४, २९ |           |
| ४ तं त्वा ओचिष्ट    | ३, २६  | ३, ३४  |               | ५५। १० वयं स्याम (पा ६)  | १९, ४४ | २१, ४६ | इयावाथ    |
|                     | १५, ४८ | १६, ७० |               | ६२। ८ हिरण्यरूपमुपमो     | १०, १६ | ११, २४ | श्रुतविदा |
|                     | २५, ४७ | २७, ४५ |               | ८१। १ युजते मन उत        | ५, १४  | ५, १९  | इयावाथ    |
| २५। ७ यदाहिष्ट      | २६, १२ | X      | वसुयव         |                          | ११, ४  | १२, ४  |           |
| २६। १ अग्ने पावक    | १७, ८  | १८, ९  |               |                          | ३७, २  | ३७, २  |           |
| ३ वीतिहोत्रं        | २, ४   | २, ५   |               | २ विश्वा रूपाणि          | १२, ३  | १३, ३  |           |
| २८। ३ अग्ने गर्भ    | ३३, १२ | ३२, १२ | विश्ववारी     | ३ यस्य प्रयाणम           | ११, ६  | १२, ६  |           |
| ३३। ३ न तं त उन्ना  | १०, २० | ११, ३२ | संवर्ण        | ८२। ५ विश्वानि देव       | ३०, ३  | ३४, ३  |           |
|                     |        |        |               | ८५। २ वनेषु व्यन्तरिक्षं | ४, ३१  | ४, ४३  | अत्रि     |

षष्ठं मण्डलम् ।

|                         |        |        |             |                           |        |        |         |
|-------------------------|--------|--------|-------------|---------------------------|--------|--------|---------|
| ४। ७ त्वा हि मन्द्रतम   | ३३, १३ | ३२, १३ | भरद्वाजः    | १३ तस्य वय                | २०, ५२ | २२, ३७ |         |
| ५। ७ अस्याम तं          | १८, ७४ | २०, ४३ |             | २६ वनस्पते                | २९, ५२ | ३१, २० |         |
| ७। १ गर्भानं दिवो       | ७, २४  | ७, २६  |             | २७ दिवस्पृथिव्या          | ५३     | X      |         |
|                         | ३३, ८  | ३२, ८  |             | २८ इन्द्रस्य वज्रो        | ५४     | X      |         |
| १५। ५ पावकया            | १७, १० | १८, ११ | वीतहव्यः वा | २९ उप श्वासय              | ५५     | ३१, २३ |         |
| १६। ११ तं त्वा गर्भिहृ  | ३, ३   | ३, ३   | भरद्वाजः    | ३० आ क्रन्दय              | ५६     | X      |         |
| १३ त्वामग्ने पुत्रक     | ११, ३२ | १२, ३२ |             | ३१ आमृज                   | ५७     | X      |         |
|                         | १५, २२ | १६, ४३ |             | ४८। १ यज्ञायज्ञा वां      | २७, ४२ | २९, ४७ | शंयुः   |
| १४ तमु त्वा द यः        | ११, ३३ | १२, ३३ |             | २ ऊर्जो नपात              | ४४     | ४८     |         |
| १५ तमु त्वा पाथ्यो      | ३४     | ३४     |             | ४९। ४ प्र वायुमच्छा       | ३३, ५५ | ३२, ५५ | ऋजिश्वा |
| १६ एहय पु वराणि         | २६, १३ | X      |             | ८ पथस्पथः                 | ३४, ४२ | ३३, ३० |         |
| २८ अग्निस्तिग्मेन       | १७, १६ | १८, १६ |             | ५०। १४ उत नोऽहि           | ५३     | ४१     |         |
| ३४ अग्निर्वज्राणि       | ३३, ९  | ३२, ९  |             | ५२। ७ विश्वे देवास        | ७, ३४  | ७, ३४  |         |
| ४३ अग्ने युक्ष्वा हि    | १३, ३६ | १४, ३८ |             | ९ उप नः सूनेवो            | ३३, ७७ | ३२, ७७ |         |
| १९। १ महा इन्द्रो       | ७, ३९  | ७, ३९  |             | १३ विश्वे देवा            | ५३     | ५३     |         |
| ४६। १ त्वामिद्धि हवामहे | २७, ३७ | २९, ४२ | शंयुः       | ५४। ९ पृषन्तव             | ३४, ४१ | ३३, २९ | भरद्वाज |
| २ स त्वं नश्चित्र       | ३८     | ४३     |             | ५९। ६ इन्द्राग्नी अपादियं | ३३, ९३ | X      |         |
| ४७। ११ त्रातारमिन्द्र   | २०, ५० | २२, ३५ | गर्भ        | ६०। ५ उग्रा विघनिना       | ६१     | ३२, ६१ |         |
| १२ इन्द्रः सुत्रामा     | ५१     | ३६     |             | १३ उभा त्वामिन्द्राग्नी   | ३, १३  | ३, १९  |         |
| का २५                   |        |        |             |                           |        |        |         |

| सू० मं० मन्त्र   | वा० य० | का० य० | ऋषिः  | सू० मं० मन्त्रः | वा० य० | का० य० | ऋषिः |
|------------------|--------|--------|-------|-----------------|--------|--------|------|
| ७०। १ धृतवती     | ३४, ४५ | ३३, ३३ |       | ८ रथवाहनं       | २९, ४५ | ×      |      |
| ७१। ३ अद्वधेमि   | ३३, ६९ | ३२, ६९ |       | ९ स्वादुषंसदः   | ४६     | ×      |      |
|                  | ८४     | ८४     |       | १० ब्राह्मणास   | ४७     | ×      |      |
| ६ वाममय          | ८, ६   | ८, ५   |       | ११ सुपर्ण वस्ते | ४८     | १९     |      |
| ७१। १ जं.सुतरयेव | २९, ३८ | ३१, १३ | पायुः | १२ ऋजीते परि    | ४९     | ×      |      |
| २ चन्वना गा      | ३९     | १४     |       | १३ आ जङ्गन्ति   | ५०     | २२     |      |
| ३ वक्ष्यन्तावेदा | ४०     | १६     |       | १४ अहिरिव       | ५१     | १७     |      |
| ४ ते आचरन्ती     | ४१     | १५     |       | १६ अवमृष्टा पग  | १७, ४५ | १८, ४५ |      |
| ५ वक्षिना पिता   | ४२     | १८     |       | १७ यत्र बाणा    | ४८     | ४८     |      |
| ६ रथं निष्प्रयति | ४३     | २१     |       | १८ मर्माणि ते   | ४९     | ४९     |      |
| ७ नीवान्घोषान    | ४४     | ×      |       |                 |        |        |      |

## सप्तमं मण्डलम् ।

|                    |        |        |        |                       |        |        |  |
|--------------------|--------|--------|--------|-----------------------|--------|--------|--|
| १। ३ पेद्रो अमे    | १७, ७६ | १८, ७६ | वसिष्ठ | ४१। २ प्रातर्जितं     | ३४, ३५ | ३३, २८ |  |
| २। २ नगाशमस्य      | २९, २७ | ×      |        | ३ भग प्रणेत्          | ३६     | ×      |  |
| ३। २ पो यद्वो      | १५, ६० | १८, ६३ |        | ४ उतेदानी             | ३७     | ×      |  |
| ८। ४ पय यतमि       | १२, ३४ | १३, ३५ |        | ५ भग एव               | ३८     | ×      |  |
| १३। १ एता वो अमि   | १५, ३२ | १६, ५४ |        | ६ समन्वग              | ३९     | ×      |  |
| २ म योजने          | ३३     | ५५     |        | ७ अन्वावती            | ४०     | ×      |  |
|                    | ३४     | ५६     |        | ५९। १२ व्यम्बकं यज्ञा | ३, ६०  | ३, ६८  |  |
| ७ ये अमे स्वाहूत   | ३३, १४ | ३२, १४ |        | ६२। ५ प्र बाहवा       | २१, ९  | २३, ९  |  |
| २३। ४ अ पथि विपयु  | १८     | १८     |        | ६६। ४ यदश मृग         | ३३, २० | ३२, २० |  |
| ६ एवेदिन्द्रं      | २०, ५४ | २२, ३९ |        | १६ तच्चक्षुर्देव      | ३६, २४ | ३६, २४ |  |
| ३०। २० अभि स्वा शर | २७, ३५ | २९, ४० |        | ७४। ३ आ यातमुप        | ३३, ८८ | ×      |  |
| २३ न स्वावा अन्यो  | ३६     | ४१     |        | ९०। १ प्र वीरया       | ७०     | ३२, ७० |  |
| ३५। १ अ न उन्वासा  | ३६, ११ | ३६, ११ |        | ३ गये नु यं           | २७, २४ | २९, २४ |  |
| ३८। ७ य नो भवन्तु  | ९, १६  | १०, २२ |        | ९१। ३ पीवोअन्नो (जा)  | २३     | २३     |  |
|                    | २१, १० | २३, १० |        | ९२। १ आ वायो भष       | ७, ७   | ७, ६   |  |
| ८ व जेवजेऽवत       | ९, १८  | १०, २४ |        | ३ प्र यामिर्यामि      | २७, २७ | २९, २६ |  |
|                    | २१, ११ | २३, १८ |        | ५ आ नो नियुद्धि       | २८     | ३१     |  |
| ३९। २ प्र वाऽमे    | ३३, ४४ | ३२, ४४ |        | ९४। ११ उक्थेमिर्वृत्र | ३३, ७६ | ३२, ७६ |  |
| ४१। १ प्रातरमि     | ३४, ३४ | ×      |        | ९९। ३ इगावती          | ५, १६  | ५, २१  |  |

## अष्टमं मण्डलम् ।

|                 |        |        |           |                   |        |       |       |
|-----------------|--------|--------|-----------|-------------------|--------|-------|-------|
| ३। ३ उमा उ स्वा | ३३, ८१ | ३२, ८१ | मे-यानिधि | ६। १ महा इन्द्रो  | ७, ४०  | ७, ४० | वत्स. |
| ४ अयं सत्स      | ८३     | ८३     |           | २८ उपहरे          | २६, १५ | ×     |       |
| ८ अग्नोदिन्द्रो | ९७     | ×      |           | ११। १ न्वममे व्रत | ४, १६  | ४, २१ |       |



| सू० सं० | मन्त्र            | वा० य०  | का० य०  | ऋषिः           | । सू० सं० | मन्त्र           | वा० य० | का० य० | ऋषिः           |
|---------|-------------------|---------|---------|----------------|-----------|------------------|--------|--------|----------------|
| ११। ७   | आ ते वत्सो        | १२, ११५ | १३, ११४ |                | ६०। ९     | पाहि नो अन्न     | २७, ४३ | ×      | मर्ग           |
| १४। १३  | अपां फेनन         | १९, ७१  | २१, ७१  | गोपकृत्यश्वसू० | ६३। १२    | अस्मे रुद्रा     | ३३, ५० | ३२, ५० | प्रगाथ         |
| १९। १९  | भद्रो नो अग्नि    | १५, ३८  | १६, ६०  | सोमरिः         | ६९। ३     | ता अस्य मृद      | १२, ५५ | १३, ५६ | प्रियमेव       |
| २०      | भद्रं मन          | ३९      | ६१      |                |           |                  | १५, ६० | १६, ८१ |                |
|         | अव स्थिरा         | ४०      | ६२      |                | ७२। १२    | गाव उपावता       | ३३, १९ | ३२, १९ | हर्षता         |
| २३। ५   | उदु तिष्ठ         | ११, ४१  | १२, ४१  | विश्वमना       |           |                  | ७१     | ७१     |                |
| २६। २१  | तव वायवृत         | २७, ३४  | २९, ३२  |                | १३        | आ मृत सि०        | २१     | २१     |                |
| २७। १३  | देवं-देवं वो      | ३३, ९१  |         | मनुः           | ७५। १     | युक्ता हि देव    | १३, ३७ | १४, ३९ | विरूप          |
| १४      | देवासो हि ष्मा    | ९४      |         |                |           |                  | ३३, ४  | ३०, ४  |                |
| ४०। १२  | वयं स्याम (पा ४)  | १०, २०  | ११, २९  | नाभाकः         | ४         | अयमग्नि          | १५, २१ | १६, ४२ |                |
|         |                   | १९, ४४  | २१, ४६  |                | १५        | परस्या अग्नि     | ११, ७१ | १२, ७२ |                |
|         |                   | ५४      | ५४      |                | ७६। १०    | उत्तिष्ठन्नोजसा  | ८, ३९  | ८, २१  | कुरुमति        |
|         |                   | ६१      | ६१      |                | ८३। ७     | अग्नि न इन्द्रपा | ३३, ४७ | ३२, ४७ | कुरुमति        |
|         |                   | २३, ६५  | २५, ६७  |                | ८४। ३     | त्वं यवितृ       | १३, ५२ | १४, ५४ | उपता           |
| ४२। १   | अस्तन्नाद         | ४, ३०   | ४, ४२   |                |           |                  | १८, ७७ | २०, ४६ |                |
| ४३। ४   | हरयो ध्रुम        | ३३, २   | ३२, २   | विरूपः         | ८८। १     | तं वो दम्भ       | २६, ११ | ×      | नोवा           |
| ९       | अस्वमे सधि        | १२, ३६  | १३, ३७  |                | ८९। १     | बृहदिन्द्राय     | २०, ३० | २२, १५ | नृमेवपुष्पे यो |
| १८      | तुभ्यं ता अग्नि   | ११६     | ११५     |                | २         | अपाधमद           | ३३, ९५ | ×      |                |
| ४४। १   | समिधार्मि         | ३, १    | ३, १    |                | ३         | प्र व इन्द्राय   | ९६     | ×      |                |
|         |                   | १२, ३०  | १३, ३१  |                | ९३। ४     | यदय कच           | ३५     | ३२, ३५ | कक्षः          |
| ३       | अग्निं दत्तं पुरो | २२, १७  | २४, २२  |                | १९        | कया त्वंज        | ३६, ७  | ३६, ७  |                |
| १६      | अग्निमूर्ध्ना     | ३, १२   | ३, १८   |                | ९९। ३     | त्रायन्त इव      | ३३, ४१ | ३०, ४१ | नृमेव          |
|         |                   | १३, १४  | ×       |                | ५         | त्वमिन्द्र पत    | ६६     | ६६     |                |
|         |                   | १५, २०  | १६, ४१  |                | ६         | अनु ते शुष्मं    | ६७     | ६७     |                |
| ४५। १   | आ घा ये           | ७, ३२   | ७, ३२   | त्रिशोकः       | १०१। १    | ऋधमिन्था         | ८७     | ×      | जमदग्नि        |
| २       | बृहन्निदिम        | ३३, २४  | ३२, २४  |                | ९         | आ नो यज्ञं       | ८५     | ×      |                |
| ४८। १३  | त्वं सोम पितृभिः  | १९, ५४  | २१, ५४  | प्रगाथः        | ११        | बन्तहा असि       | ३९     | ३२, ३९ |                |
| ५१। ७   | कदा चन स्मरि      | ३, ३४   | ३, ४२   | श्रुष्टिः      | १२        | बट सूर्य         | ४०     | ४०     |                |
|         |                   | ८, २    | ८, १    |                | १०२। २०   | यदमे कानि        | १६, ७३ | १२, ७४ | प्रयोग         |
| ९       | यस्यायं विश्व     | ३३, ८२  | ३२, ८२  |                | २१        | यदत्तुप          | ७४     | ७५     |                |
| ५२। ७   | कदा चन प्र        | ८, ३    | ८, २    | आयुः           |           |                  |        |        |                |

### नवमं मण्डलम् ।

|       |               |        |        |            |        |                 |        |        |          |
|-------|---------------|--------|--------|------------|--------|-----------------|--------|--------|----------|
| १। १  | स्वादिष्टया   | २६, २५ | ×      | मधुच्छन्दा | ५१। १  | अभयैर् अग्निभिः | २०, ३१ | २२, १६ | उत्तराय  |
| २     | रक्षोहा विश्व | २६     | ×      |            | ५४। १  | अभ्य प्रनामनु   | ३, १६  | ३, २२  | अवत्स    |
| ६     | पुनाति ते     | १९, ४  | २१, ४  |            | ६१। १० | उच्चा ते जात    | २६, १६ | ×      | अमर्त्यु |
| २। ६  | अचिक्रद       | ३८, २२ | ३८, २२ | मेधातिथिः  | ११     | एना विश्वान्य   | १८     | १६, ५१ |          |
| ११। १ | उपास्मै गायता | ३३, ६२ | ३२, ६२ | आसितः      | १२     | स न इन्द्राय    | १७     | ×      |          |

| सू० मं०        | मन्त्रः    | वा० य० | का० य० | ऋषिः   | सू० मं०             | मन्त्रः       | वा० य० | का० य० | ऋषिः          |
|----------------|------------|--------|--------|--------|---------------------|---------------|--------|--------|---------------|
| ६३।१८          | आ पवस्व    | ८, ६३  | X      | निऋषिः | २१ अग्ने पवस्व      |               |        | २९, ३८ |               |
| ६६।१९          | अम आग्र्यं | १९, ३८ | ८, १९  | शतम्   | ६७।२२               | पवमानः सो     | १९, ४२ | २१, ४४ | पयित्रवसिष्ठौ |
|                |            |        | २१, ४० |        | २३ यत्ने पवित्र     |               | ४१     | ४३     |               |
|                |            |        | २९, ३७ |        | २५ उभाभ्यां देव     |               | ४३     | ४५     |               |
|                |            | ३५, १६ | ३५, ४८ |        | २७ पुनन्तु मा पितरः |               | ३९     | ३८     |               |
| २० अग्निर्ऋषिः |            | २६, ९  | २८, १२ |        | ९६।११               | त्वया हि न    | ५३     | ५३     | प्रतर्दनः     |
|                |            |        | २९, ३९ |        | १०७।१               | परितो षिञ्जता | २      | २      | भरद्वाज       |
| २१ अग्ने पवस्व |            | ८, ३८  | ८, २०  |        | ११०।३               | अर्जाजनो हि   | २२, १८ | २४, २३ | व्यहणाः       |

## अथ दशमं मण्डलम् ।

|                        |        |        |               |                      |              |        |             |
|------------------------|--------|--------|---------------|----------------------|--------------|--------|-------------|
| १। १ अग्ने बृहन्       | १२, १३ | १३, १४ | त्रित         | १५।१३                | ये चेह पितरो | १९, ६७ | २१, ६८      |
| २ स जाना गर्भो         | ११, ४३ | १२, ४३ |               | १४ ये अग्निदग्वा     | ६०           | X      |             |
| ८।६ भुवो यज्ञस्य रज    | १३, १५ | १४, १५ | त्रिशिरो      | १६।९                 | कव्यादमग्नि  | ३५, १९ | ३५, ५२ दमनः |
|                        | १५, २३ | १६, ४४ |               | ११ यो अग्निः कव्या   | १९, ६५       | २१, ६५ |             |
| ९।१ आपो हि प्रा        | ११, ५० | १२, ५१ | मिन्द्रापो वा | १२ उशन्तस्त्वा       | ७०           | ७०     |             |
|                        | ३६, १४ | ३६, १४ |               | १७।४ यत्रामने (पा २) | २३, ६३       | २५, १८ | देवध्रवा    |
| २ यो व शिवतमो          | ११, ५१ | १२, ५२ |               | १० आपो अस्मान        | ४, २         | ४, २   |             |
|                        | ३६, १५ | ३६, १५ |               | ११ द्रामध्वक्वन्द    | १३, ५        | १४, ५  |             |
| ३ तस्मा अ              | ११, ५२ | १२, ५३ |               | १२ यस्ते द्राम       | ७, २६        | ७, २९  |             |
|                        | ३६, १६ | ३६, १६ |               | १८।१ परं मृत्यो      | ३५, ७        | ३५, ४० | संक्रुमुः   |
| ४ ज नो देवीर           | १२     | १२     |               | ४ तमे जीवेभ्य        | १५           | ५०     |             |
| ७ ज्योक्च सूर्य (पा ३) | ३, ५४  | ३, ६०  |               | ३५।१३ विद्ये अथ      | १८, ३१       | २०, २  | लुथ         |
| ८ इदमापः               | ६, १७  | ६, ३२  |               |                      | ३३, ५२       | ३३, ५२ |             |
| ९ आपो अथान्व           | २०, २० | २२, ७  |               | ३६।१० महो अग्ने      | १७           | १७     |             |
| १३।१ युजे वा ब्रह्म    | ११, ५  | १२, ५  | हविर्वानः     | ३७।१ नमो मित्रस्य    | ४, ३५        | ४, ४७  | अभितपा      |
| १४।६ अतिरसो न          | १९, ५० | X      | यम            | ४५।१ दिवस्परि प्रयम  | १२, १८       | १३, १९ | यमग्नि      |
| ९ अपेत वीत             | १२, ४५ | १३, ४६ |               | २ विद्या ते अग्ने    | १९           | २०     |             |
| १५।१ उदीरतामवर         | १९, ४९ | २१, ५१ | शङ्ख          | ३ समुद्रे त्वा       | २०           | २१     |             |
| २ उद पितृभ्या          | ६८     | ६७     |               | ४ अकन्ददग्नि         | ६            | ७      |             |
| ३ आहं पितृन्           | ५६     | ५७     |               |                      | २१           | २२     |             |
| ४ वीदपद पितरः          | ५५     | ५५     |               |                      | ३३           | ३४     |             |
| १५।१ उपहृताः पितरः     | ५७     | ५६     |               | ५ श्रीणामुदारो       | २२           | २३     |             |
| ३ आत्त्या जानु         | ६०     | ६२     |               | ६ विश्वस्य केतु      | २३           | २४     |             |
| ७ आर्मीनामो            | ६३     | ६३     |               | ७ उदिकपावका          | २४           | २५     |             |
| ८ ये न पथे             | ५१     | X      |               | ८ वजानो रयम          | १            | १      |             |
| ११ अग्निवाजाः          | ५९     | ५८     |               |                      | २५           | २६     |             |
| १२ यमग्न ईळिगो         | ६६     | ६६     |               |                      |              |        |             |

| सू० मं० | मन्त्र           | वा० य० | का० य०             | ऋषिः । | सू० मं० | मन्त्रः          | वा० य० | का० य० | ऋषिः |
|---------|------------------|--------|--------------------|--------|---------|------------------|--------|--------|------|
| ४५। ९   | यस्ते अद्य       | २६     | २७                 |        | ९०। ४   | त्रिपादध्वं      | ३१, ४  | ३५, ४  |      |
| १०      | आ तं मज          | २७     | २८                 |        | ५       | तस्माद्विराळ     | ५      | ५      |      |
| ११      | त्वामग्ने यज     | २८     | २९                 |        | ६       | यत्पुरुषेण हविषा | १४     | १४     |      |
| १२      | अस्ताव्यग्नि     | २९     | ३०                 |        | ७       | तं यज्ञं बर्हि   | ९      | ९      |      |
| ४६। ७   | अस्याजरागो       | ३३, १  | ३२, १              |        | ८       | तस्माद्यज्ञान    | ६      | ६      |      |
| ५०। १   | प्र वो महे       | २३     | २३ इन्द्रः         |        | ९       | तस्माद्यज्ञान    | ७      | ७      |      |
| ५१। ६   | त्रीणि शता त्री  | ७      | ७ अग्नि            |        | १०      | तस्माददवा        | ८      | ८      |      |
| ५३। ८   | अश्मन्वती        | ३५, १० | ३५, ४३ देवाः       |        | ११      | यत्पुरुषं व्यदधु | १०     | १०     |      |
| ५७। ३   | मनो न्वा हुवा    | ३, ५३  | ३, ६१ बन्धुः       |        | १२      | ब्राह्मणोऽस्य    | ११     | ११     |      |
| ४       | आ त एतु          | ५४     | ६३                 |        | १३      | चन्द्रमा मनगो    | १२     | १२     |      |
| ५       | पुनर्न पितरो     | ५५     | ६३                 |        | १४      | नाभ्या आसीद      | १३     | १३     |      |
| ६       | वयं सोम          | ५६     | ६४                 |        | १५      | सतास्यासन्       | १५     | १५     |      |
| ६१। ३   | मनो न येषु       | ७, १७  | ७, १६ नामानेदिष्टः |        | १६      | यज्ञेन यज्ञम     | १६     | १६     |      |
| ६३। १०  | सुत्रामाणं       | २१, ६  | २३, ६ गय           |        | ९१। १४  | यस्मिन्नदवास     | २०, ७८ | २२, ६३ | अरुण |
| ६४। ६   | ते नो अर्वन्तो   | ९, १७  | १०, २३             |        | १५      | अहाव्यग्ने       | ७९     | ६४     |      |
|         |                  |        | २३, ११             |        | ९७। १   | या ओषधीः         | १२, ७५ | १३, ७६ | मिषग |
| ७३। १   | जनिष्ठा उग्र     | ३३, ६४ | ३२, ६४ गौरिवीतिः   |        | २       | शतं वो अम्ब      | ७६     | ७७     |      |
| ७४। ४   | आ तत्रा इन्द्रा  | २८     | २८                 |        | ३       | ओषधी प्रति       | ७७     | ७८     |      |
| ८१। १   | य इमा विश्वा     | १७, १७ | १८, १७ विश्वकर्मा  |        | ४       | ओषधीरिति         | ७८     | ७९     |      |
| २       | किं स्विदामी     | १८     | १८                 |        | ५       | अश्वत्थे वो      | ७९     | ८०     |      |
| ३       | विश्वतश्चक्षुः   | १९     | १९                 |        |         |                  | ३५, ४  | ३५, ३८ |      |
| ४       | किं भिष्वठनं क   | २०     | २०                 |        | ६       | यत्रौषधीः        | १२, ८० | १३, ८१ |      |
| ५       | या ते धामानि     | २१     | २१                 |        | ७       | अश्वत्थता        | ८१     | ८२     |      |
| ६       | विश्वकर्मन       | २२     | २३                 |        | ८       | उच्छ्रुमा ओषधी   | ८२     | ८३     |      |
| ७       | वाचस्पति         | ८, ४५  | ८, २६              |        | ९       | इष्टुतिर्नाम     | ८३     | ८४     |      |
|         |                  | १७, २३ | १८, २२             |        | १०      | अति विश्वा       | ८४     | ८५     |      |
| ८२। १   | चक्षुष पिता      | २५     | २५                 |        | ११      | यदिमा वाज        | ८५     | ८६     |      |
| २       | विश्वकर्मा       | २६     | २६                 |        | १२      | यस्यौषधीः        | ८६     | ८७     |      |
| ३       | यो न पिता        | २७     | २७                 |        | १३      | साकं यक्ष्म      | ८७     | ८८     |      |
| ४       | त आयजन्त         | २८     | २८                 |        | १४      | अन्यो वो         | ८८     | ८९     |      |
| ५       | परो दिवा पर      | २९     | २९                 |        | १५      | या फलिनीर्या     | ८९     | ९०     |      |
| ६       | तमिद्रर्भ प्रथमं | ३०     | ३०                 |        | १६      | मुञ्चतु मा       | ९०     | ९१     |      |
| ७       | न तं विदाथ       | ३१     | ३१                 |        | १७      | अवपतन्तीः        | ९१     | ९२     |      |
| ८७। २२  | परि त्वाग्ने     | ११, २६ | १२, २६ पायुः       |        | १८      | या ओषधीः         | ९२     | ९३     |      |
| ८८। १५  | हे घृती अशृणवं   | १९, ४७ | २१, ४९ मर्धन्वान   |        | १९      | या ओषधी          | ९३     | ९४     |      |
| ९०। १   | सहस्रशिर्षा      | ३१, १  | ३५, १ नारायण       |        | २०      | मा वो रिषत्      | ९५     | ९७     |      |
| २       | पुरुष एवेदं      | २      | २                  |        | २१      | याश्चेदमु        | ९४     | ९५     |      |
| ३       | एतावानस्य        | ३      | ३                  |        | २२      | ओषधय             | ९६     | ९८     |      |

| सू० मं० | मन्त्र             | वा० य०  | का० य०  | ऋषिः       | सू० मं० | मन्त्रः         | वा० य०  | का० य०  | ऋषिः         |
|---------|--------------------|---------|---------|------------|---------|-----------------|---------|---------|--------------|
| ९७२३    | त्वमुत्तमा         | १२, १०१ | १३, १०० |            | १२१६    | यं कन्दसी       | ३२, ७   | २९, ३४  |              |
| १०१३    | युनक्त सीरा        | ६८      | ६९      | वुध        | ७       | आपो ह यद्       | २७, २५  | ३५      |              |
| ४       | मीरा युन्नन्त      | ६७      | ६८      |            | ८       | यश्चिदापो       | २६      | ३६      |              |
| १०३१    | आशु शिशानो         | १७, ३३  | १८, ३३  | अप्रतिरथ   | ९       | मा नो हिंसी     | १२, १०२ | १३, १०१ |              |
| २       | संकन्दनेना         | ३४      | ३४      |            | १०      | प्रजापते न      | १०, २०  | ११, २९  |              |
| ३       | स इषुहस्तैः        | ३५      | ३५      |            |         |                 | २३, ६५  | २५, ६५  |              |
| ४       | बृहस्पते           | ३६      | ३६      |            | १२३१    | अयं वेनः        | ७, १६   | ७, १५   | वेनः         |
| ५       | यलविज्ञायः         | ३७      | ३७      |            | १२८९    | ये न सपन्ना     | ३४, ४६  | ३३, ३४  | विहव्यः      |
| ६       | गोत्रामिदं         | ३८      | ३८      |            | १२९५    | तिरश्चीनो       | ३३, ७४  | ३२, ७४  | प्रजापतिः    |
| ७       | अभि गोत्राणि       | ३९      | ३९      |            | १३०७    | सहस्तोमा        | ३४, ४२  | ३३, ३७  | यज्ञ         |
| ८       | इन्द्र आमा नेता    | ४०      | ४०      |            | १३१२    | कुविदङ्ग        | १०, ३२  | ११, ४५  | सुकीर्तिः    |
| ९       | इन्द्रस्य वृष्णो   | ४१      | ४१      |            |         |                 | १९, ६   | २०, ५   |              |
| १०      | उद्धर्षय           | ४२      | ४२      |            |         |                 | २३, ३८  | २५, ४०  |              |
| ११      | अस्माकमिन्द्र      | ४३      | ४३      |            | ४       | युवं मराम       | १०, ३३  | ११, ४६  |              |
| १२      | अर्माषा चिन्मं     | ४४      | ४४      |            |         |                 | २०, ७६  | २२, ७६  |              |
| १३      | प्रेता जयता        | ४६      | ४६      |            | ५       | पुत्रामव पितरा  | १०, ३४  | ११, ४७  |              |
| ११०१    | ममिद्धो अय         | २९, २५  | ३१, ३७  | जमदग्निः   |         |                 | २०, ७७  | २२, ६२  |              |
| २       | तनुनपात्पथ         | ४६      | ३८      |            | ६       | इन्द्र सुत्रामा | ५१      | ३६      |              |
| ३       | आजुह्वान           | ४८      | ४०      |            | ७       | तस्य वयं        | ५२      | ३७      |              |
| ४       | प्राचीनं बहि       | ४९      | ४१      |            | १३९१    | सूर्यरश्मिः     | १७, ५८  | १८, ५८  | विशवावमुः    |
| ५       | व्यचस्वर्ता        | ४०      | ४२      |            | २       | नृचक्षा एष      | ५९      | ५९      |              |
| ६       | आ सुवयन्ता         | ४१      | ४३      |            | ३       | रायो वुध        | १२, ६६  | १३, ६७  |              |
| ७       | दैव्या होतारा      | ४२      | ४४      |            | १४०१    | अमे तव          | १०६     | १०५     | अग्नि        |
| ८       | आ नो यजं           | ४३      | ४५      |            | २       | पावकवर्चाः      | १०७     | १०६     |              |
| ९       | य इमे थावा         | ४४      | ४६      |            | ३       | ऊर्जो नपा       | १०८     | १०७     |              |
| १०      | उपावमृज            | ४५      | ४७      |            | ४       | इरज्यन्नगे      | १०९     | १०८     |              |
| ११      | सद्यो जानो         | ४६      | ४८      |            | ५       | एकतार           | ११०     | १०९     |              |
| ११६१८   | म याः सन्तु (पा ४) | १०, ४४  | १०, ८५  | अग्निपुत्र | ६       | ऋतावानं         | १११     | ११०     |              |
|         |                    |         | १३, ४५  |            | १४११    | अग्ने अन्त्रा   | ९, २८   | १०, ३५  | तापसोऽग्नि   |
| १२०११   | तीददाम             | ३३, ८०  | ३०, ८०  | बृहद्विहवः | २       | प्र नो यन्त्र   | २९      | ३७      |              |
| १२११६   | हिरण्यगर्भः        | १३, ४   | १४, ४   | हिरण्यगर्भ | ३       | सोमं राजान      | २६      | ३६      |              |
|         |                    | २३, १   | २५, १   |            | ४       | इन्द्रवायु बृह  | ३३, ८६  | X       |              |
|         |                    | २५, १०  | २७, १४  |            | ५       | अर्यमणं         | ९, २७   | १०, ३८  |              |
| २       | य आ मदा            | १३      | १७      |            | १४२१७   | अपामिदं         | १७, ७   | १८, ८   | स्तम्बमित्रः |
| ३       | यः प्राणतो         | २३, ३   | २५, ३   |            | १५०४    | वि न इन्द्र     | ८, ४४   | ८, २५   | शासः         |
|         |                    | २५, ११  | २७, १५  |            |         |                 | १८, ७०  | २०, ३९  |              |
| ४       | यम्येमे हिम        | १०      | १६      |            | १५५५    | परीमे गाम       | ३५, १८  | ३५, ५१  | शिरिम्बटः    |
| ५       | येन यौमघ्रा        | ३०, ६   | २९, ३३  |            |         |                 |         |         |              |

| सू० मं० | मन्त्रः        | वा० य० | का० य० | ऋषिः     | सू० मं० | मन्त्रः            | वा० य० | का० य० | ऋषिः        |
|---------|----------------|--------|--------|----------|---------|--------------------|--------|--------|-------------|
| १५७।१   | इमा नु कं      | २५,४६  | २७,४४  | भुवन     | १८५।१   | महि त्रीणाम        | ३,३१   | ३,३२   | सत्यवृतिः   |
| २       | यजं च नस्त     |        |        | साधनो वा | २       | नहि तेषाममा        | ३२     | ४०     |             |
| ३       | आदिन्यैरिन्द्र |        |        |          | ३       | यस्मै पुत्रासो     | ३३     | ४१     |             |
| १७०।१   | विभ्राड् बृहत् | ३३,३०  | ३२,३०  | विभ्राट् | १८६।१   | प्र ण आयंषि (पा ४) | २३,३२  | २५,३४  | उल          |
| १७३।१   | आ त्वाहार्य    | १२,११  | १३,१२  | ध्रुव    |         |                    | ३४,८   | ३४,३   |             |
| ३       | तस्मै सोमो     | १७,५२  | १८,५२  |          | १८९।१   | आयं गौ पृश्नि      | ३,६    | ३,६    | सार्पराज्ञा |
| १७७।३   | अपदयं गोपाम    | ३७,१७  | ३७,१७  | पतङ्गः   | २       | अन्तश्चरति         | ७      | ७      |             |
| १८०।२   | सृगो न भीम     | १८,७१  | २०,४०  | जय       | ३       | त्रिशद्वाम         | ८      | ८      |             |
|         |                |        |        |          | १९१।१   | संगमिन्दुयुवगे     | १५,३०  | १६,५१  | संवन्नन     |

ऋग्वेदादिमन्त्राणां वाजसनेययजुर्वेदाध्यायानुक्रमेण सूची ।

### प्रथमोऽध्यायः ।

| यजुर्मन्त्रः | काण्व य० | ऋग्वेदे | अथर्व० | साम० | यजुर्मन्त्रः       | काण्व य० | ऋग्वेदे | अथर्व०  | साम० |
|--------------|----------|---------|--------|------|--------------------|----------|---------|---------|------|
| १ मा व स्तेन | १,२      |         | ४,२१,७ |      | १०.२१. देवस्य न्वा | १३.      |         | १९,५१,२ |      |
|              |          |         |        |      | २४                 | ३६.४०    |         | ३६.४०   |      |

### द्वितीयोऽध्यायः ।

|                   |      |        |         |      |                   |      |  |            |  |
|-------------------|------|--------|---------|------|-------------------|------|--|------------|--|
| ४ वीनिहोत्रं न्वा | २,५  | ५,२६,३ |         | १५२३ | २६ सूर्यस्यावृत   | २,४८ |  | १०,५,३७    |  |
| ११ देवस्य न्वा    | २२   |        | १९,५१,२ |      | २७                | ५०   |  | ५०         |  |
| २२ संबर्हिण्डक्ता | ४०   |        | ७,९८,१  |      | २९ अमये कव्य      | ५४   |  | १८,४,७१    |  |
| २४ संवर्चसा       | ४४   |        | ६,५३,३  |      | ३० परापुरो निपुरो | ५५   |  | १८,२,२८    |  |
|                   | ९,१६ |        |         |      | ३२ नमो वः पितुगे  | ५७   |  | १८,४,८१-८४ |  |

### तृतीयोऽध्यायः ।

|                   |      |          |         |                   |                    |          |   |      |  |
|-------------------|------|----------|---------|-------------------|--------------------|----------|---|------|--|
| १ समिधामि         | ३,१  | ८,४४,१   |         | १६ अम्य पन्ना     | २२                 | २,५४,१   |   | ७५५  |  |
| २ मुसमिद्धाय      | २    | ५, ५, १  |         | २२ उप न्वाग्ने    | ३०                 | १, १, ७  |   | १४   |  |
| ३ तं त्वा समिद्धि | ३    | ६,१६,११  |         | २३ राजन्तमन्वरा   | ३१                 | ८        |   |      |  |
| ६ आयं गौः         | ६    | १०,१८९,१ | ६,३१,१  | २४ म नः पितेव     | ३२                 | ९        |   |      |  |
|                   |      |          | २०,४८,४ | २५ अग्ने त्वं नो  | ३३                 | ५,२४,१   |   | ४४८, |  |
| ७ अन्तश्चरति      | ७    | २        | ६,३१,२  |                   |                    |          |   | ११०७ |  |
|                   |      |          | २०,४८,५ |                   | ३३ वसुगन्निर्वसु   | ३३       | २ | ११०८ |  |
| ८ त्रिशद्वाम      | ८    | ३        | ६,३१,३  | ६३२               | २६ तं त्वा शोचिष्ट | ३४       | ४ | ११०९ |  |
|                   |      |          | २०,४८,६ |                   | ३७ रा नो बोधि      | ३५       | ३ |      |  |
| ११ उपप्रयंते      | १७   | १,७४, १  |         | २८ सोमानं स्वरुणं | ३६                 | १,१८,१   |   | १३९, |  |
| १२ अग्निर्मूर्धा  | १८   | ८,४४,१६  |         |                   |                    |          |   | १४६३ |  |
| १३ उभा वामि       | १९   | ६,६०,१३  |         | २९ यो रेवान्यो    | ३७                 | २        |   |      |  |
| १४ अयं ते योनि    | २०   | ३,२९,१०  | ३,२०,१  | ३० मा न शंसो      | ३८                 | ३        |   |      |  |
| १५ अयमिह          | ३,२१ | ४, ७, १  |         | ३१ महि त्रीणामवो  | ३९                 | १०,१८५,१ |   |      |  |

| य० सं०               | का० य० | ऋग्वेद   | अथर्व० | साम० । | य० सं०             | का० य० | ऋग्वेद  | अथर्व०  | साम० |
|----------------------|--------|----------|--------|--------|--------------------|--------|---------|---------|------|
| ३२ नहि तेषाममा       | ३,४०   | १०,१८५,२ |        |        | ५१ अक्षन्नामिदन्त  | ५९     | १,८२,२  | १८,४,६१ | ४१५  |
| ३३ ते हि पुत्रासो    | ४२     | ३        |        |        | ५२ सुसन्तश्च त्वा  | ६०     | ३       |         |      |
| ३४ कदा चन            | ४२     | ८,५१,७   | ३००    |        | ५३ मनो न्वाङ्गामहे | ६१     | १०,५७,३ |         |      |
| ३५ तत्सवितुर्व       | ४३     | ३,६२,१०  | १४६२   |        | ५४ क्रत्वे दक्षाय  | ६२     |         | ६,१९,२  |      |
| ३६ परि ते दृढभो      | ४४     | ४, ९, ८  |        |        | ,, ज्योक् च सूर्ये | ६२     | १०,५७,४ | १, ६, ३ |      |
| ४१ गृह्णामा बिभी     | ४८     |          | ७,६०१  |        | ५५ पुनर्न पितरो    | ६३     |         | ५       |      |
| ४२ येषाम-येति        | ४९     |          | ३      |        | ५६ वर्य गोम        | ६४     |         | ६       |      |
| ४३ उपहृता            | ५०     |          | ५      |        | ६० व्यम्बर्कं यजा  | ६८     | ७,५९,१० |         |      |
| ४६ मो पृण इन्द्रात्र | ५४     | १,१७३,१२ |        |        | ,,                 | ६९     |         | १४,१,१७ |      |
| ५० पूर्णा दवि परा    | ५७     |          | ३,१०,७ |        | ६२ ज्यायुष         | ७४     |         | ५,२८,७  |      |

## चतुर्थोऽध्यायः ।

|                    |       |          |         |                       |    |         |        |
|--------------------|-------|----------|---------|-----------------------|----|---------|--------|
| २ आपो अम्मान्      | ४,२,३ | १०,१७,१० | ६,५१,२  | २५ ऊर्वा यम्या        | ३५ |         | ७,१४,० |
| ३ महीना पयोऽमि     | ४     |          | २,१७,६  | ३० अमन्त्राद          | ४२ | ३,३०,९  |        |
| ८ विश्वो देवस्य    | ९     | ५,५०,१   |         | ,, आर्गादङ्गिवा       | ४० | ८,४२,१  |        |
| १५ पुनर्मन         | २०    |          | ६,५३,०  | ३१ वनेषु व्यन्तरिक्षं | ४३ | ५,८५,२  |        |
| १६ त्वमग्ने व्रतपा | २१    | ८,११,१   | १९,५९,१ | ३५ नमो मित्रस्य       | ४७ | १०,३७,१ |        |
| २५ अभि न्यं        | ३४    |          | ७,१४,१  | ३७ या ते धामानि       | ४९ | १,९१,१९ |        |

## पञ्चमोऽध्यायः ।

|                       |     |         |         |                      |    |         |         |
|-----------------------|-----|---------|---------|----------------------|----|---------|---------|
| ४ अनावग्निश्चरति      | ५,४ |         | ४,३९,९  | २० प्र तद्विष्णु     | २६ |         | ७,२६,०  |
| १४ युज्यते मन         | १९  | ५,८१,१  |         | ,, यस्यारुतु         | २६ | १,१५४,० | ३       |
| १५ इदं विष्णुविचक्रमे | २०  | १,२०,१७ | ७,०६, ४ | २२ देवस्य त्वा सवितु | २८ |         | १९,५१,२ |
|                       |     |         | १६५९    | २६ ,,                | ३३ |         | "       |
| १६ इरावर्ता धेनुमती   | २१  | ७,९९, ३ |         | २९ परि त्वा गिर्वणे  | ३७ | १,१०,१० |         |
| १८ विष्णोर्नृकं       | २४  | १,१५४,१ | ७,२६,१  | ३६ अग्ने नय सुपथा    | ४५ | १,१८९,१ | ४,३९,१० |
| १९ दिवो वा विष्ण      | २५  |         | ७,०६,८  | ३८,४१ उरु विष्णो     | ५१ |         | ७,२६,३  |

## षष्ठोऽध्यायः ।

|                      |         |         |         |                       |    |         |            |
|----------------------|---------|---------|---------|-----------------------|----|---------|------------|
| १ देवस्य त्वा सवितुः | १९,५१,२ |         |         | १७ उदमापः प्रवहता     | ३० | १,२३,०० | ७,८९,३     |
| शुन्यन्ताङ्गोक्ताः   | १       |         | १८,४,६७ | २२ मापो मौपथा         | ३० |         | ७,८३,२     |
| ३ या ते धामान्यु     | ३       | १,१५४,६ |         | २४ अमर्या उप          | ३५ | १,२३,१७ | १, ४,२     |
| ४ विष्णो कर्माणि     | ५       | १,२२,१९ | ७,०६,६  | २९ यमग्ने प्रम्मु     | ४२ | १,२७, ७ |            |
| ५ तद्विष्णोः परमं    | ६       | १,२२,२० | ७       | ३६ प्रागपागुदगधराग    | ४९ |         | २०,१३४,१-६ |
| ९,३० देवस्य त्वा     | १०      |         | १९,५१,२ | ३७ त्वमङ्ग प्रर्शमिषो | ५० | १,८४,१९ | २४७, १७२३  |

य० मं० का० य० ऋग्वेद अथर्व० साम० । य० मं० का० य० ऋग्वेद अथर्व० साम०

## सप्तमोऽध्यायः ।

|  |      |
|--|------|
| ७ आ वायो भष ७, ६ ७, ९२, १                |      |
| ८ इन्द्रवायु डमे ७ १, २, ४               |      |
| ९ अयं वा मित्रा० ८ २, ४१, ४              | ९१०; |
|  | ३०६  |
| १० राया वयं ९ ४, ४२, १०                  |      |
| ११ या वा वशा १० १, २२, ३                 |      |
| १२ तं प्रत्नया ११ ५, ४४, १               |      |
| १६ अयं वेन० १५ १०, १२३, १                |      |
| १७ मनो न येषु १६ १०, ६१, ३               |      |
| १९ ये देवामो २० १, १३९, ११ १९, २७, ११-१३ |      |
| २४ मर्धानं दिवो २६ ६, ७, १               | ११४० |
| २५ ऋक् ऋक्वेण २८ १०, १७३, ६ ७, ९४, १     |      |
| २६ यस्ते द्राम २९ १०, १७, १०             |      |
| ३१ इन्द्राग्नी ३१ ३, १२, १               | ६६९  |
| ३२ आ घा ये० ३२ ८, ४५, १                  | १३३. |
|  | १३३८ |

|   |            |
|---|------------|
| ३३ ओमास० ३३ १, ३, ७                             |            |
| ३४ विश्वे देवास ३४ २, ४१, १३                    |            |
|   | ६, ५२, ७   |
| ३५ इन्द्र मरुत्व ३५ ३, ५१, ७                    |            |
| ३६ मरुत्वन्तं ३६ ३, ४७, ५                       |            |
| ३७ यजोषा इन्द्र ३८ २                            |            |
| ३८ मरुत्वा इन्द्र २८, १० १                      |            |
| ३९ मर्हा इन्द्रो ७, ३९ ६, १९, १                 |            |
| ४० ,, ,, ४० ८, ६, १ २०, १३८, १ १३०७             |            |
| ४१ उदु न्यं जात० ८, २३ १, ५०, १ १३, २, १६ ३१    |            |
|   | २०, ४७, १३ |
| ४२ चित्रं देवानां ८, २४ १, ११५, १ १३, २, ३५ ६२९ |            |
|   | ९, ७       |
| ४३ अग्ने नय ८ १, १८९, १ ४, ३९, १०               |            |
| ४८ कोऽदात्कम्मा १४ ३, २९, ७                     |            |

## अष्टमोऽध्यायः ।

|                                   |           |
|-----------------------------------|-----------|
| २ कदा चन ८, १ ८, ५१, ७            |           |
| ३ ,, ,, प्रयु० २ ८, ५२, ७         |           |
| ४ यज्ञो देवाना ३ १, १०७, १        |           |
| ६ वाममथ ५ ६, ७१, ६                |           |
| १४, १६ स वर्चसा ९, १६ ६, ५३, ३    |           |
| १५ समिन्द्र णो ९, १५ ५, ४२, ४     |           |
| १७ धाता रातिः १७ ३, ८, २          |           |
|                                   | ७, १७, ४  |
| १८ मुगा वो देवा १८ ७, ९७, ४       |           |
| १९ या आवह १९ ३                    |           |
| २१ देवा गातुविदो २१ ७-८           |           |
| २२ यज्ञ यज्ञं गच्छ २२ ५           |           |
| ,, एष ते यज्ञो ,, ६               |           |
| २३ उर्मं हि राजा २३ १, २४, ८      |           |
| ३० एकपदी० २९ १, १६४, ४१ ९, १०, २१ |           |
|                                   | १०, १, २४ |
|                                   | १३, १, ४२ |

|   |            |
|---|------------|
| ३१ मरुतो यस्य ३० १, ८६, १ २०, १, २          |            |
| ३२ मही योः ३१ १, २२, १३                     |            |
| ३३ आतिष्ठ वृत्र ८, १५ १, ८४, ३ १०२९         |            |
| ३४ युक्त्वा हि केचि १४ १, १०, ३ १३४६        |            |
| ३५ इन्द्रमिदरी १६ १, ८४, २ १०३०             |            |
| ३८ अग्ने पवस्व २० ९, ६६, २१                 |            |
| ३९ उतिष्ठन्नोजसा २१ ८, ७६, १० २०, ४२, ३ ९८८ |            |
| ४० अदधमस्य २२ १, ५०, ३ १३, २, १८ ६३४        |            |
|   | २०, ४७, १५ |
| ४१ उदु न्यं जात० ९, ६ १ १३, २, १६           |            |
|   | २०, ४७, १३ |
| ४४ वि न इन्द्र ८, २५ १०, १५२, ४ १८६८        |            |
| ४५ वाचस्पति २६ १०, ८१, ७                    |            |
| ५३ युवं तमिन्द्रा ९, ३६ १, १३२, ६           |            |
| ६३ आपवस्व x ९, ६३, १८                       |            |

| य० सं० | का० य० | ऋग्वेद | अथर्व० | साम० | । | य० सं० | का० य० | ऋग्वेद | अथर्व० | साम० |
|--------|--------|--------|--------|------|---|--------|--------|--------|--------|------|
|--------|--------|--------|--------|------|---|--------|--------|--------|--------|------|

## नवमोऽध्यायः ।

|                  |      |         |         |  |  |                 |      |          |         |  |
|------------------|------|---------|---------|--|--|-----------------|------|----------|---------|--|
| ६ आग्वन्तर       | १०,९ | १,२३,१९ | १, ४, ४ |  |  | २५ वाजस्य नु    | ३३   |          | ३,२०,८  |  |
| ८ तानर हा        | ११   |         | ६,९२,१  |  |  | २६ सोम राजानं   | ३६   | १०,१४१,३ | ३,२०,४  |  |
| ९ जयो यमे        | १२   |         | २       |  |  | २७ अर्यमणं      | ३८   | ५        | ७       |  |
| १४ एष मय वाजा    | २०   | ४,४०,४  |         |  |  | २८ अग्ने अच्छा० | ३५   | १        | २       |  |
| १५ उत स्माग्य    | २१   | ३       |         |  |  | २९ प्र नो यच्छ० | ३७   | २        |         |  |
| १६ श नो भवन्तु   | २२   | ७,३८,७  |         |  |  | ३० देवस्य त्वा  | ३९   |          | १९,५१,२ |  |
| १७ ने नो अवेन्तो | २३   | १०,६४,६ |         |  |  | ३७ अग्ने महस्य  | ११,३ | ३,२४,१   | १९,३२,९ |  |
| १८ वाजे वाजेऽवत  | २४   | ७,३८,८  |         |  |  | ३८ देवस्य त्वा  | ३    |          | १९,५१,२ |  |
| २४ न जग्मेमा     | ३४   |         | ३,२०,८  |  |  |                 |      |          |         |  |

## दशमोऽध्यायः ।

|                 |       |           |        |  |  |                   |       |          |          |  |
|-----------------|-------|-----------|--------|--|--|-------------------|-------|----------|----------|--|
| ५ तमस्य स्वाहा  | ११,१२ | १९,४३,१   |        |  |  | २४ ह म शुचिपद     | ३४    | ४,४०,५   |          |  |
| ५ सोमाय स्वाहा  | १२    | ५         |        |  |  | २५ इयदम्यायु      | ११,३५ |          | २,१७,४   |  |
| ५ अशाय स्वाहा   | १३    | ६         |        |  |  | २७ निपसाद         | ३८    | १,२५,१०  |          |  |
| १९ प पर्वतस्य   | २८    | १२,२,४१   |        |  |  | ३२ कुर्विदज यव    | ११,४५ | १०,१३१,२ | २०,१२५,२ |  |
| २० गतापते न     | २९    | १०,१२१,१० | ७,८०,३ |  |  | ३३ युव गगम        | ०१,४६ | ४        | ४        |  |
| ५ नय स्यम (च प) |       | ६,६०,२    |        |  |  |                   | २२,६१ |          |          |  |
|                 |       | ७,७९,४    |        |  |  |                   |       |          |          |  |
| २० मा त दन्त    | ३०    | ५,३३,३    |        |  |  | ३४ पुत्रमिव पितरा | ४७    | ५        | ५        |  |

## एकादशोऽध्यायः ।

|                  |      |         |         |      |    |                     |    |          |        |    |
|------------------|------|---------|---------|------|----|---------------------|----|----------|--------|----|
| ४ युक्ते मन      | १२,४ | ५,८१, १ |         |      |    | २६ परि त्वामे       | २६ | १०,८७,२२ | ७,७१,१ |    |
| ५ तुने वा त्रम   | ५    | १०,१३,१ | १८,३,३९ |      |    |                     |    |          | ८,३,२२ |    |
| ६ यस्म पयाण०     | ६    | ५,८१,३  |         |      |    | २७ त्वमग्ने गुभिम   | २७ | २,१,१    |        |    |
| ९ देवस्य ता      | ९    | १९,५१,२ |         |      |    | ३२ त्वामग्ने पुष्क० | ३२ | ६,१६,१३  |        | ९  |
| २८               | २८   |         |         |      |    | ३३ तमु त्वा दयन्त   | ३३ | १४       |        |    |
| १४ ने म योगे     | १४   | १,३०,७  | १९,२४,७ | १६३, |    | ३४ तमु त्वा पाथ्यो  | ३४ | १५       |        |    |
|                  |      |         | २०,२६,१ | ७४३  |    | ३५ सीद होताः        | ३५ | ३,२९,८   |        |    |
| १७ जन्वश्रमस्या  | १७   | ७,८०,४  |         |      |    | ३६ नि होता होतृ०    | ३६ | २,९,१    |        |    |
|                  |      | १८,१,२७ |         |      |    | ३७ म सीदस्व         | ३७ | १,३६,९   |        |    |
|                  |      | २८      |         |      |    | ४१ उद् निष्ट        | ४१ | ८,२३,५   |        |    |
| २३ आ त्वा त्रिषम | २३   | २,१०,४  |         |      |    | ४२ ऊर्ध्व ऊ पु      | ४२ | १,३६,१३  |        | ५७ |
| २४ आ निधत        | २४   | ५       |         |      |    | ४३ म जातो गर्भो     | ४३ | १०,१,२   |        |    |
| २५ परि वाजपति    | २५   | ४,१५,३  |         |      | ३० | ४६ अग्न आ० (च पा)   | ४७ | ६,१६,१०  | १,६६०  |    |



| य० मं० | का० य०               | ऋग्वेद   | अथर्व०   | साम० । | य० मं० | का० य०               | ऋग्वेद     | अथर्व०    | साम० |
|--------|----------------------|----------|----------|--------|--------|----------------------|------------|-----------|------|
| ४९     | वि पाजसा १२, ५०      | ३, १५, १ |          |        | ६७     | विश्वो देवस्य ६८     | ५, ५०, १   |           |      |
| ५०     | आपो हि ष्ठा ५१       | १०, ९, १ | १, ५, १, | १८३७   | ७०     | द्रवन्न मर्षिरा ७१   | २, ७, ६    |           |      |
| ५१     | यो व. शिवतमो ५२      | २        | २        | १८३८   | ७१     | परम्या अधि ७२        | ८, ७५, १५  |           |      |
| ५२     | तम्मा अरं गमा ५३     | ३        | ३        | १८३९   | ७३     | यदग्ने कानि ७४       | ८, १०२, २० | १९, ६४, ३ |      |
| ६२     | मित्रस्य चर्य० ६४    | ३, ५९, ६ |          |        | ७४     | यदस्युपजिहिका ७५     | २१         | ॥         |      |
| ६३     | मुपाणिः स्वङ्गुरि ६५ | २, ३२, ७ | ७, ४६, २ |        | ८१     | स शितं मे व्रद्धा ८२ |            | ३, १९, १  |      |

## द्वादशोऽध्यायः ।

|    |                     |            |           |     |                              |                            |            |           |    |
|----|---------------------|------------|-----------|-----|------------------------------|----------------------------|------------|-----------|----|
| १  | दशानो १३, १         | १०, ४५, ८  |           |     | ४४                           | सत्याः सन्तु(च पा.) १३, ४५ | १०, ११६, ८ | १९, ४२, ३ |    |
| २५ |                     | २६         |           |     | ॥ पुनस्त्वादित्या(प्र पा.) ॥ |                            |            | १२, २, ६  |    |
| २  | नक्तोषासा २         | १, ९६, ५   |           |     | ४५                           | अपेत वान ४६                | १०, १४, ९  | १८, १, ५५ |    |
| ३  | विश्वरूपाणि ३       | ५, ८१, २   | ७, ७३, ६  |     | ४७                           | अय मो ४८                   | ३, २२, १   |           |    |
| ६  | अकन्ददग्नि ७        | १०, ४५, ४  |           |     | ४८                           | अग्ने यत्ने ४९             | २          |           |    |
| २१ |                     | २२         |           |     | ४९                           | अग्ने दिवो ५०              | ३          |           |    |
| ३३ |                     | ३४         |           |     | ५०                           | पुर्गायासो ५१              | ४          |           |    |
| ११ | आ त्वाहार्यम० १२    | १०, १७३, १ | ६, ८७, १  |     | ५१                           | इडामग्ने ५२                | ५          |           | ७६ |
| १२ | उदुत्तमं वरुण १३    | १, २४, १५  | ७, ८३, ३  | ५८९ |                              |                            | ३, ५, ११   |           |    |
|    |                     |            | १८, ४, ६९ |     |                              |                            | ३, ६, ११   |           |    |
| १३ | अग्ने वृद्धन्मप० १४ | १०, १, १   |           |     | ५२                           | अयं ते योनि ५३             | ३, २२, १०  | ३, २०, १  |    |
| १४ | ह सः शुचिपद् १५     | ४, ४०, ५   |           |     | ५५                           | ता अम्य मृद० ५६            | ८, ६९, ३   |           |    |
| १८ | दिवस्पति प्रथमं १९  | १०, ४५, १  |           |     | ५६                           | इन्द्रं विश्वा ५७          | १, ११, १   | ३४३,      |    |
| १९ | विद्या ते अग्ने २०  | २          | १, १३, ३  |     |                              |                            |            | ८२७       |    |
|    |                     |            | १३, ३, २१ |     |                              |                            |            |           |    |
| २० | समुद्रे त्वा २१     | ३          |           |     | ५८                           | सं वा मना मि १३, ५९        | ६, ९४, १   |           |    |
| २२ | ध्राणामुदारो २३     | ५          |           |     | ६३                           | नमः सु ते ६४               | ३, ६३, २   |           |    |
| २३ | विश्वस्य वेतुः २४   | ६          |           |     |                              |                            | ३, ८४, ३   |           |    |
| २४ | उशिकपावको २५        | ७          |           |     | ॥ यमेन त्वं ॥                |                            | ६, ६३, ३   |           |    |
| २६ | यस्ते अय २७         | ९          |           |     |                              |                            | ६, ८४, ४   |           |    |
| २७ | आ तं भज २८          | १०         |           |     | ६५                           | यं ते देवा ६६              | ६, ६३, १   |           |    |
| २८ | त्वाग्ने यजमाना २९  | ११         |           |     | ६६                           | निवेशन ६७                  | १०, १३९, ३ | १०, ८, ४२ |    |
| २९ | अस्ताव्यमिर्नरा ३०  | १२         |           |     | ६७                           | सीरा यु त्रन्ति ६८         | १०, १०१, ४ | ३, १७, १  |    |
| ३० | समिधामि ३१          | ८, ४४, १   |           |     | ६८                           | युनक्त सीरा ६९             | ३          | २         |    |
| ३४ | प्रप्रायमामि ३५     | ७, ८, ४    |           |     | ६९                           | शुन सु फाला ७०             | ४, ५७, ८   | ५         |    |
| ३६ | आस्वमे ३७           | ८, ४३, ९   |           |     | ७०                           | घृतेन गीता ७१              |            | ९         |    |
| ३७ | गर्भो अस्थोषधी ३८   |            | ५, २५, ७  |     | ७१                           | लाङ्गलं पवीर ७२            |            | ३         |    |
|    |                     |            | ६, ९५, ३  |     | ७५                           | या ओषधीः ७६                | १०, ९७, १  |           |    |
| ४२ | बोधा मे अस्य ४३     | १, १४७, २  |           |     | ७६                           | शतं वो अम्ब ७७             | २          |           |    |
| ४३ | स बोधि ४४           | २, ६, ४    |           |     |                              |                            |            |           |    |

| य० मं०                        | क्रा० य० | ऋग्वेद    | अथर्व०      | साम० | य० मं०                | क्रा० य० | ऋग्वेद     | अथर्व०    | साम० |
|-------------------------------|----------|-----------|-------------|------|-----------------------|----------|------------|-----------|------|
| ७७ ओषधीः प्रति०               | १३, ७८   | १०, ९७, ३ |             |      | मुञ्चन्तु ( प्र पाद ) |          |            | ११, ६, ७  |      |
| ,, पुष्पवर्ताः ( द्वि पा ) ,, |          |           | ,, ८, ७, २७ |      | ९१ अवपतन्ती०          | १३, ९२   | १०, ९७, १७ |           |      |
| ७८ ओषधीरिति                   | ७९       |           | ४           |      | यं जीवम०              | ,,       |            | ६, १०९, २ |      |
| ,, सनेयमथं ( द्वि पा ) ,,     |          |           | ४, ९, ७     |      | ९२ या ओषधीः           | ९३       | १८         | ६, ९६, १  |      |
| ७९ अध्वये वो                  | ८०       | ५         |             |      | ९३ ,,                 | ९४       | १९         |           |      |
| ८० यत्रौषधीः                  | ८१       | ६         |             |      | ९४ याश्चेदमुष         | ९५       | २१         |           |      |
| ८१ अर्वावर्ता                 | ८२       | ७         |             |      | ९५ मा वो रिषत्        | ९७       | २०         |           |      |
| अस्मा अरि० (च पा)             |          |           | ८, ७, २७    |      | ९६ ओषधय               | ९८       | २२         |           |      |
| ८२ उच्छुष्मा                  | ८३       | ८         |             |      | १०१ त्वमुत्तमास्यो    | १००      | २३         | ६, १५, १  |      |
| ८३ इष्कृतिर्नाम               | ८४       | ९         |             |      | १०२ मा मा हि सी०      | १०१      | १०, १२१, ९ |           |      |
| ८४ अति विरवा.                 | ८५       | १०        |             |      | कस्मै देवाय           | ,,       |            | ४, २, १-८ |      |
| ८५ यन्दिमा वाज०               | ८६       | ११        |             |      | १०६ अमे तव            | १०५      | १०, १४०, १ | १८१६      |      |
| ८६ यस्यौषधीः                  | ८७       | १२        | ४, ९, ४     |      | १०७ पावकवर्चा         | १०६      | २          | १८१७      |      |
| ( द्वि पाद )                  |          |           | ९, ३, १०    |      | १०८ ऊर्जो नपा०        | १०७      | ३          | १८१८      |      |
| ८७ साक यदम                    | ८८       | १३        |             |      | १०९ ऽरज्यन्ने         | १०८      | ४          | १८१९      |      |
| ८८ अन्या वो                   | ८९       | १४        |             |      | ११० इष्कर्तारम०       | १०९      | ५          | १८२०      |      |
| ८९ या फलिनीया                 | ९०       | १५        | ८, ७, २७    |      | १११ ऋतावानं           | ११०      | ६          | १८२१      |      |
| वृद्धमपति                     |          |           | ६, ९६, १    |      | ११२ आयायस्व           | १११      | १, ९६, १६  |           |      |
| स्ता नो मु०                   |          |           | ७, ११२, १   |      | ११३ स ते पथा मि११२    |          | १८         | ६०३       |      |
| ,,                            |          |           | १४, २, ४५   |      | ११४ आयायस्व           | ११३      | १७         |           |      |
| ९० मुञ्चन्तु मा               | ९१       | १६        | ६, ९६, २    |      | ११५ आ ते वस्मो        | ११४      | ८, ११, ७   | ८, ११६६   |      |
|                               |          |           | ८, ७, २८    |      | ११६ तुभ्यं ता         | ११५      | ८, ४३, १८  |           |      |
|                               |          |           | ७, ११२, २   |      | ११७ अग्निः प्रिययु    | ११६      |            | ६, ३६, ३  |      |

## त्रयोदशोऽध्यायः ।

|                  |       |            |          |  |                   |        |           |      |  |
|------------------|-------|------------|----------|--|-------------------|--------|-----------|------|--|
| ३ प्रव्रज जजानं  | १४, ३ | ४, १, १    |          |  | १४ अग्निर्मर्धा   | १४, १४ | ८, ४४, १६ | २७,  |  |
|                  |       | ५, ६, १    |          |  |                   |        |           | १५३२ |  |
| ४ हिरण्यगर्भ     | ४     | १०, १०१, १ | ४, २, ७  |  | १५ भुवो यजम्य     | १५     | १०, ८, ६  |      |  |
| स दाधार          |       | ११, ५, १   |          |  | २७ मधु वाता       | २९     | १, ९०, ६  |      |  |
| कस्मै देवाय      |       | ४, २, १-८  |          |  | २८ मयु नक्तमु०    | ३०     | ७         |      |  |
| ५ द्रामश्चस्कन्द | ५     | १०, १७, ११ |          |  | २९ मयुमाजो        | ३१     | ८         |      |  |
| ९ कृणुव पाजः     | ९     | ४, ४, १    |          |  | ३० मही र्याः      | ३४     | १, २२, १३ |      |  |
| १० तव प्रमास     | १०    | २          |          |  | ३३ विणो कर्माणि   | ३५     | १९        | १६७१ |  |
| ११ प्रति स्पशो   | ११    | ३          |          |  | ३६ अमे युक्वा हि  | ३८     | ६, १६, ४३ | २५,  |  |
| १२ उदमे तिष्ठ    | १२    | ४          |          |  |                   |        |           | १३८३ |  |
| १३ ऊर्वो भव      | १३    | ५          |          |  | ३७ युक्वा हि      | ३९     | ८, ७५, १  |      |  |
| प्रमृणीहि अन्न   |       |            | १३, १, ३ |  | ३८ सम्यक स्रवन्ति | ४०     | ४, ५८, ६  |      |  |

| य० मं०          | का० य० | ऋग्वेद    | अथर्व०      | साम० | य० मं०         | का० य० | ऋग्वेद   | अथर्व०   | साम० |
|-----------------|--------|-----------|-------------|------|----------------|--------|----------|----------|------|
| ४६ चित्रं देवा० | १४, ४८ | १, ११५, १ | १३, २, ३५   |      | ५१ अजो ह्यमे   | १४, ५३ |          | ४, १४, १ |      |
|                 |        |           | २०, १०७, १४ |      | ५२ त्वं यविष्ठ | ५४     | ८, ८४, ३ | ९, ५, १३ |      |

### चतुर्दशोऽध्यायः ।

२३ ब्रध्नस्य विष्टपं १५, २६ ११, ३, ५०

### पञ्चदशोऽध्यायः ।

|                     |       |                     |                    |                    |        |                     |           |
|---------------------|-------|---------------------|--------------------|--------------------|--------|---------------------|-----------|
| १ अग्ने जातान       | १६, १ | ७, ३४, १            |                    | ३७ क्षपो राजन्नुत  | १६, ५९ | १, ७९, ६            | १५६३      |
| २ सहसा जातान        | २     | ३५, १               |                    | ३८ मद्रो नो अग्नि  | ६०     | ८, १९, १९           | १११, १५५९ |
| २० अग्निर्मर्धा     | ४१    | ८, ४४, १६           | २७, १५३२           | ३९ मद्रा उत्त      | ६१     | २०                  | १५६०      |
| २१ अयमग्निः         | ४२    | ८, ७५, ४            |                    | ४० येना समुत्पु    | ६२     | "                   | "         |
| २२ त्वामग्ने पुक्क० | ४३    | ६, १६, १३           | ९                  | ४१ अग्नि तं मन्ये  | ६३     | ५, ६, १             | ४२५, १७३७ |
| २३ भुवो यज्ञस्य     | ४४    | १०, ८, ६            |                    | ४२ सो अग्नियों     | ६४     | २                   | १७३९      |
| २४ अबो-यमि          | ४५    | ५, १, १             | १३, २, ४६ ७३, १७४६ | ४३ उभे सुध्वन्त    | ६५     | ९                   |           |
| २५ अबोचाम           | ४६    | ५, १, १२            |                    | ४४ अग्ने तमयाध्वं  | ६६     | ४, १०, १            | ४३४ १७७७  |
| २६ अयमिह            | ४७    | ४, ७, १             |                    | ४५ अधा ह्यग्ने     | ६७     | २                   |           |
| २७ जनस्य गोपा       | ४८    | ५, ११, १            | ९०७                | ४६ एभिर्नो         | ६८     | ३                   | १७७९      |
| २८ त्वामग्ने अग्नि  | ४९    | ६                   | ९०८                | ४७ अग्नि- होतारं   | ६९     | १, १२७, १ २०, ६७, ३ | ४६५, १८१३ |
| २९ सखायः सं वः      | ५०    | ५, ७, १             |                    | ४८ अग्ने त्वं      | ७०     | ५, २४, १            | ४४८, ११०७ |
| ३० स समिदयुवसे      | ५१    | १०, १९१, १ ६, ६३, ४ |                    | वसुरग्निर्वसु      |        | २                   | ११०८      |
| ३१ त्वा चित्रश्रव   | ५३    | १, ४५, ६            |                    | तं त्वा शोचिष्ठ    |        | ४                   | ११०९      |
| ३२ एना वो अग्नि     | ५४    | ७, १६, १            | ४५, ७४९            | ५५ येन वहसि        | ७७     | ९, ५, १७            |           |
| ३३ विश्वस्य दत्त    | ५५    | २                   | ७५०                | ५६ अयं ते योनिः    | ७८     | ३, २९, १० ३, २०, १  |           |
| ३४ स दुद्रवत        | ५६    | "                   |                    | ६० ता अस्य         | ८१     | ८, ६९, ३            |           |
| ३५ अग्ने वाजस्य     | ५७    | १, ७९, ४            | ९९, १५६१           | ६१ इन्द्रं विश्वा० | ८२     | १, ११, १ ३४३, ८२७   |           |
| ३६ स इधानो          | ५८    | ५                   | १५६२               | ६२ प्रोथदश्वो      | ८३     | ७, ३, २             | १२२०      |

### षोडशोऽध्यायः ।

|               |                  |           |                    |        |                    |
|---------------|------------------|-----------|--------------------|--------|--------------------|
| ४ यथा नः      | १७, ४ १०, १४१, ४ | ३, २०, ६  | ४७ द्रापे अन्धस    | १७, ४७ | ६, ५७, ३           |
| ५ अर्होश्च स  | ५ १, १९१, ८      | ४, ९, ९   | ४८ इमा रुद्राय     | ४८     | १, ११४, १          |
| १५ मा नो महा  | १५ १, ११४, ७     | ११, २, २९ | ५० परि नो रुद्रस्य | ५०     | २, ३३, १४ ४, २१, ७ |
| १६ मा नमृतोके | १६               | ८         | ६४-६६ यं द्विप्सो  | ६४     | ३, २७, १-६         |

य० मं० का० य० ऋग्वेद अथर्व० साम० । य० मं० का० य० ऋग्वेद अथर्व० साम०

## सप्तदशोऽध्यायः ।

|                                  |                    |               |                      |                            |
|----------------------------------|--------------------|---------------|----------------------|----------------------------|
| ५ हिमस्य त्वा १८, ६              | ६, १०, ६, ३        |               | ४७ असौ या सेना ४७    | १० (परिशिष्ट) ३, २, ६ १८६० |
| ७ अपामिदं ८ १०, १४२, ७           | २                  |               | ४८ यत्र बाणाः १८, ४८ | ६, ७५, १७ १८६६             |
| ८ अग्ने पावक ९ ५, २६, १          | १५२१               |               | शर्मयच्छतुः (च० पा०) | १९, ९, १२                  |
| ९ स न पावक १० १, १२, १०          |                    |               | ४९ मर्माणि ते ४९     | १८ ७, ११८, १ १८७०          |
| १० पावकया ११ ६, १५, ५            |                    |               | ५० उदेनमुत्तरा ५०    | ६, ५, १                    |
| १६ अग्निनास्तिग्मेन १६ ६, १६, २८ | ८, ३, २३           | २२            | ५१ इन्द्रं प्रनरा ५१ | २                          |
| १७ य इमा विश्वा १७ १०, ८१, १     |                    |               | ५२ यस्य कुर्मो ५२    | १०, १७३, ३ ३               |
| १८ किं स्विदामी० १८              | २                  |               |                      | ६, ८७, ३                   |
| १९ विश्वतश्चक्षु० १९             | ३                  |               | ५८ सूर्यरश्मि० ५८    | १०, १३९, १                 |
| २० किं स्विद्वन २०               | ४                  |               | ५९ विमान एष ५९       | २                          |
| २१ या ते धामानि २१               | ५                  |               | ६० उक्षा समुद्रो ६०  | ५, ४७, ३                   |
| २२ विश्वकर्मन्तविषा २२           | ६                  | १५८९          | ६१ इन्द्रं विश्वा ६१ | १, ११, १ ३४३               |
| २३ वाचस्पति २३                   | ७                  |               |                      | ८२७                        |
| २५ चक्षुष पिता २५ १०, ८२, १      |                    |               | ६५ कम वर्ममिना ६५    | ४, १४, २                   |
| २६ विश्वकर्मा २६                 | २                  |               | ६७ पृथिव्या अह० ६७   | ३                          |
| २७ यो न पिता २७                  | ३                  | २, १, ३       | ६८ स्वयन्तो ६८       | ४                          |
| २८ त आयजन्त २८                   | ४                  |               | ६९ अग्ने प्रेहि ६९   | ५                          |
| २९ परा दिवा २९                   | ५                  |               | ७० नक्तोपासा ७०      | १, ९६, ५                   |
| ३० तमिर्त्रम ३०                  | ६                  |               | ७४ तां मवितु० ७४     | ७, १५, १                   |
| ३१ न तं विदाथ ३१                 | ७                  |               | ७५ विधेम ते ७५       | २, ९, ३                    |
| ३३ आशु शिशानो ३३ १०, १०३, १      | १९, १३, २ १८४९     |               | ७६ प्रदो अग्ने ७६    | ७, १, ३ १३७५               |
| ३४ संकन्दनेना ३४                 | २                  | ३ १८५०        | ७७ अग्ने तमयाथं ७७   | ४, १०, १ ४३४,              |
| ३५ स इषुहस्तैः ३५                | ३                  | ४ १८५१        |                      | १७७७                       |
| ३६ बृहस्पते परि ३६               | ४                  | ८ १८५२        | ८८ धृत मर्मिधो १९, २ | २, ३, ११                   |
| ३७ बलविजाय ३७                    | ५                  | ८, ५, २ १८५३  | ८९ समुद्राद० ३       | ४, ५८, १                   |
|                                  |                    | १९, १३, ५     | ९० वयं नाम ४         | २                          |
| ३८ गोत्रमिद ३८                   | ६                  | ६, ९७, ३ १८५४ | ९१ चन्वारि शुद्धा ५  | ३                          |
|                                  |                    | १९, १३, ६     | ९२ त्रिना दित ६      | ४                          |
| ३९ अभि गोत्राणि ३९               | ७                  | ७ १८५५        | ९३ एता अर्पन्ति ७    | ५                          |
| ४० इन्द्र अमा ४०                 | ८                  | ९ १८५६        | ९४ सम्यक् सवन्ति ११  | ६                          |
| ४१ इन्द्रस्य गणो ४१              | ९                  | १० १८५७       | ९५ सिन्धोर्गिव ८     | ७                          |
| ४२ उद्धर्षय मघवन ४२              | १०                 | ३, १९, ६ १८५८ | ९६ अभिप्रवन्त ९      | ८                          |
| ४३ अस्माकमिन्द्र ४३              | ११ १९, १३, ११ १८५९ |               | ९७ कन्या इव १०       | ९                          |
| ४४ अर्मापा चितं ४४               | १२                 | ३, २, ५ १८६१  | ९८ अभ्यर्पत ११       | १० ७, ८२, १                |
| ४५ अवसष्टा ४५                    | ६, ७५ १६           | ३, १९, ८ १८६३ | ९९ धामं ते विश्वं १२ | ११                         |
| ४६ पिता जयता ४६                  | १०, १०३, १३        | ७ १८६४        |                      |                            |

य० मं० का० य० ऋग्वेद अथर्व० साम० । य० मं० का० य० ऋग्वेद अथर्व० साम०

## अष्टादशोऽध्यायः ।

|                            |                    |                     |                          |
|----------------------------|--------------------|---------------------|--------------------------|
| २९ बृहच्च रथन्तरं १९, ४३   | ८, १०, ६           | ६९ महदानुं २०, ३८   | ३, ३०, ८                 |
| ३० वाजस्य नु २०, १         | ७, ६, ४            | ७० वि न इन्द्र ३९   | १०, १५०, ४ १८६८          |
| ३१ विश्वेव अथ २ १०, ३, १३५ |                    | ७१ गृगो न र्मासः ४० | १०, १८०, २ ७, ८४, ३ १८७३ |
| ३७ देवस्य त्वा ७           | १९, ५१, २          |                     | १३, १, २७                |
| ४९ तत्त्वा यामि १९         | १, २४, ११          | ७२ वैश्वानरो ४१     | ६, ३५, १                 |
| ५९ एत सधस्थ २९             | ६, १२३, १          | ७३ पृष्टो दिवि ४२   | १, ९८, २                 |
| ६० एतं जानाथ ३०            | २                  | ७४ अश्याम तं ४३     | ६, ५, ७                  |
| ६६ अभिर्गमि X              | ३, २६, ७ ६१३       | ७५ वयं ते अय ४४     | ३, १४, ५                 |
| ६८ वार्त्तिहत्याय ३७       | ३, ३७, १ २०, १९, १ | ७७ त्वं यावष्ट ४६   | ८ ८४, ३                  |

## एकोनविंशोऽध्यायः ।

|  |                       |           |   |
|--|-----------------------|-----------|---|
| २ परीतो २१, २                                | ९, १०७, १             | ५१२, १३१३ | ५१ ये न पवे X १०, १५, ८ १८, ३, ४६       |
| ३ वायो पृत ३                                 | ६, ५१, १              |           | ५२ त्वं सोम प्रचि ५२ १, ९१, १           |
| इन्द्रस्य युज्य १, २२, १९                    |                       |           | ५३ त्वया हि न ५३ ९, ९६, ११              |
| ४ पुनाति ते ४                                | ९, १, ६               |           | ५४ त्वं सोम पितृभिः ५४ ८, ४८, १३        |
| ६ कुविदङ्ग ५ १०, १३१, २ २०, १२५, २           |                       |           | ५५ बर्हिषदः ५५ १०, १५, ४ १८, १, ५१      |
| ९ तेजोऽसि तेजो ८                             | २, १७, १-३ १९, ३१, १२ |           | ५६ आहं पितृन ५७ ३ ४५                    |
| ३८ अग्न आयू वि ४० ९, ६६, १९                  | ६२७ १४६४ १५१८         |           | ५७ उपहृता पितरः ५६ ५ १८, ३, ४५          |
| ३९ पुनन्तु मा ४१ ९, ६७, २७ ६, १९, १          |                       |           | ५८ आ यन्तु नः ५९ १८, ४, ६२-६३           |
| ४१ यत्ते पवित्र ४३ २३                        |                       |           | ५९ अग्निवाचाः ६१ ११ ३, ४४               |
| ४२ पवमान सो ४४ २२                            |                       |           | ६० ये अग्निवाचा ६० १४ २, ३५ ३, ५९       |
| ४३ उभाभ्या देव ४५ २५ ६, १९, ३                |                       |           | ६२ आच्या जानु ६२ ६ १, ५२                |
| ४४ वैश्वदेवी ४६ ६, ६२, २                     |                       |           | ६३ आसीनामे ६३ ७ ३, ४३                   |
| वयं स्याम ११, २९ ४, ५०, ६                    |                       |           | ६५ यो अग्निः कव्य ६५ १०, १६, ११         |
| २१, ४६ ५, ५०, १०                             |                       |           | ६६ त्वमग्न ईडितः ६६ १०, १५, १२ ४२       |
| ५४ ८, ४०, १२                                 |                       |           |   |
| ६१ १०, १२१, १०                               |                       |           | ६७ ये चेह पितरो ६८ १३ २, ३५             |
| २५, ६७                                       |                       |           | ६८ इदं पितृभ्यो ६७ २ १, ४६              |
| ४९ उदीरतामवर ५१ १०, १५, १ १८, १, ४४          |                       |           | ६९ अधा यथा न ६९ ४, २, १६ ३, २०          |
| ५० अङ्गिरसो न X १०, १४, ६ ६, ५५, ३ १८, १, ५८ |                       |           | ७० उशन्तस्त्वा ७० १०, १६, १२ १, ५६      |
|  |                       |           | आ वह २, ३४                              |
|  |                       |           | ७१ अपा फेनेन ७१ ८, १४, १३ २०, २९, ३ २११ |

य० मं० का० य० ऋग्वेद अथर्व० साम० । य० मं० का० य० ऋग्वेद अथर्व० साम०

### विंशोऽध्यायः ।

|                          |           |         |                        |          |                   |
|--------------------------|-----------|---------|------------------------|----------|-------------------|
| २ निषसाद २१,९३           | १,२५,१०   |         | ४९ आ न इन्द्रो २२,३४   | ४,२०,०   |                   |
| ३ देवस्य त्वा ,,         | १९,५१,२   |         | ५० त्रातारमिन्द्र ३५   | ६,४७,११  | ७,८६,१ ३३३        |
| १४ यद्देवा देव २२,१      | ६,११४,१   |         | ५१ इन्द्र मुत्रामा ३६  | १२       | ७,९१,१            |
| १५ यदि दिवा २            | ६,११५,१   |         |                        | १०,१३१,६ | २०,१२५,६          |
| १६ यदि जाग्र० (प्र पा) ३ | ६,११४,१-२ |         | ५२ तस्य वय ३७          | ६,४७,१३  | ७,९२,१            |
| १७ यदेनश्चक्रमा ४        | १०,३,८    |         |                        | १०,१३१,७ | २०,१२५,७          |
| १८ यदापो अध्या ,,        | ७,८३,२    |         | ५३ आ मन्द्रिगिन्द्र ३८ | ३,४५,१   | ७,११७,१ २४६, १७१८ |
|                          | १९,४४,९   |         |                        |          |                   |
| २० दुपदात्रिव ५          | ६,११५,३   |         | ५४ एवेदिन्द्रं ३९      | ७,२३,६   | २०,१२,६           |
| २१ उद्वयं तमसम ६         | १,५०,१०   | ७,५३,७  |                        |          | २०,८७,७           |
| २२ अपो अयान्व ७          | १,२३,०३   | ७,८९,१  | ५५ समिद्रो अग्नि० ४०   |          | ७,७३,०            |
|                          | १०,९,९    | १०,५,४६ | ७६ युव० सुरामम० ६१     | १०,१३१,४ | २०,१२५,४          |
| पयस्वानम ,,              | ९,१,१४    |         | ७७ पुत्रमिव पितरा ६२   | ५        | ५                 |
| प्रजया च ,,              | १४,१,४८   |         | ७८ यस्मिन्नाग ६३       | १०,९१,१४ |                   |
|                          | १९,३१,७   |         | ७९ अहाव्यमे ६४         | १५       |                   |
| २३ एधोऽस्येधिषी ,,       | ७,८९,४    |         | ८१ गोमिद पु ६६         | २,४१,७   |                   |
| तेजोऽसि १९,३१,१२         |           |         | ८२ न यन्परो ६७         | ८        |                   |
| २५ तैल्लोकं (तु पा) १०   | ९,५,१६    |         | ८३ ता न आ ६८           | ९        |                   |
| २६ ,, ( ,, ) ११          | २         |         | ८४ पावका न. ६९         | १,३,१०   |                   |
| २९ धानावन्तं १४          | ३,५२,१    | २१०     | ८५ चोदयित्री ७०        | ११       |                   |
| ३० बृहदिन्द्राय १५       | ८,८९,१    | २५८     | ८६ महो अर्ण ७१         | १२       |                   |
| ३१ अ० वर्यो १६           | ९,५१,१    |         | ८७ इन्द्रा याहि० ७२    | ४        | २०,८४,१ ११४६      |
| ४७ आ यास्विन्द्रो ३२     | ४,०१,१    |         | ८८ ,, धिये ७३          | ५        | २१४७              |
| ४८ आ न इन्द्रो ३३        | ४,००,१    |         | ८९ ,, ,, तनु० ७४       | ६        | ३ ११४८            |

### एकविंशोऽध्यायः ।

|                    |         |      |                    |         |          |
|--------------------|---------|------|--------------------|---------|----------|
| १ इमं मे वरुण २३,१ | १,०५,१९ | १५८५ | ६ मुत्रामाग २३,६   | ७,६,३   |          |
| २ तत्त्वा यामि २   | १,०४,११ |      | ८ आ नो मित्रा ८    | ३,६२,१६ | २२०, ६६३ |
| ३ त्वं नो अग्ने ३  | ४,१,४   |      | ९ प्र बाहवा ९      | ७,६२,५  |          |
| ४ स त्वं नो ४      | ५       |      | १० तं नो भवन्तु १० | ७,३८,७  |          |
| ५ महीम् पु ५       | ७,६,०   |      | ११ वाजे-वाजेऽवत १२ | ८       |          |

### द्वाविंशोऽध्यायः ।

|                 |         |                     |         |
|-----------------|---------|---------------------|---------|
| १ तेजोऽसि २४,१  | १९,५१,२ | ६ गोमाय स्वाहा २४,६ | १९,४३,५ |
| ६ अमये स्वाहा ६ | १९,४३,१ | ७ वायवे स्वाहा ७    |         |

| य० मं०               | का० य०  | ऋग्वेद | अथर्व०  | साम० । | य० मं०                | का० य० | ऋग्वेद | अथर्व०  | साम० |
|----------------------|---------|--------|---------|--------|-----------------------|--------|--------|---------|------|
| ६ इन्द्राय स्वाहा    |         |        | १९,४३,६ |        | २७ इन्द्राय स्वाहा    |        |        | १९,४३,६ |      |
| ९ तत्सवितुर् १३      | ३,६२,१० |        | १४६२    |        | पृथिव्यै स्वाहा       |        |        | ५,९,२,६ |      |
| १० हिरण्यपाणि० १४    | १,२२,५  |        |         |        | अन्तरिक्षाय स्वाहा    |        |        | ५,९,३-४ |      |
| १५ अग्नि स्तोमेन १९  | ५,१४,१  |        |         |        | दिवे स्वाहा           |        |        | ५,९,१,५ |      |
| १६ स हव्यवाड० २०     | ३,११,२  |        |         |        | २८ चन्द्राय स्वाहा ३९ |        |        | १९,४३,४ |      |
| १७ अग्नि दत्तं २२    | ८,४४,३  |        |         |        | २९ „ „ ४१             |        |        |         |      |
| १८ अजीजनो हि २३      | ९,११०,३ |        |         |        | ३० „ „ ४३             |        |        |         |      |
| २१ विश्वो देवस्य २९  | ५,५०,१  |        |         |        | २८,२९सूर्याय० ३९,४१   |        |        | ३       |      |
| २५ अद्भ्यः स्वाहा ३५ |         |        | १९,४३,७ |        | २९ पृथिव्यै स्वाहा ४१ |        |        | ५,९,२,६ |      |
| २७ अग्नये स्वाहा ३७  |         |        | १       |        | „ अन्तरिक्षाय० ४१     |        |        | ५,९,३,४ |      |
| „ सोमाय स्वाहा       |         |        | ५       |        |                       |        |        |         |      |

### त्रयोविंशोऽध्यायः ।

|                      |          |         |      |                      |           |              |
|----------------------|----------|---------|------|----------------------|-----------|--------------|
| १ हिरण्यगर्भ २५,१    | १०,१२१,१ | ४,२,७   |      | २८ यदस्या अहु० २५,३० | २०,१३६,१  |              |
| स दाधार              |          | ११,५,१  |      | २९ यद्देवासो ल० ३१   | २०,१३६,४  |              |
| ३ यः प्राणतो ३       | ३        | ४,२,२   |      | ३२ दधिकावणो ३४       | ४,३९,६    | १२,२,१३ ३५८  |
|                      |          | १       |      | प्र ण आर्यंभि        | १,२५,१२   | ४,१०,६ १८४   |
| ५ युषान्ति ब्रध्न० ५ | १,६,१    | २०,२६,४ | १४६८ |                      | १०,१८६,१  | १४,२,६७ १८४० |
|                      |          | ४७,१०   |      |                      |           | १९,३४,४      |
|                      |          | ६९,९    |      | ३८ कुविदङ्ग यव० ४०   | १०,१३१,२  | २०,१२५,२     |
| ६ युष्मन्त्यस्य ६    | १,६,२    | २०,२६,५ | १४६९ | ६१ पृच्छामि त्वा ६३  | १,१६४,३४  | ९,१०,१३      |
|                      |          | ४७,११   |      | ६२ ड्यं वेदि ६४      | १,१६४,३५  | ९,१,१४       |
|                      |          | ६९,१०   |      | ६५ प्रजापते न ६७     | १०,१२१,१० | ६,६२,२       |
| १६ न वा उ एन १८      | १,१६२,२१ |         |      |                      |           | ७,७९,४       |
| यत्रासते             | १०,१७,४  | १८,२,५५ |      |                      |           | ८०,३         |
| १९ गणाना त्वा २१     | २,२३,१   |         |      |                      |           |              |

### पञ्चविंशोऽध्यायः ।

|                    |          |         |  |                        |        |       |
|--------------------|----------|---------|--|------------------------|--------|-------|
| १० हिरण्य० २७,१४   | १०,१२१,१ | ४,२,७   |  | १५ देवाना भद्रा २७,१९  | १,८९,२ |       |
|                    |          | ११,५,१  |  | १६ तान्पूर्वया २०      | ३      |       |
| ११ य प्राणतो १५    | ३        | ४,२,२   |  | १७ तन्नो वातो २१       | ४      |       |
|                    |          | १       |  | १८ तमीशानं २२          | ५      |       |
| १२ यस्येमे हिम० १६ | ४        | ५       |  | १९ रवस्ति न इन्द्रो २३ | ६      |       |
| १३ य आत्मदा १७     | २        | १       |  | २० पृषदश्वा २४         | ७      |       |
|                    |          | १३,३,१४ |  | २१ भद्रं कर्णेभिः २५   | ८      |       |
|                    |          | ४,२,२   |  | २२ शतमिन्नु २६         | ९      |       |
| १४ आ नो भद्राः १८  | १,८९,१   |         |  | २३ अदितिद्यौ० २७       | १०     | ७,६,१ |
| का० २७             |          |         |  |                        |        |       |

| य० सं०          | का० य० | ऋग्वेद    | अथर्व० | साम० । | य० सं०           | का० य० | ऋग्वेद     | अथर्व०    | साम० |
|-----------------|--------|-----------|--------|--------|------------------|--------|------------|-----------|------|
| २४ मा नो मित्रो | २७, २८ | १, १६२, १ |        |        | ३९ यदध्वाय वास   | ४३     | १, १६२, १६ |           |      |
| २५ यशिरिजा      | २९     | २         |        |        | ४० यने सादे      |        | १७         |           |      |
| २६ एष छागः      | ३०     | ३         |        |        | ४१ चतुर्विंशद    |        | १८         |           |      |
| २७ यद्विजि०     | ३१     | ४         |        |        | ४२ एकरत्नपु०     |        | १९         |           |      |
| २८ होता वर्यु   | ३२     | ५         |        |        | ४३ मा त्वा तपत्  |        | २०         |           |      |
| २९ यपत्रस्का    | ३३     | ६         |        |        | ४४ न वा उ एतन    |        | २१         |           |      |
| ३० उप पागान     | ३४     | ७         |        |        | ४५ सुगव्यं ना    |        | २२         |           |      |
| ३१ यद्विजिनो    | ३५     | ८         |        |        | ४६ इमा नु कं     | २७, ४४ | १०, १५७, १ | २०, ६३, १ | ४५२  |
| ३२ यदध्वय       | ३६     | ९         |        |        |                  |        |            |           | १११० |
| ३३ यद्विजि०     | ३७     | १०        |        |        | यज्ञं च नस्तन्वं |        | २          |           | ११११ |
| ३४ यने गात्राद० | ३८     | ११        |        |        | आदित्यैरिन्द्र   |        | ३          | २०, ६३, २ | १११२ |
| ३५ ये वाजिनं    | ३९     | १२        |        |        | ४७ अग्ने त्वं नो | २७, ४५ | ५, २४, १   |           | ४४८  |
| ३६ यज्ञीक्षण    | ४०     | १३        |        |        |                  |        |            |           | ११०७ |
| ३७ मा वासिर्वन० | ४१     | १५        |        |        | वसुर्गम          |        | २          |           | ११०८ |
| ३८ निममय        | ४२     | १४        |        |        | तं त्वा शोचिष    |        | ४          |           | ११०९ |

## अथ षड्विंशोऽध्यायः ।

|                |           |           |          |     |                      |           |           |        |
|----------------|-----------|-----------|----------|-----|----------------------|-----------|-----------|--------|
| ३ इहस्पते      | २८, ४     | २, २३, १५ |          |     | १७ स न इन्द्राय      | ९, ६१, १२ |           | ५९२, १ |
| ६ ऋतावान       | ६         |           | ६, ३६, १ |     |                      |           |           | ६७३    |
| ७ वेधानरस्य    | ९         | १९८, १    |          |     | १८ एता विश्वान्यय    | १६, ५२    | ११        | ५९३, १ |
| ८ वेधानरो      | ८         |           | ६, ३५, १ |     |                      |           |           | ६७४    |
| ९ अमर्कसि      | १०        | ९, ६६, २० | १५१९     |     | २० अग्ने पर्वागता    | १, २२, ९  |           |        |
| ११ त नो वरममनी | ८, ८८, १  | २०, ९१    | २३६      |     | २१ अभि यज्ञं गर्णादि | १, १५, ३  |           |        |
|                |           |           | ४९, ४    | ६८५ | २२ द्विविणोदा        |           | ९         |        |
| १२ यदादिष्ट    | ५, २५, ७  |           | ८६       |     | २३ तवायं गोम०        | ३, ३५, ६  |           |        |
| १३ एतत् पु     | ६, १६, १६ |           | ७, ७०, ५ |     | २४ अमेव न            | २, ३६, ३  |           |        |
| १५ उपदे        | ८, ६, २८  |           | १४३      |     | २५ ग्वादिष्टया       | ९, ११     |           |        |
| १६ उन्ना तं    | ९, ६१, १० |           | ४६७,     |     | २६ रक्षोहा बिध       | २         | १९, ३३, ४ |        |
|                |           |           | ६७२,     |     |                      |           |           |        |

## अथ सप्तविंशोऽध्यायः ।

|                 |       |  |          |  |                       |          |           |
|-----------------|-------|--|----------|--|-----------------------|----------|-----------|
| १ गमास्त्वान    | २९, १ |  | २, ६, १  |  | ७ शिवेभिरस्य (पा ४) ७ | ६, ७१, ३ | ७, ८४, १  |
| २ सं ने यगवासे  | २     |  | २        |  | ८ बृहस्पते            | ८        | ७, १६, १  |
| ३ त्वमग्ने ऋते  | ३     |  | ३        |  | ९ अमुत्रभूया          | ९        | ७, ५३, १  |
| ४ इग्वाम        | ४     |  | ७, ८२, ३ |  | १० उदयन्तमस०          | १०       | १, ५०, १० |
| ५ द्रष्टेणाग्ने | ५     |  | २, ६, ४  |  | ११ ऊर्वा अरय          | ११       | ५, २७, १  |
| ६ अग्नि निहो    | ६     |  | ५        |  | १२ तन्नपाद०           | १२       | २७, १-२   |



| य० मं० | का० य०            | ऋग्वेद     | अथर्व०    | साम० । | य० मं० | का० य०              | ऋग्वेद    | अथर्व०     | साम० |
|--------|-------------------|------------|-----------|--------|--------|---------------------|-----------|------------|------|
| १३     | मन्वा यज्ञं २९.१३ |            | ५, २७, ३  |        | ३२     | वायो ये ते २७       | २, ४१, १  |            |      |
| १४     | अच्छायमेति १४     |            | ४         |        | ३३     | एकया च २८           |           | ७, ४, १    |      |
| १५     | स यक्षदस्य १५     |            | ४-५       |        | ३४     | तव वायत्र ३२        | ८, २६, २१ |            |      |
|        | स ई मन्त्रा       |            | ५-६       |        | ३५     | अभि त्वा शर ४०      | ७, ३२, २२ | २०, १२१, १ | २३३, |
| १६     | हारो देवार० १६    |            | ७-८       |        |        |                     |           |            | ६८०  |
| १७     | ते अस्य १७        |            | ८         |        | ३६     | न त्वावा ४१         | २३        | २          | ६८१  |
| १८     | देव्या होतारा १८  |            | ९         |        | ३७     | त्वामिद्धि ४२       | ६, ४६, १  | २०, ९८, १  | २३४, |
| १९     | तिष्ठो देवा० १९   |            | ९         |        |        |                     |           |            | ८०९  |
| २०     | तन्नरतुरीप० २०    |            | १०        |        | ३८     | स त्व नश्चित्र ४३   |           | २          | ८१०  |
| २१     | वनस्पतेऽव २१      |            | ११        |        | ३९     | कया नश्चित्र ४४     | ४, ३१, १  | २०, १२४, १ | १६९, |
| २२     | अमे स्वाहा २२     |            | १२        |        |        |                     |           |            | ६८२  |
| २३     | पीषो अजा २३       | ७, ९१, ३   |           |        | ४०     | करत्वा सन्ध्या ४५   | २         | २          | ६८३  |
| २४     | राये नु यं २४     | ७, ९०, ३   |           |        | ४१     | अर्मा पु णः ४६      | ३         | ३          | ६८४  |
| २५     | आपो ह यद ३५       | १०, १२१, ७ | ४ २, ६    |        | ४२     | यजायज्ञा ४७         | ६, ४८, १  |            | ३५,  |
| २६     | यश्चिदापो ३६      | ८          | ६         |        |        |                     |           |            | ७०३  |
| २७     | प्र याभिर्यासि २६ | ७, ९२, ३   |           |        | ४३     | पाहि नो अभ ८, ६०, ९ |           |            | ३६;  |
| २८     | आ नो नियुद्धि ३१  | ५          | २०, ८७, ७ |        |        |                     |           |            | १५४४ |
| २९     | नियुत्वान २९      | २, ४१, २   | ६००       |        | ४४     | ऊर्जो नपात ४८       | ६, ४८, २  |            | ७०४  |
| ३०     | वायो शुक्रो ३०    | ४, ४७, १   | १६२८      |        | ४५     | मक्करोऽणि ४९        |           | ६, ५५, ३   |      |

एकोनविंशोऽध्यायः ।

|    |                   |            |          |  |    |                 |            |           |      |
|----|-------------------|------------|----------|--|----|-----------------|------------|-----------|------|
| १२ | यदकन्द ३१, २४     | १, १६३, १  |          |  | २८ | आजुह्वान ४०     | १०, ११०, ३ | ५, १२, ३  |      |
| १३ | यमेन दत्त २५      | २          |          |  | २९ | प्राचीनं बहि ४१ | ४          | ४         |      |
| १४ | अग्नि यमो २६      | ३          |          |  | ३० | व्यचस्वती० ४२   | ५          | ५         |      |
| १५ | त्रीणि त आहु० २७  | ४          |          |  | ३१ | अ मुध्वय० ४३    | ६          | ६         |      |
| १६ | इमा ते वाजि० २८   | ५          |          |  | ३२ | देव्या होतरा ४४ | ७          | ७         |      |
| १७ | आत्मानं ते २९     | ६          |          |  | ३३ | आ नो यज्ञं ४५   | ८          | ८         |      |
| १८ | अत्रा ते रूप० ३०  | ७          |          |  | ३४ | य इम ४६         | ९          | ९         |      |
| १९ | अनु त्वा रथो ३१   | ८          |          |  |    |                 |            | १३, ३, १  |      |
| २० | द्विग्व्यग्रतो ३२ | ९          |          |  | ३५ | उपावश्रज ४७     | १०         | ५, १२, १० |      |
| २१ | ईर्मन्तासः ३३     | १०         |          |  | ३६ | सद्यो जातो ४८   | ११         | ११        |      |
| २२ | तव शरीरं ३४       | ११         |          |  | ३७ | केतु कृष्ण १२   | १, ६, ३    | २०, २६, ६ | १४७० |
| २३ | उप प्रागान्छ ३५   | १२         |          |  |    |                 |            | ४७, १२    |      |
| २४ | उप प्रागात ३६     | १३         |          |  | ३८ | जिभूतस्येव १३   | ६, ७५, १   | ६९, ११    |      |
| २५ | समिद्धो अय ३७     | १०, ११०, १ | ५, १२, १ |  | ३९ | धन्वना गा १४    | २          |           |      |
| २६ | तननपात ३८         | २          | २        |  | ४० | वस्यन्तीवेदा १६ | ३          |           |      |
| २७ | नराशमगय ३९        | ७, २, २    |          |  | ४१ | ते आचरन्ती १५   | ४          |           |      |

| य० म० | का० य०          | ऋग्वेद | अथर्व०   | साम० | । | य० म० | का० य०          | ऋग्वेद | अथर्व०    | साम०      |
|-------|-----------------|--------|----------|------|---|-------|-----------------|--------|-----------|-----------|
| ४२    | बह्वीना पिता    | ३१, १८ | ६, ७५, ५ |      |   | ५०    | आ जह्घान्ति     | ३१, २२ | ६, ७५, १३ |           |
| ४३    | रथे तिष्ठन्नयति | २१     | ६        |      |   | ५१    | अहिरिव          | १७     | १४        |           |
| ४४    | तीव्रान्घोषान   |        | ७        |      |   | ५२    | वनस्पते         | २०     | ६, ४७, २६ | ६, १२५, १ |
| ४५    | रथवाहनं         |        | ८        |      |   | ५३    | दिव पृथिव्या    |        | २७        | २         |
| ४६    | स्वादुपंसद      |        | ९        |      |   | ५४    | इन्द्रस्य वज्रो |        | २८        | ३         |
| ४७    | ब्राह्मणाम्     |        | १०       |      |   | ५५    | उपश्वासय        | २३     | २९        | १२६, १    |
| ४८    | मुपर्ण वस्ते    | ३१, १९ | ११       |      |   | ५६    | आ कन्दय         |        | ३०        | २         |
| ४९    | ऋजति परि        |        | १२       |      |   | ५७    | आमूरज           |        | ३१        | ३         |

## त्रिंशोऽध्यायः ।

|   |                     |       |           |      |    |           |    |           |
|---|---------------------|-------|-----------|------|----|-----------|----|-----------|
| २ | तत्सविर्तुर्वरेण्यं | ३४, २ | ३, ६२, १० | १४६० | ४  | विभक्तारं | ४  | १, २२, ७  |
| ३ | विश्वानि देव        | ३     | ५, ८२, ५  |      | १२ | व्रध्नस्य | १२ | ११, ३, ४० |

## एकत्रिंशोऽध्यायः ।

|   |                |       |           |          |     |    |               |    |            |          |
|---|----------------|-------|-----------|----------|-----|----|---------------|----|------------|----------|
| १ | महस्वशीर्षा    | ३५, १ | १०, ९०, १ | १९, ६, १ | ६१७ | १० | यत्पुरुषं     | १० | १०, ९०, ११ | १९, ६, ५ |
| २ | पुरुष एवेदं    | २     | २         | ४        | ६१९ | ११ | ब्राह्मणोऽस्य | ११ | १२         | ६        |
| ३ | एतावानस्य      | ३     | ३         | ३        | ६२० | १२ | चन्द्रमा      | १२ | १३         | ७        |
| ४ | त्रिपादूर्ध्व  | ४     | ४         | २        | ६१८ | १३ | नाभ्या आर्माद | १३ | १४         | ८        |
| ५ | ततो विराड०     | ५     | ५         | ९        | ६२१ | १४ | यत्पुरुषेण    | १४ | ६          | ७, ५, ४  |
| ६ | तस्माद्यज्ञात् | ६     | ८         | १४       |     | १५ | सप्तास्यासन   | १५ | १५         | १५       |
| ७ | तस्माद्यज्ञात् | ७     | ९         | १३       |     | १६ | यजेन यज्ञ०    | १६ | १६         |          |
| ८ | तस्मादश्वा     | ८     | १०        | १२       |     | १७ | प्रजापतिश्च०  | १७ | १, १६४, ५० | ७, ५, १  |
| ९ | तं यज्ञ        | ९     | ७         | ११       |     |    |               |    | १०, ८, १३  |          |

## द्वात्रिंशोऽध्यायः ।

|   |             |        |            |         |              |             |          |            |
|---|-------------|--------|------------|---------|--------------|-------------|----------|------------|
| ४ | एषो ह देवः  | ३५, २६ | १०, ८, २८  | ९       | प्र तद्रोचे० | २८          | २, १, २  |            |
| ६ | येन यौमत्या | २९, ३३ | १०, १२१, ५ | ४, २, ४ | १०           | स नो बन्तु० | २९       | २, १, ३, ५ |
| ७ | यं कन्दर्मा | ३४     | ६          | ३       | १२           | परि यावा०   | ३१       | ४          |
| ८ | वेनस्तत्    | ३५, २७ | २, १, १    | १३      | मदमस्पति०    | ३०          | १, १८, ६ | १७१        |

## त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ।

|                    |       |           |      |                 |       |           |          |
|--------------------|-------|-----------|------|-----------------|-------|-----------|----------|
| १ अग्न्याजरासो०    | ३२, १ | १०, ४६, ७ |      | ६ अयामह         | ३२, ६ | ४, ७, १   |          |
| २ हरयो ध्रुमके०    | २     | ८, ४३, ४  |      | ७ त्रीणि शता    | ७     | ३, ९, ९   |          |
| ३ यज्ञा नो मित्रा० | ३     | १, ७५, ५  | १५३७ | ८ मर्धानं दिवो  | ८     | ६, ७, १   | ६७, ११४० |
| ४ युवा हि देव०     | ४     | ८, ७५, १  |      | ९ अमित्रैत्राणि | ९     | ६, १६, ३४ | ४,       |
| ५ द्वे विरूपे      | ५     | १, ९५, १  |      |                 |       |           | १३९६     |

| य० मं०                 | का० य० | ऋग्वेद     | अथर्व०     | साम० । | य० मं०               | का० य० | ऋग्वेद     | अथर्व०    | साम० |
|------------------------|--------|------------|------------|--------|----------------------|--------|------------|-----------|------|
| १० विश्वेभिः           | ३२, १० | १, १४, १०  |            |        | ४२ अथा देवा          | ४२     | १, ११५, ६  |           |      |
| ११ आ यद्विषे           | ११     | १, ७१, ८   |            |        | ४३ आ कृण्वेन         | ४३     | १, ३५, २   |           |      |
| १२ अग्ने शर्ध          | १२     | ५, २८, ३   | ७, ७३, १०  |        | ४४ प्र वावृजे        | ४४     | ७, ३९, २   |           |      |
| १३ त्वा हि             | १३     | ६, ४, ७    |            |        | ४५ इन्द्रवायु        | ४५     | १, १४, ३   |           |      |
| १४ त्वे अग्ने          | १४     | ७, १६, ७   |            | ३८     | ४६ वरुण प्राविता     | ४६     | १, २३, ६   |           | ७९५  |
| १५ शुधि धुन्वर्ण       | १५     | १, ४४, १३  |            | ५०     | ४७ अग्नि न इन्द्रिया | ४७     | ८, ८३, ७   |           |      |
| १६ विक्षेपामदिति०      | १६     | ४, १, २०   |            |        | ४८ अग्न इन्द्र       | ४८     | ५, ४६, २   |           |      |
| १७ महो अग्ने           | १७     | १०, ३६, १  |            |        | ४९ इन्द्राग्नी       | ४९     | ३          |           |      |
| १८ आपश्चित             | १८     | ७, २३, ४   | २०, १२, ४  |        | ५० अग्ने रुद्रा      | ५०     | ८, ६३, १२  |           |      |
| १९ गाव उपावता          | १९     | ८, ७२, १०  |            | ११७    | ५१ अर्वाणो अथा       | ५१     | २, २९, ६   |           |      |
|                        |        |            |            | १६०२   | ५२ विश्वे अथ         | ५२     | १०, ३५, १३ |           |      |
| २० यदय सूर             | २०     | ७, ६६, ४   |            | १३५१   | ५३ विश्वे देवा       | ५३     | ६, ५२, १३  |           |      |
| २१ आ सुते              | २१     | ८, ७२, १३  |            | १४८०   | ५४ देवेभ्यो हि       | ५४     | ४, ५४, २   |           |      |
| २२ आतिष्ठन्त           | २२     | ३, ३८, ४   | ४, ८, ३    |        | ५५ प्र वायुमच्छा     | ५५     | ६, ४९, ४   |           |      |
| २३ प्र वो महं          | २३     | १०, ५०, १  |            |        | ५६ इन्द्रवायु        | ५६     | १, २, ४    |           |      |
| २४ बृहन्नदिभ्य         | २४     | ८, ४५, २   |            | १३३९   | ५७ मित्रं दुवे       | ५७     | ७          |           | ८४७  |
| २५ इन्द्रेहि मन्त्र्य० | २५     | १, ९, १    | २०, ७१, ७  | १८०    | ५८ दया युवाकव        | ५८     | ३, ३       |           |      |
| २६ इन्द्रो व्रत्रम०    | २६     | ३, ३४, ३   | २०, ११, ३  |        | ५९ विदयदी            | ५९     | ३, ३१, ६   |           |      |
| २७ कुनस्वमिन्द्र       | २७     | १, १६५, ३  |            |        | ६१ उग्रा विघर्निना   | ६१     | ६, ६०, ५   |           | ८५४  |
| २८ आ तत्त              | २८     | १०, ७४, ४  |            |        | ६२ उपास्मं गायता     | ६२     | ९, ११, १   |           | ६५१; |
| २९ इमा ते धियं         | २९     | १, १०२, १  |            |        |                      |        |            |           | ७६३  |
| ३० विघ्राउ बृहन्       | ३०     | १० १७०, १  |            | ६२८    | ६३ ये त्वाहिहन्त्ये  | ६३     | ३, ४७, ४   |           |      |
|                        |        |            |            | १४५३   | ६४ जनिष्ठा उग्र      | ६४     | १०, ७३, १  |           |      |
| ३१ उदुग्यं जात०        | ३१     | १, ५० १    | १३, २, १६  | ३१     | ६५ आ त न इन्द्र      | ६५     | ४, ३२, १   |           | १८१  |
|                        |        |            | २०, ४७, १३ |        | ६६ स्वमिन्द्र        | ६६     | ८, ९९, ५   |           | ३११; |
| ३२ येना पावक           | ३२     | ६          | १३, २, २१  | ६३७    |                      |        |            |           | १६३७ |
|                        |        |            | २०, ४७, १८ |        | ६७ अनु ते शुभं       | ६७     | ६          |           | १६३८ |
| ३४ आ न इडाभि०          | ३४     | १, १८६, १  |            |        | ६८ यज्ञो देवाना      | ६८     | १, १०७, १  |           |      |
| ३५ यदय कच्च            | ३५     | ८, ९३, ४   | २०, ११२, १ | १२६    | ६९, ८४ अद्वयोभि      | ६९, ८४ | ६, ७१, ३   | १९, ४७, ६ |      |
| ३६ तरणिविध्व०          | ३६     | १, ५०, ४   | १३, २, १९  | ६३५    | ७० प्र वीरया         | ७०     | ७, ९०, १   |           |      |
|                        |        |            | २०, ४७, १६ |        | ७१ गाव उपावता        | ७१     | ८, ७२, १२  |           | ११७; |
| ३७ तत्सूर्यस्य         | ३७     | १, ११५, ४  | २०, १२३, १ |        |                      |        |            |           | १६०२ |
| ३८ तन्मित्रस्य         | ३८     | ५          | २          |        | ७४ तिरश्चीनो         | ७४     | १०, १२९, ५ |           |      |
| ३९ बण्महा              | ३९     | ११         |            | २७६,   | ७५ आ रोदसी           | ७५     | ३, २, ७    |           |      |
|                        |        |            |            | १७८८   | ७६ उक्थेभि०          | ७६     | ७, ९४, ११  |           |      |
| ४० बट सूर्य            | ४०     | ८, १०१, १२ |            | १७८९   | ७७ उप नः सूनवो       | ७७     | ६, ५२, ९   |           | १५९५ |
| ४१ ध्रायन्त इव         | ४१     | ९९, ३      |            | २६७    | ७८ ब्रह्माणि मे      | ७८     | १, १६५, ४  |           |      |
|                        |        |            |            | १३१९   | ७९ अनुत्तमा          | ७९     | ९          |           |      |

| य० मं०           | का० य० | ऋग्वेद     | अथर्व०     | साम०      | । | य० मं०             | का० य०    | ऋग्वेद    | अथर्व० | साम० |
|------------------|--------|------------|------------|-----------|---|--------------------|-----------|-----------|--------|------|
| ८० तदिदास        | ३२, ८० | १०, १२०, १ | ५, २, १    | १४८३      |   | ८८ आ यातमुप        |           | ७, ७४, ३  |        |      |
| ८१ उमा उ त्वा    | ८१     | ८, ३, ३    | २०, १०४, १ | २५०, १६०७ |   | ८९ प्रेतु ब्रह्मण० | ३७, ७     | १, ४०, ३  |        | ५६   |
| ८२ यस्यायं विश्व | ८२     | ८, ५१, ९   |            | १६०९      |   | ९० चन्द्रमा आम्ब०  | १, १०५, १ | १८, ४, ८९ |        | ४१७  |
| ८३ अयं सहस्र०    | ८३     | ८, ३, ४    | २०, १०४, २ | १६०८      |   | ९१ देवंदेवं वोऽवसे | ८, २७, १३ |           |        |      |
| ८५ आ नो यज्ञं    |        | ८, १०१, ९  |            |           |   | ९३ इन्द्राग्नी     | ६, ५९, ६  |           |        | २८१  |
| ८६ इन्द्रवायू    |        | १०, १४१, ४ | ३, २०, ६   |           |   | ९४ देवासो हि       | ८, २७, १४ |           |        |      |
| ८७ ऋधर्मिता      |        | ८, १०१, १  |            |           |   | ९५ अपाधमर्दमि०     | ८, ८९, २  |           |        |      |
|                  |        |            |            |           |   | ९६ प व इन्द्राय    | ३         |           |        | २५७  |
|                  |        |            |            |           |   | ९७ अम्येदिन्द्रो   | ८, ३, ८   | २०, ९९, २ |        | १५७४ |

## चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ।

|                    |       |            |          |
|--------------------|-------|------------|----------|
| ७ पितुं नु स्तोपं  | ३३, २ | १, १८७, १  |          |
| ८ अन्विदनुमते      | ३     |            | ७, २०, २ |
| ९ अनु नोऽयानु०     | ×     |            | १        |
| १० मिनीवालि        | ४     | २, ३२, ६   | २        |
|                    |       |            | ४६, १    |
|                    |       |            | ६८, १    |
| १२ त्वमग्ने        | ६     | १, ३१, १   |          |
| १३ त्वं नो अग्ने   | ७     | १०         |          |
| १४ उत्तानायामव     | ८     | ३, २९, ३   |          |
| १५ उडायारुवा       | ९     | ४          |          |
| १६ प्र मन्मटे      | १०    | १, ६२, १   |          |
| १७ प्र वो महे      | ११    | २          |          |
| १८ इच्छन्ति त्वा   | १२    | ३, ३०, १   |          |
| १९ न ते दरे        | १३    | २          |          |
| २० अपातं युष्म     | १४    | १, ९१, २१  |          |
| २१ सोमो येनु       | १५    | २०         |          |
| २२ त्वमिमा         | १६    | २०         |          |
| २३ देवेन नो मनसा   | १७    | २३         |          |
| २४ अष्टा व्यग्यन्त | १८    | १, ३५, ८   |          |
| २५ द्विग्यपाणिः    | १९    | ९          |          |
| २६ द्विग्यहस्तो    | २०    | १०         |          |
| २७ ये ते पन्थाः    | २१    | ११         |          |
| २८ उमा पिबन्तम०    | २२    | १, ४६, १५  |          |
| २९ अप्रम्वन्ता०    | २३    | १, ११२, २४ |          |

|                        |    |                |               |
|------------------------|----|----------------|---------------|
| ३० तन्नो मित्रो (पि०२) | २४ | १, ९४-९६, ९८,  |               |
|                        |    | १००-१०३        |               |
|                        |    | १०५-११५        |               |
|                        |    | अन्यापंक्तिः   |               |
| ३१ आ कृण्वन्           | २५ | १, ३५, २       |               |
| ३२ आ रात्रि            | २६ | ८, ७, १४ (परि) |               |
| ३३ उपमन्मित्रमा        | २७ | १, ९२, १३      | १७३१          |
| ३४ प्रातरग्नि          |    | ७, ४१, १       | ३, १६, १      |
| ३५ प्रातर्जित          | २८ | २              | २             |
| ३६ भग प्रणेत           |    | ३              | ३             |
| ३७ उनेदानी             |    | ४              | ४             |
| ३८ भग एव               |    | ५              | ५             |
| वयं भगवन्त             |    |                | ९, १०, २०     |
| ३९ सम वगथो०            |    | ६              | ३, १६, ६      |
| ४० अन्वावर्ता०         |    | ७              | ७             |
| ययं पात                |    |                | २०, ८७, ७     |
| ४१ पपन्तव              | २९ | ६, ५४, ९       | ७, ९, ३       |
| ४२ पथग्यथ              | ३० | ६, ४९, ८       |               |
| ४३ त्रीणि पदा          | ३१ | १, २२, १८      | ७, २६, ५ १६७० |
| ४४ तद्विप्राग्ना       | ३२ | २१             | १६७३          |
|                        |    | ३, १०, ९       |               |
| ४५ धृतवती              | ३३ | ६, ७०, १       | ३७८           |
| ४६ ये न गपन्ता         | ३४ | १०, १२८, ९     | ५, ३, १०      |

| य० मं० | का० य०           | ऋग्वेद | अथर्व०     | साम० । | य० मं० | का० य०            | ऋग्वेद | अथर्व०  | साम०    |
|--------|------------------|--------|------------|--------|--------|-------------------|--------|---------|---------|
| ४७     | आ नास्त्या३३     | ३५     | १,३४,११    |        | ५३     | उत नोऽहि          | ४१     | ६,५०,१४ |         |
| ४८     | एष व स्तोमो      | ३६     | १,१६५,१५   |        | ५४     | डमा गिर           | ४२     | २,२७,१  |         |
| ४९     | सहस्तोमाः        | ३७     | १०,१३०,७   |        | ५६     | उत्तिष्ठ ब्रह्मण० | ४४     | १,४०,१  | १९,६३,१ |
| ५०     | आयुष्यं वर्चस्यं | ३८     | ८,७ (परि०) |        | ५७     | प्र नूनं          | ४५     | ५       |         |
| ५१     | न तद्रक्षांसि    | ३९     | ८,७ (परि०) | १,३५,२ | ५८     | ब्रह्मणस्पते      | ४६     | २,२३,१९ |         |
| ५२     | यदाबध्नन्        | ४०     | ८,७ (परि०) | १      |        |                   |        |         |         |
|        |                  |        |            | ८,५,२१ |        |                   |        |         |         |

### पञ्चत्रिंशोऽध्यायः ।

|    |                   |         |         |    |                |          |                       |
|----|-------------------|---------|---------|----|----------------|----------|-----------------------|
| ४  | अश्वत्थे वो ३५,३८ | १०,९७,५ |         | १६ | अग्न आयुषि ४८  | ९,६६,१९  | ६२७;<br>१४६४,<br>१५१८ |
| ७  | परं मृत्यो ४०     | १८,१    | १२,२,२१ |    |                |          |                       |
| १० | अग्मन्वती ४३      | ५३,८    | २६      | १८ | परीमे गाम० ५१  | १०,१५५,५ | ६,२८,२                |
| १४ | उद्वयं तमसम् ४७   | १,५०,१० |         | १९ | कव्यादमग्नि ५२ | १०,१६,९  | १२,२,८                |
| १५ | इमं जीवेभ्य ५०    | १०,१८,४ | १२,२,२३ | २१ | स्योना पृथिवी  | १,२२,१५  |                       |
|    |                   |         |         |    | अप नः शोशु० ५४ | १,९७,१-८ | ४,३३,१-८              |

### षट्त्रिंशोऽध्यायः ।

|    |                |      |         |          |             |                |        |            |           |
|----|----------------|------|---------|----------|-------------|----------------|--------|------------|-----------|
| २  | यन्मे छिद्रं   | ३६,२ | १३,३,७  | १४       | आपो हि प्रा | १४             | १०,९,१ | १,५,१      | १८३७      |
| ३  | भूर्भुव स्वः   | ३    | ३,६२,१० | १४६२     | १५          | यो व शिवतमो    | १५     | २          | २ १८३८    |
| ४  | कया नश्चित्र   | ४    | ४,३१,१  | २०,१२४,१ | १६          | तस्मा अरं      | १६     | ३          | ३ १८३९    |
|    |                |      |         | ६८२      | १७          | यौ शान्ति०     | १७     | १९,९,१     |           |
| ५  | कस्त्वा सत्यां | ५    | २       | २ ६८३    |             |                |        | १४         |           |
| ६  | अभी पु णः      | ६    | ३       | ३ ६८४    | २१          | नमस्ते अस्तु   | २१     | १,१३,१     |           |
| ७  | कया त्वं न     | ७    | ८,९३,१९ | १५८६     |             |                |        | ११,४,२     |           |
| ९  | शं नो मित्रः   | ९    | १,९०,९  | १९,९,६   | २३          | मुमित्रिया न   | २३     | १६,७,५     |           |
| १० | शं नो वात      | १०   |         | ७,६९,१   |             |                |        | १०,५,१५-२१ |           |
| ११ | अहानि शं       | ११   | ७,३५,१  | १        |             |                |        | २५-३५      |           |
| १२ | शं नो देवीर०   | १२   | १०,९,४  | १,६,१    | २४          | तच्चक्षुर्देव० | २४     | ७,६६,१६    | १९,६७,१-८ |
| १३ | स्योना पृथिवि  | १३   | १,२२,१५ |          |             |                |        |            |           |

### सप्तत्रिंशोऽध्यायः ।

|   |                 |      |          |    |              |    |          |  |
|---|-----------------|------|----------|----|--------------|----|----------|--|
| १ | देवस्य त्वा     | ३७,१ | १९,५१,२  | १२ | अनाधृष्टा    | १२ | २,१७     |  |
| २ | युञ्जते मन      | २    | ५,८१,१   |    |              |    | ४,६,१    |  |
| ६ | इन्द्रस्यैज     | ६    | १०,५,१-६ | १७ | अपश्यं गोपा० | १७ | १,१६४ ३१ |  |
| ७ | त्रैतु ब्रह्मण० | ७    | १,४०,३   | ५६ |              |    | १०,१७७,३ |  |

य० मं० का० य० ऋग्वेद अथर्व० साम० । य० मं० का० य० ऋग्वेद अथर्व० साम०

### अष्टत्रिंशोऽध्यायः ।

|                    |         |                      |         |
|--------------------|---------|----------------------|---------|
| १ देवस्य त्वा ३८,१ | १९,५१,२ | २५ एधोऽस्येधि २४     | ७,८९,४  |
| २२ अचिक्रद० २२     | ९,२,६   | २६ यावती यावा० २५    | ४,६,२   |
|                    |         | १०४२                 | १०,६,३० |
| २४ उद्वयन्तमसम् २४ | १,५०,१० | २७ ब्रह्मणा तेजसा २६ |         |
|                    | ७,५३,७  |                      |         |

### एकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ।

|                        |         |                    |          |
|------------------------|---------|--------------------|----------|
| १ पृथिव्यै स्वाहा ३९,१ | ५,९,२,६ | १ सूर्याय स्वाहा   | १९,४३,३  |
| अन्तरिक्षाय स्वाहा     | ५,९,३,४ | १३ ब्रह्मणे स्वाहा | १९,२२,२० |
| वायवे स्वाहा           | १९,४३,२ |                    | २३,२९    |
| दिवे स्वाहा            | ५,९,१,५ |                    | ४३,८     |

### चत्वारिंशोऽध्यायः ।

१६ अग्ने नय ४०,१८ १,१८९,१ ४,३९,१०

### शुद्धिपत्रकम् ।

[ १ कोष्ठान्तर्गतमशुद्धं, कोष्ठाद्वहिः शुद्धम् । २ सर्वत्र दाक्षिणात्यः पाठो ' गच्छ ' इत्यादि स्थानेषु ' गच्छ ' इति चकार-  
युक्तो बोद्धव्यः ' ( यस्य छाया ) यस्य च्छाया ' इ । ३ तथैव सर्वत्र त्रिमात्रस्थाने द्विमात्रो यथा "(अन्याँ३) अग्याँ२"  
इति । ४ उत्तरीयाः पाठास्तु यथामुद्रिताः । ]

( १ पृष्ठे २३ मंत्रे- सुशर्मा ) ०मि । ( ४ पृ० ४७ मं० - वेष्ट्यो ) ०ष्पो । ( ७४३- पुरुतमं )  
पुरुतमं । ( ११६४- व्रते ) व्रते । ( ११७१- बभूवुः ) ०वुः । ( ११७३- उदन्तु ) उन्दन्तु ।  
( २३१२- पार्थिवे ) पार्थिवे । ( ३३१२- ध्रुव ) ध्रुव । ( ३४५- विश्विप्रि० ) ०शि० । ( ३५१०-  
क्षिपणि ) क्षि० । ( ३९१८- ०र्विकान्त ) ०र्विकान्त । ( ५०१५- छिद्रि ) छिद्रं । ( ७०१२६- क्षतृ० )  
क्षतृ० । ( ७९१२- योनिघृते ) योनिघृते । ( ८९१३०- नक्षत्राणि ) नक्षत्राणि ।















